Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Jivani

Vol 1

1978/79

G. K. V.
Haridwar

028759

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

078759

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब नैशनल बैंक
की उपयोगी बचत योजनाएं

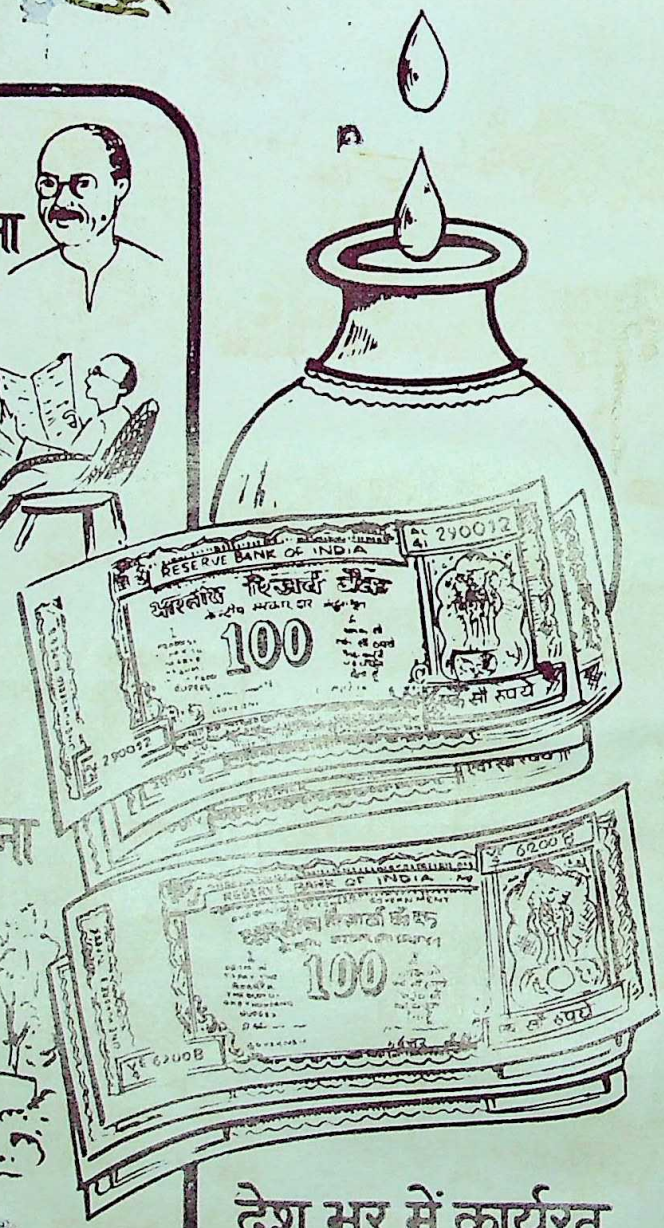

भकारी तथा
स्था जमा योजना

बी आजीवन
आय योजना

ावधि योजना
ी जमा योजना
खाता योजना
प्रमाण-पत्र योजना

सम्बद्ध
स ऋण योजना

देश भर में कार्यरत
लगभग 2500 शाखाओं
के माध्यम से आपकी सेवा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनवाणी

078759

No 83

नवकारमंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पौष २०४० 卐 जनवरी, १९८४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये इष्ट सुमंगलकारी हैं !

☐ डॉ. इन्दरराज बैद, मद्रास

अरिहंत, सिद्ध, प्रभु, साधु, धरम, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं ।
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं ।।

(१)

मंगल प्रद जितने भी मंगल,
उनमें अनुपम चार हैं मंगल,
अरिहंत मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल,
साधुजन मंगल, जिन धर्म मंगल,
मंगल ये हितकारी हैं नित, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु, धरम ये इष्ट सुमंगलकारी हैं ।
मिथ्यात्व भरम में भटकों के सम्यक्त्व दीप उद्धारी हैं ।। ये इष्ट० ।।

(२)

लोकोत्तम जितने भी उत्तम,
परमोत्तम हैं चार ही उत्तम,
अरिहंत उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम,
साधुजन उत्तम, जिनधर्म उत्तम,
उत्तम ये हितकारी हैं नित, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु, धरम, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं ।
जय-जय करते, इन पर जाते, हम नित्य विनत बलिहारी हैं ।। ये इष्ट० ।।

(३)

जग में जितने भी हैं शरणं,
उनमें अद्भुत चार ही शरणं,
अरिहंत शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं
साधुजन शरणं, जिनधर्म शरणं,
शरणं ये हितकारी हैं नित, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु, धरम, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं ।
ये चार लगाते पार नाव, भव-भव में संकटहारी हैं ।। ये इष्ट० ।।

(४)

चार ही मंगल, चार ही उत्तम,
चार ही शरणं, परमोत्तम,
चार ही लोकोत्तर सुख उत्तम,
मुक्तिप्रदायक मंत्रोत्तम,
मंत्रम् ये हितकारी हैं नित, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु, धरम, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं ।
छाँह तले जिनकी सुख पाते, दग्ध विकल संसारी हैं ।। ये इष्ट० ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ अनुक्रमणिका ❋

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐

ज्ञान और क्रिया की ज्योति जगायें	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०	१
महत्त्व त्याग का है	: श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	९
ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति का क्रम [३]	: श्री चाँदमल कर्णावट	१३
ज्योतिपुंज आचार्य श्री हस्तीमलजी म.	: प्रो. संजीव भानावत	१८
'मानस' में गुणस्थान	: पं० श्री सूरजचन्दजी 'सत्यप्रेमी'	२२
जैनधर्म का भारतीय संस्कृति को योगदान	: सुश्री अनिता भंडारी	४५
मुक्ति पाना है तो ज्ञानी बनो	: श्री मान मुनि	५६

☐ कथा/प्रसंग ☐

जड़	: श्री कमल सोगानी	२१
बोझ	: श्री कमल सोगानी	३२
अन्तिम इच्छा [२२]	: श्री रामदास नामा	५१

☐ धारावाहिक उपन्यास ☐

दीक्षाकुमारी का प्रवास भाग–२	: श्री लालचन्द्र जैन	२६

☐ कविता ☐

ये इष्ट सुमंगलकारी हैं	: डॉ० इन्दरराज बैद	आवरण पृष्ठ २

☐ प्रतिवेदन ☐

श्री स्वाध्याय संघ द्वारा १४४ क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधान	: श्री सम्पतराज डोसी	३३
जयपुर में भव्य दीक्षा समारोह	: श्री ब्रजमोहन जैन	६१

☐ स्तम्भ ☐

साहित्य-समीक्षा	: डॉ. नरेन्द्र भानावत	६३
समाज–दर्शन	: संकलित	६५
साभार प्राप्ति स्वीकार	: व्यवस्थापक	७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जिनवाणी

□

अप्पा अप्पउ जइ मुणइ,
तउ णिव्वाण लहेइ ।
पर अप्पा जउ मणुहिं,
तहु संसार भमेइ ।।

—योगसार १२

यदि तू अपने से अपने (आत्मा) को पहचान लेता है तो तू निर्वाण प्राप्त कर लेगा, यदि पर-पदार्थों को अपना (आत्म-स्वरूप) समझ लिया तो संसार में भ्रमण करता रहेगा ।

□

जनवरी, १९८४
वीर निर्वाण सं० २५१०
पौष, २०४०

वर्ष : ४१ • अंक : १

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
प्रेमराज बोगावत

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ अनुक्रमणिका ❋

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐

निज गुणों के रक्षण की आवश्यकता	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०	१
नमो आयरियाणं	: श्री मान मुनि	६
साधना विराग भाग की	: श्री चाँदमल कर्णावट	१२
जैनधर्म की विशेषताएँ	: श्री लालचन्द्र जैन	१६
जैन हस्तलिखित ग्रंथ भण्डार [१]	: प्रा० उ० भा० कोठारी	२१
जैन पत्रकारिता	: प्रो० संजीव भानावत	४२

☐ कथा/प्रसंग ☐

जड़ पूजा के उपासक	: श्री कमल सौगानी	१०
ईश्वर की सीमा	: श्री मनोज आंचलिया 'टोनी'	२०
वास्तविकता का बोध [२३]	: श्री राज सौगानी	३९

☐ धारावाहिक उपन्यास ☐

दीक्षाकुमारी का प्रवास भाग–२	: श्री लालचन्द्र जैन	२९

☐ प्रतिवेदन ☐

आचार्य श्री की विहार-चर्या	: श्री ब्रजमोहन जैन	४७

☐ कविता ☐

राजस्थानी मुक्तक	: डॉ० नरेन्द्र भानावत	२८

☐ स्तम्भ ☐

समाज–दर्शन	: संकलित	५०
साभार प्राप्ति स्वीकार	: मंत्री	६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जिनवाणी

□

कोहं माणं च मायं च,
लोभं च पाववड्ढणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ,
इच्छंतो हियमप्पणो ॥

दशवैकालिक ८/३७

क्रोध, मान, माया और लोभ, ये चारों कषाय पाप की वृद्धि करने वाले हैं, अतः आत्मा का हित चाहने वाला साधक इन दोषों का परित्याग कर दे ।

□

फरवरी, १९८४
वीर निर्वाण सं० २५१०
माघ, २०४०

वर्ष : ४१ • अंक : २

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
प्रेमराज बोगावत

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमती हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ अनुक्रमणिका ❋

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐

आत्म-स्नान	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०	१
मजहब नहीं सिखाता		
आपस में वैर करना	: श्री रतन मुनि	७
श्रावक का आचार एवं हम	: श्रीमती स्नेहलता सहलोत	११
धर्म का स्वरूप	: श्री राजकुमार जैन 'राजन'	१५
जैन हस्तलिखित ग्रंथ भण्डार [२]	: प्रा० उ० भा० कोठारी	२०

☐ कथा / प्रसंग ☐

आम का पेड़	: ललिता कोठारी	५
संयमी महान् बनता है	: श्री राजकुमार जैन	६

☐ धारावाहिक उपन्यास ☐

दीक्षाकुमारी का प्रवास–भाग–२	: अनु० श्री लालचन्द्र जैन	३१

☐ कविता ☐

अहिंसा-सत्य	: श्री रमेश 'मयंक'	६

☐ प्रतिवेदन ☐

अजमेर से मेड़ता तक धर्मोद्योत	: श्री जिनेश्वर जैन	२७

☐ स्तम्भ ☐

समाज–दर्शन	: संकलित	३९
साभार प्राप्ति स्वीकार	: मंत्री	४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जिनवाणी

□

कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
माया य लोभो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिंचति मूलाई पुणब्भवस्स ॥

—दशवैकालिक ८/४०

अनियंत्रित क्रोध और मान तथा बढ़ी हुई माया और लोभ ये चारों मलिन कषायें भव-भ्रमण रूपी पौधे की जड़ों को सींचने वाली हैं। इन्हीं के कारण जन्म-मरण की वृद्धि होती है।

□

मार्च, १९८४
वीर निर्वाण सं० २५१०
फाल्गुन, २०४०

वर्ष : ४१ ◆ अंक : ३

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
प्रेमराज बोगावत

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमती हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ अनुक्रमणिका ❋

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐

अशुभ से शुभ की ओर	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०	१
अहंकार का समाधान—नमो	: श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद'	६
जैन द्रव्य दर्शन की उपयोगिता	: डॉ० विजयलक्ष्मी फोफलिया	८
जैन हस्तलिखित ग्रंथ भण्डार [४]	: प्रा० उ० भा० कोठारी	१०
अहिंसक समाज से सीधा सवाल	: श्री जिनेन्द्रकुमार जैन	१९

☐ कथा / प्रसंग ☐

संगत का प्रभाव	: ललिता कोठारी	२२
दो प्रेरक प्रसंग	: कल्पना आँचलिया	४६
बड़प्पन	: श्री राजकुमार जैन 'राजन'	५२
प्रतिष्ठा के अनूकूल आचरण	: डॉ० भैंरूलाल गर्ग	५५

☐ धारावाहिक उपन्यास ☐

दीक्षाकुमारी का प्रवास–भाग–२	: अनु० श्री लालचन्द्र जैन	२६

☐ प्रतिवेदन ☐

नागौर में धर्म लहर, दीक्षाएँ सम्पन्न	: श्री ब्रजमोहन जैन	३७

☐ कविता ☐

दो कविताएँ	: श्री रामनिवास बारूपाल	३६

☐ स्तम्भ ☐

साहित्य-समीक्षा	: डॉ० नरेन्द्र भानावत	४३
समाज–दर्शन	: संकलित	४७
साभार प्राप्ति स्वीकार	: व्यवस्थापक	५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जिनवाणी

□

उवसम दया दमाउहकरेण,
रक्खा कसाय चोरेहिं ।
सक्का काउं आउहकरेण,
रक्खा वा चोराणं ।।

—भगवती आराधना १८३६

जिस प्रकार सशस्त्र पुरुष चोरों से अपनी रक्षा करता है, उसी प्रकार उपशम, दया और निग्रहरूप तीन शस्त्रों को धारण करने वाला कषाय रूपी चोरों से अपनी रक्षा करता है ।

□

मई, १९८४
वीर निर्वाण सं० २५१०
वैशाख, २०४१

वर्ष : ४१ • अंक : ५

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
प्रेमराज बोगावत

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमती हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ अनुक्रमणिका ❋

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐

जैन दीक्षा : स्वरूप, महत्त्व एवं साधना	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०	१
सम्यग्ज्ञान [१]	: श्री जशकरण डागा	१३
सादा जीवन : उच्च विचार	: श्री गौतमचन्द ओस्तवाल	२०
आन्तरिक प्रदूषण पर ध्यान दिया जाय	: स्वामी ओ३म् प्रेमी	२२
Place of Ahimsa in Religion of the world & its Relationship with Vegetarianism	: Satish Kumar Jain	३५
पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० सा०	: आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०	६६

☐ प्रसंग / कथा / सूक्ति ☐

जब चील ने गगन में तिरंगा लहराया	: श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन	३२
शिक्षाप्रद मूर्तियाँ	: श्री राज सोगानी	४८
दीक्षा का अर्थ	: श्री राजकुमार जैन 'राजन'	१२
हीरे-मोती	: कल्पना आँचलिया	२१
भाई-बहिन का मिलन	: कल्पना आँचलिया	३४
अहिंसा के अमृत-कण	: डॉ० बहादुरसिंह	४४
फिर काहे को लूटमार करते हो ?	: कल्पना आँचलिया	३९

☐ कविता ☐

पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे !	: डॉ० नरेन्द्र भानावत	

☐ प्रतिवेदन ☐

पूज्य कुशलचन्द्रजी म० पुण्य तिथि समारोह	: श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	४५
मरुधरा में धर्म प्रभावना	: श्री ब्रजमोहन जैन	४९

☐ धारावाहिक उपन्यास ☐

दीक्षाकुमारी का प्रवास–भाग–२	: अनु० श्री लालचन्द्र जैन	२३

☐ स्तम्भ ☐

साहित्य-समीक्षा	: डॉ० नरेन्द्र भानावत	४२
समाज–दर्शन	: संकलित	५५
साभार प्राप्ति स्वीकार	: मंत्री	६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जिनवाणी

□

सल्लं कामा विसं कामा,
कामा आसीविसोवमा ।
कामे य पत्थेमाणा,
अकामा जन्ति दोग्गइं ।।

— उत्तराध्ययनसूत्र ९/५३

संसार के कामभोग शल्य हैं, विष हैं और आशीविष सर्प के तुल्य हैं। जो कामभोगों को चाहते तो हैं, किन्तु परिस्थिति विशेष से उनका सेवन नहीं कर पाते हैं, वे भी दुर्गति में जाते हैं।

□

जून, १९८४
वीर निर्वाण सं० २५१०
ज्येष्ठ, २०४१

वर्ष : ४१ • अंक : ६

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
प्रेमराज बोगावत

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर-३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर-३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ अनुक्रमणिका ❋

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐

स्वाध्याय से लाभ : आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० १

सम्यग्ज्ञान [२] : श्री जशकरण डागा ३

☐ परिचर्चा ☐

साधना और समाज-सेवा : श्री चाँदमल कर्णावट ११

☐ बालकथामृत ☐

बूँद बन गई मोती [२८] : श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन २३

☐ धर्मोद्योत ☐

पावस-प्रवास के लिए मंगल प्रवेश : श्री ब्रजमोहन जैन २७

☐ कविता ☐

ऐसा मेरा हो उपवास : डॉ० नरेन्द्र भानावत आव० पृष्ठ ४

☐ एक प्रेरक पत्र ☐

सामायिक संगोष्ठी विशेषांक के सम्बन्ध में : डॉ० इन्दरराज बैद आव० पृष्ठ २

☐ स्तम्भ ☐

समाज-दर्शन : संकलित ३१

साभार प्राप्ति स्वीकार : मंत्री ३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जिनवाणी

□

तं तह दुल्लहलंभं,
विज्जुलया चंचलं माणुसत्तं।
लद्धूण जो पमायइ,
सो कापुरिसो न सापुरिसो ॥

—आवश्यक निर्युक्ति ८३७

जो बड़ी मुश्किल से मिलता है, बिजली की तरह चंचल है, ऐसे मनुष्य जन्म को पाकर भी जो धर्म-साधना में प्रमत्त रहता है, वह कापुरुष (अधम पुरुष) ही है, सत्पुरुष नहीं।

□

अगस्त, १९८४
वीर निर्वाण सं० २५१०
श्रावण, २०४१

वर्ष : ४१ • अंक : ८

मानद सम्पादक :
डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
प्रेमराज बोगावत

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

स्तम्भ सदस्यता	:	१००१ रु०
संरक्षक सदस्यता	:	५०१ रु०
आजीवन सदस्यता	:	देश में २५१ रु०
आजीवन सदस्यता	:	विदेश में ७५१ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता	:	५५ रु०
वार्षिक सदस्यता	:	२० रु०

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जयपुर–३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचनामृत :

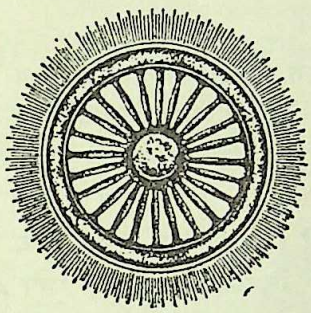

ज्ञान और क्रिया की ज्योति जगायें*! [१]

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

प्रार्थना

एगोवि नम्मुकारो, जिणवर व सहस्स बद्धमाणस्स ।
संसार सागराओ तारेइ, नरं वा नारि वा ।।

संसार के प्राणियों को यह समझने की आवश्यकता है कि हमारा आदर-सत्कार, विनय, भक्ति यह किनके साथ होनी चाहिये और किनके साथ किया गया हमारा विनय, हमारी भक्ति, हमारा आदर, हमारा सत्कार, हमारी कल्याण कामना, हमारे स्वयं के जीवन को ऊंचा उठा सकती है और हमारी विनय भक्ति सार्थक हो सकती है ।

विनय : निर्जरा का साधन :

लोग स्वार्थ के वशीभूत होकर, कामना के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों के शिकार, अनेक प्रकार की अनैतिकता का आचरण करने वाले लोगों की गर्ज करते रहते हैं, उनका आदर करते हैं—सम्मान करते हैं, उनके पैरों के तलुवे रगड़ते हैं । उनको पता नहीं है कि इस नमस्कार, इस आदर-सत्कार का क्या नतीजा निकलने वाला है ? उनको यह भान होना चाहिए कि संसार में आदरणीय, वंदनीय पंच-परमेष्ठि हैं और उनका वंदन, उनका ध्यान और उनको किया गया नमन हमारी आत्मा को इस लोक में और परलोक में ऊंचा उठाने वाला है ।

जैन शास्त्रों में १० प्रकार का विनय बतलाया गया है । उन्होंने बताया कि विनय क्यों की जाय ? क्योंकि विनय एक प्रकार से निर्जरा का साधन है,

* ११–१०–८२ को जलगाँव में दिया गया प्रवचन । प्रो० संजीव भानावत द्वारा सम्पादित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये किया जाय। जानते हैं आप कि निर्जरा किसको कहते हैं ? कई स्वाध्यायी यहाँ पर बैठे हुए हैं, नाश्ता, पानी शायद सभी ने किया होगा, क्या मैं अपेक्षा करूं, आप में से कोई बोलेगा ?

पुण्य और धर्म :

जैन शास्त्रों में पुण्य और धर्म को अलग-अलग माना है। आप में से थोड़े व्यक्ति पुण्य और धर्म की अलग परिभाषा समझते होंगे। अभी अधिक समय नहीं है इसलिये संक्षेप में कहने की कोशिश करूंगा। मैं अभी पुण्य की बात को छोड़ता हूं। मुझे अभी पुण्य की बात लम्बी नहीं कहनी है। यद्यपि नमस्कार करना भी पुण्य माना है। ९ प्रकार के पुण्य माने हैं। नमस्कार करना पुण्य है लेकिन किसी को गाली देना पाप है, किसी का तिरस्कार करना पाप है, अपमान करना पाप है, बैठे हुए किसी व्यक्ति को ढकेल देना पाप है और किसी का आदर करना पुण्य है। तो पुण्य से एक दर्जा ऊपर है निर्जरा। संवर और निर्जरा धर्म के अंग हैं।

संसार के दूसरे दर्शन, दूसरे मत निर्जरा तक बहुत कम पहुंचे हैं। वे पुण्य तक ही आकर अटक गये हैं। किसी दीन-हीन को खिला-पिला देना पुण्य माना है, गाय, कुत्ता, कबूतर आदि को कुछ खिला-पिला देना पुण्य माना है। इस प्रकार से पुण्य की प्रवृत्ति करके वे सन्तोष मानते हैं।

लेकिन जैन धर्म कुछ ऊंची बात कहता है। इसको समझने के लिये भगवान् की वाणी का पठन-पाठन करें, मनन करें, इसको स्वाध्याय के नाम से कहा है। मैं इसे विशेष महत्त्व दूं तो कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं। यदि इस स्वाध्याय का लक्ष्य आपके जीवन में बैठ जाय तो आपके जीवन का मोड़ बदल जायगा।

भगवान् महावीर ने धर्म को संवर और निर्जरा दो भागों में बांटा है। संवर वह है जो आने वाले नये कर्मों को रोके। संवर धर्म कौन ? जिसके द्वारा आये हुए नये कर्मों की गति रुक जाय और जिसके द्वारा हमारे साथ लगे हुए कर्म हल्के हों उनका नाम है निर्जरा।

पुण्य कर्म हल्का करने का काम नहीं करता। पुण्य कर्म काटने का काम भी नहीं करता। इस तरह से जैन धर्म पुण्य और निर्जरा के अन्तर को बताता है।

भगवान् महावीर के तत्त्व ज्ञान का निरूपण करने वाला दिन बहुत नजदीक आ रहा है। भगवान् का निर्वाण पर्व दीपावली अब शीघ्र आने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। संवत्सरी जैसा हमारी आत्म शुद्धि का पर्व बीता। हमारे जीवन में पवित्रता का संचार करने वाला पर्व आया जिसमें हमने ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना की बात सोची, समझी और आचरण में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

दीपावली के पहले एक महान् आचार्य—राजस्थान के ज्योतिर्धर आचार्य श्री भूधरजी महाराज का जन्म दिन बहुत निकट में आश्विन शुक्ला १०वीं को आ रहा है। हमारे आचार्य श्री धर्मदासजी महाराज के दीक्षित होने का प्रसंग एकादशी को होता है और आश्विन शुक्ला दशमी—विजया दशमी को इस जमाने के दोषों पर विजय करने वाले आचार्य श्री भूधरजी को स्मरण करने का दिन नजदीक आ रहा है। इससे पहले अहिंसा सप्ताह के नाम से राष्ट्र के राजनीतिक जीवन में अहिंसा की ज्योति जगाने वाले गांधीजी का जन्म सप्ताह—अहिंसा सप्ताह बीता। इसके नजदीक हमारे स्वाध्याय को मूर्तरूप देने वाले आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज, उनका सप्ताह भी साथ ही आ रहा है।

इन दोनों, तीनों बातों की जानकारी आपको कराई जाय इसलिये आज आपके बीच में आकर बैठ गया हूँ। कल से मेरा मौन है। इनका दिवस कैसे मनावें, दशहरे के दिन किस महापुरुष को स्मरण करना, स्वाध्याय के लिए कोई नई बात तो नहीं है, लेकिन उसको भी किस तरह लगाना। इन बातों पर थोड़ा प्रकाश डालना चाहूँगा।

आगमवेत्ता आचार्य आत्मारामजी म. सा. :

हमें उपाध्याय पद पर विराजमान आत्मारामजी महाराज के साथ वर्षाकाल में रहने का संयोग मिला। वर्षाकाल के बाद भी साथ विचरण का संयोग मिला। वे आगम शास्त्रों के स्वाध्याय में रस लेने वाले महापुरुष थे। उन्होंने इसके लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। उनके सम्बन्ध में बहुतसी बातें संत-सती वर्ग में से भी सौ में से नब्बे प्रतिशत नहीं जानते होंगे।

मैंने उपाध्याय श्री के रूप में आत्मारामजी महाराज को निकट से देखा है। जोधपुर नगर में यह सुन्दर अवसर मिला। हम लोगों का साथ में चातुर्मास हुआ। उस समय वे उपाध्याय पद पर थे। लेकिन उनमें अभिमान की मात्रा बिल्कुल नहीं थी। उनमें गुणशीलता, शालीनता आदि गुण थे। वे सुबह से शाम तक स्वाध्याय करते रहते। जब कभी बाहर से दर्शनार्थी आते या उनके साथ बैठ कर विचार-चर्चा करने वाले आते तो वे उनको शास्त्र का स्वाध्याय करते पाते। वे शान्ति से और ध्यान से अभ्यास करते और कभी थकान अनुभव नहीं करते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने प्रमाणित किया कि तत्त्वार्थ सूत्र उमास्वाति की रचना नहीं है लेकिन उन्होंने ३२ आगमों से संकलन किया है। एक-एक सूत्र के साथ शास्त्र पाठ को अलग जुड़वाकर तत्वार्थ सूत्र समन्वय ग्रंथ रूप तैयार किया है। आप सोच सकते हैं कि तत्वार्थ सूत्र के १० अध्याय और उसके अलग-अलग सूत्र में से किसका अर्थ किस पाठ में मिल सकता है, इसकी भी सूची दी है। तत्वार्थ सूत्र ऐसा सूत्र है जिसको श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराएं मानती हैं। भक्तामर भी ऐसा स्तोत्र है जिसको श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों पढ़ते हैं।

स्वाध्याय-रस को जीवन में उतारें :

जैसा कि मैंने कहा आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज स्वाध्याय में इतना गहरा रस लेने वाले थे कि उन्होंने ३२ सूत्रों का आलोड़न करके ग्रन्थ तैयार किया और समन्वय-सूत्र तैयार किया। लेकिन खेद इस बात का है कि आज उसको पढ़ने वाले हमारे समाज के पाठक नहीं मिल पायेंगे। जयजयकार करने वाले तो बहुत मिल जायेंगे लेकिन पढ़ने वाले नहीं मिलेंगे। क्योंकि हमने स्वाध्याय में जैसा रस लेना चाहिये, वैसा रस नहीं लिया। ठीक है ५० वर्षों के दरम्यान में जहाँ १, २ स्वाध्यायी नहीं मिलते थे, उस जगह सैकड़ों की तादाद में आज मिल जायेंगे। आज हजार, दो हजार स्वाध्यायी भाई-बहिन मिल सकते हैं। मेरा मतलब कहने का यह है कि स्वाध्याय में जितनी तन्मयता के साथ रस लेना चाहिये, उतना नहीं लेते। बहिनों में तपस्या चली है लेकिन स्वाध्याय नहीं चला। स्वाध्याय चलाने के लिये कुछ बोलचाल का कार्यक्रम करना पड़ेगा। इधर-उधर की विकथा छोड़नी पड़ेगी, सामायिक के टाइम का अच्छा उपयोग करना पड़ेगा। तो मैं इस प्रसंग से आपको स्मृति दिलाऊं कि यह जो जन्म सप्ताह का कार्यक्रम है उसमें आप भी साधना करें। स्वाध्याय के रस को जीवन में व्यापक बनावें।

स्वाध्याय किसी एक संत का नारा नहीं है। किसी एक संत का मंतव्य नहीं है। सामायिक और स्वाध्याय चाहे मैं कहूँ या कोई दूसरा कहे, यह भगवान् महावीर का सिद्धान्त है। इसलिये आप चाहें धीरे बढ़ें लेकिन दूसरे समाज के स्वाध्यायियों ने इसे जंगल में दीपक समझ लिया है। हमारी पड़ोसी समाज जिनको प्रेरणा देने का मौका नहीं आया, उनकी सैकड़ों पुस्तकें छप गईं हैं, स्वाध्याय के मार्ग में प्रगति हो गई है। हम लोग जब महाराष्ट्र के कुछ गांवों में विचर रहे थे तब नागपुर नगर से घूम कर आने वाले कुछ वैदिक परम्परा के भाई मिले। उमराणे में उनका स्वाध्याय का कार्यक्रम था। मैंने उनसे पूछा कि आपका स्वाध्याय का कार्यक्रम किस तरह से चल रहा है तो उन्होंने बताया कि हमारे वकील सा. बम्बई से स्वाध्याय के लिये जो प्रेरणा देते हैं, उनका हम संचालन करते हैं। सुनकर मन में प्रमोद हुआ। जहाँ त्याग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैराग्य का उपदेश देने वाले संत नहीं हैं, वह समाज भी जीवन को शुद्ध करने के लिये, मन को शुद्ध करने के लिये और आचरण को शुद्ध करने के लिये प्रेरणा पाने में स्वाध्याय को जरूरी समझ रही है तो भला हमारे जैन समाज के बन्धुओं को आवश्यक रूप में कितना मंजूर करना चाहिये। शब्दों से नहीं लेकिन काया से करें, आचरण से करें। आचरण के लिये ज्ञान की ज्योति जगाने के लिये एक महापुरुष की स्मृति थोड़े शब्दों में आपके सामने रखूं।

लेकिन जैन धर्म केवल ज्ञान को पकड़ कर ही नहीं चलता। कुछ भाई ऐसे हैं, कुछ समुदाय ऐसे हैं जो कहते हैं कि उपवास करने से क्या मतलब है, हरी वस्तुओं का सेवन करना छोड़ दिया इससे भी कोई मतलब नहीं निकलता। इसके बदले में आत्म ज्ञान करो, वस्तु तत्त्व का ज्ञान करोगे और अपने आपको समझलोगे तो जीवन शुद्ध हो जायेगा, मुक्त हो जायेगा।

ऐसे विचारक भी हैं जैसे मैंने दर्शन के परिचय में कहा। सांख्य के आचार्य ने कहा कि—

पंच विसंति तत्वज्ञो, यत्र तत्राऽश्रमेरतः।
जटी मुंडी शिखीवाऽपि, मुच्यते नात्र संशयः।

२५ तत्वों का ज्ञान करलो, फिर चाहे किसी दशा में रहो, गृहस्थाश्रम में रहो, साधु बन कर रहो, चाहे जटा धारण करो, चाहे शिखा धारण करो, चाहे संन्यासी बनो, आर्य समाज के संन्यासी माथे के बाल साफ करके सफाचट करते हैं, कुछ संन्यासी ऐसे हैं जो मस्तक को नहीं मुडाते, जटा रखते हैं वे जटी कहलाते हैं। सांख्य के आचार्य कहते हैं कि चाहे जटा रक्खो, चाहे शिखा रक्खो, लेकिन २५ तत्व का ज्ञान कर लिया तो तुम्हारी मुक्ति हो जायेगी। आचार की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन हमारा जैन धर्म ऐसा नहीं मानता। वह मानता है—

"सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।"

ज्ञान के पठन-पाठन में और स्वाध्याय की ज्योति जगाने में आचार्य श्री आत्मारामजी ने अपने जीवन का पूरा समय समर्पित कर दिया था। समाज के जानकार लोग जानते हैं कि यदि हम उनके जीवन के विचारों को समझें, अपने आपको उनके भक्त कहने वाले समझें, यदि उनके उपदेश, संदेश और आचार को जीवन में अमली रूप दें तो यह हितकर और कल्याणकारी हो सकता है।

आचार्य धर्मदासजी, धन्नाजी :

अब हमारे त्याग और क्षमा की मूर्ति आचार्य भूधरजी और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ववर्ती आचार्य धर्मदासजी के बारे में कुछ प्रकाश डालना चाहूँगा । पूज्य धर्मदासजी विक्रम संवत् १७१६ में अहमदाबाद की भूमि में दीक्षित हुए आश्विन शुक्ला एकादशी को । धर्मदासजी का परिवार देश के कोने-कोने में इतना भरा है कि कोई प्रान्त ऐसा नहीं मिलेगा जहाँ धर्मदासजी का परिवार नहीं हो । सौराष्ट्र पूरा भरा है, राजस्थान पूरा भरा है । कहलाने के लिये तो अलग-अलग पूर्वाचार्यों के नाम से कहलाते हैं लेकिन सबका मूल सम्बन्ध धर्मदासजी से है ।

धर्मदासजी के बाद आचार्य हुए धन्नाजी जो सांचोर के थे । सांचोर की गायें तगड़ी होती हैं । वक्त पर अगर शेर आजाय तो उसका मुकाबला करती हैं । उनके सींग बड़े-बड़े होते हैं और ये गायें बहुत दुधारू होती हैं । सांचोर के पास में मालवाड़ा एक गांव है वहां के एक श्रीमन्त घराने में इनका जन्म हुआ । धन्नाजी और भूधरजी ये दोनों आचार्य हमारे मार्गदर्शक थे और ज्ञान की ज्योति जगाने वाले हुए । धन्नाजी का परिवार मारवाड़ और मालवा में चला । इतिहास का परिचय दूं तो समय की अपेक्षा रहती है इसलिये विशेष परिचय नहीं दूंगा ।

आचार्य भूधरजी :

धन्नाजी के बाद तीसरे नम्बर में भूधरजी आये । ये कामदार के लड़के थे । महाजन को दुकान पर बैठकर कपड़ा नापने वाले नहीं थे । तराजू से तोलने वाले नहीं थे । इनका जन्म ऐसे घर में हुआ जहां के लोग तलवार हाथ में लेकर घूमने वाले थे । इन्होंने राज्यकार्य में भाग लिया । संतों के समागम ने इनका जीवन मोड़ दिया । संत के बदन में ताकत कम हो सकती है लेकिन वाणी में ताकत होती है । आपकी ताकत तिजोरी में है । आपको किसी अधिकारी से मिलना है तो पहले तिजोरी में से दो-चार कागज उठाये और फिर मिलने जायेंगे । तो महाजन की ताकत है तिजोरी में और संत की ताकत है वाणी में । उनके पास न तिजोरी है न गल्ला है । हमारे पूर्व इतिहास को जब-जब देखें तो ख्याल होता है कि हम धीमी गति से चल रहे हैं । हमारे पूर्वज किस तरह से चल रहे थे । समाज के लोगों की हाँ में हां मिलाने से काम नहीं चलेगा । जिनेश्वर भगवान् काम आयेंगे ।

मैं जिस महापुरुष की बात कर रहा हूँ वे पंचोला तप किया करते थे । एक पंचोले के बाद दूसरा पंचोला और दूसरे के बाद तीसरा । इस तरह से करें तो कितने दिन कर सकते हैं । लेकिन ये पंचोले के पारणे बाद फिर पंचोला करते । इस तरह से लगातार करते, ये ऐसे तपस्वी थे ।

राम ने रावण पर विजय करके विजय दशमी मनायी । वह बात तो पुरानी हो गयी । लेकिन भूधरजी ने विजय दशमी मनायी, यह नजदीक की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। ऐसे आचार्य को आपको याद करना है। आचार्य आत्मारामजी ने स्वाध्याय सिखाया। भूधरजी ने आचार और क्षमा सिखायी, सामायिक की खूबी सिखायी। इससे आपके जीवन में मोड़ आ सकता है। यदि मोड़ आयेगा तो आज के जैन आज की दशा में नहीं रहेंगे, बदल जायेंगे। आचार और विचारों में धर्म का तेज ज्यादा आयेगा तो अर्थ का तेज ज्यादा धूमिल नहीं होगा।

आतिशबाजी : जीवहिंसा का कारण :

दिवाली के दिन नजदीक आ रहे हैं। इस अवसर पर जैन समाज के हर प्रान्त में लाखों रुपये आतिशबाजी पर खर्च होते हैं। आप आतिशबाजी में धर्म लाभ मानते हैं, या अर्थ लाभ मानते हैं या शक्ति लाभ मानते हैं या राष्ट्र लाभ मानते हैं। क्या मानते हैं ? एक पटाखा यदि जलाया और डाल दिया या फैंक दिया तो उससे असंख्य जीवों की हिंसा होती है तो सैकड़ों पटाखों से कितने जीवों की हिंसा होगी। जितना बड़ा सेठ होगा, उसके घर में पटाखों का खर्चा उतना ही ज्यादा होगा। आप इस पर कितना रुपया खर्च करते हैं ? दो, चार या दस रुपया खर्च करते होंगे या ज्यादा खर्च करते हैं ? इसके बजाय तो १०-२० रुपये की मिठाई मंगाकर खिलाई जाय अपने और पड़ोसियों के बच्चों को तो कितना फायदा होगा। लेकिन हमारी समाज ने हिन्दू समाज का अनुकरण किया। हिन्दू समाज दीपावली मनाते हैं राम के राज्याभिषेक से और जैन समाज दीपावली मनाता है भगवान् महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में। दोनों के कारण में कितना फर्क है।

मैं चाहूँगा कि घर-घर में माताएं और बहिनें कोशिश करें, बच्चों को समझावें कि पटाखे से कितनी जीव हिंसा होती है। आप लोग मौहल्ले में कोशिश करें। शिक्षा संस्थाओं के संचालक बालकों को समझावें और उन्हें इस मार्ग से बचाने का प्रयत्न करें तो इससे असंख्य जीवों की हिंसा टलेगी। अनन्त जीवों की हिंसा टलेगी, ऐसा कहदूं तो भी कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है। पटाखों से कितने बच्चों का शरीर जल गया, ऐसे किस्से आपने सुने क्या ? आपके जैन समाज में आतिशबाजी से कितनों के कपड़े जल गये, आसपास की दुकानें जल गईं। हर साल २५, ५० या सौ लोग जलते होंगे। असंख्य जीवों की हिंसा होती है, लाखों रुपयों का व्यय होता है। हमारे जैन भाई पहले इस बात को स्वयं समझें और फिर दूसरों को समझावें।

आज कल तो देश में हिंसा यों ही बढ़ी हुई हैं। फिर आतिशबाजी के नाम पर पटाखे बनाने वालों को अवसर मिल जाता है। यों तो नहीं मिलता लेकिन पटाखे बनाने के नाम पर सौर मिल जाता है और आजकल वैज्ञानिक बुद्धि भी काम आती है। नयी-नयी तरह के बम्ब और पटाखे बनते हैं। इनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्फोट हो जाता है तो अगल-बगल के घरों को कितना नुकसान होता है। और यदि किसी के साथ परस्पर की अदाबदी है तो उस घर में ऐसे पटाखे फेंक देंगे तो इससे कितनी मानव हिंसा का प्रसंग बनता है ? आप अपने घर के बच्चों को और अड़ोस-पड़ोस के लोगों को समझाने का प्रयत्न करें तो बहुत बड़ी हिंसा बच सकती है। यह आपके हाथ की बात है।

आज देश में कितने कत्लखाने खुल रहे हैं। दिल्ली में २८ करोड़ की लागत से एक बड़ा कत्लखाना खुल रहा है। अखबारों में ऐसी खबर निकलती है, लेकिन जैन भाइयों में इसके खिलाफ चेतना जागृत नहीं हुई। जब तक स्वार्थ त्याग करके नर-नारी आगे नहीं आयेंगे तब तक काम नहीं चलेगा।

ज्ञान और क्रिया की ज्योति जगायें :

ज्ञान और क्रिया की ज्योति जगाने वाले महापुरुषों की स्मृति ताजा करने के दिन आ रहे हैं। दीपावली का दिन आ रहा है। इस अवसर पर पटाखों से होने वाली जीव हिंसा को कैसे बचाया जाय, इसके बारे में आप सोचेंगे-समझेंगे। मौहल्ले-मौहल्ले में संगठन करके, युवक-शक्ति लगाकर इस काम में योग देंगे तभी काम हो सकता है। अभयकुमार, श्रेणिक और कृष्ण ने धर्म दलाली का कितना काम किया था। जीव-हिंसा को रोकने का प्रयत्न करना यह भी धर्मदलाली का लाभ कमाना है। इस पवित्र आदर्श को सामने रख कर, देश और समाज के हित में लगकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करें। समाज में चेतना जागृत हो जाती है तो समाज की करवट बदल सकती है वरना समाज आज गलत चीजों की नकल कर लेगा। वेश-भूषा और खानपान बदल लेगा, लेकिन कुरीतियों को नहीं बदलेगा। जो बदलना चाहिये वह तो बदलेगा नहीं और जो नहीं बदलना चाहिये वह बदल देगा। जिसे छोड़ना चाहिये उसे नहीं छोड़ेंगे और जो नहीं छोड़ना चाहिये उसे छोड़ेंगे। भाई-बहिन गलत बातों को छोड़कर आगे बढ़ेंगे तो इस लोक और परलोक में कल्याण, आनन्द और शान्ति होगी।

□ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ति-विवेचन [३]

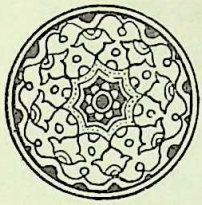

महत्त्व त्याग का है

☐ श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठी कुव्वई ।
साहीणे चयइ भोए, सेहु चाइत्ति वुच्चई ।।

दशवैकालिक, अध्ययन २, गाथा ३

अर्थात् जो मानव सुन्दर, रुचिकर व प्रिय भोग-सामग्री मिलने पर भी उस ओर अपनी पीठ कर देते हैं, उससे मुँह मोड़ लेते हैं तथा प्राप्त भोगों व भोग सामग्री को त्याग देते हैं, वे ही वास्तव में त्यागी हैं।

उपर्युक्त गाथा में त्याग की महिमा बताई गई है। गाथा के गहन अर्थ को समझने के लिए मानव जीवन पर दृष्टिपात करना होगा। मानव जीवन में तीन स्थितियाँ दिखाई देती हैं:—(१) भोगमय जीवन (२) भोग रहित जीवन और (३) त्यागमय जीवन।

१. भोगमय जीवन :

जीवन की तीन स्थितियों में प्रथम स्थिति भोगमय जीवन की है। इसमें मानव इन्द्रिय और मन के अनुकूल सुनने, देखने, सूंघने, स्वाद लेने आदि के प्राप्त पदार्थों का भोग कर सुखानुभव करता है। वह मानता है कि विषयों का भोग ही सुख है, भोग ही जीवन है, भोगों की प्राप्ति में ही जीवन की सार्थकता है। जिसका जीवन भोगमय होता है, वह भोगी होता है, भोगी जीवन पशुवत् जीवन है।

२. भोगहीन जीवन :

दूसरे प्रकार के मानव वे हैं जो विषय भोगों को सुखदायी तो मानते हैं परन्तु भोग्य पदार्थों का अभाव होने से या भोग्य पदार्थों की जानकारी नहीं होने से या इन्द्रियों की भोगने की शक्ति क्षीण होने से भोगों से बचे रहते हैं तथा पदार्थों को क्रय करने में या प्राप्त करने में असमर्थ होने से परवशता से भोगों की कामना भी नहीं करते हैं। वनवासी मनुष्य, निर्धन, अभावग्रस्त व्यक्ति आदि इसी श्रेणी में आते हैं। ये मनुष्य बहुत प्रकार के भोगों से बचे रहते हैं, उन्हें नहीं भोगते हैं परन्तु उन भोगों को बुरा या दुःखद नहीं मानकर सुखद मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. **त्यागमय जीवन :**

तीसरे प्रकार के मानव वे हैं जिन्हें भोग की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है परन्तु वे भोग दुःखद हैं, इस यथार्थता को जानते हैं, जिससे भोगों का त्याग कर देते हैं।

उपर्युक्त तीन प्रकार के मानवों के जीवन को समझने के लिए हम बीज, वृक्ष और फल के उदाहरण को ले सकते हैं। बीज, वृक्ष और फल का मूल है। बीज को अनुकूल भूमि, जल (सिंचाई) और खाद (आहार) मिलने पर वह पनपता है, पौधा बनता है और उसके फल लगते हैं। वे फल पक कर अवश्य खिरते हैं फिर वह पौधा निष्फल हो जाता है। इसी प्रकार विषय भोग में सुख है, यह मान्यता ही भोग की कामना उत्पत्ति का बीज है। प्रकृति या प्रयत्न की अनुकूलता रूप सिंचाई या खाद मिलने से कामना पनपती है और पौधा बनती है, फूलती है, फलती है। वे फल अवश्य खिरते हैं, अलग होते हैं। परिणाम में उस पौधे के लिए फल पाना निष्फल हो जाता है। दूसरे प्रकार की स्थिति यह है कि बीज को अनुकूल जल व खाद न मिलने से उगता ही नहीं है। तीसरे प्रकार की स्थिति यह है कि बीज दग्ध हो जाने से राख हो जाता है या निःसत्त्व हो जाता है, फिर वह उगने के योग्य नहीं रह जाता है।

ऊपर के उदाहरण में पहले प्रकार की स्थिति भोगी जीवों की है जिन्हें प्रयत्न और प्रकृति (कर्मोदय) की अनुकूलता से भोग सामग्री मिलती है। जिसे पाकर वे फूले नहीं समाते व अपना जीवन सफल मानते हैं। परन्तु देखते ही देखते वे भोग भोगने में असमर्थ हो जाते हैं। उनको मिला भोग सुख निष्फल हो जाता है। विषय सुख के भोगों को दुःख भोगना ही पड़ता है। अतः भोग बुरे हैं।

दूसरे प्रकार की स्थिति उन मानवों की है जिनमें भोग-सुख पाने की कामना या राग का बीज तो विद्यमान है परन्तु उसे अनुकूल निमित्त नहीं मिलने से नहीं पनपता है। इससे उस बीज की शक्ति को कम समझ लेना भूल है। उस बीज में पौधा बनने की क्षमता में कोई कमी नहीं है। जैसे वट वृक्ष के राई के समान नन्हें बीज में अगणित वट वृक्ष उत्पन्न करने की क्षमता है, अप्रत्यक्ष रूप से उसमें असंख्य वट-वृक्ष विद्यमान हैं। इसी प्रकार जिस प्राणी की मान्यता में **'विषय भोग ही सुख है'** यह बीज विद्यमान है। भले ही वह विषय भोग की सामग्री के अभाव आदि किसी भी कारण से भोग नहीं भोगे, फिर भी वह भोग में ही आबद्ध है। उसमें असंख्य भोगों की कामना विद्यमान है, केवल भोग सामग्री रूप अनुकूल निमित्तों के अभाव में प्रादुर्भाव नहीं हो रहा है। जैसे ही भोगानुकूल निमित्त सामग्री मिली कि भोग कामनाओं की फसल लहलहाने लगेगी। अतः भोग सामग्री के अभाव में भोग न भोगने का महत्त्व नहीं है, वह त्याग भी नहीं है। फिर भोग न भोगने से नवीन कर्म संस्कारों का निर्माण नहीं होता है उतने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नवीन कर्म नहीं बन्धते हैं, या कम बन्धते हैं। इस दृष्टि से निमित्तों के अभाव में भी भोग न भोगना अच्छा ही है, बुरा नहीं। बुरा है भोग भोगना।

तीसरे प्रकार की स्थिति उन प्राणियों की है जिनका **'भोग में सुख है'** इस मिथ्या मान्यता रूप बीज का विवेक से यथार्थ ज्ञान हो गया है और जिसको विषय-सुख की निस्सारता का, व उससे होने वाले दुःखों का बोध हो गया है। उसका यह मिथ्या मान्यता (मिथ्यात्व) रूप संसार का बीज जलकर राख (क्षय) हो गया है या तप्त से भुनकर निःसत्त्व हो गया है, वही त्याग कर सकता है।

वह जानता है कि मधुर संगीत श्रवण, सुन्दर दृश्य दर्शन, रुचिकर भोजन, अनुकूल स्पर्शन, सम्मान आदि के भोग से मिलने वाला सुख सदा समान नहीं रहता है। वह प्रति क्षण क्षीण होता जाता है, क्षीण होते-होते अंत में पूर्ण क्षीण होकर नष्ट हो जाता है और नीरसता में बदल जाता है। नीरसता किसी को भी पसन्द नहीं है फलतः सुख प्राप्ति के लिए नई कामना का जन्म होता है। उस कामना पूर्ति से उत्पन्न होने वाला सुख भी अन्त में नीरसता में परिवर्तित हो जाता है और फिर नई कामना का जन्म होता है। इस प्रकार कामना उत्पत्ति, पूर्ति, नीरसता का चक्र चलता ही रहता है और परिणाम में शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता है।

भोग की कामना उत्पत्ति से लेकर जब तक पूर्ति न हो, तब तक विवशता, परवशता, अभाव व अशान्ति रूप दुःख रहता ही है। यही नहीं भोग की पूर्ति में भी पराधीनता व वियोग के भय का दुःख बना रहता है।

बचपन से अब तक हमने सुनने, देखने, खाने-पीने, सम्मान आदि के प्रतिदिन अनेक सुखों का भोग किया है। फिर सुख कुछ नहीं बढ़ा है। यदि सुख थोड़ा-थोड़ा भी प्रतिदिन बढ़ता तो अब तक सुख सरोवर बन जाता। परन्तु हम सबका अनुभव है कि सुख भोग की सामग्री तो बहुत बढ़ी है परन्तु सुख कुछ भी नहीं बढ़ा है प्रत्युत् यह भी कहा जा सकता है कि हम बचपन में जितने सुखी थे उतने आज नहीं हैं, शांति और सुख घटा ही है। इससे यह भी परिणाम निकलता है कि भोगजन्य सुख कितना ही भोगा जाय, परिणाम शून्य ही रहता है, सुख बढ़ता नहीं है।

आज विज्ञान ने फुटपाथ पर सोने वाले साधारण व्यक्ति को भी रेडियो, सिनेमा, विद्युत् प्रकाश, टेलीवीजन, टेरेलीन, ट्रेन, बस, बर्फ आदि खाने-पीने, ओढ़ने-पहिनने, देखने-सुनने, गमनागमन आदि इन्द्रिय भोगों की सुख-सामग्री इतनी और ऐसी उपलब्ध करदी है जितनी और जैसी पहले अकबर, अशोक आदि सम्राटों को भी उपलब्ध नहीं थी। इतनी विपुल भोग की सामग्री उपलब्ध होने पर भी आज के साधारण मानव तो घोर दुःखी हैं ही, बड़े से बड़े सत्ताधारी, शक्तिधारी, सम्पत्तिधारी एवं शिक्षाविद् भी अशान्ति, द्वन्द्व, अभाव, तनाव,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनमुटाव आदि महादुःखों से ग्रस्त हैं। इससे भी यही फलित होता है कि भोग-जनित सुख व्यर्थ है।

भोग रोग है :

भोग रोग है। भोग-वासना ही मन में विकार पैदा करती है, लहरें पैदा करती है, चित्त को अशान्त-आकुल बनाती है। विकार का ही दूसरा नाम रोग है। इससे तन, मन, आत्मा सभी रुग्ण होते हैं। कारण कि भोग-सुख के वशीभूत व्यक्ति आहार-विहार, आदि में संयम नहीं रख पाता है, जिससे शरीर में रोगोत्पत्ति होती है। शरीर में जितने भी रोग हैं, उनमें से अधिकांश रोग असंयम के ही फल हैं। भोग-वासना से मन अशान्त, आकुल, तरंगित, विषम हो जाता है। वासना के विकार का विष मन को विषैला-रोगी बना देता है। अतः मन भी विकारी-रोगी बन जाता है तथा भोग रूप कामना या वासना की उत्पत्ति, अपूर्ति, पूर्ति आत्मा को पराधीन बना देती है, शरीर और संसार से सम्बन्ध स्थापित कर बन्धन में डाल देती है, राग-द्वेष उत्पन्न कर देती है जिससे आत्मा विकारी, दोषी व दुःखी बन जाता है। अतः विषय वासना रूप भोग के त्याग में ही तन, मन, आत्मा की स्वस्थता एवं प्रसन्नता निहित है। वास्तविक स्वस्थ जीवन का अनुभव त्याग से ही सम्भव है। त्याग रहित भोगी जीवन रोगी जीवन है। रोगी जीवन, जीवन नहीं, जीवन की विडम्बना है।

त्यागी जीवन मुक्त जीवन :

विषय सुख संसार का बीज है। शरीर की उत्पत्ति विषय-भोग रूप बीज से ही होती है, यह नैसर्गिक नियम है। भोग के लिए ही शरीर और इन्द्रिय की आवश्यकता होती है। जिसे किसी प्रकार का भोग नहीं चाहिये, उसके लिए शरीर और इन्द्रिय की प्राप्ति व्यर्थ है, बोझ है। प्रकृति उसे शरीर नहीं देती है। इसीलिए जो जीव पूर्ण भोग या राग रहित हो जाते हैं, वे अशरीरी हो जाते हैं, उन्हें फिर शरीर नहीं धारण करना पड़ता है।

उपसंहार :

तात्पर्य यह है कि विषय-भोगमय जीवन व्यर्थ जीवन है, बुरा जीवन है, पशु जीवन है। कारण कि विषय-भोग से मिलने वाला सुख क्षणिक है, नश्वर है, अतः सुखाभास है। इसका भोग शरीर, मन व आत्मा को विकारी, रोगी, अस्वस्थ बनाने वाला है, पराधीनता, असमर्थता, जड़ता, अभाव, तनाव, मन-मुटाव आदि समस्त दुःखों का जनक है। इस यथार्थ ज्ञान का आदर कर जो विषय-भोग व उपलब्ध विषय-भोग की सामग्री व सुख का त्याग करता हैं, उसे न भोगने व उस पर अपना अधिकार न रखने का दृढ़-संकल्प रूप व्रत धारण करता है, वही सच्चा त्यागी है, उसी का जीवन सार्थक है, सफल है।

—अधिष्ठाता, जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान
साधना भवन, ९, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधकों से बातचीत :

ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति का क्रम : एक विवेचना [३]

□ श्री चाँदमल कर्णावट
[संचालक, साधना विभाग]

प्रिय साधक बन्धुओ !

आशा है आपकी साधना नियमित चलती होगी। आपने 'जिनवाणी' पत्रिका के दिसम्बर अंक में ज्ञान प्राप्ति से मोक्ष प्राप्ति का क्रम–एक विवेचना की द्वितीय किश्त पढ़ी होगी। दशवैकालिक सूत्र के मूल आधार पर व अन्य ग्रंथों की सहायता से लिखी गई यह रचना आपको कैसी लगी, अपनी प्रतिक्रिया अवश्य ही भेजें ताकि उस पर पुनर्विचार हो सके।

'जिनवाणी' के इस अंक में इस लेखमाला की यह तीसरी वार्ता आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसमें केवलज्ञान की प्राप्ति से लेकर सिद्ध स्थिति प्राप्त करने तक की क्रियाएँ एवं उनकी विवेचना की गई हैं। सर्वप्रथम दशवैकालिक सूत्र की २३ से २५ तक की गाथाओं का सरलार्थ दिया गया है तत्पश्चात् उसमें निहित योग निरोध तथा शैलेशीकरण की क्रिया की तर्कसंगत विवेचना करते हुए हम साधकों के लिए आचरणीय महत्त्वपूर्ण संकेत दिए गए हैं।

विवेचनीय गाथाओं का सरलार्थ :

गाथा २३—में बताया गया है जब रागद्वेष का विजेता आत्मा केवलज्ञानी हो तो लोकालोक को जान लेता है, तब वह मन, वचन, काया के योगों का निरोध करके शैलेशीकरण को प्राप्त करता है।

गाथा २४—जब मन, वचन, काया के योगों का निरोध करके शैलेशीकरण प्राप्त करता है, तब आत्मा कर्मरज से रहित होकर समस्त कर्मों का क्षय करके मोक्ष को चला जाता है।

गाथा २५—आत्मा जब कर्मरूपी रज से रहित होकर और समस्त कर्मों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का क्षय करके मोक्ष प्राप्त कर लेता है, तब वह लोक के अग्र भाग पर स्थित होकर शाश्वत सिद्ध हो जाता है।

विवेचना : योग निरोध क्या और कैसे ?

ऊपर लिखित सरलार्थ को पढ़कर आपके मन में प्रश्न खड़े हुए होंगे कि योग निरोध क्या है, योग निरोध कैसे किया जा सकता है, तथा आत्मा के मोक्ष में यह किस प्रकार सहायक है, जो मोक्ष आपका–हमारा सभी का प्रधान लक्ष्य है।

यह आप जानते ही हैं कि आत्मा को बंधनों में डालने वाले मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग ५ कारण माने गए हैं। इन कारणों के निवारण में सर्वप्रथम आत्मा सम्यग्दृष्टि को प्राप्त करता है और मिथ्यात्व का निवारण करता है। सम्यक्त्व की प्राप्ति अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ एवं मिथ्यात्व मोहनीय, सम्यक्त्व मोहनीय एवं मिश्र मोहनीय इन ७ प्रकृतियों के उपशम, क्षयोपक्षम या क्षय से प्राप्त होती है। फिर व्रत धारण करते हुए आत्मा क्रमशः अप्रमत्त अवस्था को प्राप्त करता है। इस विकास-क्रम में भी आत्मा मोहनीय कर्म की अथवा कषाय की प्रकृतियों का क्षयादि करता हुआ शुद्धि की ओर अग्रसर होता है। क्रमशः उच्च स्थिति की ओर अग्रसर होता हुआ हमारा आत्मा बारहवें गुणस्थान क्षीण मोहनीय में समस्त घाति कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान, केवलदर्शन की प्राप्ति करके सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बन जाता है।

हमने देखा कि मिथ्यात्व आदि ५ कारणों में से इस स्थिति में पहुँचने तक आत्मा चार कारणों का नाश कर देता है। इसके बाद भी एक कारण तो शेष रहता ही है और वह है योग। तेरहवें गुणस्थान को इसीलिये सयोगी केवली–गुणस्थान कहा गया है।

अब हम योग निरोध पर बात करें। योग निरोध का सामान्य अर्थ योगों पर नियंत्रण करना अथवा योगों को स्थिर करना है। योग मन, वचन और काया है—और उनका व्यापार या उनकी प्रवृत्तियों को भी योग कहा गया है। इस प्रकार योग और उनकी चंचलता को स्थिर करना योग निरोध का अर्थ है।

योग निरोध क्यों ?

योग निरोध के इस अर्थ को समझने के बाद हमारी यह जिज्ञासा हो सकती है कि योग निरोध क्यों किया जाय ? जब तक योग है तब तक कर्म-बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्थिति बनी रहती है। कषायों के क्षय हो जाने पर भी केवल योगों की स्थिति में भी कर्म-बन्ध की प्रक्रिया, भले ही वह हल्की हो, चालू रहती है। अघाती कर्मों की सत्ता से चलन आदि क्रिया के कारण कर्म-परम्परा गतिमान रहती है। यद्यपि यह कर्म पहले समय में बँधता, दूसरे समय में भेदन होता और तीसरे समय में निर्जरित होकर क्षय हो जाता। जब तक यह योग-जन्य कर्म-बन्ध की क्रिया चलती रहती है तब तक आत्मा सर्वथा मुक्त दशा की अनुभूति नहीं कर पाती। ये योग विशेषतः अशुभ योग, आत्मा को शुद्ध स्थिति तक पहुँचाने में बाधक हैं। योग निरोध से क्या स्थिति हो सकती है इसके लिये यह जान लें कि योगों का निरोध आत्म तत्त्व का अभाव नहीं है। इन्हें संचालित करने वाला आत्मा तो एक शाश्वत एवं अमर तत्त्व है। परन्तु ये योग आत्मा की अशुद्धि के एक प्रमुख कारण हैं। कषायों के क्षय के साथ पूर्ण सिद्धावस्था पाने के लिये अयोगी अवस्था प्राप्त करना आवश्यक है।

योग निरोध कैसे ?

योग निरोध की आवश्यकता ज्ञात करने के बाद हमारी उत्सुकता होगी कि योग निरोध कैसे करें ? यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो पायेंगे कि राग-द्वेष की वृत्तियों का निरोध किये बिना सिद्धि प्राप्त करना सम्भव नहीं है। जैसे-जैसे कषाय या राग-द्वेष की वृत्तियाँ कम होती जाती हैं, वैसे-वैसे मन, वाणी व काय की स्थिरता भी सहज सिद्ध होती जाती है। हमारे योग राग-द्वेष की वृत्तियों के कारण चंचल होते हैं। जब अनुकूल या प्रतिकूल दशाओं में हमारी आत्मा सम बनी रहेगी तो कोई कारण नहीं कि हमारे योगों में चंचलता पैदा हो और वह कर्म-बन्ध का कारण बने। अतः योग निरोध का प्रथम तथा प्रमुख चरण राग द्वेषादि कषायों को शान्त करना है। तभी योगों की स्थिरता सिद्ध की जा सकेगी।

गुणस्थान के क्रमिक विकास में इन्हीं स्थितियों का चित्रण है। गुणस्थान विवेचना में हम देखेंगे कि आठवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान की स्थिति में कुछ समय बाकी रहने पर शुक्ल ध्यान का प्रथम भेद पाया जाता है। १२वें गुणस्थान में स्थित आत्मा शुक्ल ध्यान के प्रथम भेद पृथक्त्व भेद सविचार ध्यान में आरुढ़ रहता है। १२वें गुणस्थान के अन्तिम समय में शुक्ल ध्यान के द्वितीय भेद एकत्व वितर्क अविचार में आरुढ़ होता हुआ आत्मा क्रमशः मनादि योगों की स्थिरता प्राप्त करता है। ध्यान से मन की एकाग्रता के साथ अन्य योगों की एकाग्रता भी सफल बनती है। १३वें गुणस्थान के अन्तिम सयम में शुक्ल ध्यान के तीसरे भेद में योगों की स्थिरता अधिक सघन होती जाती है, इतनी सघन कि श्वास की सूक्ष्म क्रिया भी निरुद्ध हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य हरि भद्र रचित 'ध्यानशतक' की गाथा ७० से ७६ में ध्यान की इन स्थितियों का चित्रण किया गया है। वहाँ योग निरोध को मन्त्र द्वारा विष-निवारण, मिट्टी के पात्र में स्थित जल के क्रमशः चूते रहने पर खाली हो जाने तथा अग्नि पर स्थित जल पात्र में जल के क्रमशः क्षीण होने के उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है। योग निरोध के क्रम में क्रमशः मन, वचन व काय योग के क्रम का उल्लेख किया गया है।

शैलेशीकरण क्या, क्यों और कैसे ?

शैलेशीकरण शब्द पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि यह शब्द शैल से बना है जिसका अर्थ है—पर्वत। शैलेश अर्थात् सुमेरु पर्वत। जैसे सुमेरु पर्वत, अटल और स्थिर रहता है, उसी प्रकार विकास में अग्रसर होता हुआ आत्मा ऐसी स्थिति प्राप्त करता है जहाँ योगों की चंचलता सर्वथा शान्त हो जाती है और आत्मा स्थिरिभूत एवं निष्कम्पावस्था को प्राप्त कर लेता है। आत्मा की यही स्थिति शैलेशीकरण है। केवली आत्मा क्रमशः मन, वचन और काययोग का निरोध कर चौदहवें गुणस्थान में सर्वथा योग निरोध कर अयोगी बन जाता है।

'सेलेसी' शब्द प्राकृत भाषा का है। इसका संस्कृत में रूपान्तर 'शैलेशी' की तरह शैलर्षि भी होता है। जिसका अर्थ है शैल के समान स्थिर ऋषि। ऐसे ऋषि केवली ही होते हैं। अथवा '**स एव अलेसी से लेसी**' इस निरुक्ति के अनुसार इसका अभिप्राय लेश्या से रहित केवली होता है। (जयधवल) इसी प्रकार सर्व संवर रूपशील का जो ईश है वह भी शैलेशी कहा गया है। शैलेशी-करण की यह स्थिति चौदहवें गुणस्थान में ५ लघु अक्षरों के उच्चारण समय तक ही रहती है। तत्पश्चात् आत्मा संपूर्ण कर्मों का क्षय होने से शुद्ध, बुद्ध और मुक्त बन जाता है।

शैलेशीकरण क्यों और कैसे ?

शैलेशीकरण या योगों की पूर्ण स्थिरता प्राप्त किये बिना मुक्ति सम्भव नहीं। यह कर्म-बन्ध की परम्परा समाप्त करने के लिए भी आवश्यक है। आत्मा की प्रत्येक स्थिति के तथारूप होने के लिए हमारे शुभाशुभ कर्म उत्तर-दायी हैं। जब आत्मा चौदहवें गुणस्थान में वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य कर्मों का क्षय कर डालता है तो योगों का सद्भाव भी समाप्त हो जाता है। तब आत्मा योग और लेश्या न रहने से पूर्ण स्थिरता को उपलब्ध कर लेता है।

'उत्तराध्ययन' अध्याय २९ में २८वें प्रश्न में पृच्छा की गई कि व्यवदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(वोदाण) से क्या फल होता है ? भगवान् का उत्तर था 'वोदाणेणं अकिरियं जणयइ' अर्थात् पूर्व संचित कर्म क्षय से आत्मा अक्रिय अर्थात् कर्मरहित अवस्था को प्राप्त करता है। आत्मा शुभाशुभ कर्मों से ही चंचल बना भिन्न-भिन्न गतियों में भटकता और अस्थिर बनता है। कर्म क्षय से ही उसका भटकना रुकता है। यह अक्रिय दशा पूर्वकृत कर्मों के क्षय से ही उपलब्ध होती है।

हमारे लिए आचरणीय बिन्दु :

(१) **समभाव की साधना**—उपर्युक्त विवेचन से हमने यह ज्ञात किया कि रागद्वेषादि कषाय की वृत्तियाँ ही आत्म विकास में प्रमुख बाधा हैं। ये कषाय भाव ही हमारे विकास में भारी अवरोध हैं। मात्र योग ही आत्मा को बंधनों में जकड़ने में समर्थ नहीं। केवल योगों के रहने पर तो कर्म-बन्ध की स्थिति बहुत हल्की होती है जिसकी तीसरे समय में निर्जरा हो जाती है। यदि अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में कोई प्रतिक्रिया न करते हुए केवल ज्ञाता द्रष्टा बनकर रहें तो समभाव की साधना में सफल बन सकेंगे।

(२) **कर्म-बन्ध ही संसार है और कर्म से मुक्ति ही मोक्ष है।**

रागद्वेषादि परिणामों से उत्पन्न कर्म पुद्गलों से बँधना कर्म-बन्ध है तो इनसे मुक्त होना मोक्ष है। इसके लिए आवश्यक है कि संसार में उदासीन भाव से रहने का हम सभी प्रयास करें। यहाँ हमारी रागद्वेष की स्थितियाँ नहीं रहें और हम आसक्त न बनें।

इसके साथ संवर और निर्जरा की साधना ही मोक्ष की साधना है। अतः हम सभी साधक संवर और निर्जरा की साधना में प्रवृत्त रहें।

(३) पाँच लघु अक्षरों की स्थिति हम सब शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं परन्तु इस स्थिति के लिए एक सुदीर्घ साधना आवश्यक है।

योग निरोध आदि उक्त विषयों को समझना हम सभी साधकों के लिए आवश्यक है। समझना इसलिए कि हम अपनी साधना की सही दिशा में सम्यक् रीति से अग्रसर हो सकें और निश्चित रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

आशा करूँ कि इस वार्ता पर आपकी यथायोग्य प्रतिक्रिया अवश्य प्राप्त होगी। आप यह अभिप्राय भी व्यक्त करेंगे कि भविष्य में हमारी बातचीत का विषय क्या रहना चाहिए ?

—३५, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर–३१३ ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७४वीं जन्म तिथि [पौष शुक्ला चतुर्दशी] पर विशेष लेख :

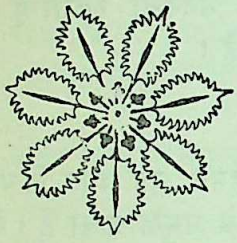

ज्योतिपुंज आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

☐ प्रो. संजीव भानावत

चेतनाशील तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा. जैन संत- परम्परा के विशिष्ट आचार्य हैं। आपने दस वर्ष की अल्पायु में अजमेर में अपने गरु पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म. सा. से भागवती जैन दीक्षा अंगीकृत की। आपका जन्म १९६७ में पौष शुक्ला १४ को पीपाड़ शहर में हुआ।

आपके पिता का नाम श्री केवलचन्दजी बोहरा था और माता का नाम था रूपादेवी। माँ रूपादेवी ने आपको ऐसे संस्कार दिये कि आप अपनी हस्ती का तेज अध्यात्म साधन के क्षेत्र में विकीर्ण करते हुये आज ७४ वर्ष की अवस्था में भी युवकोचित उत्साह लिये ज्ञान, दर्शन और चारित्र की त्रिवेणी में हजारों लोगों को अवगाहित करते हुए, संयम-साधना के पथ पर बढ़े जा रहे हैं।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. अपने असाधारण व्यक्तित्व और उर्वर मस्तिष्क में ज्ञान-क्रिया की अजस्र गंग-धारा समेटे हुए हैं। आप क्रांतद्रष्टा हैं। आपके विचारों में रचना-शीलता और रचना में विचारशीलता का सम्यक् समन्वय रहता है। आत्मकल्याण के साथ-साथ लोक कल्याण का पथ प्रशस्त करना आपकी साधना एवं चिन्तना का प्रमुख लक्ष्य है।

आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व आपने यह महसूस किया कि लोगों में धार्मिक क्रिया करने की होड़ तो है पर उनकी ज्ञान की दृष्टि मन्द सी है। यदि क्रिया के साथ ज्ञान का विकास नहीं हुआ तो धर्म क्रिया मात्र रुढ़ि बनकर रह जायेगी। अतः आपके उपदेशों की प्रेरणा के फलस्वरूप सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल की स्थापना की गई। आज यह संस्था जयपुर की प्रमुख धार्मिक संस्था है जिसके द्वारा आगम ग्रन्थों, आध्यात्मिक प्रवचनों, स्तोत्रों और सत् साहित्य का प्रकाशन किया जाकर सम्यक् ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया जाता है। इसी संस्था द्वारा जैन संस्कृति की प्रमुख मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' का विगत ४० वर्षों से नियमित प्रकाशन किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान की सार्थकता क्रिया अथवा आचरण में है, अतः आचार्य श्री ने ज्ञान के साथ आचरण और आचरण के साथ ज्ञान में समन्वय की दृष्टि से जन-समाज को स्वाध्यायपूर्वक समायिक करने की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप समाज एवं देश में आत्मबोध की विशेष चेतना जागृत हुई और देश व समाज में स्वाध्याय और ज्ञान-चर्चा का विशेष वातावरण बना। संवत् २०१६ में स्वाध्याय की प्रवृत्ति को जन-जन में प्रसारित करने के उद्देश्य से स्वाध्याय संघ की स्थापना की गयी जिसके माध्यम से देश के कोने-कोने से प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व के समय धर्माराधन कराने के लिए सैकड़ों स्वाध्यायी भेजे जाते हैं। पांच सौ से अधिक स्वाध्यायी शांति सैनिक के रूप में आचार्य श्री का अहिंसा और प्रेम का संदेश संप्रेषित कर रहे हैं।

सामायिक और स्वाध्याय की प्रेरणा देकर जनसाधारण के आत्म चैतन्य और पुरुषार्थ को जगाने के लिए आचार्य श्री गांव-गांव और नगर-नगर में पद यात्राएं करते रहे हैं। मारवाड़, मेवाड़, हाड़ौती, मालवा, मध्यप्रदेश तो आपका प्रमुख विचरण क्षेत्र रहा ही है पर अपने अध्यात्म-संदेश को देशव्यापी बनाने की भावना से विगत वर्षों में आपने गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडू प्रान्तों की सुदूर पद यात्राएं भी की हैं। इन यात्राओं में आचार्य श्री ने एक ओर देश की भावनात्मक एकता को पुष्ट करने पर बल दिया तो दूसरी ओर समाज को कुप्रथाओं से मुक्त करने और जीवन को निर्व्यसनी बनाकर सुसंस्कारी बनाने का विभिन्न नैतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों द्वारा अभियान छेड़ा जिससे हजारों आबाल वृद्ध स्त्री-पुरुष प्रभावित और प्रेरित हुए। आपके धर्मोपदेश की प्रेरणा स्वरूप स्वाध्याय की ज्योति पूरे देश में जगी और मध्य प्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, इन्दौर, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव, कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बंगलौर, जैसी संस्थाएं स्थापित हुईं जिनके माध्यम से जीवन परिवर्तनकारी यथेष्ट कार्य सम्पन्न हो रहा है।

आचार्य श्री पारम्परिक जीवन मूल्यों के संवाहक होते हुए भी आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन-अध्यापन के पक्षधर हैं। आपकी बराबर यह भावना रहती है कि जैन धर्म दर्शन के तत्त्वों का विवेचन और परीक्षण वैज्ञानिक प्रक्रिया से हो और विज्ञान से परे जो अनुभूति मूलक सत्य है, उसकी ओर भी वैज्ञानिकों की दृष्टि जाए। विभिन्न धर्मों एवं दर्शनों के तुलनात्मक अध्ययन एवं संस्कृत, प्राकृत, न्याय, व्याकरण, आगम शास्त्र आदि के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए आप ही की प्रेरणा से जयपुर में जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान की स्थापना आज से ११ वर्ष पूर्व की गयी। इस संस्थान में सुयोग्य विद्यार्थियों के लिए आवास, भोजन, अध्ययन आदि सभी प्रकार की निःशुल्क व्यवस्था है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान का मुख्य उद्देश्य समाज को विशिष्ट योग्य, तत्वज्ञ विद्वान् उपलब्ध कराना है।

समाज में पंडित परम्परा के आगमिक विद्वानों की निरन्तर कमी होती जा रही है। इस कमी को पूरा करने के लिए आप जहां भी जाते हैं, समाज को पूरी प्रेरणा देते हैं। आपकी प्रेरणा के फलस्वरूप ही जलगांव (महाराष्ट्र) में श्री महावीर जैन स्वाध्याय पीठ की स्थापना की गयी जहां प्राच्य विद्या के अध्ययन-अध्यापन की विशेष व्यवस्था है। यह विद्यापीठ विकसित होकर जैन विश्वविद्यालय का रूप ग्रहण करे, ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है।

आचार्य श्री का मानना है कि देश और समाज को सुसंस्कारी बनाने के लिए मातृशक्ति को जागृत कर प्रारम्भ से ही बच्चों में धार्मिक एवं चारित्रिक सुसंस्कार भरना आवश्यक है। नारी शक्ति को संगठित करने की भावना से आपकी प्रेरणा स्वरूप अ. भा. महावीर जैन श्राविका संघ का गठन किया गया। इस संघ का मुख्य कार्य है—महिलाओं को धर्म और समाज के सर्वतोमुखी विकास के कार्य में सक्रिय सहयोग देना, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना, महिलाओं में सामायिक, स्वाध्याय व्रत, नियम आदि धार्मिक क्रियाओं के प्रति अभिरुचि जागृत करना।

आचार्य श्री जैन आगम साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित और व्याख्याता होने के साथ-साथ इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् और गूढ़ गवेषक भी हैं। आपकी प्रेरणा से स्थापित जैन इतिहास समिति, जयपुर द्वारा प्रकाशित, जैन धर्म का मौलिक इतिहास, भाग १, २, ३ में जैन संस्कृति के धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक दाय का प्रमाण-पुरस्सर विवेचन है।

आचार्य श्री भारतीय साहित्य और संस्कृति तथा जैन विद्या के संरक्षण, संवर्धन और संपोषण के लिए सदैव समर्पित हैं। जैन इतिहास-प्रणयन के समय आपने राजस्थान और गुजरात के कई हस्तलिखित, ग्रन्थ भण्डारों का निरीक्षण कर सैकड़ों हस्तलिखित प्रतियों का अवलोकन-अध्ययन किया। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की दुर्व्यवस्था देखकर आपके मन में इनको व्यवस्थित और एक स्थान पर संगृहीत करने की भावना जागृत हुई। आपकी प्रेरणा के फलस्वरूप ही जयपुर में आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार की स्थापना हुई जिसमें १२ वीं शती से लेकर १९ वीं शती के लगभग तीस हजार हस्तलिखित ग्रन्थ, दुर्लभ शास्त्रों की प्राचीन प्रतियां, अलभ्य प्राचीन चित्र, नक्शे आदि संगृहीत हैं। राजस्थान, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, गुजरात, गोरखपुर, पूना, जबलपुर, औरंगाबाद, इन्दौर, उदयपुर, जोधपुर आदि विश्वविद्यालयों के शोध-छात्रों ने यहां की सामग्री का उपयोग कर अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078759

आचार्य श्री की वाणी में साधना का अमित बल और वात्सल्य का अनन्त माधुर्य छलका पड़ता है। यही कारण है कि जो भी आपके सम्पर्क में आता है, आपके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। आपके सम्पर्क और सान्निध्य ने हजारों लोगों को निराशा में आशा की किरण तथा उदासी में आस्था की ज्योति प्रदान की। आप हमेशा अप्रमत्तभाव से अपनी साधना में लगे रहते हैं। आप आगमिक ज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित और शास्त्रीय व्याख्याता हैं। प्रश्न व्याकरण सूत्र, नन्दी सूत्र, अन्तगढ़दशा सूत्र, वृहत कल्पसूत्र, दशवैकालिक और उत्तराध्ययन पर की गयी आपकी टीकायें और विवेचना विद्वत् समाज के साथ-साथ स्वाध्यायी श्रावकों के लिए बड़ी उपयोगी रही हैं। आपके प्रवचन अनुभूतिपरक होने से सीधे श्रोता के मर्म को स्पर्श कर उनमें प्रेरणा की ऐसी चमक भरते हैं कि वह आत्म विभोर हो उठता है।

उनमें कहीं आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार की दिव्य आनन्दानुभूति का उल्लास है तो कहीं समाज की विसंगतियों और विकृतियों पर किए जाने वाले प्रहार की ललकार है। आपके प्रवचनों के कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें मुख्य हैं—आध्यात्मिक साधना भाग १ से ४, आध्यात्मिक आलोक भाग १ से २, प्रार्थना प्रवचन, गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग १ से ७। आपकी संयम साधना सुदीर्घ काल तक मानवता का पथ आलोकित करती रहे। इसी भावना के साथ हार्दिक वन्दनांजलि।

—पत्रकारिता विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–४

□ • □

जड़

खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमांत गांधी) के मुहल्ले में एक मौलवी साहब रहते थे। सारा मुहल्ला उन्हें पीर की तरह पूजता था। एक दिन मौलवी साहब ने अपनी बकरी खाँ साहब को देते हुए कहा कि इसे खूँटे से बाँध दो। बकरी पूरी शैतान की खाला थी। उछलकर भागी तो रस्सी हाथ से छूट गई। खाँ साहब ने उचक कर उसके पैरों को पकड़ लिया।

यह दृश्य मौलवी साहब देखते रहे। बोले, "बेटा, यही है जीवन का वास्तविक सूत्र। जड़ पकड़ लेने पर पूरा पेड़ तुम्हारा हो जायेगा।"

—कमल सौगानी
स्टेशन रोड, भवानीमंडी–३२६ ५०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

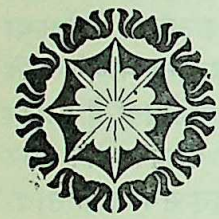

'मानस' में गुणस्थान

□ पं० श्री सूरजचन्द जी 'सत्यप्रेमी'

गुणस्थान जैन दर्शन का एक पारिभाषिक शब्द है। क्रमिक विकास की चौदह विभिन्न मानस-अवस्थाओं को गुणस्थान कहते हैं; अतः गोस्वामी सन्त तुलसीदास के 'मानस' से उनका सम्बन्ध होना चाहिये—इस अनुमान के साथ मानस-पारखी हृदय ने खोज शुरू की तो सहसा दृष्टि उत्तरकाण्ड की इस चौपाई पर टिक गई :—

जड़ चेतन महँ ग्रन्थि परि गई ।
जदपि मृषा छूटत कठिनई ।।

मृषा और मिथ्या—दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। **मिथ्यात्व** पहला गुणस्थान है, जिसमें यथार्थ पर अश्रद्धा भी होती है और अयथार्थ पर श्रद्धा भी। उससे जीव संसार में भटकता रहता है :—

तब तें जीव भयउ संसारी ।।

यह संसारी जीव जब बहुत दूर से किसी टिमटिमाते दिये के समान सम्यक्त्व की झलक पाता है—ओस कण की तरह जरा सा स्वाद चखता है, तब वह **"सास्वादन"** नामक दूसरी अवस्था में आता है; परन्तु पलभर बाद वह पुनः उसी मिथ्यात्व के घोर अन्धकार में खो जाता है :—

जीव हृदय तस मोह विसेखी ।।

हृदय का यह विशिष्ट मोहान्धकार उसे दूसरे गुणस्थान में टिकने नहीं देता।

यद्यपि ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती; फिर भी बार-बार चाटने से एक आकर्षण जरूर पैदा हो जाता है। उधर से अनादिकालीन मोह विकर्षण भी करता है, आकर्षण और विकर्षण की शक्ति जब बराबर हो जाती है, तब जीव स्तब्ध हो जाता है—चकित हो जाता है—किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही **"मिश्र"** नामक तृतीय अवस्था है, जिसमें धोबी के कुत्ते की तरह जीव न घर का रहता है न घाट का।

छूट न ग्रन्थि न होइ सुखारी ।।

इस रस्साकशी के खेल में जब शुभ विचार का पक्ष प्रबल होता है, तब जीव की दृष्टि सम्यक् हो जाती है—उसकी श्रद्धा सच्ची हो जाती है :—

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ।।

आचरण प्रारंभ होने से पूर्व की यह अवस्था **"अविरत सम्यग् दृष्टि"** नामक चतुर्थ गुणस्थान है। फिर :—

जप तप व्रत जम नियम अपारा ।
जो स्रुति कह सुभ धर्म अचारा ।।
तेइ तृन हरित चरै सब गाई ।।

गाय हरी घास को ऊपर-ऊपर से थोड़ा-थोड़ा चरती है, उसी प्रकार जप-तप-व्रतादि का थोड़ा-थोड़ा अनुष्ठान श्रद्धा करती है। यह आंशिक विरक्ति ही **"देशविरति"** नामक पंचम अवस्था है।

श्रद्धा रूपी गाय जब जप-तप-व्रतादि की घास भरपेट खा लेती है, तब वह प्रमाद में पड़ जाती है अर्थात् जीव को **"प्रमत्त संयत"** बनाती है, जो छठा गुणस्थान है।

यह प्रमाद सातवीं अवस्था से हटकर जीव को **"अप्रमत्त संयत"** बना देता है। उस समय शुद्ध भाव के बछड़े को देखकर श्रद्धा-गाय के थन भर जाते हैं :—

भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ।।

उस अवस्था में कर्त्तव्य के प्रति जीव का उत्साह निरन्तर बना रहता है, फिर मन रूपी ग्वाले के द्वारा श्रद्धा-गाय की पिछली टांगें निवृत्ति रूपी नोइ (रस्सी) से बाँध दी जाती हैं, इससे वह अन्धी श्रद्धा नहीं बन पाती। इसके बाद विश्वासरूपी पात्र में वह (मन रूपी ग्वाला) दूध दूहने को तैयार हो जाता है :—

नोइ निवृत्ति पात्र विस्वासा ।
निर्मल मन अहीर निज दासा ।।

उस समय समता-भाव की अभूतपूर्व अनुभूति होती है, जो **अपूर्वकरण** नामक अष्टम-अवस्था है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही अनुभूति जब अन्य समताभावियों के समकक्ष हो जाती है, तब जीव को उत्तम धर्म रूपी दूध प्राप्त होता है :—

परम धर्ममय पय दुहि भाई ।।

यही **"अनिवृत्तिकरण"** नामक नवम अवस्था है। समभाव रूपी परम धर्म की प्राप्ति के साथ ही द्वेष छूट जाता है; किन्तु राग रह जाता है :—

अवटै अनल अकाम बनाई ।।

निष्कामता की अग्नि में उस धर्मदुग्ध को खूब औटाया जाता है। इससे राग-विकार नष्ट हो जाता है; परन्तु सूक्ष्म लोभ रह जाता है; इसलिए दशम अवस्था को **"सूक्ष्मसम्पराय"** कहते हैं।

क्षमा और सन्तोष की हवा से जब वह दूध ठंडा हो जाता है, तब उसमें धैर्य और शम (शान्ति) की खटाई डाल देते हैं :—

तोष मरुत तम छमाँ जुड़ावै ।
धृति सम जावनु देइ जमावै ।।

इस प्रकार धर्मदुग्ध जब दही की तरह जम जाता है, तब मोह शान्त हो जाता है। यही **"उपशान्त मोह"** नामक ग्यारहवाँ गुणस्थान है। इसमें मोह शान्त ही होता है, नष्ट नहीं होता; इसलिए यहाँ तक पहुँचे हुए जीव के भी पतन की पूरी सम्भावना बनी रहती है :—

छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ।
विघ्न अनेक करइ तब माया ।।
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना ।
तहँ-तहँ सुर बैठे करि थाना ।।
आवत देखहिं विषय बयारी ।
ते हठि देहिं कपाट उघारी ।।

इसलिए यहाँ प्रतिक्षण चौकन्ना रहने की—विवेक को जागृत रखने की अत्यन्त आवश्यकता है :—

कहत कठिन समुझत कठिन
साधन कठिन विवेक ।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं
पुनि प्रत्यूह अनेक ।।

इन समस्त विघ्नों में अडिग रहकर जो उस परमधर्म रूपी दूध से जमे दही से बने मक्खन को उबालकर ज्ञानरूपी घी को बुद्धि से ठंडा करता है, उसका ममता-मल जल जाता है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत,
ममता-मल जरि जाइ ।।

उस घी के दिये के प्रकाश में :—

प्रबल अविद्याकर परिवारा ।
मोह आदि तम मिटइ अपारा ।।

यही **"क्षीणमोह"** नामक बारहवाँ गुणस्थान है। इसके बाद अन्तिम सर्वोत्तम कैवल्यपद (केवलज्ञान) प्राप्त हो जाता है :—

जो निर्विघ्न पन्थ निर्वहइ ।
सो कैवल्य परमपद लहइ ।।
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद ।
सन्त पुरान निगम आगम वद ।।

यही तेरहवीं **"सयोगी केवली"** अवस्था है। विकास की इस श्रृंखला में अन्तिम चौदहवाँ गुणस्थान है—**"अयोगी केवली"**, जिसमें जीव मुक्त हो जाता है, संसार के चक्र से छूट जाता है और मोक्ष के शाश्वत सुख में रमण करने लगता है :—

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई ।
कोटि भाँति कोउ करै उपाई ।।
तथा मोच्छ सुखु सुनु खगराई ।
रहि न सकइ हरिभगति विहाई ।।

जहाँ हरि से विभक्ति (अलगाव) का अभाव होता है, वहीं भक्ति है। सिद्ध अवस्था में कोई किसी से विभक्त या विशिष्ट नहीं रहता। परम बुद्धिमान् भक्त हनुमान ने कहा था :—

आत्मदृष्ट्या त्वमेवाहमिति मे निश्चिता मतिः ।।

आत्मतत्त्व की दृष्टि से आप (श्रीराम) में और मुझमें कोई भेद नहीं है—यह मेरी निश्चित मान्यता है।

गुणस्थान सोपान की यह समस्त प्ररूपणा होती है—भगवान् भुशुण्डि के द्वारा गौतम-गरुड़ की तीव्रतम जिज्ञासा शान्त करने के लिए।

अन्त में कहना है कि मिथ्यात्व से मुक्ति-मंजिल तक के मार्ग का 'मानस' के माध्यम से यह समस्त वर्णन "मानस" परायण को नवीन छवि और चिन्तन का नया आयाम प्रदान करता है।*

—डांगी भवन, बड़ी सादड़ी (राज०)–३१२ ४०३

*यह आलेख हमें श्री शान्तप्रकाश 'सत्यदास' A-६, दुर्गापुरा कॉलोनी, बिरला ग्राम, नागदा जं० से प्राप्त हुआ है। **—सम्पादक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय प्रवास

स्वार्थ विजय [५]

☐ अनुवादक : श्री लालचन्द्र जैन

[गतांक से आगे]

तुम्हारे व्यवहार को मैंने यहाँ प्रत्यक्ष देखा है, जिससे मुझे तुम पर दया और खेद होता है। तुम खुद डूबने वाले और दूसरों को भी डुबाने वाले हो। तुम नरक के घोर मार्ग के पथिक बन चुके हो। तुम्हारे जैसे वेषधारी मुनि वीरप्रभु के प्रभाविक शासन को सर्वथा कलंकित करने वाले और आर्हत धर्म का विनाश करने वाले हैं। तुम्हारे से तो अनपढ़ साधु और पवित्र गृहस्थ श्रावक सौ गुणे अच्छे हैं। तुम्हारे जैसे आडम्बरी साधुओं के विचरण से यह भारत भूमि बोझ से लद गई है। तुम्हारे शिष्यों के मध्य तुम्हें अधिक कहना मुझे अच्छा नहीं लगता, पर तुम्हें अनुचित कार्य करते थोड़ी भी शर्म नहीं आती, यह विशेष शोचनीय बात है।"

इतना कहकर दीक्षाकुमारी चुप हो गई और अपनी भयंकर किन्तु दयालु दृष्टि से मुनियों को देखने लगी। महेश्वरी के वचन सुनकर स्वार्थ विजय का मुँह नीचा हो गया। उसके हृदय से उष्ण निःश्वास निकलने लगी और ग्लानि की मलीन छाया उसके अंग-प्रत्यंग में फैल गई। उसके शरीर के अवयव कँपकँपी से हिलने लगे। उसने कुछ कहने का विचार किया किन्तु भय और थर्राहट के आवेश में उसके बोल नहीं फूटे। कुछ देर बाद बड़ी मुश्किल से वह बोलने में समर्थ हुआ। दीनतापूर्वक और मंद स्वर से वह बोला, "हे दिव्य-मूर्ति ! आप कौन हैं ? इस वक्त यहाँ कहाँ से आयी हैं ? आपके मुख से अभी जो आकाशवाणी हुई है, वह **'आचारांग सूत्र'** के दूसरे अध्ययन का उपदेश है। आपने यथा समय उनका उच्चारण किया है। महेश्वरी ! मैं आपका अपराधी हूँ, मेरे जो भी दोष आपने देखे हों, उनके लिये आप मुझे क्षमा प्रदान करें। मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास है कि आप जिन-शासन के कोई देव हैं, अतः आप में दयालुता विशेष होनी चाहिए। इस गरीब साधु पर दया कर उसे क्षमा करें।"

स्वार्थ विजय के वचन सुनकर दीक्षाकुमारी ने रोषपूर्वक उग्र स्वर में उत्तर दिया, "अरे वेषधारी मुनि ! अब तू मेरे पास गरीबी दिखा रहा है, पर अभी-अभी मैंने तेरा जो अनुचित आचरण प्रत्यक्ष देखा है, उसकी याद मेरे हृदय से गई नहीं है। उसको याद करते ही मेरे हृदय से ज्वाला उठती है जो मेरे दिल की दयालुता-बेल को भस्म कर देती है। तथापि अरिहत प्रभु के पवित्र धर्म के आश्रय से मेरे दिल की वह बेल पूर्ण रूप से नहीं जल पाती। इसीलिये मुझे तुझ पर दया आती है।

"अरे अनाचारी अनगार ! मुझे तुम्हें सन्मानपूर्वक संबोधित करना चाहिये, पर तेरे अनाचार ने ही तेरा मान खोया है। फिर भी जहाँ तक तुझ में आर्हत धर्म के गुरु का पवित्र वेष है और उस धर्म की महान् विद्या का ज्ञान तेरे दिमाग में है, तब तक तुझे तू कह कर बुलाने में मुझे शर्म महसूस होती है। हे मुनि ! जरा मन में सोच। तेरे हृदय में 'आचारांग सूत्र के ज्ञान का तेजस्वी प्रकाश है, फिर भी वहाँ से अंधकार क्यों नहीं मिटा ? मुनि ! तुम मेरा स्वरूप जानना चाहते हो, पर तुम्हारे जैसे आचार रहित मुनि को अपना स्वरूप बताने में भी मुझे लज्जा आती है। क्योंकि तुमने मेरे स्वरूप का अनादर किया है, तिरस्कार किया है, फिर भी दया धर्म के प्रभाव से तुम्हारी दीन आत्मा पर दया कर मैं अपना स्वरूप तुम्हारे आगे प्रकट कर रही हूँ।

"हे मुनि ! मैं दीक्षाकुमारी हूँ, चारित्र दीक्षा के महाव्रतों की अधिष्ठात्री ! वेष और ज्ञान का आडम्बर कर मेरे स्वरूप को धारण कर तुम इस संसार में विचरण करते हो। तुम्हारे जैसों के पास यद्यपि मेरा सत्य और शुद्ध स्वरूप नहीं है, तथापि मेरे नाम मात्र से तुम्हारे जीवन का निर्वाह होता है। आजकल तुम्हारे जैसे वेषधारी मुनि अधिक हैं, इसीलिये उनका उद्धार करने के लिये मैं भारत के कुछ भागों की यात्रा कर रही हूँ। पहली यात्रा में मैंने यथा शक्ति अपने कर्त्तव्य को निभाया था, पर उससे मुझे असंतोष ही रहा, अतः अब दूसरी यात्रा पर निकली हूँ। इस यात्रा पर चलते समय एक पवित्र दिव्य आत्मा ने प्रकट होकर मुझे कहा था कि 'महादेवी ! वर्तमान काल में अधिकांश मुनि अनाचार की ओर प्रवृत्ति करने लगे हैं, यह देखकर आपको विशेष दुःख होगा, अतः आप इस दूसरी यात्रा पर न निकलें।' उस महात्मा के वचन मुझे यथार्थ लग रहे हैं, फिर भी तुम लोगों को उपदेश-शिक्षा देने के लिये मैं दूसरी यात्रा पर निकली हूँ। मुझे आशा है कि वीर प्रभु का शासन समाप्त नहीं होगा। अभी भी किसी आचार से अलंकृत चारित्र धर्म को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावित करने वाले महामुनि के दर्शन हो सकेंगे, जिससे मेरे मन का संतोष प्राप्त होगा। स्वार्थ विजय ! मेरी यह आशा अभी तक सफल नहीं हुई। थोड़े दिन पहले मैं एक नगर में गई थी, वहाँ भी मैंने बहुत अनाचार देखा। उसके बाद यहाँ आई हूँ और यहाँ भी तुम्हारे अनाचार को देखकर मेरा हृदय अतिशय शोकाकुल हुआ है। पहले नगर के उपाश्रय में मैंने जो अनाचार देखा था, वह ज्ञान के अभाव में था, अतः मुझे इतना दुःख नहीं हुआ। किन्तु इस उपाश्रय में तो मुझे ज्ञान के होते हुए अनाचार दिखाई दिया, जिससे मेरे मन को बहुत खेद हुआ। मुनि ! तुम विद्वान् हो, अपने आचार ग्रंथ को जानते हो, आचारांग जैसे उत्तम सूत्र का तुमने अध्ययन किया है, फिर भी अनाचार में प्रवर्तित होते हो, यह कितने दुःख की बात है ? मैंने जो उपदेश दिया, वह तुम्हारे आचार धर्म का ही है, उसका हृदय से विचार करो। महात्मा सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी को इसी सूत्र से उपदेश दिया था, उसके प्रत्येक अक्षर को तुम्हें अपने हृदय में अंकित कर लेना चाहिये। जब जानते हुए भी तुम ऐसी अज्ञानता की प्रवत्ति करोगे, तब इस महासूत्र के ज्ञान को कौन चरितार्थ करेगा ? जरा सोचो, यदि यही हाल रहा तो तुम्हारा आचार निराधार हो जायगा और कुछ दिनों बाद संसार में इसको कोई जानेगा भी नहीं।"

दीक्षाकुमारी के उक्त वचन सुनकर स्वार्थ विजय ने हाथ जोड़कर कहा—"महेश्वरी ! क्षमा करें ! इस दीन मुनि के सहस्र अपराधों को भी क्षमा कर उसे मुनि धर्म के सच्चे मार्ग को बतावें। मैं मूर्ख, अज्ञानी, अनाचारी, इस पंचम-काल से पराभूत आपका एक गरीब बालक हूँ। मेरा ज्ञान-रत्न मेरे पास होते हुए भी, मैं अपनी मूर्खता की छाया से आच्छादित हो गया हूँ। ज्ञान को भूल कर मैं अज्ञान के अंधकार में भटक गया हूँ। हे माता ! पुत्र कुपुत्र हो सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं होती। दयालु देवी ! इस गरीब बालक पर दया करें। उत्तम मार्ग दिखाकर मेरी मलिन आत्मा का उद्धार करें। महेश्वरी ! मैं सर्व प्रकार से नालायक, अनाचारी, भ्रष्ट और मूर्खता में मग्न हूँ, फिर भी मैं अपनी आत्मा को पुण्यवान मानता हूँ, क्योंकि आज आप महादेवी के दर्शन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। यदि पुण्य का सम्पूर्ण अभाव होता तो ऐसी अंधेरी रात में आपकी दिव्यमूर्ति के दर्शन कैसे होते ? आपने कृपा कर मुझे अपने पवित्र दर्शन कराये हैं, अतः अयोग्य होते हुए भी मुझ में कुछ योग्यता होगी, ऐसी आशा है। महादेवी ! अब क्षमा कर मेरे मुनि जीवन पर दया करें और मेरी आत्मा भवभ्रमण में न फँसे, ऐसा मार्ग दर्शन करें।"

क्षमा याचना के शब्द सुनकर दीक्षाकुमारी कुछ शांत हुई और हृदय को दयार्द्र करते हुए कहा, "मुनि ! तुम्हारी क्षमा याचना से मुझे दया आती है। परन्तु क्या तुम वास्तविक क्षमा याचना कर रहे हो ? मुझे तो अब भी संदेह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रहा है। भविष्य में तुम मन, वचन और क्रिया में एकता रखोगे। जैसा मन में हो उसे वैसा ही कहना और उसी प्रकार उसे क्रियान्वित भी करना। मेरे साथ छल करने का प्रयत्न मत करना। यदि तुम छल करोगे तो मैं अपने ज्ञान बल से उसे जान लूंगी। प्रतिपक्षी के शुद्ध या अशुद्ध विचारों का प्रतिबिम्ब मेरे हृदय में पड़े बिना नहीं रहता। अतः मेरे समक्ष शुद्ध विचार ही प्रकट करना। छल, कपट, माया, ठगाई, आडम्बर और ढोंग मेरे समक्ष नहीं चलेंगे। तुम्हारे मधुर व्याख्यानों के जाल में अल्प बुद्धि श्रावक और अज्ञानी श्राविकाएँ ही फँसती है, मैं कभी तुम्हारे मायावी जाल में फँसने वाली नहीं हूँ। स्वार्थ विजय ! तुम्हारे प्रति मुझे जितनी दया आती है उससे अधिक तो मुझे तुम्हारे इन शिष्यों पर आती है। ये बेचारे भी भेड़ चाल से तुम्हारे दोष रूपी गड्ढे में गिरेंगे और तुम्हारे साथ इनकी आत्माएँ भी अनंत संसार में भटकेंगी।

"मुनि ! शुद्ध हृदय से तुम इस बारे में सोचो। मुझे तुम्हें तुम्हारे व्यवहार के विषय में बोध देना चाहिये। यद्यपि तुमने आचारांग सूत्र का अध्ययन किया है जिससे तुम्हें उसी विषय का बोध देना पिष्टपेषण जैसा ही है, तथापि तुम्हें फिर से याद कराने के लिये मुझे दो शब्द कहने ही पड़ेंगे। मुनि ! आचारांग सूत्र के दूसरे अध्ययन में तुम्हारे आचार का कैसा शुद्ध स्वरूप बताया गया है, उसका एकाग्रता से चिंतन करें। इस अध्ययन में उल्लिखित 'लोक विजय' के स्वरूप का मनन करें। इसके मनन से तुम्हें ज्ञात होगा कि अभी-अभी तुमने क्या अनाचार किया था ? चारित्र-रत्न को ग्रहण करने के पश्चात् सम्बन्धियों से संसर्ग रखना चारित्र धर्म के विरुद्ध है। पवित्र संयम का पालन करने के लिये ही सारे परिवार का त्याग कर तुमने मेरे स्वरूप को ग्रहण किया है। अब पुनः उनसे सम्बन्ध रखना और उन्हें सांसारिक कार्यों में धन से मदद करवाना, कितना धर्म विरुद्ध है ? मुझे कहते हुए भी कँपकँपी छूटती है कि अपने भाई और साले को श्रावकों से बलपूर्वक आर्थिक मदद दिलवाने की तुम्हारी कोशिश कितनी विपरीत है ? तुम्हारे जैसे कपटी साधु बेचारे भक्त श्रावकों से इसी प्रकार हजारों रुपये खर्च करवाते होंगे। कैसा अन्याय है ? कोई अपनी धार्मिक कीर्ति के लिये बड़े-बड़े आडम्बरी उत्सवों में, कोई पात्र-अपात्र की परीक्षा किये बिना बेचारे भोले श्रावकों के बच्चों को छुपा कर दीक्षा देने में, कोई आवश्यकता से अधिक पुस्तक, वस्त्र, पात्र आदि वैभव की वस्तुएँ लेने में, तो कोई तुम्हारी तरह अपने सगे-सम्बन्धियों और मित्रों की आर्थिक मदद कराने में श्रावकों के घर से हजारों रुपये खर्च कराते हैं। हा ! आर्हत धर्म की यह कैसी दशा हुई है !!

"वेषधारी मुनि डाकुओं के समान श्रावकों को लूटते हैं। उनकी इस लूट के कारण बेचारे दूसरे आवश्यक क्षेत्र कोरे ही रह जाते हैं। सात क्षेत्रों के द्रव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अकेला साधु क्षेत्र ही हजम कर जाता है और श्रावकों के धन का अधिकांश अशुद्ध साधु क्षेत्र में भस्म हो जाता है। इस अवसर पर मुझे श्रावकों को भी उपालंभ देना पड़ेगा। वे अंध-भक्त बनकर अपने धन का दुरुपयोग करते हैं, हजारों श्रावक निराश्रित और गरीबी से दुःखी हैं, हजारों श्रावकों के पुत्र बुद्धिवान् होने पर भी आश्रय के अभाव में निरक्षर रहकर भटकते हैं, हजारों सुहागनें और विधवा श्राविकाएँ सेठानी के पद से भ्रष्ट होकर दासी की स्थिति भोग रही हैं, हजारों सुन्दर कन्यायें गरीबी के कारण बेची जाती हैं और दुःखी संसार में रहती हैं और हजारों सुन्दरियें वृद्ध विवाह की विपत्ति को भोगती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। ऐसे-ऐसे द्रव्य के सदुपयोग के स्थानों को भूलकर वेषधारी साधुओं की सेवा भक्ति में पड़े हुए श्रावक दिन दहाड़े लुट रहे हैं।"

इतना कहकर दीक्षाकुमारी शोक मग्न हो गई, उसके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी और उसका कंठ गद्गद् हो गया।

स्वार्थ विजय ने पुनः नम्रता से कहा, "महेश्वरी! धैर्य धारण करें। आप जैसी महाशक्ति भी जब यों विचलित हो जायगी, तब आर्हत धर्म किसका अवलम्बन लेगा? आपका धर्म के प्रति इतना लगाव देखकर मेरे हृदय में अतिशय पश्चाताप हो रहा है। मैं अपनी आत्मा की सच्चे दिल से निंदा करता हूँ और मेरे जैसे अन्य साधुओं को भी धिक्कारता हूँ। महादेवी! आपकी धर्मानुरक्तता देखकर मैंने अपने मन में निश्चय किया है कि भविष्य में मैं कभी भी साध्वाचार के विरुद्ध एक कदम भी नहीं रखूँगा। न अपने अनुयायियों को ऐसा कोई कदम उठाने दूँगा। आपके मुखारविंद से जो शब्द निकले हैं, वे यथार्थ हैं। वर्तमान समय में साधु अपने स्वरूप को भूल गये हैं और मद तथा प्रमाद से भ्रमित हो गये हैं। यद्यपि मुख्य दोष तो हमारा ही है, किन्तु आजकल के अंधभक्त और चापलूस श्रावकों ने भी हमारी अधोगति की है क्योंकि गुरु-भक्ति के बहाने से वे हमारी अनुचित चापलूसी करते हैं। वे हमें ललचा कर हमारे चारित्र के शुद्ध आचार में से हमें भ्रष्ट करते हैं। कुछ तो अधिक भक्ति-वश हमें भौतिक पदार्थों के प्रति आसक्त बनाकर हमें साध्वाभास बना देते हैं। फिर भी दोषी तो हम ही हैं, क्योंकि यदि हम हमारे धर्म का दृढ़ता से आचरण करते रहें तो वे बेचारे हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं? हम अल्प-बुद्धि वाले हैं, इसीलिये वे हमारा अधःपतन करने में समर्थ हो जाते हैं। वे हमें एक ही स्थान पर रहने का आग्रह कर हमारी विहार की मर्यादा को तोड़ते हैं। इससे हम इतने अधिक उनके संसर्ग में आ जाते हैं कि अपने को उनके सम्बन्धी जैसा समझकर व्यवहार करने लगते हैं। इससे हम में गृहस्थपन के गुण आने लगते हैं, फिर हम अपने सगे सम्बन्धियों से विशेष परिचय करना सीखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महामाता ! इसीलिये हम अपने सम्बन्धियों की मदद करने को तैयार होते हैं। मैं भी इसी तरह भ्रष्टाचारी बना हूँ और अपने सम्बन्धियों की मदद करने को तत्पर हुआ हूँ। हे चारित्र देवी ! अब मैं कभी ऐसा आचरण नहीं करूँगा। मन, वचन और काया की शुद्धि से मैं अपने धर्म का पालन करूँगा। आपका दीक्षा-स्वरूप जो मुझे अनेक पूर्व भवों के पुण्य-संचय से प्राप्त हुआ है, उसकी मैं शुद्ध भाव से रक्षा करूँगा। माँ ! मेरे अपराध को क्षमा करें और मुझ में चारित्र-पालन की बुद्धि अखंडित रहे ऐसा आशीर्वाद दें। मैं आपका गरीब बालक और पूर्ण अपराधी हूँ।"

मुनि स्वार्थ विजय के उपरोक्त वचन सुनकर दीक्षाकुमारी शांत हुई और उस दयालु देवी के हृदय में दया अंकुरित हो गई। उसने मधुर स्वर से कहा, "मुनि ! तुम्हारी प्रवृत्ति के स्मरण मात्र से मुझे तुम्हारे प्रति अप्रीति उत्पन्न होती है, पर तुम्हारे उपरोक्त वचन सुनकर मुझे दया भी आती है। तुम्हारे जाग्रत-सुप्त हृदय पर अपने उपदेश की छाप लगाने के लिये मैं सोच रही हूँ, क्योंकि मुझे लग रहा है कि किसी परिस्थिति वश तुम भ्रष्टाचारी बन गये हो, पर वास्तव में तुम भवि जीव हो। अतः धर्मोपदेश के पात्र हो। मुनि ! तुम विद्वान् और आचारांग सूत्र के जानकार होकर भी आचार के स्वरूप को भूल जाते हो, यह कितनी खेद की बात है ? अविद्वान् और अज्ञानी पुरुष अपने आचार की यथार्थता को न जानकर भूल कर सकता है, पर तुम्हारे जैसे विद्वान् साधु जब जानकर भी भूल करें तब आश्चर्य होता है।"

स्वार्थ विजय—"भगवति ! आपके वचन यथार्थ हैं। मैंने जानते हुए भी बड़ी भूल की है, पर मुझे आपके समक्ष सच्चाई प्रकट कर देनी चाहिये। महादेवी ! आजकल पंचमकाल का प्रभाव इतना विपरीत चल रहा है कि शास्त्र का अभ्यास कर विद्वान् बने मुनि और गृहस्थ ही विशेषतः शास्त्राज्ञा के विरुद्ध प्रवृत्ति करते हैं। विद्वान् मुनियों से तो सामान्य ज्ञान वाले साधु अधिक शुद्ध आचार का पालन करते हैं। गृहस्थों में भी विद्वान् और धर्म के विशेष ज्ञानी गृहस्थों से निरक्षर गृहस्थ धर्म का अधिक शुद्ध पालन करते हैं, इसका कारण क्या है ? अपने अनुभव से मुझे ज्ञात हुआ है कि हमारे जैसे विद्वान् मुनियों को जिन्हें अभी पूरी प्रौढ़ता प्राप्त नहीं हुई है, अज्ञानी श्रावक अधिक मान देकर मदांध बना देते हैं, बड़े आडम्बर से उनका स्वागत करते हैं, बहुत सन्मान देते हैं और उन्हें पन्यास, गणी और आचार्य तक के पदों से विभूषित कर देते हैं। मानो सारे देशों की प्रजा और सारे मुनि मण्डलों के वे ही राजा हों, ऐसा आधिपत्य उन्हें सौंपते हैं। अल्प बुद्धि श्रावक यह नहीं सोचते कि मुनियों की पदवियें कितनी खतरे से भरी हैं। जिसमें उम्र, स्वभाव, विद्या, क्षमा, तप और आचार की मुख्यता हो और जो संघ के कार्यों को करने तथा मुनियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुशासन में रखने की योग्यता हो, ऐसे दीर्घ और विशाल विचार वाले शांत गुणी महात्माओं को ही ऐसे पदों के लिये चुनना चाहिये। ऐसी प्रौढ़ पदवियें बिना सोचे ही हमारे जैसे अधपक मुनियों को देने से हमारी ऐसी अवनति होती है। बिना योग्यता के पद पाकर कुस्वभावी मुनि तुरन्त बहक जाते हैं और घमंड के घोड़े पर चढ़कर सारे विश्व को अपने वशीभूत मानने लगते हैं। महादेवी ! इन्हीं कुछ कारणों से हम आचार भ्रष्ट होते हैं। अतः आप जैसी दयालु देवी को दयाकर भारतवर्ष की यात्रा कर सभी मुनियों को उनके आचार के सम्बन्ध में उपदेश देना चाहिये। विश्व-जननी ! मैं आचारांग सूत्र को जानते हुए भी आपके मुखारविंद से उसे सुनना चाहता हूँ अतः कृपा कर हमें वह पवित्र वाणी सुनाइए। (क्रमशः)

बोझ....

☐ श्री कमल सौगानी

महाराज रणजीतसिंह के शासन काल में एक बार पंजाब में अकाल पड़ा। राज्य की ओर से अकाल-पीड़ितों के लिए मुक्त अनाज बांटने की व्यवस्था की गई। इस में कोई अव्यवस्था या बेईमानी न होने पाये, इस के लिए महाराज निगरानी करते थे।

एक दिन किसी बुढ़िया को एक बोरी गेहूँ दिया गया। यह बोझ उठाना उसके लिए कठिन था। वह सहायता के लिए इधर-उधर देख रही थी कि मैले-कुचैले कपड़े पहने एक व्यक्ति उसके पास पहुँचा। उसने बुढ़िया की बोरी सिर उठा ली और उसके घर ले गया। जब बुढ़िया उसे कुछ मजदूरी देने लगी तो पास खड़े लोगों ने 'मजदूर' को पहचान लिया। बुढ़िया जानकर चकित रह गयी कि उसका बोझ उठाने वाला कोई मजदूर नहीं, स्वयं महाराज रणजीतसिंह थे।

—स्टेशन रोड, भवानीमण्डी (राज.)
पिन-३२६ ५०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

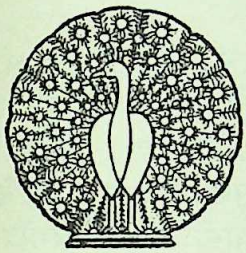

श्री स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा १४४ क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन

☐ श्री सम्पतराज डोसी
[संयोजक, स्वाध्याय संघ]

सन्त सतियाँ जी के चातुर्मासों से वंचित ग्रामों/शहरों में स्वाध्यायियों को भेज कर पर्युषण पर्वाराधन का महान् रचनात्मक कार्य सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के तत्वावधान में स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत ३८ वर्षों से करता आ रहा है।

राजस्थान में सवाई माधोपुर, मेवाड़, मारवाड़ तथा महाराष्ट्र, कर्णाटक, तमिलनाडू, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि विभिन्न प्रान्तों के छोटे-बड़े, दूर-नजदीक के कुल १४४ क्षेत्रों में ३१९ स्वाध्यायियों ने सेवाएं दी।

पर्युषण पर्व में व्याख्यान, चौपाई, प्रतिक्रमण के साथ-साथ सामायिक, दया, पौषध तपस्याओं के अतिरिक्त भी स्वाध्यायियों द्वारा अनेक क्षेत्रों में धार्मिक पाठशालायें शुरू करवाना, कई स्थानों पर दुर्व्यसनों, दहेज प्रथा आदि जैसी कुरीतियों का त्याग, अनेकों जगह शान्ति जाप आदि-आदि विभिन्न कार्यक्रम एवं तप त्याग कराये गये। प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार निम्न धर्मध्यान हुआ:—

सामायिक—१,३२,०७६, दया—१७१०, संवर—५८८, उपवास—८४४९, पौषध—१४१०, बेला—५४२, तेला—४३०, पंचोला—५०, छः—६, सात—८, अठाइयाँ—४०, नौ—१०, दस—५, ग्यारह—२

संघ द्वारा नये स्वाध्यायियों के निर्माण हेतु जयपुर में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर तथा पुराने स्वाध्यायियों के वक्तृत्व कला में निखार लाने हेतु दो बार जयपुर में स्वाध्यायी शिविर लगाये गये। गांव-गांव में बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कार डालने हेतु अनेकों स्थानों पर स्थानीय शिविर लगाये गये तथा कई गांवों में धार्मिक पाठशालाएं भी चलाई जा रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय स्तवनमाला का पंचम संस्करण, पर्युषण पर्वाराधन का द्वितीय संस्करण, गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग–१ का द्वितीय संस्करण तथा सप्त चरित्र संग्रह का भी द्वितीय संस्करण इसी वर्ष मुद्रण कराया गया। सप्त चरित्र संग्रह भाग–२ छप रहा है।

परम श्रद्धेय चारित्र चूड़ामणि आचार्य प्रवर श्री श्री १००८ श्री हस्तीमलजी महाराज साहब का इस वर्ष जयपुर में चातुर्मास होने से जयपुर में २२ नये स्वाध्यायियों ने इस वर्ष पर्युषण पर्व में बाहर जाकर सेवाएं दीं तथा भविष्य में भी अनेकों स्वाध्यायी नये बन पायेंगे, ऐसी पूर्ण आशा है। सब से बड़ी प्रसन्नता का विषय रहा कि तरुण तेजस्वी स्वाध्यायी बन्धु श्री प्रमोद-कुमारजी सुपुत्र स्वाध्यायी श्रीमान् सूरजमलजी मेहता ने भागवती दीक्षा अंगीकार की।

विभिन्न संघों से अब तक प्राप्त हुई सहायता राशि का विवरण निम्न प्रकार है:—

विजयवाड़ा — १५००, कानपुर — ११११, सिल्लोड — ५२५, पालघर—५०१, पाडरकवाड़ा—५०१, मलकापुर—५०१, बेतुल—५०१, खिरकिया—५०१, यादगिरी—५०१, बांसवाड़ा—४५१, सुजालपुर सिटी—३५१, आरवी—३२२, बालोद—३५१, शैन्दुर्णी—३०४, तहाराबाद—३०१, आलेगांव—३०१, बोलठाण—३००, पहुर—३०१, पहुर (यवतमाल)—३०१, बलकवाड़ा—२८१, देवलगांवमही—३४१, बरखेड़ी—२५१, सुलुरपेट—३५२, अजीत—२०१, राश्मी—२००, पाचोरा—२०१, दुनी—२०१, बदनावर—२०१, नागद—२०१, बिरगुड़ी—१५१, गिलूण्ड—१३८, कुँवारिया—१२१, पालासनी—१२१, मोही—१०१, खेड़गांव—१०१, गोपीनाथजी की मदार—१०१, भीमगढ़—१०१, पारसोली—१००, खेरोदा—१०१, शाहपुरा—१०१, शिवनी मालवा—५१ व बोरकुण्ड—५१ रुपये।

इस वर्ष पर्युषण पर्वाराधन हेतु जिन-जिन स्वाध्यायी बन्धुओं ने अपनी सेवाएं दी हैं, उनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है:—

मेवाड़ क्षेत्र

१. नावाणियां— १. श्री भगवतीलालजी पोकरणा—नवाणियां

२. पारसोली— १. „ मांगीलालजी रांका—जोधपुर
२. „ भंवरलालजी टाटिया—जोधपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. मोही—	१. श्री जवरीमलजी छाजेड़—जोधपुर
	२. ,, भोपालचन्दजी सेठिया
	३. ,, रतनलालजी जीरावाला—जोधपुर
४. खेरोदा—	१. ,, मानमलजी दंक—कपासन
	२. ,, कालुरामजी तातेड़—डूंगला
५. गिलूण्ड—	१. ,, भंवरलालजी पोकरणा—नवाणियां
	२. ,, कन्हैयालालजी जैन—पहुँना
	३. ,, ललितकुमारजी बोहरा—पहुँना
६. राश्मी—	१. ,, मदनराजजी मेहता—जोधपुर
	२. ,, सम्पतराजजी जैन—जोधपुर
७. भीमगढ़—	१. ,, शंकरलालजी चंडालिया—कुंवारिया
	२. ,, अशोककुमारजी बागमार—कपासन
८. लांगच—	१. ,, शंकरलालजी हींगड़—मौही
९. छोटा भटवाड़ा—	१. ,, कुन्दनमलजी दाणी—डूंगला
	२. ,, सुरेशकुमारजी दाणी—डूंगला
१०. पहुँना—	१. ,, मांगीलालजी बागमार—कपासन
	२. ,, चाँदमलजी हिंगड़—कपासन
११. फलीचड़ा—	१. ,, रंगलालजी धाकड़—फलीचड़ा
१२. नेवरिया—	१. ,, सुन्दरलालजी हींगड़—आकोला
	२. ,, सुरेशकुमारजी हींगड़—पहुँना
	३. ,, शान्तिलालजी बाफना—नेवरिया
१३. भिण्डर—	१. ,, सरदारचन्दजी भण्डारी—जोधपुर
	२. ,, शान्तिचन्दजी मेहता—जोधपुर
१४. कुंवारिया—	१. ,, पुखराजजी गिरिया—जोधपुर
	२. ,, धनराजजी मेहता—जोधपुर
	३. ,, मिसरीमलजी चोपड़ा—जोधपुर
१५. गोपीनाथ की मदार—	१. ,, दुलेहराजजी सिंघवी—पाली
	२. ,, घीसूलालजी तातेड़—पाली
१६. शाहपुरा—	१. ,, मानसिंहजी खारीवाल—शाहपुरा
१७. बांसवाड़ा—	१. ,, अन्नराजजी बोथरा—जोधपुर
	२. ,, गिरिशराज अब्बाणी—जोधपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश प्रान्त

१. शुजालपुर सिटी—	१. श्री दीपचन्दजी संचेती—धुलिया
	२. सुश्री मोहन बहिन मुणोत—इन्दौर
	३. सुश्री प्रेमलता मुणोत—इन्दौर
	४. सुनीता छिंगावत—इन्दौर
२. अंजड—	१. श्री रिखबलालजी जैन—कपासन
	२. ,, अभिनन्दन लुणिया—इन्दौर
	३. ,, शैलेन्द्र छिंगावत—इन्दौर
३. खण्डवा—	१. ,, सुगनचन्दजी सालेचा—इन्दौर
	२. ,, अनिलकुमार सालेचा—इन्दौर
४. छोटी कसरावद—	१. ,, लक्ष्मीचन्दजी जैन—कसरावद
५. धमतरी—	१. ,, रिखबराजजी कर्णावट—जोधपुर
	२. ,, मोतीलालजी डूंगरवाल—कानोड़
६. बिरगुड़ी—	१. ,, इन्द्रचन्दजी कोठारी—पिपाड़ सिटी
	२. ,, पदमराजजी घीया—पीपाड़ सिटी
७. बदनावर—	१. ,, राजमलजी ओस्तवाल—इन्दौर
	२. ,, भँवरलालजी बाफना—इन्दौर
८. छुईखदान—	१. ,, पुनवानचन्द ओस्तवाल—मद्रास
	२. ,, दिनेशकुमार नाहटा—नगरी
९. खेरागढ़ (म.प्र.)—	१. ,, गोतमचन्द ओस्तवाल—भोपालगढ़
	२. ,, महेशकुमार नाहटा—नगरी
१०. महागढ़—	१. ,, शंकरलालजी लोढा महागढ़
११. शिवनी—	१. सुश्री अंजुला झामड़—इन्दौर
	२. सुश्री मीना कोठारी—इन्दौर
१२. खिरकिया—	१. श्री महीपाल राज मेहता—जोधपुर
	२. ,, निलेशकुमार चोरड़िया—इन्दौर
	३. ,, हेमन्तकुमार जैन—इन्दौर
१३. बलकवाड़ा—	१. ,, घीसूलालजी बागमार—मद्रास
	२. ,, निलमचन्दजी बागमार—मद्रास
१४. बेतूल—	१. ,, सम्पतराजजी खिवसरा—जोधपुर
	२. ,, मुन्नालालजी भण्डारी—जोधपुर
१५. बुरहानपुर—	१. ,, नरपतराजजी भण्डारी—जोधपुर
	२. ,, अजय—उज्जैन
	३. ,, संदीप—इन्दौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र प्रान्त

१. चालीस गांव—	१. श्री सम्पतराजजी डोसी—जोधपुर
	२. ,, विजयराजजी बोथरा—जलगांव
२. मलकापुर—	१, ,, हरकचन्दजी ओस्तवाल—मद्रास
	२. ,, चम्पालालजी बोथरा—मद्रास
	३. ,, पारसमलजी रांका—मद्रास
३. न्याय डोंगरी—	१. ,, नाथूलालजी चण्डालिया—भादसोड़ा
	२. ,, रोशनलालजी नाहर—भादसोड़ा
४. तहाराबाद—	१. ,, ललितजी कोठारी—पीपाड़ सिटी
	२. ,, जसराजजी कोठारी—पिपाड़ सिटी
	३. ,, अरविंदजी कटारिया—जलगांव
५. पाचोरा—	१. ,, मदनलालजी जैन—सवाईमाधोपुर
	२. ,, फूलचन्दजी जैन—सवाईमाधोपुर
	३. ,, पारसजी बाठियां—पाचोरा
६. हीरापुर—	१. ,, लड्डूलालजी जैन—चोरू
	२. ,, उत्तमचन्दजी संचेती—हीरापुर
७. नागढ़—	१. ,, दीपचन्दजी बोहरा—न्यायडोगरी
	२. कुमारी चन्दा तलेका—इन्दौर
	३. ,, संगीता भण्डारी—इन्दौर
	४. ,, अजुरीमा गेलड़ा—इन्दौर
८. आरवी—	१. श्री पदमजी मुणोयत—जलगांव
	२. ,, मोहनलालजी पोपाडा—जलगांव
९. पहुर (यवतमाल)—	१. ,, सुवालालजी कांकरिया—नन्दूरवार
	२. ,, ललितजी चोरड़िया—जलगांव
१०. कजगांव—	१. ,, कजोडीमलजी जैन—आलनपुर
	२. ,, राजेन्द्रप्रसादजी जैन—आलनपुर
११. मांडल—	१. सुश्री ललिता सालेचा—इन्दौर
	२. ,, भरती जैन—इन्दौर
	३. ,, किरण तातेड़—इन्दौर
१२. खेड़गांव—	१. श्री सोभागमलजी जैन—गाडोली
	२. ,, अशोककुमार जैन—सवाईमाधोपुर
१३. एदलाबाद—	१. ,, हंसराज पीतलिया—जलगांव
	२. ,, राजेन्द्र जैन—जलगांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. देवल गांव मही—	१. श्री उज्ज्वलचन्द मेहता—पिपाड़ सिटी
	२. ,, निर्मल सिंघवी—इन्दौर
	३. ,, प्रकाश जैन—इन्दौर
१५. चीचोली पाटिल—	१. ,, हीरालालजी मंडलेचा—फतेपुर
	२. ,, सतीश मुणोयत—जलगांव
१६. लोही—	१. ,, मेघराज टोडरवाल—
	२. ,, प्रकाश बाठियां—पाचोरा
	३. ,, पारसमलजी कोटेचा—वणी
१७. पाण्डरकवाड़ा—	१. ,, प्रकाश हुण्डीवाल—जलगांव
	२. ,, प्रेमचन्दजी कुचेरिया—वणी
	३. ,, राजेश डागलिया—इन्दौर
	४. ,, सुशील जैन—इन्दौर
१८. उस्मानाबाद—	१. ,, सुभाष हुण्डीवाल—जलगाँव
	२. ,, राकेश पीतलिया—जलगांव
१९. फतेपुर—	१. ,, सोभागमलजी जैन—बिलोता
	२. ,, अभय गांधी—जलगांव
२०. लासूर—	१. ,, दीपचन्दजी बोथरा—जलगांव
	२. ,, शान्तिलालजी छोरिया—जलगांव
२१. बुलढाना—	१. ,, माणकचन्दजी गादिया—जलगांव
	२. ,, बलवन्त नागौरी—जलगांव
२२. बाकोद—	१. ,, धर्मचन्दजी जैन—श्यामपुरा
	२. ,, रामेश्वरप्रसाद—डेहरा
२३. पलासखेड़ा—	१. ,, उच्छबराज जैन—अलीगढ़
	२. ,, पारसमल जैन—नैनवा
२४. तोंडापुर—	१. ,, छीतरमल पामेचा—कोटा
२५. नसीराबाद—	१. ,, महावीरप्रसाद जैन—चौथ का बरवाड़ा
	२. ,, इन्दरमल जैन—चौथ का बरवाड़ा
२६. बोदवड़—	१. ,, पनराजजी ओस्तवाल—जालना
	२. ,, प्रकाश कोठारी—इन्दौर
	३. ,, नरेश लुणावत—नासिक
२७. मुकटी—	१. सुश्री मनोरमा सालेचा—इन्दौर
	२. कुमारी अंजू झामड़—इन्दौर
	३. कुमारी संगीता कोठारी—इन्दौर
२८. पहूर (जलगांव)—	१. श्री बाबूलालजी जैन—आलनपुर
	२. ,, विनयकुमारजी जैन—आलनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९. शेन्दुर्णी—	१. श्री प्रकाशचन्दजी जैन—जलगांव
	२. ,, विजयकुमार जैन—श्यामपुरा
३०. बोलठाण—	१. ,, कल्याणमलजी जैन—चोरू
	२. ,, शान्तिलालजी जैन—चोरू
	३. ,, हंसराज कटारिया—न्यायडूंगरी
३१. उम्बरखेड़—	१. ,, मानसिंहजी नाहर—इन्दौर
	२. ,, अनिल सुराणा—इन्दौर
३२. बरखेड़ी—	१. ,, कपूरचन्दजी जैन—चौथ का बरवाड़ा
	२. ,, रतनलालजी जैन—चौथ का बरवाड़ा
३३. बोरकुण्ड—	१. ,, दीपचन्दजी मुणोत—हैदराबाद
	२. ,, अशोक वेदमुथा—जलगाँव
३४. पीपलगांव राजा—	१. ,, नवीनचन्दजी जैन—इन्दौर
	२. ,, कमलकुमारजी जैन—इन्दौर
	३. ,, राजेन्द्रकुमारजी चोरड़िया—जलगांव
३५. सिल्लोड़—	१. ,, दिलीपकुमारजी वया—जलगांव
	२. ,, महेन्द्रकुमारजी भण्डारी—इन्दौर
	३. ,, राजेशजी भण्डारी—इन्दौर
३६. आलेगांव—	१. ,, जिनेश्वरकुमारजी जैन—इन्दौर
	२. ,, अनिलकुमारजी तातेड—इन्दौर
	३. ,, आशिशजी भण्डारी—इन्दौर
३७. पनवेल—	१. ,, सुन्दरलालजी सालेचा—
३८. पालधर—	१. ,, ज्ञानेन्द्रजी बाफना—जोधपुर
	२. ,, माणकमलजी भण्डारी—जोधपुर
३९. धोलवड़—	१. ,, आनन्दराजजी जैन—बम्बई
	२. ,, भंवरलालजी डोसी—बम्बई
४०. जामठी—	१. ,, राजकुमारजी रांका—जामठी
	२. सौ० सरला रांका—जामठी
४१. राजणो—	१. श्री चौथमलजी—सवाईमाधोपुर
	२. ,, बन्सीलालजी—समिधि
४२. वाघली—	१. ,, गोपाललालजी जैन—सवाईमाधोपुर
	२. ,, रामपालजी जैन—सवाईमाधोपुर
	३. ,, बाबूलालजी जैन—सवाईमाधोपुर
४३. वरोरा—	१. ,, प्रकाशमलजी चोरड़िया—मद्रास
	२. ,, गोपालराजजी अब्बाणी—जोधपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत

१. कोयम्बटूर— १. श्री ज्ञानराजजी मेहता—बैंगलोर
२. " पन्नालालजी चोरड़िया—बैंगलोर
३. " रामलालजी कांकलिया—बैंगलोर

२. होसपेट— १. " प्रकाशचन्दजी पटवा—बैंगलोर
२. " डूंगरसिंहजी जैन—बैंगलोर

३. विजयवाड़ा— १. " पारसमलजी गिरिया—जोधपुर
२. " चन्दनमलजी चोपड़ा—जोधपुर
३. " महावीरचन्दजी ओस्तवाल—मद्रास

४. यादगिरी— १. श्रीमती पुष्पाजी दुगड़—मद्रास
२. श्रीमती मगीबाई निमाणी—मद्रास

५. सलुरपेट— १. श्रीमती शान्तिबाई बाफना—मद्रास
२. श्रीमती सुशीलाबाई पीपाड़ा—मद्रास

उत्तर प्रदेश

१. कानपुर— १. श्री नवरतनमलजी डोसी—जोधपुर
२. " जिनेन्द्रकुमारजी जैन—दिल्ली
३. " चंचलमलजी चोरड़िया—जोधपुर

मारवाड़ क्षेत्र

१. पालासनी (जोधपुर)—१. श्री करणराजजी मेहता—जोधपुर

२. सरदारपुरा (जोधपुर)—१. " पदमचंदजी मुणोयत—जोधपुर
२. " सुगनचंदजी भण्डारी—जोधपुर
३. " दौलत रूपचन्दजी भण्डारी—जोधपुर

३. बडू (नागौर)— १. " ताराचन्दजी मेहता—पीपाड़सिटी
२. " दलपतराज घीया—पीपाड़सिटी

४. अजीत (बाड़मेर)— १. " नेमीचंदजी मेहता—पीपाड़सिटी
२. श्रीमती इन्दर कंवर डागा—जोधपुर
३. श्रीमती अकल कंवर मोदी—जोधपुर

५. कासाना (जोधपुर)— १. श्रीमती भवरी बाई भण्डारी—जोधपुर
२. श्रीमती पारस कंवर रांका—जोधपुर

६. कोटड़ी (बाड़मेर)— १. श्री मिलापचन्दजी मेहता—जोधपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाईमाधोपुर क्षेत्र

१. सवाईमाधोपुर—	१. श्री तेजराजजी भण्डारी—जयपुर
	२. ,, प्रमोदजी मेहता—जयपुर
	३. कुमारी निर्मला पीपाड़ा—जयपुर
	४. कुमारी अंजु लोढा—जयपुर
२. दूनी (टोंक)—	१. श्री मनोहरजी बम्ब—जयपुर
	२. ,, पुखराजजी कुचेरिया—जयपुर
	३. ,, पदमचंदजी बम्ब—जयपुर
३. गोपालगढ़ (भरतपुर)—	१. ,, भंवरलालजी सिंघी—जयपुर
	२. ,, कमलकुमार जैन—जयपुर
४. कंजरेली—	१. ,, हरिप्रसाद जैन—मण्डावर
	२. ,, हुकमचंदजी जैन—कंजोली
५. खेरलीगंज—	१. ,, हीराचंदजी हीरावत—जयपुर
	२. ,, हरिचंदजी हीरावत—जयपुर
	३. ,, माणकचंदजी करनावट—जयपुर
६. खेरली गडासिया—	१. ,, अशोककुमारजी—खेरली
७. खोह (अलवर)—	१. ,, रामलालजी—खोह
	२. ,, मुल्तानचंदजी—खोह
८. गंगापुर सिटी—	१. ,, मनोजकुमारजी जैन—जयपुर
	२. ,, विजयकुमारजी जैन—जयपुर
९. गंगापुर सिटी—	१. ,, राजेन्द्रकुमारजी पटवा—जयपुर
	२. ,, स्वरूपचंदजी—जयपुर
१०. डेहरा—	१. ,, स्वरूपचंदजी जैन—डेहरा
	२. ,, भागचंदजी जैन—डेहरा
११. नदवई—	१. ,, केवलमलजी लोढा—जयपुर
	२. ,, टीकमचंदजी हीरावत—जयपुर
	३. ,, जम्बूकुमारजी जैन—जयपुर
१२. पहरसर—	१. ,, जवाहरलालजी—भरतपुर
१३. फाजिलाबाद—	१. ,, मंगलचंदजी अध्यापक—फाजिलाबाद
	२. ,, महावीरप्रसादजी—फाजिलाबाद
१४. बरगमा—	१. ,, फूलचंदजी—बरगमा
	२. ,, देवेन्द्रकुमारजी—बरगमा
	३. ,, महावीरप्रसादजी—बरगमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. बोंली—	१. श्री सुमेरचंदजी—बोंली
	२. ,, धर्मचंदजी—बोंली
	३. ,, रमेशचन्दजी—बोंली
१६. मोजपुर—	१. ,, प्रेमचंदजी—भरतपुर
१७. रसीदपुर—	१. ,, प्रेमचंदजी अध्यापक—रसीदपुर
	२. ,, अशोककुमारजी—रसीदपुर
१८. लहसोड़ा—	१. ,, बृजमोहनजी—लहसोड़ा
	२. ,, कृष्णमोहनजी—लहसोड़ा
१९. हरसाना—	१. ,, धर्मचंदजी अध्यापक—गंगापुर सिटी
	२. ,, केवलचंदजी—गंगापुर सिटी
२०. आदर्श नगर—	१. ,, निहालचंदजी—देई
	२. ,, गणपतलालजी—आदर्श नगर
२१. इन्दरगढ़—	१. ,, जीतमलजी जैन—इन्दरगढ़
२२. उनियारा—	१. ,, रामदयालजी—फाजिलाबाद
	२. ,, अनिलकुमारजी—स्टेशन बजरिया स. मा.
२३. करमोदा—	१. ,, घासीलालजी—करमोदा
	२. ,, केशरलालजी – करमोदा
	३. ,, उच्छबचंदजी सूरजमलजी—करमोदा
२४. कुण्डेरा—	१. ,, हंसराजजी अध्यापक—कुण्डेरा
	२. ,, रामस्वरूपजी—कुण्डेरा
	३. ,, मोहनलालजी—कुण्डेरा
२५. कुस्तला—	१. ,, सुरजमलजी—कुस्तला
	२. ,, मूलचन्दजी—कुस्तला
२६. खोतली—	१. ,, धर्मचंदजी—कुस्तला
	२. ,, रमेशचन्दजी—कुस्तला
२७. गाडोली—	१. ,, सूरजमलजी—गाडोली
२८. खिजूरी—	१. ,, चिरंजीलालजी—खिजूरी
२९. गंभीरा—	१. ,, कल्याणमलजी—गंभीरा
	२. ,, जगन्नाथजी जैन—गम्भीरा
३०. चकेरी—	१. ,, जगदीशप्रसादजी अध्यापक—चकेरी
	२. ,, फूलचंदजी अध्यापक—चकेरी
	३. ,, चौथमलजी—चकेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१. चोरू—	१. श्री कुन्दनमलजी काशमीराया—जयपुर
	२. ,, पारसमलजी कुचेरिया—जयपुर
	३. ,, हंसराजजी मुणोयत—जयपुर
३२. चौथ का बरवाड़ा—	१. ,, विमलचन्दजी डागा—जयपुर
	२. ,, प्रदीपकुमारजी हीरावत—जयपुर
	३. ,, प्रदीपकुमारजी मूसल—जयपुर
३३. जरखोदा—	१. ,, गिरधारीलालजी—चकेरी
	२. ,, उम्मेदमलजी—जरखोदा
	३. ,, हनुमानप्रसादजी—जरखोदा
३४. झुण्डवा—	१. ,, पृथ्वीराजजी जैन—झुण्डवा
	२. ,, अमोलकचन्दजी जैन—झुण्डवा
३५. डांगरवाड़ा—	१. ,, लड्डूलालजी—डांगरवाड़ा
	२. ,, महावीरप्रसादजी—डांगरवाड़ा
	३. ,, मेघराजजी—डांगरवाड़ा
३६. डेकवा—	१. ,, केशरलालजी—डेकवा
	२. ,, रामप्रसादजी—डेकवा
	३. ,, सूरजमलजी—डेकवा
३७. देई—	१. ,, रामदयालजी सर्राफ—सवाईमाधोपुर
	२. ,, धर्मचंदजी केरला वाले—सवाईमाधोपुर
३८. देवली—	१. ,, मथुरालालजी—देवली
३९. नैनवा—	१. ,, लड्डूलालजी अध्यापक—नैनवा
	२. ,, सोहनलालजी—नैनवा
	३. ,, पवनकुमारजी—नैनवा
४०. पचाला—	१. ,, रूपचंदजी जैन अध्यापक—बजरिया स्टेशन
	२. ,, लल्लूलालजी जैन—बजरिया स्टेशन
	३. ,, रतनलालजी—बजरिया स्टेशन
४१. पाटोली—	१. ,, सोभागमलजी—पाटोली
	२. ,, शंकरलालजी—पाटोली
४२. बगावदा—	१. ,, मांगीलालजी—सवाईमाधोपुर
	२. ,, लड्डूलालजी—बगावदा
	३. ,, मूलचन्दजी—बगावदा
४३. पावडेढा—	१. ,, घासीलालजी—पावडेढा
	२. ,, नाथूलालजी—पावडेढा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४. स्टेशन बजरिया—	१. श्री प्रवीणचंद लोढा—जयपुर
	२. ,, धर्मचंदजी नाहर—जयपुर
	३. ,, कमलेशचन्दजी जैन—जयपुर
४५. बजाज नगर—	१. ,, अशोककुमार जैन—(हरशाना) जयपुर
४६. बाबई—	१. ,, रामप्रसादजी जैन—बाबई
	२. ,, पारसकुमारजी जैन—बाबई
	३. ,, सुरेन्द्रकुमारजी जैन—बाबई
४७. बारां—	१. ,, प्रकाशचन्दजी डागा—जयपुर
	२. ,, प्रकाशचन्दजी ढड्ढा—जयपुर
	३. ,, नवरत्नमलजी—जयपुर
४८. बिनजारी—	१. ,, रामनारायणजी—बिनजारी
	२. ,, चौथमलजी जैन—बिनजारी
४९. बिलोता—	१. ,, घनश्यामजी—बिलोता
५०. मुई—	१. ,, बच्छराजजी—मुई
	२. ,, ओमप्रकाशजी—मुई
५१. रवांजनाचौड़—	१. ,, रामप्रसादजी जैन—रवांजनाचौड़
	२. ,, छीतरमलजी जैन—रवांजनाचौड़
५२. लहसोड़ा—	१. ,, गोपीलालजी—लहसोड़ा
	२. ,, सूरजमलजी—लहसोड़ा
५३. श्यामपुरा—	१. ,, भंवरलालजी जैन—श्यामपुरा
	२. ,, ओमप्रकाशजी जैन—श्यामपुरा
५४. समीदी—	१. ,, सौभागमलजी—समीदी
	२. ,, अमोलकचन्दजी—समीदी
५५. सुमेरगंज मण्डी—	१. ,, गोपीलालजी अध्यापक—स्टेशन बजरिया
	२. ,, राजेन्द्रप्रसादजी जैन गाडोली वाले—स्टे. ब.
५६. करही—	१. ,, रामस्वरूपजी जैन—गंगापुर सिटी
५७. आलनपुर—	१. ,, मांगीलालजी नागोरी—पारसोली
	२. ,, बालचन्दजी पीतलिया—पारसोली

सभी श्रावक संघों एवं सभी स्वाध्यायियों के प्रति स्वाध्याय संघ हार्दिक आभार प्रकट करता है तथा भविष्य में इसी प्रकार के सहयोग की आशा रखता है जिससे यह संघ जिन शासन की सेवा करते रहने में निरन्तर प्रगति करता रहे।

—घोड़ों का चौक, जोधपुर–३४२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्यांकन :

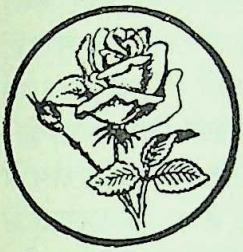

जैन धर्म का भारतीय संस्कृति को योगदान

☐ सुश्री अनिता भंडारी

कई धार्मिक व दार्शनिक आंदोलनों ने भारत के बहुरंगीले प्राचीन सांस्कृतिक केनवास पर समय-समय पर अपने विभिन्न प्रभाव व छवियां अंकित की हैं, उनमें सबसे प्रमुख जैन धर्म रहा है। यह धर्म सर्वाधिक प्राचीन धर्मों में से है।

सौ साल ईसा पूर्वी से नौ सौ का समय प्राचीन भारतीय इतिहास का वह समय है जब न केवल भारतीय सभ्यता ही अपने चरम उत्कर्ष पर अग्रसर हुई थी, बल्कि सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से यही समय अत्यन्त धनी रहा है और यह संभव हुआ कई अन्य कारणों के अलावा केवल एक महत्त्वपूर्ण कारण से; जो है तीन महान् धर्मों—जैन धर्म, बौद्ध धर्म, ब्राह्मण धर्म की पारस्परिक सहनशीलता व स्वस्थ सहयोग से, जो कि उस वक्त पूरे भारत में साथ-साथ पनप रहे थे। ये तीनों ही धर्म भारतीय जीवन के हर पहलू व प्रत्येक भारतीय के जीवन को महान् व सुखी बनाने में तथा अपने-अपने क्षेत्र में भारतीय सांस्कृतिक एकता को और अधिक दृढ़ व सबल करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते रहे हैं।

इस वक्तव्य में कोई संशय नहीं कि इसी स्वर्णिम अवधि के दौरान जैन धर्म ने भारतीय संस्कृति को सशक्त, अलंकृत व अमर करने के लिए कई क्षेत्रों में महान् व अपूर्व योगदान दिया है।

जैन धर्म ने भारतीय कला के ऐतिहासिक क्षेत्र में न केवल अभूतपूर्व व विशिष्ट योगदान ही दिया है परन्तु बौद्धकला की अपेक्षा अधिक लोकप्रियता भी प्राप्त की है। क्योंकि यह स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है कि जीवन के अन्य पहलुओं के साथ-साथ कला विषयक सूची में भी जैन कलाकारों व शिल्पियों ने सृजन के दौरान अपूर्व व अद्भुत कौशल सर्वत्र अंकित करने में कोई कसर नहीं रखी तथा ऐसा प्रतीत होता है कि जैन अनुयायियों ने कला के क्षेत्र में भी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीक्ष्ण विश्लेषण करने की प्रवृत्ति व साथ ही साथ वैराग्य की भावना का प्रभाव मूर्तिकला व स्थापत्य कला पर छोड़ा है।[१]

जैनों का दूसरा योगदान न केवल दक्षिणी भारत को बल्कि पूर्वी कला को रहा है और वह है इनके द्वारा निर्मित गोलाकार स्तम्भ जो कि जैन मंदिरों में पाये जाते हैं। कनारा में ऐसे बीस स्तम्भ हैं। इन स्तम्भों को जैनों द्वारा मानस्तम्भ कहा गया है। इनमें हल्का व उच्चकोटि का अंकन किया गया है। ये समृद्ध मंदिर कला-पारखियों द्वारा प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट नमूने माने जाते हैं, मुख्यतया मैसूर व कनारा के। मध्यभारत में खजुराहो में कई जैन मंदिर दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के बने हुए हैं। राजस्थान के आबू पर्वत पर प्रसिद्ध देलवाड़ा के जैन मंदिर में मूर्तिकला के अलावा बेल-बूंटे, तोरणद्वार, नक्काशी का काम देखते ही बनता है। श्रवण बेलगोला व रणकपुर में जैन मंदिरों के बड़े समूह हैं।[२]

जैनों द्वारा बनी हुई गुफाएँ स्थापत्य कला के क्षेत्र में अनूठी देन हैं। चूंकि प्राचीनकाल में जैन मुनि गुफाओं में रहते थे, अतः बिहार, सौराष्ट्र, मध्य भारत व अन्य क्षेत्रों में उन्होंने कई गुफाओं का निर्माण किया।[३] इसके बाद चैत्यों में रहना अधिक प्रचलित हो गया। ये मुख्यतया दिगम्बर समुदाय द्वारा बनाई गयी है। ऐलोरा की इन्द्रसभा व जगन्नाथ, बादामी, पतनी, नासिक, दारासिवा, अकार्ड व जूनागढ़, सितनवासल पहाड़ पर बनी सभी गुफाएँ आकर्षण का केन्द्र हैं।[४] उड़ीसा के पुरी जिले में उदयगिरि व खण्डगिरि में सबसे प्राचीन जैन गुफाएँ मिलती हैं जो एक सौ पचास ई० पू० की मानी जाती हैं। यहाँ पैंतीस गुफाएँ मिलती हैं। इनमें सबसे आकर्षक अंग स्तम्भों के ऊपर बने ब्राकेट (Brackets) जो तरह-तरह के पेड़ पौधों के रूप में निर्मित की गई हैं। इनमें सबसे आकर्षक रानी गुम्फ और गणेश गुम्फ गुफाएँ हैं। जैन गुफाओं का निर्माण नवीं से पन्द्रहवीं ईसवी तक अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा।

स्तूपों का भी जैन स्थापत्य कला के क्षेत्र में उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। मथुरा के पास कनकाली टीला में जैन स्तूप मिले हैं जो सबसे अधिक प्राचीनतम माने गये हैं। कई जैन स्तूप बौद्ध स्तूप के भ्रम से रेकार्ड नहीं हो पाये हालांकि ये जैन स्तूप थे।[५]

---

१. The Jaina Sources of the History of Ancient India. Jyoti Prasad Jain, p. 230
२. Havell—Ancient and Medieval Architecture of India.
३. Burges' Cave temple of India.
४. B. Brown' Indian Architecture.
५. Smith 'History of Fine Arts in India and Ceylon.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रकला के क्षेत्र में जैनों द्वारा प्रदत्त समृद्ध धरोहर उल्लेखनीय ही नहीं बल्कि अपनी प्राचीनता के लिये भी प्रसिद्ध है। पन्द्रहवीं ईस्वी तक की चित्रकला-परम्परा को जीवित रखकर जैन कलाकारों ने ऐतिहासिक विकास क्रम को ताड़पत्र, कपड़ा व कागज के माध्यम से बनाए रखा। ताड़पत्र पर 'कल्पसूत्र' 'कालकाचार्य कथा' व 'सिद्धहेम व्याकरण' चित्रित हैं तथा कई तीर्थंकरों के भी सूक्ष्म रेखाओं द्वारा चित्र बने हैं। 'मार्कण्डेय पुराण' व 'दुर्गा सप्तशती' के चित्रण में भी जैनों का योगदान रहा है। जैन शैली का एक महत्त्वपूर्ण वस्त्र-चित्र वाशिंगटन की आर्ट गैलेरी में सुरक्षित हैं जो कि 'बसन्त विलास' पर आधारित हैं और उसे विश्व चित्रकला के इतिहास में दुर्लभ कलाकृति माना जाता है।[1] ऐलोरा की जैन गुफा की छत पर प्राचीन चित्रों के अवशेष हैं। कहानी चित्रमाला, मिनिएचर पेंटिंग व हस्तलिखित पुस्तक इत्यादि अंकित व चित्रित करना भी इनकी विशेषता रही है।

जैन चित्रों की आकृति एक चश्म या दो चश्म होती है और जिनका उद्देश्य ठोड़ी को विशेष प्रकार से उभारकर गौरव, गर्व तथा स्वाभिमान को प्रकट करना होता था। ताड़पत्रों पर पीले रंग और कागज पर पीले तथा लाल रंग का उपयोग हुआ है। भारतीय कला को जैन धर्म ने अपनी चित्रकला शैली प्रदान की जिसकी विशेषता मोटी रूपरेखा और भड़कीले, चमकीले रंग थी।[2] जैन चित्र लम्बी रत्नमालाओं से अलंकृत हैं। इस प्रकार स्पष्ट ही शैली व संरचना की दृष्टि से जैन चित्रकला का पृथक् महत्त्व विदित है जो आकर्षक व प्रभावशील है।

जैनकला की विशिष्टता इसमें भी है कि उसमें इस राष्ट्र के लोकजीवन का सजीव एवं यथार्थ अभिव्यंजन हुआ है। उसकी आकृतियों, रेखाओं और रंगों की रचना प्रक्रिया में लोककला के तत्त्व निहित हैं।[3]

जैन शिलालेख उत्तर भारत में भी उपलब्ध हुए हैं परन्तु दक्षिणी भारत जैसे कि कोकण, कर्नाटक, आन्ध्र, तामिल में। पत्थरों, मूर्तियों, मन्दिरों पर जो खुदे शिलालेख मिले हैं उनसे तत्कालीन इतिहास व अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियां हासिल होती हैं और कई ऐतिहासिक तथ्य उजागर होते हैं। इतिहासकार सेल्तयोर इस महत्त्वपूर्ण योगदान का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कर्नाटक के कई शिलालेख व साहित्य व तेलगू, तमिल प्रदेश के शिलालेख, साहित्य से

१. 'वाचस्पति गौराला' भारतीय संस्कृति और कला।

२. Indian culture through the ages, VIDYARTHI, M. L.

३. भारतीय संस्कृति और कला : गौराला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें जैनों द्वारा उनके शासन को दृढ़ व सफल रखने में योगदान के बारे में पता चलता है।[1]

भाषा व साहित्य के क्षेत्र में भी जैन धर्म ने भारतीय साँस्कृतिक समन्वय को प्रोत्साहित करके महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जैनाचार्यों ने संस्कृत को ही नहीं बल्कि अन्य तत्कालीन प्रचलित भाषाओं को अपनाकर सन्मानित व अधिक प्रसिद्ध किया। इस उदार दृष्टिकोण के फलस्वरूप ही कई मध्ययुगीन जनपदीय भाषाएँ अपने मूल रूप में सुरक्षित रहो हैं। आज के समय में जबकि भाषा के नाम पर कई विवाद उठ खड़े हो रहे हैं। ऐसे में हमें जैनों की अभिनन्दनीय उदार प्रवृत्ति का अनुसरण कर भारतीय संस्कृति को मजबूत करना चाहिये।

संस्कृत व प्राकृत भाषा में भारतीय पौराणिक कथाओं को अपनी मान्यता के साथ समन्वित करके समृद्ध किया है और जनसाधारण तक भारतीय आध्यात्मिक चिंतन को पहुँचाया। पहली शताब्दी से आठवीं शताब्दी तक प्राकृत भाषा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया जिससे सबसे अच्छा साहित्य प्राकृत भाषा के क्षेत्र में जैनों द्वारा ही संभव हुआ। विमल सूरी ने प्राकृत भाषा में पउमचरिय द्वारा रामकथा का अंकन किया। सातवीं सदी में रविषेण ने पद्मपुराण की रचना की व स्वयंभू ने अपभ्रंश में पउमचरिय लिखा। आठवीं सदी में जिनसेन ने हरिवंश पुराण की रचना महाभारत के आधार पर की। तेरहवीं सदी में देवप्रभ ने पाण्डव चरित्र लिखा व सोलहवीं सदी में शुभचन्द्र ने पाण्डवपुराण की रचना की। कथा साहित्य के क्षेत्र में पादलिप्त ने तरंगवई लिखी। आठवीं सदी में हरिभद्र ने समरादित्य कथा व दसवीं सदी में सिद्धर्षि ने उपमिति भव प्रपंच कथा लिखी। चौदहवीं सदी में धर्मचन्द ने मलयसुन्दरी कथा व बुद्धि विजय ने पद्मावती कथा की रचना की। जैन लेखक नीति, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष व चिकित्सा के क्षेत्र में भी लेखनपरिधि से दूर नहीं रहे।

इसके अलावा जैनों ने कन्नड़ भाषा को सर्वप्रथम विकसित किया जो चौथी, पांचवीं सदी में शुरू की गई थी। इसी तरह तामिल-भाषा में सबसे अधिक जैन साहित्य की देन रही है।[2] भाषा की दृष्टि से प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएँ—आधुनिक भारतीय भाषा के बीच की कड़ी के समान हैं।

जैन लेखकों ने न केवल गद्य व पद्य में ही रचनायें कीं बल्कि चम्पू नामक नयी शैली का प्रयोग किया जिसमें गद्य व पद्य दोनों का सम्मिश्रण है। पुराण,

१. B. A. Saletore' Medieval Jainism Epigraphy.
२. Winterniz' History of Indian literature Vol. I.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित व आगम साहित्य तत्कालीन भौगोलिक स्थितियों और आर्थिक जीवन के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियां देते हैं। जैन लेखकों ने ब्राह्मण व बौद्ध कृतियों पर टिप्पणी भी लिखीं जिससे सांस्कृतिक एकता को दृढ़ करने का प्रयास हुआ।[१]

जैन साहित्य से न केवल ऐतिहासिक तथ्य सामने आते हैं बल्कि विभिन्न समय और विभिन्न जगह के समाज और जीवन का उज्ज्वल स्वरूप भी प्रतीत होता है। उस युग की सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली जैन धर्म से प्रभावित थी और शिक्षा का शुभारंभ जैन मंत्र के साथ ही दक्षिण भारत में होता था। बहुत से जैन संस्थान विद्या के केन्द्र थे जहाँ से विद्या का प्रकाश फैला और जनता की शिक्षा की उन्नति में योगदान दिया।[२]

जैन धर्म का दार्शनिक व वैचारिक क्षेत्र में उदार, व्यापक व मानवतावादी दृष्टिकोण रहा है। जैन धर्म द्वारा ज्ञान-सिद्धांत, स्याद्वाद व अहिंसा आदि के विचारों ने भारतीय दार्शनिक चिन्तन को और अधिक गहन, तटस्थ, समृद्ध, व्यावहारिक और गौरवपूर्ण बना दिया है। प्रश्न यह उठता है कि दार्शनिक क्षेत्र में जैनों का क्या दृष्टिकोण था, या विचार रहे जिससे यह धर्म इतना सशक्त, प्रसिद्ध व जन-जीवन धर्म, लोकधर्म बन सका। विहंगम दृष्टि डालने से विदित होता है कि जैन धर्म की मान्यता यह है कि, देश, काल, द्रव्य, व भाव के अनुसार प्रत्येक वस्तु का स्वरूप निर्णित होता है। जैन धर्म के मत के अनुसार संसार में असंख्य जीवात्माएँ विद्यमान हैं और कर्मों के बंधनों के कारण इनके जन्म निर्धारित होते हैं। ज्ञान-सिद्धान्त के अनुसार कर्मों का पर्दा हट जाने से जीव-आत्मा को ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और वह परमात्मा बन जाता है। जैन धर्म की मानवतावादी विचारधारा का सम्यक् विवेचन स्याद्वाद सिद्धांत से हुआ है जिससे मनुष्य अपने समस्त विरोधों व असमानताओं को दूर कर आत्मा की एकता, समानता व व्यापकता के दर्शन करता है। इसके अनुसार जगत् अनादि अनन्त है। सही अर्थों में स्याद्वाद का सिद्धान्त मानव मस्तिष्क की चरमोन्नति को दर्शाता है।

अनेकान्तवादी की मूल भावना का विश्लेषण महावीर स्वामी ने करते हुए सांसारिक प्राणियों को बोध कराया कि किसी बात, सिद्धान्त को एक तरफ से मत देखो और विचार करो कि तुम जो कहते हो वह सच होगा पर जो दूसरे

१. The History and Culture of Indian People 'Bhartiya· VIDYA BHAWAN Series.

२. Jyoti Prasad Jain 'The Jaina Sources of the History of Ancient India.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं वह भी सच होगा। इस प्रकार जैन दर्शन हमें यह संदेश व प्रेरणा देते हैं कि आज का सांसारिक द्वंद्व व तनाव हम भगवान् महावीर के उपर्युक्त कथन का अनुसरण करके कम कर सकते हैं।

जैन मतावलम्बियों का सामाजिक योगदान बड़े महत्त्व का है। जैन धर्म में सदाचार को सर्वोपरि महत्त्व दिया गया है और शरीर और आत्मा की पवित्रता के लिए राग, द्वेष, मोह, क्रोध, पाप और लोभ आदि दुर्व्यसनों का परित्याग और अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अक्रोध और अपरिग्रह के अर्जन पर जोर दिया है। जैनों ने अहिंसा को सर्वोत्तम आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। यदि आज भारतीय समाज में अहिंसा का सिद्धान्त स्वयंसिद्ध माना जाता है तो शायद बौद्धमत की शिक्षा से भी अधिक उसका श्रेय भगवान् महावीर को है जिन्होंने इस सिद्धान्त को राष्ट्र के जीवन का एक सजीव अंग बना दिया। जैन धर्म के अनुसार संसार में प्रत्येक चेतन वस्तु प्राणवान है। अतः विभिन्न प्रकार की हिंसाओं से बचने के लिए अनेक उपाय जैनों द्वारा प्रयोग में लाए गए।

जैन आचार्यों एवं मुनियों ने भी धर्म के सच्चे सेवक, स्वार्थहीन, निस्पृही जीवनयापन कर एक मिसाल कायम की और मानवीय और दान-पुण्य कार्यों के लिए लोगों को प्रेरित किया।[1]

जैन संस्कृति ने सदैव लोक भावना को प्रधानता दी। लोकानुग्रह और लोकमंगल ही उसका एकमात्र अभिप्रेत रहा है। प्रत्येक वर्ग की आत्मोन्नति का मार्गदर्शन जैन धर्म ने किया। जैन धर्म ने राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और भावनात्मक एकता को बनाए रखने के प्रयत्न में धर्म, कला और साहित्य तीनों माध्यमों से जन जीवन में राष्ट्रीयता को उत्प्रेरित किया।

इस प्रकार जैन धर्म ने अतीत के सैंकड़ों वर्षों से भारत को बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नवजागरण में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया। मानव-मानव के अन्तर्द्वन्द्वों, विरोधी एवं संघर्षों की खाई को पाटने और उनमें समन्वय, सौहार्द तथा विश्वजनीन भ्रातृ भाव की स्थापना करने में जैन धर्म ने सफलता प्राप्त की और तत्कालीन सांस्कृतिक क्षेत्र में लोकप्रियता अर्जित की।

—शोध छात्रा, इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–४

१. Jyoti Prasad Jaina 'The Jain Sources of the History of Ancient India.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-कथामृत [२२]

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

अंतिम इच्छा

□ श्री रामदास नामा

एक नरेश बहुत ही पुण्यशाली, दानवीर व धार्मिक प्रवृत्ति के थे। दानवीरता व उदारता के कारण चारों ओर उनकी ख्याति थी। बड़े-बड़े राजा महाराजा उनका बहुत सम्मान करते थे।

उन्हें एक बड़ा ही विचित्र शौक था। वे प्रतिदिन प्रातः स्नानादि के उपरान्त एक नई खूबसूरत पोशाक पहिनते थे। दूसरे दिन उसे उतारकर दानस्वरूप किसी गरीब व्यक्ति को भेंट कर देते थे। यह क्रम उनका निरन्तर चल रहा था। इस प्रकार प्रतिदिन अपनी पोशाक दान करने में उन्हें विशेष आनन्द की अनुभूति होती थी।

उन्हें यकायक विचार आया कि नित्य पोशाक दान का कार्य मुझे बहुत रुचिकर है लेकिन आखिरी समय में (मृत्यु उपरान्त) मुझे कैसी पोशाक पहिनना चाहिये, आदि विचारों में महाराजा कुछ खो से गये।

आखिर उन्होंने कुछ निश्चय करके ३-४ लाख रुपयों की एक बहुमूल्य, बहुत ही सुन्दर, हीरे-मोती जड़ित पोशाक तैयार करवाई। काफी दिनों की मेहनत से बहुत सुन्दर पोशाक तैयार हो गई।

नरेश ने पूरा दरबार लगाया। दरबार में बड़े-बड़े मन्त्री, अधिकारी व पूरा राज परिवार उपस्थित था। नरेश ने बारी-बारी से उस बेशकीमती पोशाक को दिखाया। पोशाक की सुन्दरता देखकर सब मंत्रमुग्ध हो गये।

नरेश ने कहा—"मुझे पोशाक दान करने का शौक है। मेरी अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा है कि मेरे मरने के उपरान्त यह पोशाक मुझे पहनायी जावे और दाह-संस्कार के समय इसे दान कर दी जावे। यह मेरी एक प्रबल इच्छा है। मेरे मरने के बाद आप सबका दायित्व है कि मेरी इस एकमात्र इच्छा का पालन हो।"

सब दरबारी, अधिकारी, उत्तराधिकारी व परिवार के लोग नत-मस्तक हो गये। अवसर देखते ही राजकुमार (उत्तराधिकारी) हाथ जोड़कर बोला—"पिताजी, आप धन्य हैं। आपके विचार धन्य हैं। आपकी अंतिम इच्छा भी आपकी तरह धन्य है। यह सब कुछ आप ही का है। आपकी इच्छानुसार आखिरी समय में आपको यह पोशाक पहिनाकर, दान करदी जावेगी। हम वचनबद्ध हैं। हर कार्य आपकी इच्छानुसार ही होगा। इसमें आप तनिक भी संदेह न रखें।"

महामंत्री व अन्य मंत्रियों ने महाराज की जय-जयकार की व महाराज की अंतिम इच्छा की सराहना की और पूर्ण आश्वासन दिया कि आपकी अंतिम इच्छा अवश्य ही पूर्ण होगी।

नरेश बहुत ही दूरदर्शी थे। उन्हें विचार आया कि इनके पूर्ण आश्वासन के उपरांत भी मेरी अंतिम इच्छा में कोई कसर रह गई तो मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी।

नरेश ने कुछ समय उपरान्त नाटकीय रूप से अपने को अस्वस्थ बतलाया। राजवैद्य को बुलाया व पूर्ण बात समझा दी। राजवैद्य ने महाराज के बताये अनुसार महाराज को अस्वस्थ घोषित कर दिया। कुछ दिन बाद राजवैद्य ने कहा—"महाराज की तबियत बहुत खराब है, उन्हें आराम की सख्त आवश्यकता है।" आखिर एक दिन राजवैद्य ने घोषित कर दिया कि महाराज परलोक सिधार गये हैं। नरेश को योग का अभ्यास था। उन्होंने योग के बल पर श्वास को रोक लिया व निर्जीव प्रतीत होने लगे।

मृत्यु की खबर सुनकर सब स्तब्ध रह गये। राजमहल में कोहराम मच गया। महाराज को श्मशान ले जाने की तैयारी होने लगी। पुरोहितों ने कहा—महाराज की अंतिम इच्छा के अनुसार उनकी रत्नजड़ित बहुमूल्य पोशाक मंगाई जावे व पहनाई जावे। खजाने से पोशाक मंगवाई गई। उसकी चमक-दमक से सब रोमांचित हो गये। उन्होंने अपने जीवन में ऐसी सुन्दर व कीमती पोशाक कभी नहीं देखी थी। राजकुमार, मंत्री व प्रजाजन भी उस पोशाक की चमक-दमक से प्रभावित हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े राजकुमार जो कि राजा बनने की तैयारी में थे, उन्होंने प्रधानमंत्री व अन्य मंत्रियों से कहा—"मंत्री जी, कितनी बहुमूल्य व सुन्दर पोशाक है। महाराज के पार्थिव शरीर को पहिनाकर भंगी को दान देने में क्या बुद्धिमत्ता है ? भंगी क्या जाने इसकी उपयोगिता व मूल्य को। और भंगी इसे प्राप्त कर भी ले तो इसका क्या करेगा। उसके घर में तो झाड़ू व टोकरी ही शोभा देते हैं, राजकीय बहुमूल्य परिधान नहीं। यह महाराज की अमूल्य निशानी है, राज्य व खजाने की शोभा है। इसे व्यर्थ में भंगी को दान न करें। छोटे मुँह बड़ी बात कर रहा हूँ। आपकी क्या राय है ?"

प्रधानमंत्री ने कहा—"राजकुमार, आप कुशाग्र बुद्धि ही नहीं, महा पराक्रमी व दूरदर्शी भी हैं। आपने जो विचार रखे, उनसे हम सब सहमत हैं। क्योंकि महाराज तो अब परलोक सिधार गये। अब उन्हें इससे क्या मतलब कि उनकी अन्तिम इच्छा का क्या हुआ। अब वे स्वर्ग से देखने के लिए तो आने से रहे। उनकी अदूरदर्शिता से राज्य को नुकसान क्यों उठाना पड़े ? लेकिन राजकुमार आप रनवास में जाकर अपनी माताओं व पत्नियों को भी समझा दें कि इस अमूल्य पोशाक को महाराज को पहिनाकर भंगी को दान देना मूर्खता है। महाराज तो मर गये, उनकी इच्छाएँ उनके साथ गईं। भविष्य तो हमें सँवारना है।"

राजकुमार ने बड़े ही मीठे वचनों से रनवास में जाकर अपनी माताओं व पत्नियों को समझा दिया कि महाराज की अन्तिम इच्छा निरी मूर्खतापूर्ण ही थी। रानियों व दासियों में कुछ देर तो कानाफूसी होती रही लेकिन थोड़ी देर बाद रानियाँ भी राजकुमार की सलाह से सहमत हो गईं। सबके एकमत होने पर उस अमूल्य पोशाक को वापस खजाने में पहुँचा दिया गया।

इतने में ही अद्भुत चमत्कार हुआ। महाराज अपनी शैया से यंत्रवत् एकदम खड़े हो गये। सब स्तब्ध रह गये। कई लोग घबरा गये। महाराज ने तीव्र शब्दों में कहा—"डरो मत ! मैं मरा नहीं, यह तो मात्र एक नाटक था। मुझे तो यह अनुभव करना था कि मेरे मरने के बाद परिवारजन व उत्तराधिकारी मेरी इच्छा पूर्ण कर सकते हैं या नहीं ? पर आज मुझे यह पूर्ण विश्वास हो चुका है कि इंसान जिन्दा रहते हुये अपने हाथों से जो कुछ पुण्य कर्म करले वो ही ठीक है ? उसके मरने के बाद कोई भरोसा नहीं। वही पुण्य कर्म उसके साथ जायेंगे। बाकी सब यहीं रह जावेगा।" यह सब देखकर उपस्थित मंत्रियों व राजकुमारों के सिर लज्जा व पश्चात्ताप से झुक गये।

महाराज ने उसी दिन से गरीबों, निःसहायों को अपने दोनों हाथों से खुले हृदय से खूब दान देना शुरू कर दिया। खजाना खाली होते देख राजकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व रानियों ने कहा—"महाराज, हमारा क्या होगा ? खजाना खाली होता जा रहा है। आप किसी की सुनते ही नहीं ? क्या आप हमें भिखारी ही बना देंगे।"

महाराज ने कहा—"जो कुछ मैं अपने हाथों से कर दूंगा वही मेरे साथ जावेगा, मृत्युपरांत जो बचेगा वो तुम्हारा। मैं तो आखिरी दम तक उन्मुक्त हृदय से दान-पुण्य करूंगा।"

—प्रूफरीडर,
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स,
जौहरी बाजार, जयपुर–३०२००३

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए—

१. महाराजा को किस बात का शौक था ?

२. महाराजा की अन्तिम इच्छा क्या थी ?

३. महाराजा ने अपने को मृत घोषित कराने का नाटक क्यों किया ?

४. महाराजा की अन्तिम इच्छा पूरी न करने के पीछे उनके परिवार वालों की क्या मनोवृत्ति रही ?

५. महाराजा ने अपनी मृत्यु-शय्या से उठकर परिवार वालों से क्या कहा ?

६. बड़े राजकुमार की जगह यदि आप होते तो क्या करते ?

७. आपकी अन्तिम इच्छा क्या है ?

८. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के नवम्बर, १९८३ के अंक में प्रकाशित श्री अशोक श्रीश्रीमाल की कहानी **'दौलत सच्चाई की'** के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सबको धन्यवाद।

भवानीमण्डी से लाडकुंवर जैन, हेमलता जैन, **नीमच** से भीखमचन्द रांका,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाबपुरा से बुधराज नाहर, मांगीलाल छाजेड़, **भिणाय** (अजमेर) से रविप्रभा नाहर, **जोधपुर** से अमित भण्डारी, अलका भण्डारी, मनोजकुमार, **अलीगढ़** (टोंक) से घेवरचन्द जैन, **बंगलौर** से रोहितकुमार जैन, **हीरापुर** (जलगांव) से मिलिंद, भीकमचन्द छाजेड़, शशीकला, उत्तमचंद छाजेड़, **जयपुर** से विकास वैद, महेश खण्डेलवाल, **नागपुर** से अंजु जैन, **स्टेशन बजरिया सवाईमाधोपुर** से लाभेश्वर जैन व **श्री महावीर** जैन धार्मिक पाठशाला से जितेन्द्र, कु० सुनीता, कु० पिंकी, कु० प्रेमलता, कु० मधुबाला, कु० अनिता जैन, सुरेन्द्र, अरुण, कु० सावित्री, कु० अनिता, इन्द्रा, मन्जुबाला जैन एवं सुषमा सक्सेना।

पुरस्कृत उत्तरदाता

प्रथम :—सुदीप जैन, १७० / १८४, **साहूनगर** सवाईमाधोपुर (राजस्थान) ३०२ ०२२।

द्वितीय :—सज्जनसिंह छाजेड़, श्री नानक जैन छात्रालय, **गुलाबपुरा** जि० भीलवाड़ा (राजस्थान)।

तृतीय :—संजय आंचलिया द्वारा श्री मदनलाल सुजानमल जैन, क्लॉथ मर्चेन्ट, **नीमच** (मध्यप्रदेश)।

नवीन प्रकाशन

जैनधर्म का मौलिक इतिहास, भाग–३

☐ **आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०**

इह ग्रंथ में वीर निर्वाण सं० १००१ से १५०० तक की प्रमुख धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा साँस्कृतिक घटनाओं का तथ्यपरक विवरण दिया गया है। पृ० ९२५, मूल्य ५०.००।

कृपया आज ही आर्डर दें—

—मंत्री, जैन इतिहास समिति, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर–३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बोधन :

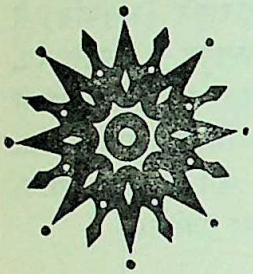

मुक्ति पाना है तो ज्ञानी बनो ! *

☐ पं० रत्न श्री मान मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के विद्वान् शिष्य]

गुण ही पूजा का स्थान :

नव पद आराधना के मंगलमय दिवस चल रहे हैं। आज नव पद आराधना का छठा दिवस है। पंच परमेष्ठी और ४ उनके गुण। पंच परमेष्ठी का तो कथन किया जा चुका है। उन गुणीजनों का कथन करने के बाद उनमें रहने वाले गुणों को भी आचार्यों ने नमस्कार किया है। गुण से ही गुणी है। अगर गुणी में से गुण निकाल दिया जाय तो गुणी नहीं कह सकते। गुण ही उनको गुणी बनाये हुए हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के कारण से ही वे अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु के पद को प्राप्त कर सके हैं। बिना ज्ञान, दर्शन, चारित्र के न मुनि होता है न आचार्य होता है, न उपाध्याय होता है, न अरिहंत होते हैं, न सिद्ध। अगर देखा जाय तो गुण ही पूजा का स्थान है, 'गुणानं पूजा स्थानम् गुणिषु न च वित्तं न च वयं।' गुण ही पूजा का स्थान है। न धन और न आयु ही पूजा का स्थान है। गुण है तो पूजा है। गुण नहीं तो पूजा नहीं।

ज्ञान और आत्मा :

वे कौन से गुण हैं जो मोक्ष पहुंचायें। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप। सबसे पहला नम्बर आता है ज्ञान का। ज्ञान से ही वस्तु के स्वरूप को समझा जाता है। आत्मा का मौलिक गुण है ज्ञान। गुण कभी आत्मा से अलग नहीं हो सकता, कितना ही कर्मों का आवरण क्यों नहीं आ जाय। निगोद में पहुँचे हुए जीव का भी अनंतवा भाग तो खुला ही रहता है। इसका एक दृष्टान्त दिया जाता है। चन्द्रमा में १६ कलाएँ होती हैं। १५ दिन में १५ कलाओं का विकास होता है और १५ ही कलाओं का ह्रास होता है। अर्थात् वे प्रकट होती हैं और छिप जाती हैं। राहु के विमान आने से १-१ कला घटती

*१८-१०-८३ को जयपुर में दिया गया प्रवचन। प्रो० संजीव भानावत द्वारा सम्पादित एवं अशोक जैन द्वारा लिपिबद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली जाती है। जैसे ही राहु का विमान चला जाता है १-१ कला खुलती चली जाती है। १५ खुलती हैं और १५ डूबती हैं पर एक कला तो खुली ही रहती है। आत्मा के रूप में एक कला रूप खुला रहता है चाहे कितना ही कर्मों का आवरण क्यों नहीं आ जाय। कुछ न कुछ ज्ञान खुला रहता है। जीव जीव ही है। अजीव अजीव ही है। चेतन चेतन ही है, आत्मा आत्मा ही है और पुद्गल पुद्गल ही है। ये कभी एक दूसरे से मिलते नहीं हैं। आत्मा का ज्ञान का सम्बन्ध है। वैसा ही जैसा कि दंड और दंडी का सम्बन्ध है। जिसके हाथ में दंड है वह दंडधारी कहा जाता है। जिस के हाथ में छत्र है तो उसे छत्रधारी कहते हैं। जिसके हाथ में वज्र है तो उसे वज्रधारी कहते हैं। ऐसा सम्बन्ध ज्ञान और आत्मा का है क्योंकि ये सहयोग तो संयोग सम्बन्ध हैं। दो तरह से सम्बन्ध होते हैं। एक संयोग और दूसरा तादात्म्य।

नरक निगोद में चला जाय तो भी आत्मा का गुण रहेगा। मिठास को वस्तु से अलग कर दिया जाय ऐसा कभी नहीं हो सकता। उसी तरह से ज्ञान और आत्मा अगर निश्चय दृष्टि से देखा जाय तो एक ही हैं। इसलिये शास्त्रकारों ने कहा कि जो आत्मा है वही विज्ञाता है और जो विज्ञाता है वही आत्मा है। ज्ञान और ज्ञानी का भेद नहीं किया जा सकता। दोनों एक ही चीज हैं। परन्तु व्यवहार दृष्टि से भेद भी कर दिया। ज्ञान कहाँ रहता है। कहा कि आत्मा में रहता है। आत्मा और ज्ञान अलग-अलग हैं। आत्मा आधार है और ज्ञान उसका आधेय। जैसे पात्र और उसके अन्दर रखी हुई वस्तु। पात्र अलग है, वस्तु अलग है। दोनों में आधार और आधेय सम्बन्ध है।

ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम जब तक नहीं होगा तब तक ज्ञान नहीं होगा। अज्ञान कर्मों के उदय के कारण से होता है। कर्मों के उदय के कारण जो अज्ञान अवस्था है वह विपरीत श्रद्धान रूप मिथ्यात्व के उदय से है। उसमें आस्था विपरीत होती है। जैसे मनुष्य सीप के टुकड़े को देखकर समझता है, विचार करता है कि यह चाँदी है। जैसे सूर्य की किरणें रेगिस्तान में जब गिरती हैं, उस समय रेत के टीले इस तरह से मालूम होते हैं मानों पानी बह रहा हो। उसे मृगतृष्णा कहते हैं। अर्थात् हिरण गर्मी की ऋतु में प्यास के कारण इधर-उधर भटकता है, सामने किरणों की वजह से वह उसको पानी समझ रहा है, दौड़ता है, वहां पहुँचता है परन्तु वहाँ जल नहीं होता है। मृगतृष्णा के कारण से वह भटकता रहता है। यही अज्ञान अवस्था मानव की है। जिन पदार्थों के अन्दर सुख नहीं उनमें सुख की कल्पना करता है। वह सुखाभास है पर सुख नहीं। इस तरह से विपरीत समझ बनी हुई है। वह अज्ञान अवस्था तो मिथ्यात्व ज्ञान से है। जिसे सही हिताहित का बोध नहीं होता है वह अज्ञानी है। सच्ची समझ देने वाला ज्ञान है। ज्ञान के बिना मुक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती। जब तक रास्ते की जानकारी नहीं, तो वह उल्टा चला जावेगा और कभी भी मंजिल पर नहीं पहुँच सकता। ज्ञान से ही मोक्ष के मार्ग को जानते हैं। ज्ञान से ही बन्धन के मार्ग को जानते हैं। पाप और पुण्य के मार्ग को ज्ञान से जानते हैं। कल्याण का मार्ग कौनसा है? ज्ञान के द्वारा निश्चित करके ही उस मार्ग को अपनाया जाता है। ज्ञान के साथ आचरण भी जरूरी है। चलने के लिये शक्ति नहीं है परन्तु आँखें हैं तो भी चला नहीं जा सकता। इसलिये ज्ञान और क्रिया का होना आवश्यक है।

ज्ञान और क्रिया :

भगवान् ने ज्ञान और क्रिया को मोक्ष का मार्ग कहा है। एक बार जंगल के अन्दर पंग और अन्धा दोनों रह गये। जंगल में आग लग गई। वहाँ से कैसे निकलें? एक में चलने की शक्ति है तो आँख नहीं। एक में आँख है तो चलने की शक्ति नहीं। उन दोनों ने मिलकर निर्णय किया। अन्धा कहने लगा तुम मेरे कन्धे पर बैठ जाओ मैं चलूंगा और तुम मुझे रास्ता बताते जाना। पगु रास्ता बता रहा है, अन्धा चल रहा है। उसी तरह से संसार रूपी अटवी है, जंगल है और आरम्भ-परिग्रह की अग्नि लगी हुई है। ज्ञान की आँखों से, क्रिया के चरण से अगर इस अटवी से पार होना है तो दोनों का मिलान करके पार हो जाओ। सबसे पहले ज्ञान है। इससे हिताहित का बोध होता है। जितना-जितना आरम्भ-समारम्भ कम होता जायेगा, उतना ही विषय-कषाय कम होता जायेगा। ज्ञानी संसार के भोगों में आसक्ति नहीं रखता। इसलिये भोगों को भोगता हुआ कर्मों की निर्जरा करता है। गृहस्थ कर्मों का बन्ध करता है। चाहे वह हिन्दू है, चाहे मुसलमान है। यदि वह ज्ञानी है तो मोक्ष का अधिकारी है। चक्रवर्ती के पद पर भी चरम शरीरी भोगों को भोगते हुए भी उसमें उलझे नहीं। भोग है जो विकार का हेतु है। परन्तु यदि उसके प्रति लगाव नहीं तो वे कर्मों की निर्जरा करते हैं। तीन तीर्थंकर तो चक्रवर्ती ही बने हैं। छः खण्ड का राजा जिसने लड़ाई भी लड़ी, इतनी बड़ी सेना का संचालन किया फिर भी कर्मों के बन्धनों से बंधे नहीं रहे। जल में कमल की तरह से रहे। ऐसी स्थिति अगर हो जाय तो आपको भी गृहस्थ में रहने के लिये मनाई नहीं है। संत तो यही कहते हैं—क्यों कीचड़ में फंस रहे हो? इससे बाहर निकलो। आपको देख करके करुणा आती है। साधु तो परिग्रहधारी को कैसे अच्छा समझे? वे तो स्वयं रखे नहीं, रखावें नहीं और रखते हुए को भला जाने नहीं।

मुक्ति पाना है तो ज्ञानी बनो :

मुनि तो हमेशा भाव दया का चिंतन करते हैं। धर्म ध्यान करने को कहते हैं। उसी में प्रमोद का अनुभव करते हैं। साधु संसार में रहे कोई बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। परन्तु साधु के मन में संसार नहीं बसना चाहिये। आचार्य श्री कई बार फरमाते हैं कि यह कला सीख लो। अपने शिष्यों को कहते हैं। आप सकषायी के बीच में अकषायी बनने की कला सीख लो। यह कला आ गयी तो दूसरी कोई कला सीखने की जरूरत ही नहीं है। यह कला बिना ज्ञान के नहीं आती है, बिना स्वाध्याय के नहीं आती है। जब तक स्वाध्याय नहीं किया जावेगा, तब तक कला नहीं आयेगी और यह कला नहीं आयेगी तो मुक्ति भी नहीं हो सकती।

है मानव मुक्ति पाना है तो ज्ञानी बनो,
प्यारे ज्ञानी बनो।
बिना ज्ञान मुक्ति नहीं पावे, चाहे जितना कष्ट उठावे,
संशय दूर हटाना है तो ज्ञानी बनो,
प्यारे ज्ञानी बनो।

हे सज्जनो ! अगर मुक्ति पाना है तो ज्ञानी बनो। बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती है। चाहे कितना भी कष्ट क्यों न उठाओ। जैसे ज्येष्ठ की गर्मी में चारों तरफ अग्नि सुलगाकर बैठे रहते हैं। अज्ञान अवस्था है। अज्ञानी उस तप को करता है जिससे देवलोक का अधिकारी तो बन जाता है, परन्तु मुक्ति का अधिकारी नहीं बनता। सर्दी की ऋतु में जल में जाकर खड़े हो जायें, ऐसा करने वाले मिल जावेंगे, मास-मास खमण की तपस्या करने वाले मिल जावेंगे परन्तु वे मुक्ति के अधिकारी नहीं होते क्योंकि उन्हें व्रत-अव्रत की जानकारी नहीं है। अगर इसको समझ लें, हानि-लाभ को समझ लें तो कोई अव्रत में रहना नहीं चाहेगा। परन्तु अभी तक समझा नहीं है। मर्यादा और कुछ चीज है, बन्धन और है। अगर हम किसी को व्रत की मर्यादा दिला दें तो आप लोग कहेंगे चोखो बापजी यह दिला दिया तो, लेकिन कोई पकड़ कर ले जाय तो खलबली मच जावेगी।

प्रत्याख्यान का महत्त्व :

एक मिल के अन्दर सभी लोग काम करते थे पर एक आदमी रजिस्टर में नाम नहीं लिखता था। वह खूब दौड़-दौड़ कर काम करता था। जब महीना हुआ तो सब तनख्वाह के लिये गये। जिसका नाम लिखा, उसको मिल गई। वह भी गया परन्तु उसको नहीं मिली। कहने लगा—मैंने काम किया, किया होगा, यहाँ तो तुम्हारा नाम नहीं है। जीवन में प्रत्याख्यान किया नहीं। अगर अव्रत का प्रत्याख्यान कर लिया तो अव्रत की क्रिया रुक जावेगी। आप देख लीजिये। आप भी और बिना सामायिक वाले भी बैठे हुए हैं। समय दोनों का जा रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आप मर्यादा में हो, वे मर्यादा में नहीं हैं। आप सभी पापों का त्याग करके आये हो। अतः आश्रव-पाप के आने के कारण रुक गये। जिन्होंने प्रत्याख्यान नहीं किया, उनका चालू है।

पांच ज्ञान :

नन्दीसूत्र में ५ ज्ञानों का वर्णन है। मति और श्रुत ये दो ज्ञान तो परोक्ष हैं जिसमें दूसरों का आश्रय लेना पड़ता है। शेष तीन ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान हैं। अवधि ज्ञान दो प्रकार का है, भवप्रत्यय और गुणप्रत्यय। भवप्रत्यय ज्ञान जन्म से ही होता है, यह नारकी और देवताओं में होता है। मछली को कौन सिखाने बैठा है पानी में तैरना। पशु भी सभी तैरना जानते हैं, क्या सिंह, क्या हाथी। नारकी और देवता के भव में उत्पन्न मिथ्यात्वी का अवधिज्ञान विभंगज्ञान होता है। किन्हीं-किन्हीं मनुष्य को साधना से अवधि ज्ञान हो जाता है वह गुण प्रत्यय है। मन पर्यय ज्ञान मुनियों को ही होता है। केवलज्ञान वीतराग केवली भगवन्तों को ही होता है।

अपनी संस्था का परिचय प्रकाशनार्थ शीघ्र भेजिए

जयपुर—अ. भा. जैन विद्वत् परिषद् ने भारत के विभिन्न क्षत्रों में कार्यरत सभी सम्प्रदायों की जैन संस्थाओं का सर्वेक्षण कार्य हाथ में लिया है। हमें कई स्थानों से उल्लेखनीय सहयोग मिला है पर अभी भी कई गाँवों व नगरों की जैन संस्थाओं का परिचय हमें प्राप्त नहीं हुआ है। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने गाँव, नगर व क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं का यथा—जैन स्कूल, औषधालय. छात्रावास, धार्मिक पाठशाला, पुस्तकालय, सेवाभावी ट्रस्ट आदि का परिचय—१. संस्था का पूरा नाम व पता, २. स्थापना तिथि व वर्ष, ३. संस्थापक व प्रेरणादाता, ४. वार्षिक बजट, ५ मुख्य प्रवृत्तियाँ आदि का विवरण देते हुए निम्न पते पर अवश्य भेजने की कृपा करें। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। आपके द्वारा भेजी गई सूचनाएँ हमारे लिए विश्वसनीय और उपयोगी सिद्ध होंगी।

कृपया अपने क्षेत्र की संस्थाओं का परिचय शीघ्र भेजें। कहीं ऐसा न हो कि आपसे सम्बद्ध संस्थाओं का परिचय इस महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ में छपने से रह जाय।

सम्पर्क सूत्र—निदेशक, जैन संस्था सर्वेक्षण प्रोजेक्ट
सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२ ००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मोद्योत :

जयपुर में भव्य दीक्षा समारोह

एवं

उपनगरों में धर्म ध्यान की लहर के पश्चात् आचार्यश्री का अजमेर की ओर विहार

☐ श्री ब्रजमोहन जैन

प्रात: स्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा०, मधुर व्याख्याता पं. र. श्री मान मुनिजी म० सा०, मधुर व्याख्यानी पं. रत्न श्री हीरामुनिजी म० सा०, कुशल सेवा मूर्ति श्री शीतल मुनिजी म० सा०, व्याख्यान रसिक श्री ज्ञान मुनिजी म० सा०, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म० सा०, विद्या रसिक श्री गौतम मुनिजी म० सा०, सेवाभावी श्री नन्दीषेण मुनिजी म. सा., घोर तपस्वी श्री प्रकाश मुनिजी म. सा., भजन रसिक लघु मुनि श्री धन्नाजी म. सा., ठाणा १० तथा महासती श्री शांतिकंवरजी म. सा., वयोवृद्ध श्री सुगनकँवरजी म. सा., महासती श्री सोहनकँवरजी म. सा., महासती श्री इन्दुबालाजी म. सा. ठाणा ४ के सान्निध्य में विगत एक वर्ष से वैराग्य रंग में रंजित विरक्त बन्धु श्री प्रमोदकुमारजी मेहता अलवर निवासी की भागवती दीक्षा १५ दिसम्बर, गुरुवार को दोपहर विजय के योग के शुभ मुहूर्त्त में हुई। दोपहर सवा बारह बजे बालोद्यान रामनिवास बाग में स्थानीय एवं समागत सुदूर प्रान्तों एवं नगरों से आये हजारों श्रद्धालुओं के मध्य श्रद्धेय आचार्यश्री ने श्रमण जीवन की सार्थकता पर विवेचन प्रदान करते हुए श्री प्रमोद जी को भागवती दीक्षा प्रदान की, जीवन पर्यन्त की सामायिक के प्रत्याख्यान प्रदान किये।

श्री प्रमोदकुमार की उत्कट वैराग्य युक्त भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा एवं उनके अनूठे त्याग की अनुमोदना में श्री अ. भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्री अ. भा. महावीर जैन श्राविका संघ तथा जयपुर श्रावक संघ आदि अनेक संस्थाओं की ओर से भावभीना अभिनन्दन किया गया।

इसी अवसर पर लम्बे समय से प्रतिक्षारत **'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' भाग ३** की प्रति डॉ. एस. कोठारी को ससम्मान समर्पित की गई।

दीक्षा-उत्सव के पावन प्रसंग पर वैरागी बन्धु के पिता श्री सूरजमलजी मेहता ने लगभग २१ हजार रुपये की राशि शुभ खाते में निकालने की घोषणा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि. २२ दिसम्बर को डायमण्ड हाउस सी-स्कीम में नवदीक्षित श्री प्रमोद मुनिजी म. की बड़ी दीक्षा आगमीय (छज्जीवनी) पाठों के उच्चारण के साथ श्रद्धेय आचार्य प्रवर द्वारा धर्म श्रवण को उपस्थित विशाल जनमेदिनी के बीच प्रदान की गयी।

श्रद्धेय आचार्य प्रवर एवं शिष्य समुदाय के जयपुर के उपनगरों में विचरने से धर्म-दुन्दुभि बज उठी। स्वाध्याय एवं सामायिक की ज्योति जगमगाने लगी। जवाहर नगर, आदर्श नगर, बरडिया कालोनी, गंगवाल पार्क, तख्तेशाही रोड, सी-स्कीम, बाइस गोदाम एरिया, महावीर नगर, सोडाला, लालकोठी आदि उपनगरों में सामायिक-स्वाध्याय के साथ धर्म-ध्यान की अभिवृद्धि हुई। जवाहर नगर, बजाज नगर एवं महावीर नगर में स्वाध्याय मण्डलों की स्थापना हुई जहाँ ३०-३५ के लगभग स्वाध्यायी बन्धु सामायिक-स्वाध्याय की नित्य प्रति हर स्थान पर, अलग-अलग आराधना कर रहे हैं।

श्री जौहरीलालजी सा. पटवा, जयपुर, श्री दलपतजराजी सिंघवी जयपुर, श्री अमरचंदजी सा. लोढ़ा नागौर, श्री मनमोहनचंदजी सा. लोढ़ा नागौर, श्री हरिप्रसादजी सा. जैन महुआ रोड, श्री मेहताबचंदजी नवलखा जयपुर आदि ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत के खंद उठाये तथा श्री कमलचन्दजी मेहता ने आजीवन शीलव्रत की प्रतिज्ञा की। श्रीयुत चुन्नीलालजी सा. ललवाणी जयपुर, श्रीयुत नेमीचन्दजी ढढ्ढा जयपुर आदि अनेक बंधुओं ने सजोड़े एक-वर्षीय शील खंद की प्रतिज्ञा की।

श्री गणेशचन्दजी सक्सेना डिस्ट्रिक्ट जज जयपुर ने आजीवन मद्यपान का त्याग किया। इस प्रकार तप-नियम का जयपुर में बड़ा ठाठ रहा।

आचार्यश्री जयपुर के उपनगरों को पावन कर धर्मोद्योत की गंगा बहाते हुए दि. २९ दिसम्बर को श्री प्रकाशजी कोठारी (लाल हाथी वाले) के खेत पर पौषवद १० पार्श्वनाथ जयन्ति की मौन साधना कर दि. ३१ दिसम्बर को बगरू पधारे। यहाँ से दूदू, किशनगढ़ फरसते हुए अजमेर पधारने की सम्भावना प्रतीत होती है।

पं. र. श्री मान मुनिजी म. सा. एवं पं. र. श्री हीरा मुनिजी म. सा. अलग-अलग सिंघाड़ों में आगे-आगे विहार कर रहे हैं। वे भी शीघ्र ही अजमेर पहुँच रहे हैं।

महासती श्री शान्तिकँवरजी म. सा. किशनगढ़ पधार गयी हैं। वे भी शीघ्र अजमेर पधारेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समीक्षा

☐ डॉ० नरेन्द्र भानावत

१. कर्म बन्धन और मुक्ति की प्रक्रिया—श्री चन्दनराज मेहता, प्र० स्वयं, ६३, मेड़तिया सिलावटों का बास, जोधपुर, पृ. ३०४, मू. २२.०० ।

कर्म सिद्धान्त जैन दर्शन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है । कर्मों के आवरण से आत्मा मलीन बनी रहती है । कर्मों को नष्ट कर वह परमात्मा बन जाती है । विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक में पुद्गल और जीव का शास्त्रीय विवेचन करने के साथ उसे वैज्ञानिक सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में भी निरूपित किया है । कर्म पुद्गल का आत्मा के साथ किस प्रकार बन्ध होता है और उसका क्या प्रभाव पड़ता है, इसका आगमिक, वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक जो विवेचन प्रस्तुत किया गया है, वह व्यवस्थित और उपयोगी बन पड़ा है । कर्मों से मुक्त होने की प्रक्रिया के अन्तर्गत गुणस्थान, लेश्या, संवर, निर्जरा, भावना आदि का विवेचन-विश्लेषण है । यथाप्रसंग विभिन्न ध्यान पद्धतियों का उल्लेख किया गया है । पुस्तक को उपयोगी बनाने की दृष्टि से तुलनात्मक पद्धति का भी सहारा लिया गया है ।

२. रुक्मिणी-मंगल—श्री महेन्द्र मुनिजी 'कमल', प्र. श्री शीतल जैन साहित्य सदन, मांडलगढ़, पृ. १२०, मू. ५.०० ।

श्री महेन्द्र मुनि "कमल" ओजस्वी वक्ता, कुशल कवि और सफल लेखक हैं । 'रुक्मिणी मंगल' प्रबन्ध काव्य है । इसमें रुक्मिणी और कृष्ण के विवाह का वर्णन है । शिशुपाल के साथ परिवार के लोग रुक्मणी का विवाह निश्चित करते हैं पर नारद रुक्मिणी और कृष्ण के हृदय में परस्पर प्रेमभाव विकसित कर उन्हें प्रणय-सूत्र में बाँधने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । जैन-जैनेतर कवियों ने इस कथा को लेकर बड़ी संख्या में विविध काव्य रूपों की रचना की है । मंगल काव्य परम्परा में मुनि श्री का प्रस्तुत काव्य अपना विशेष महत्त्व रखता है । 'यह गढ़ चित्तौड़ की कला सुनो' तर्ज में लिखित यह काव्य भाव, भाषा, दर्शन-कला और सांस्कृतिक चित्रण की दृष्टि अत्यन्त सरस, सरल, रोचक और मार्मिक बन पड़ा है ।

३. Awakening :—आचार्य श्री पद्मसागर सूरिजी, प्र. श्री अरुणोदय फाउन्डेशन, अहमदाबाद, मेडीकल सोसायटी हॉल के पीछे, नवरंगपुरा, अहमदाबाद–३८० ००९ ।

आचार्य श्री पद्मसागर सूरिजी देश के प्रभावशाली जैन आचार्यों में से हैं । उनकी वाणी में साधना का तेज और अनुभूति का बल है । प्रस्तुत पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके हिन्दी प्रवचन संग्रह 'प्रतिबोध' का अंग्रेजी अनुवाद है। यह अनुवाद सैन्ट जोसफ कॉलेज बंगलौर के अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष श्री के. रामप्पा ने किया है। इसमें तीन विभाग हैं। जिनमें धर्म, स्वास्थ्य, मानवता, जीवन के उद्देश्य, सच्चा जैनत्व, आत्म ज्ञान, सच्चिदानन्द, सत्संग, निर्भयता, धर्म और विज्ञान से सम्बन्धित प्रवचन हैं। तीसरे विभाग में अंजना और मदना रेखा सम्बन्धी कहानियां दी गई हैं। अनुवाद बहुत सहज और सरल बन पड़ा है। आचार्य श्री की शैली स्पष्ट, बोध गम्य और प्रभावकारी है। छोटे-छोटे दृष्टान्तों और उदाहरणों से प्रवचन रोचक बन पड़े हैं।

४. जब होत सवेरा :—श्री भगवतीमुनि "निर्मल", प्र. श्री वर्धमान जैन ज्ञानपीठ, तिरपाल (राजस्थान) पृ. १६०, मू. ५.००।

मुनि श्री की लेखनी से जीवन निर्माणकारी प्रेरक कथा साहित्य सामने आया है। प्रस्तुत उपन्यास में रामदेव और रतनदेवी के माध्यम से निःस्वार्थ प्रेमभाव और परोपकार का सुन्दर विश्लेषण तथा रामदेव और सहदेव की मित्रता के पारस्परिक सम्बन्धों में स्वार्थपरता और वासना के विष से उत्पन्न संघर्ष का बड़ा सुन्दर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर अन्त में हृदय परिवर्तन द्वारा आध्यात्मिक आदर्श की व्यंजना की गई है। उपन्यास रोचक और प्रेरणा-दायी है।

५–७. बच्चों की सुवास, बच्चों का जीवन, बच्चों का चिन्तन—पंन्यास प्रवर श्री भद्रगुप्त विजय जी गणिवर, प्र, श्री विश्व कल्याण प्रकाशन ट्रस्ट, मेहसाना (गुजरात), पृ. क्रमशः २०, १६, २४, मू. प्रत्येक २.००।

श्री भद्रगुप्त विजयजी का आध्यात्मिक, नैतिक और धार्मिक साहित्य बड़ा प्रेरणादायी और संस्कार वर्धक है। गजराती में आपके कई ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। बच्चों के संस्कार निर्माण के लिये आपने गुजराती में रोचक कथा साहित्य और सचित्र पाठ्य पुस्तकें तैयार की हैं। प्रस्तुत तीनों पुस्तकों का हिन्दी रूपान्तरण श्री भद्रबाहु विजय ने किया है। तीनों पुस्तकें बहुरंगी और सचित्र हैं। इनमें क्रमशः १२, ११ और १६ पाठ हैं। इन पाठों में बच्चों को अपना जीवन और दिनचर्या कैसी बनानी चाहिये, बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, प्रार्थना, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रियायें क्या हैं ? आदर्श जीवन जीने के लिये प्रेम, सहयोग, करुणा, सहनशीलता, क्षमा जैसे गुणों की आवश्यकता है, इन सभी बातों का बहुत ही सरल, सहज और रोचक भाषा में सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया गया है। पुस्तक के अन्त में प्रत्येक पाठ से सम्बन्धित प्रश्न दिये गये हैं। बच्चों के निर्माण में ये पुस्तकें बड़ी उपयोगी हैं। एक साथ १०० पुस्तकें खरीदने पर उनका मूल्य १५०) रुपया रखा गया है।□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज-दर्शन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी व साधारण सभा की बैठक सम्पन्न

जयपुर—यहाँ दिनांक १९ व २० नवम्बर, १९८३ को श्री उमरावमलजी ढड्ढा की अध्यक्षता में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल की कार्यकारिणी समिति व साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई। मण्डल के मंत्री श्री टीकमचन्दजी हीरावत ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वर्ष १९८२-८३ का अंकेक्षित आय-व्यय का हिसाब पारित किया गया तथा वर्ष ८३-८४ का बजट स्वीकृत किया गया।

विचार-विमर्श के पश्चात् यह तय किया गया कि साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्थित योजना बनाई जाय और जो भी साहित्य प्रकाशित हो उसकी उपयोगिता व आवश्यकता के अनुसार सामान्यतः ४०% मूल्य कम रखा जाय ताकि प्रकाशन में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले दानदाता का सस्ते मूल्य पर साहित्य वितरित कराने का उद्देश्य पूरा हो सके। इस कार्य के लिए श्री टीकमचन्दजी हीरावत, डॉ० नरेन्द्र भानावत एवं श्री विमलचन्दजी गोलेछा की एक समिति गठित की गई।

स्वाध्याय संघ की प्रवृत्ति पर विचार करते हुए यह सुझाव आया कि स्वाध्यायी आगमिक ज्ञान की ओर विशेष प्रवृत्त हो सकें, इस ओर विशेष ध्यान दिया जाय। आवश्यकता के अनुसार एवं मांग आने पर विदेशों में भी धर्म-प्रचार एवं पर्युषण पर्वाराधन के लिए स्वाध्यायी भेजे जायें। पल्लीवाल क्षेत्र में स्वाध्याय एवं सामायिक की प्रवृत्ति को विशेष प्रोत्साहन दिया जाय और वर्ष में दो स्थानक निर्मित करने का लक्ष्य रखा जाय। इसके लिए एक-एक हजार रुपये देने वाले सदस्य बनाकर कार्य प्रारम्भ कर दिया जाये।

जयपुर के उपनगर महावीरनगर में स्वाध्याय भवन के लिए श्री धर्मचन्दजी जैन ने भूखण्ड प्रदान किया और श्री चन्द्रराजजी सिंघवी के प्रयत्नों से भवन बनकर तैयार हो गया है इसके लिए जैन सा० एवं सिंघवी सा० को धन्यवाद अर्पित करने का प्रस्ताव पारित किया गया और भवन-निर्माण के लिए ११०००.०० की राशि स्वीकृत की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय संघ जोधपुर की प्रवृत्ति को और अधिक प्रभावकारी एवं व्यवस्थित बनाने की दृष्टि से यह निर्णय किया गया कि मंडल के मंत्री व संयोजक मिलकर जोधपुर नगर की एक स्थानीय समिति व एक अखिल भारतीय स्तर की समिति का गठन कर देवें।

अलीगढ़ के विद्यालय को आर्थिक अनुदान प्रदान करने का निर्णय लिया गया। 'जिनवाणी' के व्यवस्थापक श्री देवराजजी भंडारी को उनकी सेवाओं को देखते हुए ३००-०० प्रतिमाह पेंशन देना स्वीकार किया गया।

दिल्ली के श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन ने बताया कि दिल्ली में चल पुस्तकालय के १२०००) रुपये जलगाँव से प्राप्त हुए हैं पर अभी उनका उपयोग नहीं किया गया है। वहाँ १००) रुपये मासिक का एक आदमी रखा हुआ है जो घर-घर जाकर पुस्तकें वितरित करता है। दिल्ली में स्थापित किये जाने वाले बूचड़खाने के विरोध में मंडल की ओर से भी प्रस्ताव भेजा गया। अब इस दिशा में अखिल भारतीय स्तर पर कार्यवाही की जा रही है।

'जिनवाणी' की प्रगति पर हर्ष प्रकट करते हुए विचार किया गया कि इसकी घाटे की पूर्ति के लिए आवश्यक विज्ञापन लिये जायँ, सदस्य संख्या बढ़ाई जाये ताकि रिजर्व फण्ड में वृद्धि हो।

अ० भा० जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री नथमलजी हीरावत ने आश्वासन दिया कि शिक्षा-दीक्षा आदि के खर्चे के बाद ट्रस्ट में जो बचत होगी, 'जिनवाणी' व स्वाध्याय संघ के घाटे की पूर्ति में उसका उपयोग हो सकेगा।

अन्त में दिवंगत संत-सतियों व श्रावक-श्राविकाओं को श्रद्धांजलि अर्पित कर दो लोगस्स के ध्यान के साथ बैठक विसर्जित हुई। समागत सदस्यों को धन्यवाद अर्पित किया गया।

अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की बैठक सम्पन्न

जयपुर—यहाँ श्री अ० भा० जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी एवं साधारण सभा की बैठक १८ व १९ नवम्बर, १९८३ को संघ के अध्यक्ष श्री नथमलजी हीरावत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में संघ एवं ट्रस्ट का वर्ष १९८१-८२ व ८२-८३ का वार्षिक लेखा स्वीकृत किया गया। बैठक में पूज्य श्री कुशलोजी म० सा० की २००वीं पुण्य तिथि मनाने के २८ सूत्रीय कार्यक्रम के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया गया और इसे तप-त्याग पूर्वक मनाने के लिये सभी के सहयोग का आह्वान किया गया। इस बात पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी विचार किया गया कि पूज्य श्री की जन्मभूमि रीयाँ में आयुर्वेदिक औषधालय प्रारम्भ किया जाय। अध्यक्ष महोदय ने बताया कि ट्रस्ट ने अजमेर में एक हवेली खरीद ली है और ब्यावर स्थित वेरली के नोहरे पर आवश्यक खर्च हेतु राशि स्वीकृत कर दी गई है। स्वधर्मी वात्सल्य बाबत तथा पल्लीवाल क्षेत्रों में स्थानक बनाने बाबत भी विचार किया गया। जयपुर चातुर्मास के दौरान डॉ० कुलश्रेष्ठ, डॉ० एस० आर० मेहता, डॉ० जी० आर० सिंघवी, डॉ० कल्याणमलजी लोढ़ा व श्री सुशीलकुमारजी वैद्य ने आचार्य प्रवर के स्वास्थ्य परीक्षण एवं आँखों के सफल ऑपरेशन आदि सेवा सुश्रूषा में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं, अतः उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया गया। श्री कुशलचन्दजी हीरावत ने चार माह तक आचार्य प्रवर के सान्निध्य में रहकर अखण्ड मौन साधना की और संवर व्रत में धर्म स्थान में रहकर स्वाध्याय, चिन्तन आदि में अपना समय बिताया तथा पर्युषण में अठाई की तपस्या की। संघ की ओर से उनके प्रति अभिनन्दन प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

श्रद्धेय आचार्य प्रवर, महासती श्री सायरकंवरजी व महासती श्री मैना सुन्दरीजी के सफल चातुर्मास व्यवस्था के लिये क्रमशः जयपुर, भोपालगढ़ व कोडम्बाकम (मद्रास) श्री संघ को धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया गया।

इस अवसर पर चुनाव सम्बन्धी विचार-विमर्श के बाद श्री उमरावमलजी ढड्ढा की अध्यक्षता में सर्वानुमति से श्री नथमलजी हीरावत संघ के अध्यक्ष चुने गये और उन्हें अन्य पदाधिकारियों व सदस्यों के नामों की घोषणा करने के लिये अधिकृत किया गया। श्री हीरावत साहब ने पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की जो इस प्रकार है।

पदाधिकारियों की सूची

मुख्य संरक्षक— श्रीमान् उमरावमलजी सा. ढड्ढा, अजमेर।

संरक्षक—

(१) श्रीमान् श्रीचन्दजी सा. गोलेछा, जयपुर।
(२) श्रीमान् इन्द्रचन्दजी सा. हीरावत, जयपुर।
(३) श्रीमान् सिरेमलजी सा. नवलखा, जयपुर।
(४) श्रीमान् जौहरीलालजी सा. ओस्तवाल, मेड़ता।
(५) श्रीमान् लाभचन्दजी सा. लोढ़ा, जयपुर।
(६) श्रीमान् जालमचन्दजी सा. बाफना, आगरा।
(७) श्रीमान् पूनमचन्दजी सा. बडेर, जयपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) श्रीमान् पृथ्वीराजजी सा. कवाड़, मद्रास ।

(९) श्रीमान् देवेन्द्रराजजी सा. मेहता, दिल्ली ।

अध्यक्ष— श्रीमान् नथमलजी सा. हीरावत, जयपुर ।

कार्याध्यक्ष— डॉक्टर सम्पतसिंहजी सा. भांडावत, जोधपुर ।

उपाध्यक्ष— (१) श्रीमान् सुमेरचन्दजी सा. चौरड़िया, मद्रास ।

(२) श्रीमान् माणकचन्दजी सा. डोसी, पाली ।

(३) श्रीमान् हनुमानचन्दजी सा. कांकरिया, बालोतरा ।

(४) श्रीमान् झंकारमलजी सा. मूथा, बम्बई ।

महामंत्री— श्रीमान् माणकमलजी सा. भंडारी, जोधपुर ।

मंत्री— (१) श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर ।
(स्व आश्रित सम्पत्ति व पूज्य श्री कुशलोजी म. सा./की पुण्य तिथि का कार्य)

(२) श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, जयपुर ।
(जन सम्पर्क व वित्त)

(३) श्री रंगरूपमलजी डागा, जोधपुर ।
(कार्यालय व पश्चिमी राजस्थान)

कोषाध्यक्ष— श्रीमान् उमरावमलजी सा. सुराणा, मद्रास ।

सह कोषाध्यक्ष— श्रीमान् कुन्दनमलजी सा. भंसाली, जोधपुर ।

क्षेत्रीय समितियाँ :—

मद्रास : क्षेत्रीय प्रधान— श्री कैलाशमलजी दुगड़ ।

मध्यप्रदेश : क्षेत्रीय प्रधान— श्री बादलचन्दजी मेहता, इन्दौर ।

उप प्रधान— श्री बसन्तीलालजी सेठिया, रतलाम ।

श्री मदनलालजी बोडाना, इन्दौर ।

मंत्री— श्री पारसमलजी चौरड़िया, उज्जैन ।

महाराष्ट्र : क्षेत्रीय प्रधान— श्री दलीचन्दजी चौरड़िया, जलगाँव ।

उप प्रधान— श्री मोहनलालजी कटारिया, नागपुर ।

श्री जवाहरलालजी बोहरा, इचलकरंजी ।

मंत्री— श्री रतनलालजी बाफना, जलगाँव ।

कर्नाटक : क्षेत्रीय प्रधान— श्री प्रेमचन्दजी भंडारी, बैंगलोर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप प्रधान— श्री मोतीलालजी सांखला, बैंगलोर।
श्री रिखबचन्दजी सुखाणी, रायचूर।
मंत्री— श्री गणेशमलजी भंडारी, बैंगलोर।
कार्यकारिणी के १२७ सदस्य भी चुने गए।

युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी को हार्दिक श्रद्धांजलि

युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी का स्वर्गवास मानव समाज की अपूरणीय क्षति है। धर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति को उनकी महान् देन रही है। उनमें सरलता और विद्वता का विरल संगम था। देश के विभिन्न क्षेत्रों में जगह-जगह पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं "जिनवाणी" कार्यालय में बड़ी संख्या में श्रद्धांजलि समाचार प्राप्त हुए हैं। उनका संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है :—

नासिक में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म. सा. ने कहा कि चातुर्मास काल में युवाचार्य श्री ने सभी कार्यों को जिस कुशलता एवं योग्यता के साथ संभाला उससे, मुझे अपनी आत्मा में बड़ी शान्ति मिलती रही। वे विनय, सरलता, मृदुता एवं सौम्यता के साकार प्रतीक थे। साथ-ही-साथ सैद्धान्तिक, आनुशासनिक दृढ़ता और क्षमता का उनमें अपूर्व समन्वय था। मैं अपनी वेदनाकुल मनःस्थिति के सम्बन्ध में क्या कहूँ, मेरे पास शब्द नहीं है। **आबू पर्वत** पर अनुयोग प्रवर्तक पं० रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" ने उनकी साहित्य-साधना के योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि वे स्वभाव से बहुत ही विनम्र एवं सरल थे। **किशनगढ़-मदनगंज** में उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी के सान्निध्य में, **बालाघाट** में श्री कानकंवरजी म. सा. के सान्निध्य में, जैन संघ **कोडम्बाकम** (मद्रास) में श्री मानमलजी मेहता की अध्यक्षता में, स्था. जैन संघ **कोयम्बटूर** की ओर से श्री निहालचन्दजी गादिया की अध्यक्षता में, **अजमेर** में श्री उमरावमलजी ढड्ढा की अध्यक्षता में, **साहूकार पेठ जैन स्थानक मद्रास** में श्री माणकचन्दजी बेताला की अध्यक्षता में, **जगदलपुर** ओसवाल जैन श्वे० समाज की ओर से श्री मांगीलालजी बोथरा की अध्यक्षता में जैन श्रावक संघ **गुलाबपुरा** की ओर से श्री भीमसिंहजी संचेती की अध्यक्षता में, **जलगाँव** में श्री नथमलजी लूंकड़ की अध्यक्षता में, जवाहर विद्यापीठ कानोड़ में **मद्रास** के श्री मेघराजजी मेहता की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया गया।

स्था० जैन श्रावक संघ धूलिया, रामपुर, रायपुर (झालावाड़), कलकत्ता, बैंगलोर, जोधपुर, आवड़ी (मद्रास), बागलकोट, सवाईमाधोपुर, दुर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर से भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बीकानेर में कर्मठ सेवाभावी श्री इन्द्रचन्दजी म. सा. के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम रखा गया। श्री महावीर जैन पाठशाला, स्टेशन बजरिया (सवाईमाधोपुर) तथा श्री जैन बाल वीर मंडल नगरी की ओर से भी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर, सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर एवं अ० भा० श्री महावीर जैन श्राविक संघ मद्रास की ओर से आयोजित श्रद्धांजलि सभा में संघ के मन्त्री श्री माणकमलजी भंडारी ने कहा कि रत्नवंश का पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० की परम्परा के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। इस वंश के आद्य पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्दजी म० सा० ने पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० के साथ वर्षों विचरण किया है। युवाचार्य श्री जयमल्लजी म० सा० की परम्परा के विशिष्ट सन्त थे। नासिक चातुर्मास में श्रमण परम्परा को सुदृढ़ बनाने हेतु आपने विशेष प्रयास कर समाज के समक्ष नवीन आशा का संचार किया था। और भी कई स्थानों से लगातार समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् निबन्ध प्रतियोगिता

विषय— जैन योग : स्वरूप और प्रक्रिया।

शब्द सीमा— निबन्ध फुलस्केप साइज के कागज पर एक ओर टाइप किया हुआ अथवा स्पष्ट व सुवाच्य अक्षरों में ३००० से ५००० शब्दों तक लिखा हुआ हो।

पुरस्कार— श्रेष्ठ निबन्धों पर निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। प्रथम पुरस्कार ३००) रु०, द्वितीय पुरस्कार २००) रु०, तृतीय पुरस्कार १००) रु०। ५ प्रोत्साहन पुरस्कार–प्रत्येक ५०) रु०।

अन्तिम तिथि— निबन्ध २९ फरवरी, १९८४ तक डॉ० नरेन्द्र भानावत, महामन्त्री, अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् सी-२३५ ए, तिलकनगर, जयपुर–३०२ ००४ के पते पर पहुँच जाना चाहिये।

जैन विद्या प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना

अ० भा० जैन विद्वत् परिषद्, जयपुर ने विश्वविद्यालयों में जैन विद्या के विषय को प्रोत्साहित करने के लिये समाज के सहयोग से छात्रवृत्ति निधि का शुभारम्भ किया है। वर्ष १९८३-८४ के लिये उदयपुर, जयपुर, शान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकेतन, अहमदाबाद, वाराणसी, नागपुर, मैसूर, धारवाड़ आदि विश्वविद्यालयों में जैन विद्या लेकर अध्ययन करने वाले एम. ए. के छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जायेंगी।

सामान्य नियम

१. ये छात्रवृत्तियाँ सम्बद्ध विभागों के अध्यक्ष की संस्तुति पर उन-उन विश्वविद्यालयों में पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर प्राकृत या जैन विद्या, जैनधर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास का नियमित अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को वरीयता क्रम से प्रदान की जायेंगी।

२. ये छात्रवृत्तियाँ ५०) रु० के हिसाब से एक वर्ष में १० माह के लिये दी जायेंगी।

३. इच्छुक छात्र प्रमाणित अंक तालिकाओं के साथ अपना विवरण देते हुए, विभागध्यक्ष से संस्तुति कराकर आवेदन-पत्र २० जनवरी, १९८४ तक निम्न पते पर परिषद् के कार्यालय में भिजवा देवें।

डॉ० नरेन्द्र भानावत
महामन्त्री, अ० भा० जैन विद्वत् परिषद्
सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२ ००४
फोन नं० ६७९५४

संक्षिप्त समाचार

कानोड़—श्री जवाहर विद्यापीठ के संस्थापक पं० उदय जैन की छठी पुण्य तिथि का समारोह धरियावद के श्री द्वारिकादासजी की अध्यक्षता में मनाया गया। मद्रास के श्री मेघराजजी मेहता का इस अवसर पर संस्था की ओर से अभिनन्दन किया गया। संस्था के संस्थापक श्री नाथूलालजी जारोली ने संस्था की प्रवृत्तियों का परिचय दिया।

बम्बई—श्री सूरजमल श्रीमाल मेमोरियल ट्रस्ट की विज्ञप्ति के अनुसार ट्रस्ट ने भारत में सर्वाधिक सक्रिय रूप से कार्य करने वाले जैन ट्रस्टों को पुरस्कृत करने का निश्चय किया है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों के अतिरिक्त १८ सान्त्वना पुरस्कार दिये जावेंगे। ट्रस्ट ने पाठकों से अपील की है कि वे ट्रस्टों के चयन में किस बात को महत्त्व दिया जाय, इस सम्बन्ध में अपने विचार और सुझाव भेजें। सम्पर्क सूत्र—श्री सूरजमल श्रीमाल मेमोरियल ट्रस्ट, (ए) कोर्ट चेम्बरस्, ३५, न्यू मेरिन लाइन्स, बम्बई–४०० ०२०।

जयपुर—राजस्थान विश्वविद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र में जैन-धर्म-दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० भागचन्द जैन ने नागपुर से आकर प्रो० एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशक का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। डॉ० जैन ने केन्द्र के विकास के लिये विद्वानों, श्रीमन्तों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे केन्द्र के विभागीय पुस्तकालय के लिये अपने प्रकाशन एवं ग्रन्थ भण्डार भेंट करें ताकि अध्ययन, अनुसंधान में उनका समुचित उपयोग हो सके। सम्पर्क सूत्र—डॉ० भागचन्द जैन, प्रो० एवं निदेशक जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–३०२ ००४।

आबूपर्वत—यहाँ अनुयोग प्रर्वतक पं० रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी म० "कमल" की प्रेरणा से पूज्य श्री प्रतापमलजी म० सा० की स्मृति में "वर्धमान महावीर होम्योपैथिक औषधालय" का शुभारम्भ शाहपुरा जैन संघ के सहयोग से किया गया। भारतीय आरोग्य निधि पाटण के सहयोग से निःशुल्क क्षेत्र शिविर लगाया गया। जिससे लगभग ४०० मरीजों ने लाभ उठाया। मार्च, १९८४ से "वर्धमान महावीर बाल निकेतन" प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। यहाँ सामूहिक तेले के तप का भी आयोजन किया गया।

भोपालगढ़—यहाँ ३ से ५ दिसम्बर तक चक्षु चिकित्सा सेवा समिति के सहयोग से श्री जैन रत्न छात्रालय में निःशुल्क नेत्र शिविर लगाया गया। जिसमें ५१ पुरुषों व ६३ महिलाओं के ऑपरेशन हुए व ५०० मरीजों को मुफ्त दवाइयाँ वितरित की गईं।

सायरा—श्री वर्धमान जैन स्वाध्याय संघ की ओर से श्री आनन्दलालजी मेहता के संयोजन में अक्टूबर व नवम्बर, १९८३ में बगडुन्दा, बाघुपुरा, डबोक, तिरपाल, भूताला, कमोल, सायरा और नाई में धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किये गये। जिनमें कुल २५३ बालक–बालिकाओं ने भाग लिया।

अहमदनगर—श्री तिलोक रत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड द्वारा संचालित प्रवेशिका की परीक्षाएँ ११ फरवरी, १९८४ से आरम्भ हो रही हैं। आवेदन-पत्र १५ जनवरी तक रजिस्ट्री से भेज देवें। परीक्षाओं के पाठ्यक्रम व नियम उपनियम पूर्ववत हैं।

किशनगढ़—यहाँ एक विशेष समारोह में श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ ने विशेष धर्म जागरण की दृष्टि से विदुषी महासती श्री चारित्र प्रभाजी को शासन प्रभाविका पदवी से विभूषित किया।

टिपलीकेन (मद्रास)—यहाँ सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री सुगालचन्दजी सिंघवी एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती चन्द्राबाई ने महासती श्री हीराबाई एवं नन्दाबाई के सान्निध्य में आयोजित एक समारोह में "श्रीमती जड़ावबाई नथमलजी सिंघवी जैन स्थानक, ११५, बिग स्ट्रीट टिपलीकेन, मद्रास-५, श्री वर्धमान स्था० जैन संघ को समर्पित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूपालगंज (भीलवाड़ा)—यहाँ वर्धमान जैन स्था० श्रावक संघ की कार्यकारिणी के संरक्षक श्री शंकरलालजी रांका, अध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसादजी संचेती, उपाध्यक्ष श्री रतनलालजी साभर, मन्त्री श्री सोहनसिंहजी कावड़िया, सह-मन्त्री श्री केशरसिंहजी मारु व कोषाध्यक्ष श्री इन्दरमलजी मेहता चुने गये।

रतलाम—यहाँ ४ मार्च, १९८४ को आचार्य श्री नानालालजी म० सा० की नेश्राय में २० मुमुक्षु आत्माएँ दीक्षा ग्रहण कर रही हैं। इस अवसर पर सभी धर्म-प्रेमी भाई-बहिन सादर आमन्त्रित हैं। सम्पर्क सूत्र—साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, ७१, नौलाईपुरा, रतलाम–४५७ ००१।

भोपालगढ़—श्री जैन रत्न नवयुवक सेवा संघ द्वारा **"दहेज से समाज पतन : कारण और समाधान"** विषय पर अ० भा० जैन हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। १५ से ३५ वर्ष तक की आयु के लोग इसमें भाग ले सकते हैं। निबन्ध २५०० शब्दों के लगभग हो। अन्तिम तिथि १५ फरवरी है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः १०१, ७१ व ५१ रुपयों के रखे गये हैं। सम्पर्क सूत्र—रणजीत बोथरा, त्रिवेणी संगम दूसरामाला, ११, बी. बी. के अय्यंगार रोड, बैंगलोर–५६० ०५३।

उदयपुर—लोकसाहित्य और संस्कृति के प्रसिद्ध विद्वान् व "जिनवाणी" के लेखक डॉ० महेन्द्र भानावत को लोककला और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए मेवाड़ फाउन्डेशन की ओर से ५००१) रु० का **"महाराना सज्जनसिंह पुरस्कार"** घोषित किया गया है। हार्दिक बधाई!

शोक–श्रद्धांजलि

जयपुर—तालेड़ा पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट के संस्थापक ब्यावर निवासी स्वर्गीय सेठ श्री स्वरूपचन्दजी तालेड़ा की धर्मपत्नी एवं सेवाभावी श्री निहालचन्दजी तालेड़ा व कर्मठ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकर्ता, प्रमुख उद्योगपति (ओसवाल केबल्स प्रा० लि०, जयपुर के प्रबन्ध निदेशक) श्री लक्ष्मीचन्दजी तालेड़ा की पूज्य मातुश्री श्रीमती एजनकंवर तालेड़ा का हृदय गति रुक जाने से दिनांक २६ दिसम्बर, १९८३ को ८३ वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया।

आपका जीवन तप, त्याग, प्रत्याख्यान एवं विविध धार्मिक प्रवृत्तियों से ओतप्रोत था। आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व ४३ वर्ष की अवस्था में आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर समाज के सम्मुख अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। आपके गत ५० वर्षों से चौविहार थे तथा आप नियमित रूप से प्रतिदिन ५ से ७ सामायिक करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। संत-सतियों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थीं। आप स्वभाव से सरल, मिलनसार, विनम्र एवं सादगी प्रिय थीं। आप समय-समय पर उदारतापूर्वक जरूरतमन्दों की मदद किया करती थीं। अन्तिम समय में आपके पुत्र-पुत्रियों का पूरा परिवार उपस्थित था। इस अवसर पर तालेड़ा परिवार की ओर से आपकी स्मृति में विभिन्न संस्थाओं को दान देने की घोषणा की गई।

आगरा—श्री श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेन्स के भूतपूर्व अध्यक्ष, वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, प्रसिद्ध समाजसेवी सेठ श्री अचलसिंहजी का २२ दिसम्बर को निधन हो गया। आप ९० वर्ष के थे। सेठजी १९५२ से ७० तक लोकसभा के सदस्य रहे। इससे पूर्व वे १९२४ से ५२ तक उत्तर-प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य रहे। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान आप ९ वर्ष तक जेल में रहे। आप देश की कई धार्मिक-सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए रहे। आपके निधन से समाज और देश का एक सेवाभावी प्रेरणाशील व्यक्तित्व उठ गया है।

सिरपुर–कागजनगर—स्वर्गीय श्री चुन्नीलालजी बोहरा की धर्म-पत्नि श्रीमती बादामबाई का २६ नवम्बर को ८५ वर्ष की आयु में दुःखद निधन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की सरलहृदय महिला थीं। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

भीनासर—यहाँ के सुश्रावक श्री लाधुरामजी गोलेछा के छोटे भाई श्री धनराजजी गोलेछा का १५ दिसम्बर को ५९ वर्ष की आयु में ट्रक मोटर साइकिल की दुर्घटना में विराट्नगर (नेपाल) में दुःखद निधन हो गया। आप बड़े ही मिलनसार एवं सेवाभावी थे।

बीकानेर—अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष, श्री जुगराजजी सेठिया के लघुभ्राता श्री ज्ञानपालजी सेठिया का १८ दिसम्बर को असामयिक निधन हो गया। आप स्वर्गीय सेठ श्री भैरोदानजी सेठिया के सुपुत्र थे और धर्म-दर्शन और साहित्य में आपकी बड़ी रुचि थी।

खांडप—यहाँ के प्रसिद्ध समाज-सेवी धर्म-प्रेमी एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री बस्तोमलजी बिनाकिया का ८० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपकी धार्मिक भावना अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं "जिनवाणी" परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक विह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

"जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु.

सदस्यता संख्या

२०३३ श्री अरुणकुमार जी भण्डारी, अहमदाबाद

२०३४ श्री के. एम. कुम्भट एडवोकेट, जोधपुर

२०३५ श्री बृजमोहन जी जैन, उखलाणा

२०३६ श्री कुमारपाल वि. शाह, बम्बई

२०३७ श्री संचालाल जी छगनलाल जी बाफना, औरंगाबाद

(जिनवाणी को भेंट एवं सहायता)

२५१) श्री घोसूलालजी प्यारेलालजी बोहरा, सिरपुर कागजनगर, पूज्य मातु श्री श्रीमती बादाम बाई, धर्मपत्नी स्व. श्री चुन्नीलालजी बोहरा का दि. २६-११-८३ को स्वर्गवास होने की स्मृति में भेंट।

१०१) श्री सूरजमलजी मेहता, अलवर, श्री प्रमोदकुमारजी की दीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा, जयपुर, जवाहर नगर, बंगले पर आचार्य प्रवर के पधारने पर उनके पिताजी श्री जौहरीलालजी पटवा एवं माताजी श्रीमती राजकुमारी पटवा के आजीवन शीलव्रत लेने के उपलक्ष में भेंट।

१०१) स्वर्गीय श्री किशोरचन्दजी सा. सिंघवी, जयपुर, सुपुत्र श्री दलपतचन्द जी सा. सिंघवी एवं धर्मपत्नी श्रीमती चांदकंवर सिंघवी ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया जिसके उपलक्ष में भेंट।

१०१) श्री लक्ष्मीचन्दजी तालेड़ा, जयपुर, पूज्य मातु श्री एजनकंवरजी का दि. २६-१२-८३ को स्वर्गवास होने की पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्री देवीचन्दजी भण्डारी, जयपुर, चि. सुरेश एवं पुत्री प्रेमसुधा का विवाह दि. २८-११-८३ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

२१) श्री नाथूलालजी सा. लौढ़ा, सैलाना (म. प्र.), मातु श्री श्रीमती चांद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाई का ८५ वर्ष की उम्र में दि. ११-२-८३ को समाधि पूर्वक स्वर्गवास हुआ उसके स्मरणार्थ भेंट ।

२१) श्री मिश्रीमलजी मांगीलालजी पारख, जोधपुर, सौ. कां. शकुन्तला के विवाहोपलक्ष में दि. २८-११-८३ को सप्रेम भेंट ।

२१) श्री गजमलजी लोढ़ा, कलकत्ता, पुत्री उषा के २१ नवम्बर ८३ को जयपुर में श्रीमान् लक्ष्मीलालजी बाफना के सुपुत्र श्री राजेश के साथ शुभविवाह सुख-शान्ति से सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

११) श्री वर्धमान स्थानकवासी, श्रावक संघ, किशनगढ़, महासती श्री चारित्रप्रभाजी महाराज के चातुर्मास के उपलक्ष में भेंट ।

११) श्री माणकचन्दजी सतीशचन्दजी सांड, बोदवड (जलगांव), सौ. सरोजदेवी का विवाह दि. २२-११-८३ को श्री मांगीलालजी भण्डारी सिरकिया के सुपुत्र चि. सुगनचन्दजी के साथ सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

११) मै. धनराज ओमप्रकाश गोलेछा, भीनासर (बीकानेर), श्री धनराज जी गोलेछा की स्मृति में भेंट ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

साहित्य प्रकाशन–आजीवन सदस्य ५०१) रु.

सदस्य संख्या

१३९ श्री भंवरलालजी पींचा, नागौर

१४० मै. केसरिया ड्राइंग वर्क्स, पाली

१४१ श्री चम्पालालजी चोरडिया, जयपुर

(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल भेंट एवं सहायता)

५०१) श्रीमती चन्द्रिकाजी बेन पूनमचन्दजी बरडिया, अहमदाबाद ।
श्री प्रमोदकुमारजी मेहता की भागवती दीक्षा के उपलक्ष में भेंट ।

१०१) श्री गुप्त सज्जन द्वारा भेंट ।

—व्यवस्थापक

□ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

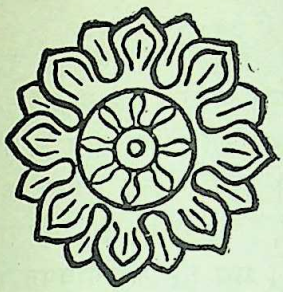

निज गुणों के रक्षण की आवश्यकता*

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

प्रार्थना

एगो वि नमुक्कारो, जिणवर व सहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा ।।

वीतराग जिनेश्वर के वंदन का महत्त्व बताया गया है। बहुत बार या संख्या की दृष्टि से नहीं, लेकिन हृदय के समर्पण वृत्ति की दृष्टि से एक बार भी जिनेन्द्रों में श्रेष्ठ वर्द्धमान प्रभु के चरणों में "एगो वि नमुक्कारो" एक बार किया गया वंदन भी श्रेष्ठ है। गुणों की अपेक्षा से आचार्य को ३६ बार वंदन करेंगे, साधु को २७ बार वंदन कर जायेंगे। भगवत् भक्ति जिनके हृदय में ज्यादा उमड़ती है वे १०८ बार वंदन कर लेंगे, ऐसे भी नमूने आपने देखे हैं। लेकिन महर्षि कहते हैं कि भैया, वंदन का महत्त्व है, वह संख्या से नहीं है। अनेक बार तुमने वंदन किया और वह यदि हृदय की भावभीनी भावना के साथ किया नहीं तो उसका महत्त्व क्या है ? लेकिन 'एगो वि नमुक्कारो' एक भी नमस्कार तुमने शरीर की तरह भावना को समर्पण करके किया, मन को समर्पण करके किया, वाणी को समर्पण करके किया, काया को समर्पण करके किया है तो उससे सारे विकार गल जायेंगे। शारीरिक तौर से तो एक बार नमन किया जाता है लेकिन नवकार मंत्र के हर पद के साथ में "णमो" शब्द लगाया है, उसके पीछे क्या महत्त्व है, चिन्तन करें।

वन्दन : अहंकार को गलाने के लिए :

आचार्यों ने, महर्षियों ने बताया कि मानव के भीतर में रहने वाले अहंकार को गलाने के लिये 'णमो' बार-बार बोला जाता है। अहंकार को गलाना है इसलिये 'णमो अरिहंताणं' कहा। उसके पश्चात् 'णमो सिद्धाणं' कहा। फिर 'णमो आयरियाणं' कहा। इधर आप देखिये 'एगो वि नमुक्कारो, जिणवर व सहस्स वद्धमाणस्स। संसार सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा' इस पूरे पद में नमुक्कारो शब्द एक बार आया है लेकिन नवकार मंत्र में पांच बार आया अनेक-

* १५-१०-८२ को जलगाँव में दिया गया प्रवचन। प्रो. संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक अभिप्रायों के साथ। महर्षियों ने बड़ा अभिप्राय यह माना कि जब तक अहंकार गल नहीं जाय, तब तक वंदन सच्चा वंदन नहीं होगा। वह द्रव्य वंदन है और यह भाव वंदन है। भाव वंदन में सब कुछ समर्पित किया गया है, तब अपने लिये सोचने का मनुष्य को खुद को अधिकार ही नहीं रहता। फिर वह इस सिद्धान्त को बराबर समझ लेता है कि मैं अलग हूँ, तन अलग है, परिवार अलग है, धन या सम्पत्ति अलग, कोठी अलग है। अब यह अलगावपन की भावना सबसे बड़ी बात है।

अब आपको सोचना है कि संख्या की दृष्टि से वंदन में और समर्पित भावना की दृष्टि से वंदन में अंतर क्या है ? किस बात का है ? भगवान् ने इस अन्तर में भीतरी तत्त्व को सुरक्षित रखने की दया की है। भीतर के तत्त्व के साथ लगे शरीर की दया करने वाले बहुत मिल जायेंगे, घर की रक्षा करने वाले बहुत मिल जायेंगे, परिवार की सुरक्षा करने वाले बहुत मिल जायेंगे, इज्जत आबरू की रक्षा करने वाले बहुत मिल जायेंगे। लेकिन आपके आत्म भाव की रक्षा करने वाले विरले ही मिलेंगे। गृह रक्षा करने वाले बहुत हैं, परिवार की रक्षा करने वाले बहुत हैं, नगर की रक्षा करने के लिये पुलिस दल अलग है, सैनिक दल अलग है, सरकार के अधिकारी वर्ग अलग हैं, गांव के रक्षक दल अलग हैं, बाहर के रक्षक दल अलग हैं, गलियों के रक्षक दल अलग हैं। अलग-अलग मत या सम्प्रदायों की तरफ से अलग-अलग व्यवस्था है। विदेशी लोग भी हैं, स्वयं-सेवक भी हैं। इसी तरह कहीं दंगा, खून-खराबी, मारकाट होती हो तो उसको बचाने के लिये जी जान से जुटाने वाले बहुत हैं, और मलबे के नीचे दबे हुओं को बाहर निकालने वाले भी बहुत मिलेंगे और पानी में डूबते हुओं को पानी में कूद कर बाहर निकालने वाले भी बहुत मिलेंगे।

निज गुणों के रक्षण की आवश्यकता :

लेकिन भगवान् महावीर ने कहा कि मानव यह तो केवल इस चमड़े के पुतले की रक्षा है। इससे मानव का सच्चा रक्षण नहीं होता। सच्चे रक्षण के लिये मानव को किसकी आवश्यकता है ? मानव में जो निज आत्मा का गुण है, निज आत्मा का तत्त्व है, भाव है, उन निज भाव और निज गुणों के रक्षण की जरूरत है। लेकिन वे हमारे सुरक्षित नहीं हैं। धन की सुरक्षा की बात तो जनरल बात कह रहा हूँ; जान हमारी सुरक्षित है, सामान सुरक्षित है, परिवार सुरक्षित है, रहने की जगह सुरक्षित है, लेकिन हमारा ज्ञान सुरक्षित नहीं है, हमारी श्रद्धा सुरक्षित नहीं है।

एगो वे सासओ अप्पा, नाण दंसण संजुओ,
सेसा में बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् ने कहा कि विश्वास करो कि तुम अमर हो, विश्वास करो कि तुम अजर हो, विश्वास करो कि तुम निरोग हो। अब इस विश्वास में ज्ञान को सुरक्षित रखने वाला कौन है ? इधर-उधर घुस-पुस हुई, आसपास हवा फैलाने वाले तो मिल जायेंगे। देखो धूलिया में ऐसा हुआ, सचेत रहना, कहीं ऐसा न हो कि वह हवा इधर आ जाय। इस तरह भयभीत करने वाले लोग मिल जायेंगे। लेकिन जब तक आत्मा का जो अस्तित्व है, उस पर भरोसा नहीं, आत्मा तन से अलग है यह विश्वास नहीं है तब तक यह दृश्य मिलेगा। लोग सोचते हैं कि खाने, पीने और पहनने के लिये धन मिलना चाहिये, इज्जत बराबर रहनी चाहिये। अभी यह विश्वास नहीं जमा है कि यह शरीर और मैं अलग हूँ। जीव द्रव्य शाश्वत है। जीव चेतना लक्षण वाला है। जीव ही सुख-दुख पाने वाला है। पुण्य-पाप का कर्ता भी वही है और भोगने वाला भी वही है। उसमें सामर्थ्य है कि बन्धन काट कर छुट्टी मिला सकता है और मुक्ति मिलाने का मार्ग ढूंढने वाला भी यही है। बात छोटी है, सम्यक्त्व के बोल में आई है। लम्बे चौड़े मोटे थोकड़ों में नहीं है। इसलिये हमारे भाई-बहिन इसको साधारण समझते होंगे। लेकिन साधारण कही जाने वाली बात मूल पाया है। जब तक यह बात समझ में नहीं आयेगी तब तक विश्वास कैसे जमेगा ?

विश्वास पैदा करें :

चन्दनबाला को भौंयरे में डाला गया, बाजार में बिकने के लिये खड़ा किया गया, शरीर पर प्रहार करने का नम्बर आया, तब भी वह अपने विश्वास पर अटल रही कि आत्मा शाश्वत है, धर्म शाश्वत है। यदि बीमारी बिना दवाई के ठीक हो सकती है तो उसको दवाई क्यों दी जाय। जबकि महाराज ने कहा कि नवकार मंत्र में श्रद्धा रखो लेकिन रोग दवाई से दूर होता है। भूख अन्न खाने से मिटेगी, प्यास पानी पीने से बुझेगी। घर में लड़की की शादी होने वाली है। लाख, दो लाख रुपये खर्च होने हैं। बिना धन के कैसे होगा ? महाराज के कहने के अनुसार यदि नवकार मंत्र ही गिनते रहें तो खर्चा कैसे करेंगे। धन या अर्थ काम आने वाला है। नवकार मंत्र काम आने वाला नहीं है। यदि ऐसा सोचते हैं तो आप में विश्वास की कमी है। आपको इसमें विश्वास नहीं है कि जीव शाश्वत है, सुख-दुःख का भोक्ता जीव ही है। यह शाश्वत रहने वाली चीज है। ये सब बातें पढ़ी हैं, सुनी है। लेकिन भीतर में जमी कब रहेंगी ? जब कि आप 'नमो अरिहंताणं' कह करके नमस्कार करने के साथ अपनी मलिन वृत्तियों का समर्पण कर दोगे। मलिन वृत्तियाँ निकल जायेंगी अथवा भगवान् के चरणों में मलिन वृत्तियाँ चढ़ा दी जायेंगी तब भाव नमस्कार होगा। हमें आवश्यकता है इसकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज शरीर रक्षण, चिन्ता की बात नहीं रहेगी। शरीर की रक्षा करने के बजाय शरीर को तोप, बन्दूक के मुँह पर रखने को तैयार हैं अपनी मांगें पूरी करवाने के लिये। अपनी राजनैतिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये लोग आगे होकर अपनी जान को तलवार के सामने देने वाले हैं या नहीं ? मर जाना या मार देना, अपनी मांगों को पूरी कराने के लिये एक मामूली बात समझी जाती है। अपनी मांगें पूरी करवानी है तो भले ही आज शरीर और प्राण का मूल्य लोग ज्यादा नहीं मान रहे हैं। ज्यादा मूल्य किसका है ? छोटे मोटे विवाद होना, मांगनी होना सहज बात है। दो चार पुलिस वाले, मांगनी करने वाले मर जायं, खप जायं, यह तो आसान बात है। उधर के लोग भी हिंसाचारी करने लगेंगे और पुलिस वाले भी गोलियां चलायेंगे। दोनों ओर से गोलियां चल जाती हैं। इसका क्या मतलब हुआ ? शरीर की रक्षा इतनी प्रिय नहीं हैं जितनी प्रिय हैं हमारी मांगों की पूर्ति। उदाहरण देने की जरूरत नहीं है। आप रोज देखते रहते हो। संसार के उदाहरण आपके सामने हैं। मेरे से ज्यादा आप जानते हो। हजारों लाखों रुपयों का नुकसान हो जाय तो परवाह नहीं, हड़ताल तोड़ना नहीं चाहते। यदि ऐसा विश्वास भगवान के वचनों पर हो जाय, भगवान् की आज्ञा पर हो जाय तो कोई बात नहीं। हजारों लाखों रुपयों का नुकसान हो जाय तो परवाह नहीं, हम भगवान् की आज्ञा का पालन करेंगे, ऐसी निष्ठा आपके मन में क्यों नहीं जमती ? अभी मुनिजी ने प्रश्न रखा कि उस समय की आत्मा में और इस समय की आत्मा में क्या फर्क है ? चन्दना की आत्मा और इन बहिनों की आत्मा एक नहीं है तो फिर फर्क क्या है ? मैं यह समझ पा रहा हूँ और मन यह कहता है कि हमने वन्दन करके थोड़ी देर तन का समर्पण किया, विषय-विकारों का समर्पण किया लेकिन मन से नहीं किया। कवि ने कहा है :—

क्रोध न छोड़ा, लोभ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया,
प्रभु नाम रटन क्यों छोड़ दिया ?

कौड़ी को तो खूब सम्भाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया,
भाई धर्म रतन क्यों छोड़ दिया, प्रभु नाम रटन क्यों छोड़ दिया ?

कवि एक छोटासा प्रश्न रखता है और कहता है कि भाई जो छोड़ना चाहिये वह तो नहीं छोड़ा और जो नहीं छोड़ना चाहिये वह क्यों छोड़ दिया ? सवाल बहुत मर्म का है। जड़ से पकड़ा है। जवाब हर आत्मा अपने-अपने तरीके से देगा। लेकिन अन्तर से सोचें तो मूल का पता चलेगा। अभी हमारा आत्मा सम्बन्धी निश्चय बराबर नहीं हुआ।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र की सुरक्षा :

देश, देश की जनता और सरकार सुरक्षित है या नहीं ? इस बाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाल प्रस्तुत नहीं करना है। देश की बात देश की जनता जाने। जैन समाज और जैन समाज के बच्चे, बूढ़े, जवान ज्ञान से सुरक्षित नहीं हैं, दर्शन से सुरक्षित नहीं हैं, चारित्र से सुरक्षित नहीं हैं। हम तब सुरक्षित होंगे जब कि सबसे पहले हमारी श्रद्धा सुरक्षित हो, दर्शन सुरक्षित हो, चारित्र सुरक्षित हो। इन्हें सुरक्षित रखने वाला भगवान के नाम से बढ़ कर और कोई नहीं है। हमें अपने साधनों का उपयोग करना चाहिये।

आपके और हमारे सामने एक पर्व आ रहा है। आप संसार का हिसाब-किताब, लेखा-जोखा तो कोई आपसे कहने नहीं आवे तो भी करेंगे लेकिन इधर का हिसाब-किताब नहीं करेंगे, इसलिये याददाश्त दिला रहा हूँ कि इस हिसाब-किताब को भी करिये, अपने आप को जांचिये, जीवन को तोलिये और सोचिये कि कितना नफा है और कितना नुकसान है। आने वाली आसोज सुदी १०वीं को आचार्य श्री भूधरजी महाराज की पुण्य तिथि है। आचार्य धर्मदासजी महाराज की पुण्य तिथि एकादशी हमारे सामने है। अपने दर्शन और ज्ञान को सुरक्षित करना है वरना देश कहाँ का कहाँ चला जायगा। खतरे की चीज बढ़ रही है। जीवन खतरे में है। जीवन खतरे में है तो धर्म खतरे से बाहर कैसे रहेगा? अखबारों में खबर छपी है कि १२ सेन्टीमीटर लम्बी एक खतरनाक पैन्सिल का निर्माण हाल ही में हुआ है। उससे यदि २० मीटर दूर नहीं रहा गया तो वह पैन्सिल जान ले सकती है। बम्बई के भाभा एटोमिक एनर्जी केन्द्र में उसका आविष्कार हुआ है। एक पैन्सिल भी इतनी खतरनाक हो सकती है तो आदमी क्या सोचे और क्या नहीं सोचे? जीवन हथेली पर है और उसका कोई मूल्य नहीं रह गया है। शरीर नाशवान है। नाश और विनाश करने वाली वस्तुएँ ज्यादा बढ़ रही हैं। दीपावली के ऐसे मौके पर आप एक बात में कामयाबी हासिल कीजिये।

आप जैन हैं, महावीर के उपासक हैं। आपके यहाँ सोर और आतिशबाजी के नाम से असंख्य जीवों का संहार हो रहा है। घर-घर में जाकर बच्चे-बच्चियों को आतिशबाजी नहीं करने के लिये, पटाखे नहीं छोड़ने के लिये प्रेरित करें, हिंसा को रोकें। आत्म-ज्ञान और श्रद्धा को सुरक्षित रखने के लिये इस प्रकार की हिंसा को रोकने का प्रयत्न करें। उनको भी आत्म-निरीक्षण कराइये। वास्तविक निष्ठा का भाव कैसे जगे, इस पर थोड़ा चिन्तन चलेगा, तब ही वास्तविक सुरक्षा होगी, कल्याण होगा। जो भाई ऐसा करेगा, वह इस लोक और परलोक में शान्ति, आनन्द और कल्याण का भागी बनेगा।

□ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बोधन :

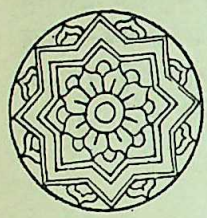

नमो आयरियाणं*

□ पं० र० श्री मान मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के विद्वान् शिष्य]

नव पद आराधना के मंगलमय दिवस चल रहे हैं। आज तीसरा दिन है। पद की दृष्टि से तीसरा पद 'नमो आयरियाणं' उन आचार्यों भगवन्तों को नमस्कार हो जो स्वयं पंचाचार का पालन करने वाले हैं और अपने सान्निध्य में रहने वाले साधु-साध्वियों को भी पंचाचार का पालन कराने में समर्थ हैं। जिन शासन में मुख्यतः तीन तत्त्व बताये गये हैं—देव, गुरु और धर्म। अरिहंत और सिद्ध हमारे देव हैं। गुरु तत्त्व में आचार्य, उपाध्याय और मुनिजन सम्मिलित होते हैं। आचार्य धर्म-प्रधान हैं। संघ के पिता कहे जाते हैं। आचार्य परमपिता हैं जो हिंसा आदि पापों का जीवन में पूर्णतः प्रत्याख्यान लेकर चलते हैं। पांच महाव्रत को जीवन में अंगीकार कर रखा है। पांच आचार का पालन करने वाले हैं। कषायों को उपशान्त करने वाले हैं और नव बाड़ सहित ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले हैं। पांच समिति और तीन गुप्ति की साधना करने वाले हैं। आठ सम्पदा से प्रयुक्त हैं। ऐसे आचार्य भगवन्त सदा संघ के लिये वन्दनीय कहे गये हैं, पूजनीय कहे गये हैं। नमस्करणीय हैं।

पाँच पदों में तीसरा पद (मध्यम-पद) आचार्य का है। दो इधर हैं और दो उधर हैं। मध्य में आचार्य भगवन्त विराजमान हैं। 'दीपक देहरी' न्याय से दोनों तरफ प्रकाशक हैं। अपने आगे की भूमिका भी देख रहे हैं और अपने पीछे आने वाले उपाध्याय और साधुओं को भी देख रहे हैं। अपने लक्ष्य का भी ध्यान रख रहे हैं। मुझे अरिहन्त और सिद्ध बनना है। यह मेरा लक्ष्य है। लक्ष्य की तरफ भी ध्यान लगा हुआ है तो पीछे आने वाले सन्त हैं उनकी तरफ भी देखते ही रहते हैं। कहीं संघ में शिथिलता तो नहीं आ रही है। कहीं संघ के साधक व्रत-भंग करने की स्थिति में तो नहीं जा रहे हैं। स्वयं भी अपने जीवन में आचार व्यवहार का उत्कृष्ट पालन करने वाले होकर दूसरों के लिये प्रामाणिक पुरुष होते हैं। ऐसे आचार्य भगवन् ने कषायों को मंद कर दिया है। तीव्र कषाय उनके जीवन में नहीं है और जीवन में सन्तोष वृत्ति भी है। समय-समय पर साधकों को प्रेरणा देते हैं। भूले-भटके साधकों को राह

*जयपुर में १५-१०-८३ को दिया गया प्रवचन। प्रो० संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लगाते हैं। कभी भटक जायें तो प्रायश्चित देकर आत्मशुद्धि भी कराते हैं। चलते-चलते कभी स्खलना हो ही जाती है। उस स्खलना के लिये आचार्य समुचित आलोचना श्रवण करके साधु की सामर्थ्य को देखकर के उसी प्रकार का प्रायश्चित देकर आत्मशुद्धि कराके आत्मा में किसी तरह की शिथिलता न आने पाये, ऐसा प्रयत्न करते हैं।

आचार्य का पद अधिकार का नहीं, जीवन-निर्माण का :

आचार्य भगवन्त धर्मशासन की बागडोर अपने हाथ में रखते हुए सभी के ऊपर शासन करते हैं। जिन शासन की मर्यादा के अनुसार सभी साधकों को समय-समय पर प्रेरित करते रहते हैं। आचार्य का जो पद है वह अधिकार का नहीं है, वह तो साधकों के जीवन-निर्माण का पद है। हुकम चलाने के लिये पद नहीं है, उनके ऊपर अपनी सत्ता जमाने का पद नहीं है, पद है तो उनके जीवन के निर्माण के लिये। समय-समय पर उनके जीवन को टटोलते रहें। जरा सा भी दोष उसमें प्रवेश नहीं कर पाये। जैसे ही दोष प्रवेश करते हैं, आचार्य उसे सचेत करते हैं। आचार्य स्व-परिणति में रमण करने वाले हैं। पर परिणति का त्याग करने वाले हैं। वे तो आत्मभाव में ही रमण करने वाले हैं। विषय-कषाय, आरम्भ-परिग्रह, क्रोध, मान, माया और लोभ ये परभाव हैं। इनमें वे कभी रमण नहीं करते। हर समय अप्रमत्त स्थिति के अन्दर रहते हैं, इसी कारण से बड़ी संलेषणा के अन्दर जिस समय अरिहन्तों को और सिद्धों को नमस्कार किया है, उसके बाद धर्म आचार्य, धर्म उपासक को नमस्कार किया है। धर्म गुरु आचार्य हमेशा अप्रमत्त भाव से रहते हैं, उनको वन्दना नमस्कार किया है। देख लीजिये साक्षात् आचार्य भगवन् (श्री हस्तीमलजी म० सा०) को शुरू से अपने बड़ों से, बड़े साधकों से यही शिक्षा प्राप्त की। जब भी देखो कुछ न कुछ साधनामय कार्य करते ही रहते हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी डॉ० भी कह रहे हैं, बड़े-बड़े श्रावक भी कह रहे हैं, जीवन में थोड़ा समय आराम फरमाइये। परन्तु नहीं। हमेशा ज्ञान रूपी आराम में रमण करते रहते हैं। आराम नाम बगीचा का है। ज्ञान रूपी वाटिका में ही हमेशा रमण करने वाले हैं। इस पंचम आरे के अन्दर भाग्यशाली हैं हम लोग जो बड़ी पुण्यवानी करके आये हैं। जिसके कारण ऐसे आचार्य हमें मिले हैं। आचार्य के गुणों का कथन करते हुए कहा गया है—

नमो पद आचार्य तीजे, सम्पदा अष्ट देख लीजे।
छतीसे गुण बिरवा लीजे, ओपमा सुरतरू की दीजे।
हरि समान चऊँ संघ में, गीतारथ गुण धाम।

वर्तमान में न तीर्थंकर हैं, न गणधर हैं। वर्तमान में केवली भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। पर आचार्य हैं, नमस्कार मंत्र की महिमा गाते कवि कह रहा है—तीसरा आचार्य पद को नमस्कार हो जो आठ सम्पदाओं के स्वामी हैं। आज धन की तरफ अधिक दृष्टि है या धर्म की तरफ ? प्रियता किस में है, अप्रियता किसमें है ? यहां बैठे हैं जब तक तो धर्म की है। ज्यों ही नीचे उतरे, वहीं धन की बात। यहाँ बैठे हुए कोई देवी चमत्कार हो जाय और आसन के नीचे से १०-१० के नोट मिल जायें तो दूसरे दिन इतने ही लोग सामायिक करने के लिये आयेंगे या ज्यादा आयेंगे ?

आचार्य की आठ सम्पदायें :

आचार्य आठ सम्पदाओं से सहित हैं—(१) आचार सम्पदा (२) श्रुत सम्पदा (३) शरीर सम्पदा (४) वचन सम्पदा (५) वाचना सम्पदा (६) मति सम्पदा (७) प्रयोगमति सम्पदा (८) संग्रह परिज्ञा सम्पदा। इन सम्पदाओं से सम्पन्न आचार्य होते हैं।

आचार ही ऐसा होता है जिसके कारण से सभी जीवों को एक आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। आचार का जो असर होता है वह उपदेश से नहीं हो सकता। आचार्य श्री फरमाते हैं कि सच्चे साधक को तो उपदेश देने की आवश्यकता ही नहीं है। उसका जीवन का व्यवहार ही बहुत कुछ उपदेश देता रहता है। महाराजा श्रेणिक को अनाथी मुनि ने कब उपदेश दिया ? उनके जीवन को देखते ही ऐसी छाप पड़ी। यह पक्की बात है कि व्यवहार का असर होता है। आज आचार्य श्री उपदेश नहीं दे रहे हैं, नगर से बाहर विराज रहे हैं। नित्य प्रति उपदेश नहीं दे पाते फिर भी उनकी पुण्य प्रकृति का प्रभाव है जिससे चातुर्मास में जयपुर निवासी आनन्द लूट रहे हैं। उनके दर्शन से ही धन्य-धन्य हो जाते हैं। दर्शन करने से अन्तर में प्रेरणा जागृत होती है कि हम भी उन महापुरुषों की तरह से जीवन को बनायें। उनके जीवन से प्रेरणा मिलनी चाहिये। यह नहीं कि मालामाल हो जायें। पुस्तक पढ़कर कोई सीख नहीं पाते हैं। गुरुगम्य से ही धारणा होती है। इसीलिये गुरु की उपयोगिता है। जिसकी उपयोगिता होती है वही हमारे लिये महान् आचार्य है। आचार्य श्री हमेशा से उपयोगी बने रहे। जब से दीक्षा अंगीकार की चतुर्विध संघ के लिये उपयोगी बने हुए हैं।

श्रुत सम्पदा भी वैसी। वचन और वाचना सम्पदा भी श्रेष्ठ, शरीर सम्पदा भी प्रभावक। जो भी सामने चला जाता है उस दर्शनीय मूर्ति को अनिमेष दृष्टि से देखता रहता है। मति सम्पदा भी और प्रयोगमति सम्पदा भी उत्तम। किसी ने कुछ पूछा, उसी समय तैयार उत्तर। प्रयोगमति सम्पदा वह सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिसके कारण समय पर मति उपजती है। मति ती बहुत है पर समय पर उपजे नहीं तो वह प्रयोगमति नहीं हो सकती। एक संग्रह परिज्ञा सम्पदा होती है। आचार्य संग्रह करें। किसका ? श्रावक-श्राविका का संग्रह करें। साधु और साध्वियों का संग्रह करें। कम्बल और रजोहरण का संग्रह करें। क्षेत्रों का संग्रह करें। अगर क्षेत्रों में गये ही नहीं, क्षेत्र किया ही नहीं तो साधु-साध्वियों को भेजें कहाँ ? आचार्य क्षेत्र तैयार करते हैं जिससे साधु-साध्वियों को भेज सकें। क्षेत्र तो बहुत संग्रह कर लिया मगर साधु और साध्वियां नहीं तो भगवान् की आज्ञा है चतुर्विध संघ को बढ़ावें। चारों संघ के तीर्थ हैं, सदस्य हैं। चारों की जिम्मेदारी है संघ में वृद्धि करें, धर्म की वृद्धि होवे। न धर्मे धार्मिक: बिना। धार्मिकों के बिना धर्म रहता नहीं है। अत: जहां भी जावें चतुर्विध संघ को बढ़ावें।

आचार्य ३६ गुण के धारक हैं। आचार्य ५ महाव्रत पालें, ५ इन्द्रिय जीतें, ४ कषाय टालें, ९ बाड़ सहित ब्रह्मचर्य पालें, ५ समिति और ३ गुप्ति आराधें। पांच आचार—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, तपाचार, चारित्राचार और वीर्याचार पालें। ज्ञानाचार के ८ भेद, दर्शनाचार के ८ भेद, चारित्राचार के ८ भेद, तपोचार के १२ भेद और वीर्याचार के ३ भेद हैं। इस तरह से चारों में पुरुषार्थ लगाकर पंचाचार का पालन करें। वे कहते हैं तुम्हारे अन्दर शक्ति है तो गोपन मत करो। तप करने की शक्ति है, सेवा करने की भावना है, ज्ञान ग्रहण करने की भावना है। गाथा याद करने की शक्ति है तो १० गाथा याद करो, परन्तु प्रमाद न करो। ये पंचाचार आचार्य के जीवन में मुख्य हैं। स्वयं भी इनकी पालना करते रहते हैं और दूसरों से भी करवाते रहते हैं। वे सुरतरु हैं, उनसे एक विशेष शक्ति प्राप्त होती है। एक सुरतरु तो भौतिक कामना पूरी करने वाला है लेकिन आचार्य आध्यात्मिक गुणों को विकसित कर जीवन को ऊँचा उठाने वाले हैं।

हरि कहते हैं सिंह को, हरि के कई अर्थ हैं। हरि माने विष्णु, हरि माने इन्द्र, हरि माने सूर्य। यहां हरि सिंह के अर्थ में आया है। आचार्य सिंह की तरह चारों संघों में गर्जना करने वाले हैं। गीतार्थ अर्थात् शास्त्रों का रहस्य जानने वाले। समय-समय पर शास्त्र पढ़ाने वाले। वारक भी, धारक भी, स्मारक भी। इस तरह से गीतार्थ वाले हैं। जिनका मन भी काबू में है, वचन भी काबू में है और काया भी काबू में हैं। २-४ घण्टे तक इसी ध्यान में बैठे रहें। शरीर के ऊपर अनुशासन है। कायक्लेश तप है। इस तप का अर्थ काया को कष्ट देना, दु:खी करना नहीं हैं। काया के ऊपर अनुशासन करना है। जो व्यक्ति ५-६ मिनट में घबराते थे, अब वे अभ्यास करते-करते ४-४ और भी ज्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घंटे तक एक आसन से बैठे रह सकते हैं। वचनों का इतना ध्यान रखने वाले कि व्यर्थ में नहीं जावे। साधु के लिये तो कहा तू बोल तो समितपूर्वक बोल। ज्यादा बोलने वाला दूसरे महाव्रत की पालना नहीं कर सकता।

पूरे लोक के अन्दर हैं ऐसे आचार्य भगवन्त। जो ऐसी भूमिका में पहुंच गये हैं उन सभी को इस पद के अन्दर नमस्कार किया गया है। उन पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है जो परम भाव में रहते हैं, जो आत्मभाव में रमण करते हैं।

जड़-पूजा के उपासक

□ श्री कमल सौगानी

एक गुरु अत्यन्त अस्वस्थ थे। अपने गुरु को मरणासन्न अवस्था में देखकर शिष्य उनका अन्तिम उपदेश सुनने के लिए एकत्रित हुए। लेकिन गुरु ने कहा—'शिष्यो! सर्वप्रथम मैं इस आम के पेड़ को कटवाना चाहता हूं जिसके नीचे उपदेश दिया था।'

सुनने वाले सारे शिष्य सन्न हो गए। गुरु के इस आदेश पर उन्हें ऐसा लगा कि इस अनावश्यक आदेश का अर्थ क्या है? फिर निवेदन किया कि यह कार्य तो हम बाद में ही कर लेंगे। यह अन्तिम समय है। कहीं इस कार्य में लगकर हम आपके पावन पैगाम से वंचित न रह जाएं?

तब गुरु ने बात का भेद खोलते हुए कहा—'शिष्यो! मुझे ऐसा लगता है पीछे यह वृक्ष कटेगा नहीं। लोग इसे मानकर पूजेंगे कि महात्माजी यहाँ बैठकर उपदेश दिया करते थे। अतः मेरे समक्ष इसे काट आओ। मैं नहीं चाहता कि मेरे अनुयायी उपदेशों को भूलकर जड़ पूजा के उपासक बनें।

—स्टेशन रोड, भवानीमंडी–३२६५०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधकों से बात-चीत :

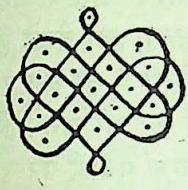

साधना विराग भाव की

□ श्री चाँदमल कर्णावट

[संचालक, साधना विभाग]

मान्यवर साधक बन्धुओ/बहिनो !

श्री दशवैकालिक सूत्र पर आधारित **"ज्ञान प्राप्ति से मोक्ष प्राप्ति का क्रम: एक विवेचना"** शीर्षक लेखमाला का तीसरा लेख "जिनवाणी" के जनवरी ८४ के अंक में आपने पढ़ा होगा। यह लेखमाला ज्ञान वृद्धि की दृष्टि से उपयोगी रही होगी। इसके पीछे मेरा ध्येय यह रहा है कि हमारी साधना के क्रियात्मक स्वरूप को बल मिले और हम मुक्ति की सम्यग्साधना में तीव्र गति से अग्रसर हो सकें ?

प्रस्तुत अंक में **'साधना विराग भाव की'** विषय पर सामग्री आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, इसमें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि वीतराग भाव की साधना क्या है, यह साधना हमारे सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के निर्माण में किस प्रकार सहायक है, तथा विरागभाव की यह साधना कैसे की जाय ?

विरागभाव की साधना क्या है ?

आप सभी जानते हैं कि रागद्वेष की वृत्तियाँ ही आत्मा के बन्धन का मूल कारण हैं। इस दृष्टि से विराग भाव की साधना का अर्थ रागद्वेष की इन वृत्तियों को विजय करना है। इससे उस वीतराग दशा को प्राप्त करना है, जो हमें समस्त बन्धनों और सुखों से मुक्त बनावे।

उदासीन भाव की साधना :

जैन दर्शन में उदासीनता के भाव पर बल दिया गया है। संसार में रहते हुए और सांसारिक कार्यों को करते हुए भी हम उदासीन बन कर रहें। जल में कमल की तरह निर्लिप्त रह कर कार्य करने की वृत्ति हमें मोहरहित बनाने में समर्थ होती है। यह साधना का एक मूल अंग है। सम्यग्दर्शन व्यवहार सम्यक्त्व के विवेचन में आपने अध्ययन किया होगा कि निर्वेद सम्यक्त्व का एक लक्षण है। जिसका अर्थ है संसार से उदासीनता। इसे दूसरे शब्दों में अनासक्ति का भाव या विरागभाव भी कहा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोगेच्छा पर विजय :

पदार्थों की भोगेच्छा रागवृत्ति को जन्म देती है। इष्ट शब्दादि के भोग की इच्छा हमारे मन-मानस में रागभाव को उत्पन्न करती है और हम शब्दादि इन्द्रिय विषयों के अधीन हो जाते हैं और अपनी स्वाधीनता खो बैठते हैं। इसके विपरीत जब साधक भोगेच्छा पर विजय प्राप्त कर लेता है तो वह राग पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। हमारा यह रागभाव द्वेष का भी जनक है। वस्तुतः राग और द्वेष एक ही सिक्के के दो बाजू हैं। किसी एक पदार्थ पर राग दूसरे पदार्थ के प्रति द्वेष का द्योतक है। इसी प्रकार दूसरे पदार्थ पर द्वेष, अन्य पदार्थ पर राग भाव का सूचक है। इस राग-द्वेष के झूले में झूलता हुआ आत्मा कभी स्थिर नहीं बन सकता और अपने लक्ष्य को सिद्ध नहीं कर सकता।

अपरिग्रह की साधना :

परिग्रह को मूर्च्छा कहा गया है। इसका अर्थ ममत्व भाव भी है। राग भाव का भी यही अर्थ है। इस मोहमुग्ध दशा का निवारण कर वीतराग दशा को प्राप्त करना विराग भाव का लक्ष्य है। मेरे और तेरेपन की भावना संघर्षों का मूल कारण है। इसका निवारण करके ही हम शांति और सुख की अनुभूति कर सकते हैं।

कषाय-विजय :

यह हम सभी को ज्ञात है कि कषाय और योग हमारी अनन्त शक्तिवान आत्मा को बन्धनों में जकड़ देते हैं। कषाय और योग में भी कषाय बन्धन का प्रमुख कारण है। गुण स्थानों की विकास श्रेणी में आरोहण करते हुए आत्मा कषायों को विजय कर केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्रकट करता है। १२वें गुण-स्थान की स्थिति में वह कषायों को सर्वथा क्षय कर डालता है। इससे आगे योग शेष रहते हैं। परन्तु कषायों के अभाव में उनका प्रभाव अकिंचितकर ही होता है। राग और द्वेष कषाय के ही भेद हैं। क्रोध और मान को द्वेष में और माया और लोभ को राग में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार क्रोध, मान, माया और लोभ इन कषायों पर विजय पाने की साधना से ही विराग भाव की साधना सार्थक बन सकती है।

समत्व की साधना :

अनकूल और मनोज्ञ तथा प्रतिकूल और अमनोज्ञ स्थितियों में सम बने रहना विराग भाव का अर्थ है। ये अनुकूल और मनोज्ञ स्थितियाँ राग भाव की द्योतक हैं तो प्रतिकूल और अमनोज्ञ स्थितियाँ द्वेष भाव की। मनोज्ञता या अमनोज्ञता विचारों, व्यवहारों, व्यक्तियों या वस्तुओं तक व्याप्त होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी एक विचार या व्यवहार पर हमारा राग हो सकता है तो उससे विपरीत विचार या व्यवहार पर द्वेष। विरागभाव की साधना इन दोनों दशाओं में समभाव का विकास कर सकती है।

विराग भाव की साधना क्यों ?

वीतरागता की उपलब्धि हम सब का लक्ष्य है। इस वीतराग दशा से ही रागद्वेष जन्य आकुलता का निवारण करके हमारी आत्मा निराकुलता एवं शांति को प्राप्त कर पाती है। सभी आत्माएँ इसी शाश्वत शांति और सुख को अधिगत करना चाहती हैं। विरागभाव की साधना का भी यही प्रयोजन है।

कर्म परम्परा का अंत और आत्मा का ऊर्ध्वारोहण :

'रागोयदोसो वि य कम्मबीयं' कहकर शास्त्रकार ने रागद्वेष को कर्म का बीज बताया है। आपको यह ज्ञात है कि सम्यक्त्व गुण की प्राप्ति प्रकृतियों के क्षय, उपशम या क्षयोपशम के फलस्वरूप होती है। जिनमें अनन्तानुबंधी कषाय चतुष्क की चार प्रकृतियाँ भी सम्मिलित हैं। सम्यक्त्व प्राप्त करने के बाद जीव व्रत को तभी धारण करता है जब वह प्रत्याख्यानावरण कषाय का क्षय आदि कर लेता है। इसी प्रकार अप्रमत्त अवस्था भी कषाय की प्रकृतियों के क्षय का ही परिणाम है। इस तरह कषाय या रागद्वेष की विभिन्न प्रकृतियों का क्षय, उपशम या क्षयोपशम करके ही आत्मा आरोहण की ऊँचाइयों का स्पर्श करता है और कर्म-परम्परा का अन्त भी करता है। मुनि नथमलजी का कथन इस दृष्टि में महत्त्वपूर्ण है—'तीव्र कषाय के उदयकाल में पूर्ण विरति नहीं होती और मंद कषाय के उदयकाल में वीतरागता उत्पन्न नहीं होती।' (जैनयोग पृष्ठ १७) रागद्वेष कर्म बन्ध का कारण है, जबकि समभाव या विरागभाव कर्म बन्ध का कारण न होकर कर्म निर्जरा का कारण होता है।

नेह पासा भयंकरा :

'उत्तराध्ययन' सूत्र के २३वें अध्ययन में केशी श्रमण को उत्तर देते हुए गौतम स्वामी ने कहा कि रागद्वेषादि और तीव्र स्नेहरूप पाश भयंकर हैं। इन पाशों से मुक्त होकर निर्भय और अभय बनने हेतु विराग भाव की साधना परम आवश्यक है। जैसे द्वेष हमारी शांति को भंग कर डालता है वैसे ही ममता, मोह, राग या आसक्ति का भाव भी हमारी शांति को भंग कर डालता है। राग भाव वह मीठा नशा है जो हमें आत्मस्वरूप का भान भुला देता है। नेहपाश में बंधा आत्मा उचित-अनुचित का कुछ भी विचार न करते हुए अपना पतन कर डालता है। द्वेष पर विजय करना अपेक्षाकृत आसान हैं। परन्तु मोह ममता पर वश करना अत्यंत कठिन हैं। प्रतिकूल और ममनोज्ञ दशाओं का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामना हम दृढ़ता से कर लेते हैं परन्तु मनोज्ञ और अनुकूल स्थितियों का सामना करने में असमर्थ रहते हैं।

धनधान्य आदि भोग सामग्री पाने की इच्छा-तृष्णा के मूल में लोभ कषाय ही रहा हुआ है। जो राग का ही प्रतिरूप है। इसी लोभ के कारण आत्मा कैसे-कैसे कष्टों और दुःखों को सहन करता और उसके जाल से मुक्त नहीं हो सकता, यह सब कुछ हम से छिपा नहीं है।

दुर्ध्यान का निवारण :

इष्ट के संयोग और अनिष्ट के वियोग का चिंतन आर्त्तध्यान के ही भेद हैं। इनसे आत्मा की आकुल दशा का निवारण हो वह कर्म बंध से बच सके, इसके लिए आवश्यक है कि समभाव या विरागभाव की साधना की जाए। पदार्थों के व्यामोह में आत्मा मोहांध बन जाता है, उसकी सम्यगदृष्टि, उसका सम्यग्ज्ञान पर इस दुर्ध्यान का आवरण छा जाता है। परन्तु जब वह आत्म-स्वरूप का चिंतन करता है, पदार्थों के स्वभाव पर चिंतन करता है तो वह पुनः सन्मार्ग पर आरूढ़ हो जाता है।

विरागभाव की साधना कैसे करें ?

इस विवेचन से आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि जब तक रागभाव (रागद्वेष) विद्यमान है। तब तक कर्म परम्परा और दुःखों का अंत नहीं हो सकता। आप सभी के मन में यह जिज्ञासा जगी होगी कि हम राग भाव का उन्मूलन कर विरागभाव की साधना कैसे कर सकते हैं, मैं अब इसी विषय पर आगे विचार व्यक्त कर रहा हूँ।

(१) समभाव की साधना :

सभी दशाओं में विशेष कर रागभाव के प्रसंग में हम कोई प्रतिक्रिया न करें। केवल ज्ञाता, दृष्टा बन कर रहें। अनुकूल और प्रतिकूल विचारों, व्यवहारों, व्यक्तियों और वस्तुओं को मात्र जानें और देखें। अन्तर्मुखी बनकर आत्मस्वरूप में रमण करते हुए ज्ञान-दर्शन गुणों का चिंतन करें।

(२) अनित्य आदि भावनाओं का चिंतन :

संसार की दशा, जीवन और जगत की अनित्यता का चिंतन हम में विरागभाव जगाने और उसे दृढ़ बनाने में सहायक होगा। जब भी रागभाव हमें अपने घेरे में बंद करने लगें तो हम इन भावनाओं के चिंतन की शक्ति से उनका सामना करें। संसार की वास्तविक स्थिति और सांसारिक लोगों के व्यवहार का स्मरण करें जिसका चित्रण निम्न पंक्तियों में किया गया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कुटुम्ब के कारणे, करत अनेक उपाय,
सो कुटुम्ब अग्नि लगा, तुझको देत जलाय ।१।
लक्ष्मी साथ न अनुसरे, देह चले नहीं संग,
काढ़-काढ़ सुजन ही कहें, देख जगत को रंग ।।२।।

साधकों का संग एवं स्वाध्याय आदि तपाराधना नियमित स्वाध्याय, प्रायश्चित एवं ध्यान की क्रियाएँ हमें विरागभाव की ओर अग्रसर करेंगी और ऐसे साधकों का संग हमें राग विजय करने में समर्थ बनायेगा। स्वाध्याय से जहाँ हमें अपने स्वभाव की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी वहाँ प्रायश्चित हमें रागात्मक स्थितियों से उबार कर वीतरागता की ओर बढ़ने की जागरूकता पैदा करेगा। इसके साथ ही राग के दुःखद परिणाम का विचार कर तथा विराग के सुखद परिणाम का चिंतन कर हम रागमुक्त बनने का सफल प्रयास कर सकेंगे।

कर्म-निर्जरा की साधना :

राग द्वेष दोनों मोह कर्म की प्रकृतियाँ हैं जो मोह कर्म के उदय से उत्पन्न हुई हैं। हमें चाहिए कि हम मोह कर्म के बंध के छः कारण तीव्र क्रोधादि पर नियंत्रण करते हुए मोह कर्म की निर्जरा करें और राग भाव का क्षय करके वीतरागता प्राप्त करें।

यह प्रश्न हो सकता है कि बिना ममत्व और स्नेह का जीवन ही कैसा है ? फिर इन भावों के बिना किसी कार्य की सिद्धि भी कैसे की जा सकती है ? यह प्रश्न सुनने में उचित लगता है पर मोहांधता भी जगत में प्रसिद्ध है। इस मोह के वशीभूत हुआ मानव कौनसा अकार्य नहीं कर डालता ? यह सोचकर जागृत आत्मा मोह और अज्ञान में कभी नहीं फंसता।

ममत्व भाव और आत्मीयभाव में मौलिक अन्तर है। सभी आत्माओं को अपनी आत्मा के तुल्य समझना उचित है। परन्तु मेरे तेरेपन का भाव सर्वथा अनुचित है, क्योंकि यह संघर्ष का जनक है अतः यह आवश्यक है कि कर्त्तव्य भावना से ही कोई कार्य किया जाय, मोहांध भाव से नहीं। इस मोह दशा पर विजय पाना और सदा समस्थिति पर विजय पाना जैन धर्म का एक मर्म और रहस्य है।

आशा है, विराग भाव की यह साधना हम में एक नयी ज्योति जगाएगी, और हम अपने गन्तव्य तक पहुँच जाएंगे।

३५, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

□ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[दक्षिण केलीफोर्निया के जैन केन्द्र की ओर से आयोजित वार्षिक सभा में गुजराती सांस्कृतिक सोसायटी हाल, फ्लोरेंस एवेन्यू, लोस एन्जलेस अमेरिका में दिनांक ४ दिसम्बर, १९८३ को श्री लालचन्द्र जैन द्वारा उपर्युक्त विषय पर दिये गये भाषण का सार संक्षेप।]

—सम्पादक

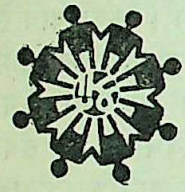

जैन धर्म की विशेषताएँ

□ श्री लालचन्द्र जैन

अरिहंतो भगवन्त इन्द्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता।.....

प्रिय स्वधर्मी भाइयो और बहनो ! पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने के पश्चात् पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० को नमस्कार करके अब मैं अपने प्रस्तुत विषय पर आता हूँ।

१. अंतरंग धर्म :

अभी आपने नमस्कार मंत्र सुना। उसके पहले पद में अरिहंत को नमस्कार किया गया है। अरिहंत अर्थात् शत्रु का नाश करने वाले को नमस्कार ! यदि आपसे कोई पूछ बैठे कि अहिंसा का उपदेश देने वाला धर्म शत्रु का नाश करने वाले अर्थात् हिंसा करने वाले को नमस्कार करता है, यह कैसी विपरीत बात है ? तो आप उत्तर नहीं दे सकेंगे। किन्तु वास्तव में इस नमस्कार पद का यह भाव नहीं है, यह तो शाब्दिक अर्थ है। भाव यह है कि राग, द्वेष, कषाय, काम, क्रोध, लोभ, मद, माया आदि जो आत्मा के अंतरंग शत्रु हैं, उनका जिसने नाश कर लिया है, उस महान् आत्मा को हम सर्व प्रथम नमस्कार करते हैं।

२. लिंग पूजा नहीं :

दूसरे पद में जो सिद्धों का नमस्कार किया गया है, वह भी बहुत महत्त्व-पूर्ण और जैन धर्म की विशालता को प्रकट करने वाला है। जैन धर्म किसी व्यक्ति को महत्त्व नहीं देता, किन्तु गुणों को महत्त्व देता है। यह नहीं कहा कि जैन दीक्षा अंगीकार कर मुक्ति प्राप्त की, उसे नमस्कार। नहीं। किसी ने किसी भी वेष में, किसी भी लिंग में, कहीं भी, कैसे भी मुक्ति प्राप्त की, उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा नमस्कार। सिद्ध १५ प्रकार के कहे गये हैं उनमें स्वलिंग सिद्ध, पर लिंग सिद्ध, गृहस्थ लिंग सिद्ध, स्त्री-पुरुष-नपुंसक लिंग सिद्ध आदि भेदों से स्पष्ट है कि किसी भी वेष में मुक्ति हो सकती है। स्त्री भी मुक्त हो सकती है, गृहस्थ भी मुक्त हो सकता है। उदाहरण मौजूद हैं, माता मरुदेवी ने हाथी के हौदे पर बैठे-बैठे मुक्ति प्राप्त की, भरत चक्रवर्ती ने अपने काच के शृंगार महल में खड़े-खड़े ही मुक्ति प्राप्त करली। अतः हम वेष को नहीं, गुणों को नमस्कार करते हैं।

३. व्यक्ति पूजा नहीं, गुण पूजा :

तीसरे, चौथे और पाँचवें पद में आचार्य, उपाध्याय और संसार के सर्व साधुओं को नमस्कार किया गया है। आप देखेंगे कि संसार के अन्य सभी धर्मों में धर्म-प्रवर्तक को नमस्कार किया जाता है, किन्तु नवकार मंत्र में महावीर को या आदिनाथ को नमस्कार नहीं किया गया है। पूरे नमस्कार मंत्र में सिर्फ गुणधारी व्यक्तियों को नमस्कार है, व्यक्ति विशेष को नहीं ! जिनमें भी आचार्य, उपाध्याय और साधु के गुण हैं, उन सबको नमस्कार ! संसार के सारे साधुओं को नमस्कार !! इससे अधिक हृदय की विशालता तो आपको और कहीं नहीं मिलेगी।

४. सार्वजनीन धर्म :

संसार के सारे धर्मों में क्रियाकांडों पर महत्त्व दिया जाता है, कहीं यज्ञ पर, कहीं बलि पर, कहीं मूर्ति पूजा पर, कहीं व्यक्ति पूजा पर किन्तु जैन धर्म इन सबसे अलग है। वह तो धर्म को आत्मा का गुण बताता है। 'दशवैकालिक' सूत्र के पहले अध्याय की पहली ही गाथा में धर्म की उत्कृष्टता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है—

धम्मो मंगलमुकिट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।

वही धर्म उत्कृष्ट मंगल है, जो अहिंसा, संयम और तप मय हो। ऐसे धर्म में जिनका मन सदा लगा रहता है, अर्थात् जो उपर्युक्त धर्म को जीवन के आचरण में उतारते हैं, उनको देवता भी वंदन करते हैं, फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या ?

अहिंसा :

अ + हिंसा = हिंसा नहीं करना, यह निषेधात्मक अहिंसा हुई। संसार के सभी प्राणी सुखेच्छु हैं, जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। शास्त्र में कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सव्वे पाणा पियाउया सुहासया सव्वे जीविउं इच्छंति न मरीज्जिउं ।

जैसे आप सुख चाहते हैं, जीना चाहते हैं, वैसे ही संसार के सभी प्राणी जीवित रहना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता । अतः जीव हत्या द्वारा प्राप्त मांस भक्षण कहाँ तक उचित है, यह स्वयं ही सोचें । अहिंसा का विधेयात्मक रूप है संसार के सभी प्राणियों के साथ मैत्री भाव रखना—

मित्ति मे सव्व भूएसु, वैरं मज्झं न केणई ।
सर्वभूतेषु आत्मवत्, वसुधैव कुटुम्बकम् ।

जो ब्रह्मांड के सभी प्राणियों के साथ मित्रता रखता हो, जो सारे संसार को ही अपना कुटुम्ब समझता हो, जो सारे प्राणियों को अपनी आत्मा के समान समझता हो, उसका किसी से वैर विरोध हो ही कैसे सकता है, वह किसी को दुःख पहुँचा ही कैसे सकता है ?

संयम :

अहिंसा के पालन के लिये संयम की अत्यन्त आवश्यकता है । जो अपने मन पर, अपनी इन्द्रियों पर काबू नहीं रख सकता, वह अहिंसा का पालन नहीं कर सकता । आपकी इच्छा मिठाई खाने की हुई, पर जेब में पैसे नहीं हैं तो क्या आप चोरी करके मिठाई खायेंगे ? नहीं, जब तक जेब में पैसे नहीं आयेंगे तब तक आप संयम रखेंगे । आप भूखे प्यासे हारे थके घर गये और देखा कि खाना तैयार नहीं है । क्या आप पत्नी को डाँटेंगे, गाली देंगे, मारेंगे या थोड़ा संयम रखकर उसके काम में हाथ बँटायेंगे । यदि आपने संयम रखा तो घर में शांति बनी रहेगी, वर्ना हँगामा मच जायेगा । घर में ही नहीं, समाज में, संघ में, देश में, राष्ट्र में और सारे विश्व में आज की परिस्थिति में संयम की अत्यन्त आवश्यकता है । आज परमाणु-युद्ध के खतरे के समय किसी भी राष्ट्र नेता के जरा से असंयम से सारी दुनिया नष्ट हो सकती है ।

तप :

संयम का ही अधिक विकसित रूप तप है, क्योंकि **'इच्छा निरोधस्तपः'** इच्छा को रोकना ही तप है । आपके पास भोजन है ही नहीं, तब यदि आपने खाना नहीं खाया तो वह तप नहीं हुआ, किन्तु **'साहीणे चयइ त्ति तवो'** भोग-उपभोग की वस्तुओं के प्राप्त होने पर भी स्वाधीनता से—अपनी इच्छा से उनका त्याग कर देना ही तप है । **'मरी नारी भये ब्रह्मचारी'** की कहावत तप के लिये लागू नहीं होती । स्त्री के होते हुए भी, एक साथ रहते हुए भी, उसका त्याग कर देना, भाई-बहन की तरह रहना ब्रह्मचर्य तप है । तप दो प्रकार के हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाह्य और आभ्यंतर। अनशन, उणोदरी, रसपरित्याग, काया क्लेश, वृत्ति परिसंख्यान, आदि बाह्य तप हैं और स्वाध्याय, ध्यान, प्रायश्चित, विनय, व्युत्सर्ग आदि आंतरिक तप हैं। शरीर साथ न देने पर भी हठपूर्वक देखा-देखी तप करना तप नहीं, अहंकार का पोषण है। तप के लिये शास्त्र में कहा गया है—

बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणा।
खेतं कालं च विण्णाय, तइप्पाणं निजुंजये ।।

अपने मनोबल, शारीरिक बल, श्रद्धा, आरोग्य, क्षेत्र और काल को देखकर फिर तदनुसार अपने को तप में नियुक्त करना चाहिये। यह आवश्यक नहीं कि आप अनशन तप ही करें, भूख से कम खाकर (इच्छापूर्वक) उणोदरी तप भी कर सकते हैं। दही, दूध, घी, तेल, चीनी, नमक आदि किसी भी एक रस का त्याग करके भी तप कर सकते हैं। तप का उद्देश्य है रसेन्द्रिय को—जीभ के स्वाद को जीतना। बहुत से लोग कहेंगे कि हम से तो उपर्युक्त कोई भी तप नहीं हो सकता, तो उसके लिये शास्त्रकारों ने अभ्यास के लिये बहुत सरल उपाय बताया है। हमारे यहाँ प्रतिक्रमण के बाद जो प्रत्याख्यान होता है उसमें दो शब्द आते हैं 'गंठिसहियं मुट्ठिसहियं' कपड़े में गांठ लगा कर खोलने तक या मुट्ठी बंद करके खोलने तक भोजन पानी का त्याग। आप हँसेंगे कि यह भी कोई तप हुआ, यह तो तप का मजाक हो गया, पर नहीं। इसमें बहुत बड़ा रहस्य है। जो कभी किसी प्रकार का त्याग कर ही नहीं सकते, उन्हें प्रत्याख्यान का अभ्यास कराने का, तप की ओर उन्मुख करने का यह सरल उपाय है। वैसे **'झाणेणं मोणेणं ठाणेणं'** के अनुसार एक आसन पर बैठकर मौन पूर्वक स्वाध्याय करना और ध्यानपूर्वक कायोत्सर्ग करना बहुत बड़ा अंतरंग तप है। काया + उत्सर्ग = शरीर का त्याग वैसे तो मृत्यु होने पर ही होता है, किन्तु शरीर के प्रति आसक्ति के त्याग का अभ्यास हम नित्य ही **'काउसग्ग'** द्वारा कर सकते हैं। जब हम कायोत्सर्ग में होते हैं, तब शरीर पर मक्खी मच्छर काटते हैं तो भी हम उन्हें नहीं हटाते, यह शरीर की आसक्ति का त्याग हुआ या नहीं? तो शरीर की आसक्ति जब कम हो जायेगी, तब अन्य पदार्थों की आसक्ति अपने आप ही कम हो जायगी। अतः यह व्युत्सर्ग तप सब से बड़ा तप है। किसी क्रियाकांड पर बल न देकर महावीर ने अहिंसा, संयम और तप पर बल दिया और उन्हें ही उत्कृष्ट धर्म बताया अतः जैन धर्म सार्वजनीन धर्म है, किसी की बपौती नहीं।

५. ईश्वर को कर्ता नहीं मानना :

बहुत से लोग जैन धर्म को नास्तिक कहते हैं, कहते हैं कि जैन ईश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं मानते। पर यह गलत धारणा है। जैन ईश्वरत्व को मानते हैं, पर साथ ही कर्म को भी मानते हैं। जहाँ दूसरे धर्म ईश्वर को कर्ता मानते हैं, वहाँ जैन मनुष्य को कर्ता मानते हैं। मनुष्य ही अपने भाग्य का निर्माता है, वह जैसे कर्म करेगा, वैसा ही बन जायगा, वह राक्षस भी बन सकता है, देव भी बन सकता है और परमात्मा भी बन सकता है। प्रत्येक प्राणी में ईश्वरत्व की शक्ति विद्यमान है, पर वह कर्मों से आच्छादित है। कर्मों के नष्ट होते ही उस शक्ति का प्रकट होना निश्चित है, यही मुक्ति है, यही सिद्धि है और यही आत्मा से परमात्मा बन जाना है। अहिंसा, संयम और तप को जीवन में उतारने से, उन्हें अमल में लाने से, कर्म नष्ट होंगे और कर्मों की निर्जरा होने से उस व्यक्ति की परमात्म शक्ति प्रकट होगी। जो धर्म पाप, पुण्य, स्वर्ग, नर्क और पुनर्जन्म को मानता है, जो आत्मा को अविनाशी मानता है, वह नास्तिक कैसे हो सकता है? जहाँ अन्य धर्मों के प्रवर्तकों ने यह कहा कि हम ईश्वर के पुत्र हैं, हमारे जैसा न कोई पहले हुआ न भविष्य में होगा, हमारी शरण से ही मुक्ति होगी, वहां महावीर ने कहा कि सभी व्यक्तियों में महावीरत्व मौजूद है, केवल **'धम्मोशरणं पवज्जामि'** शुद्ध धर्म की शरण से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है।□

ईश्वर की सीमा

□ **श्री मनोज आंचलिया 'टोनी'**

एक दिन एक दुःखी व्यक्ति मन्दिर में जाकर, बड़ी कातर-वाणी में कहने लगा—"हे भगवन्! तुम्हारे होते हुए भी यह कैसा अन्याय हो रहा है! पापी फल-फूल रहे हैं और तुम पत्थर की मूर्ति में सिमटे हुए मन्दिर में बैठे हुए हो। क्यों नहीं सशरीर प्रकट होकर, मन्दिर से बाहर निकलकर संसार से पाप और अन्याय को मिटा देते?"

भगवान् की मूर्ति ने गम्भीरता से कहा, "इसलिए कि मैं मनुष्य से डरता हूँ।"

"क्यों?" भक्त ने आश्चर्य से पूछा।

"इसलिए कि यदि मैं मन्दिर से सशरीर बाहर निकलूँ तो मनुष्य मुझ पर टूट पड़ेंगे; क्योंकि कोई भी मनुष्य अपनी अवस्था से सुखी नहीं है। सभी को मुझसे कुछ-न-कुछ शिकायत है और सबसे बड़ी शिकायत तो यह है कि मैं जल्दी नहीं सुनता।....पर मैं क्या करूँ। लोगों ने मुझे मन्दिरों में बन्द कर रखा है, जिससे मैं मन्दिर की सीमा के बाहर होने वाले काले कारनामें न देख सकूँ।"

—११६, देवाली, उदयपुर (राज०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार किस्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला :

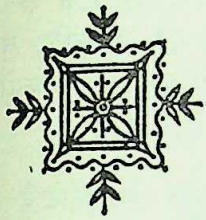

जैन हस्तलिखित ग्रंथ भंडार [१]

☐ प्राध्यापक उ० भा० कोठारी

श्वेताम्बर जैन आगम ग्रंथ अथवा कसाय पाहुड, छक्खंडागम, धवला, जयधवला आदि आगमवत् दिगम्बर शास्त्र ग्रंथ एवं विभिन्न श्रेष्ठ विद्वान् जैन आचार्यों के महत्त्वपूर्ण सैकड़ों ग्रंथ आदि हमें आज जो उपलब्ध हैं और जिनके आधार पर जैन धर्म-दर्शन-संस्कृति का ज्ञान अक्षुण्ण रूप से हम तक पहुँचा है, वह सब जैन ग्रंथ भण्डारों के ही बदौलत है—हस्तलिखित ग्रंथों के बदौलत है। क्योंकि छपाई का तन्त्र तो आधुनिक काल की उपलब्धि है। इसके पूर्व ग्रंथ केवल हाथ से लिखे जाते थे। उनके संग्रहालय होते थे। लोगों के पठन-पाठन के लिए एक-एक ग्रंथ की अनेक प्रतियाँ हाथ से बनाकर दूर-दूर तक भेजी जाती थीं। जहाँ-जहाँ जैनों की बस्ती होती थीं, वहाँ-वहाँ मन्दिरों और उपाश्रयों में हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह होता था। कई श्रावक भी निजी उपयोग के लिए ग्रंथों की प्रतियाँ लिखवाकर अपने घरों में हिफाजत से रखते थे। दिगम्बर समाज में मन्दिर के दर्शन करने के बाद वहीं बैठकर कुछ स्वाध्याय करने की परम्परा है। इस कारण प्रत्येक दिगम्बर मन्दिर में छोटा-बड़ा ग्रंथ संग्रह अवश्य होता था—होता है।

जैसे ही छपे ग्रंथों का प्रचार बढ़ने लगा, हस्तलिखित ग्रंथों की आवश्यकता न रही। उनका महत्त्व घट गया। इस ओर से लोगों का ध्यान हट गया। परिणामतः यह विशाल अमूल्य धरोहर धूल में लोटने लगी। चूहों-दीमकों की खाद्य बनने लगी। कई बार जल या आग के प्रकोप की शिकार बन गयी। राजनीतिक आतंकवादियों द्वारा भी धूल में मिलायी गयी।

लेकिन जो गया, उसके लिए रोने से कुछ फायदा नहीं। जो बचा है, वह भी बहुत है—कहूँ कि विशाल है—प्रचंड है तो भी अतिशयोक्ति न होगी।

शोध कार्य के सिलसिले में मुझे कुछ हस्तलिखित रचनाओं की खोज करनी थी। प्रस्तुत कार्य करते-करते मैं हस्तलिखित ग्रंथालयों की जानकारी नोट करने गया। कुछ हस्तलिखित ग्रंथों की छपी सूचियाँ, जयपुर के डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल का शोध प्रबंध, दूसरे कुछ ग्रंथ और लेख तथा इस क्षेत्र के विद्वानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं अन्य जानकारों की जबानी जानकारी के आधार पर १५३ स्थानों के ४३५ हस्तलिखित ग्रंथ भंडारों का अतापता मेरे पास संकलित हो गया है। इनमें दक्षिण के कर्नाटक, आन्ध्र, तमिलनाडू और केरल इन चार राज्यों के २-४ भंडारों का ही समावेश है। शेष के लिए हाथ वहाँ तक पहुँच ही न पाये, न कोई जरिया मिला कि जो इनकी जानकारी दे पाये। दक्षिण के इन चार राज्यों में सौ पचास अच्छे हस्तलिखित ग्रंथ भंडार होना तो मामूली बात है।

इन ४३५ भंडारों में १००-१२५ ग्रंथ भंडार तो बिलकुल छोटे-छोटे हैं। लेकिन वैसे छोटे ग्रंथ भंडारों का भी महत्त्व कम नहीं होता। यह सही है कि इनमें सामान्यतः दैनंदिन पठन-पाठन के बहु प्रचलित ग्रंथ होते हैं जो बहुधा प्रकाशित हो गये हैं, किन्तु इनमें ऐसे किसी प्राचीन ग्रंथ की खोज भी लग सकती है, जो बड़ा मौलिक और महत्त्वपूर्ण हो और अभी तक विद्वानों की नजरों में न आया हो।

राजस्थान में ग्रंथ-सुरक्षा :

हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह के लिए राजस्थान विश्व भर में प्रख्यात है। हमारे देश का कोई राज्य इसकी बराबरी नहीं कर सकता। वैसे राजस्थान को इस्लामी आक्रमणों के धक्के बहुत सहने पड़े, किन्तु धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए दृढ़ता भी बहुत रही। राजस्थान की कई रियासतों में समय-समय पर अनेक प्रभावी जैन दीवान हुए हैं। अनेक बड़े-बड़े विद्वान् मुनि हुए हैं। इसलिए राजस्थान में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार एवं संस्कृति-संरक्षण चुस्ती से होता रहा। जैन मूर्तियाँ, ग्रंथ आदि की सुरक्षा के प्रयत्न प्राणपण से होते रहे। जैसलमेर जैसे विशाल और भयंकर रेतीले सम्भाग में जैन ग्रन्थों को सुरक्षितता के लिए ही ले जाया गया, क्योंकि रेतीले प्रदेश में दूर तक भीतर घुस कर आक्रमण की गुंजाइश बहुत कम होती थी।

जयपुर के ग्रंथ भंडार :

राजस्थान की सुन्दर नगरी जयपुर दिगम्बर मन्दिरों एवं हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहों का एक बड़ा और महत्त्वपूर्ण केन्द्र माना जाता है। यहाँ के विभिन्न दिगम्बर मन्दिरों में समृद्ध हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डार हैं। इनमें सोलह ग्रन्थ भण्डार तो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। आमेर शास्त्र भण्डार और अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी का ग्रन्थ भण्डार भी महावीर भवन (चौड़ा रास्ता) में लाकर रख दिया गया हैं।* इन अठारह भण्डारों के सन्दर्भ में डॉ. कस्तूरचन्द कासली-

* अब श्रीमहावीरजी (सवाई माधोपुर) में जैन विद्या संस्थान के रूप में शोध केन्द्र विकसित किया जा रहा है।—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाल ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इन्होंने इन सबको व्यवस्थित बनाया। सुविस्तृत सूचियाँ बनायीं। ये सूचियाँ 'राजस्थान के जैन ग्रन्थ भण्डारों की सूची' इस शीर्षक से भाग १ से ४ के रूप में महावीर भवन ने प्रकाशित भी कर दी हैं। इन सूचियों में कुल मिलाकर करीबन २० हजार ग्रंथों का विवरण आ गया है। इन अठारह के अलावा काला छाबड़ा दि. जैन मन्दिर और मेघराजजी दि. जैन मन्दिर में भी छोटे-छोटे हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह हैं।

'चौड़ा रास्ता' पर ही स्थित लाल भवन नामक स्थानक में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. की प्रेरणा से स्थापित श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार नामक एक विशाल हस्तलिखित संग्रह है। इसमें छोटे-बड़े तीस हजार के करीब ग्रन्थ हैं और सुव्यवस्थित रूप से रखे हुए हैं। इनकी सूचियाँ भी हाथ से बनी हैं। सूचियों के छपाई की भी योजना बनाई गयी थी, किन्तु आगे चलकर छोड़ दी गयी। डॉ. नरेन्द्र भानावत द्वारा तैयार किया हुआ सूची का प्रथम भाग सन् १९६८ में प्रकाशित हुआ था। इसमें २५०० ग्रन्थों का विवरण दिया है। सूची का दूसरा भाग नहीं निकला।

जयपुर में शिवजीराम भवन में श्वेताम्बर जैन खरतरगच्छीय भण्डार भी है, जिसमें १६४६ हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं। तपागच्छीय भण्डार भी एकाध होना चाहिए।

बीकानेर : श्वेताम्बर ग्रंथ भण्डारों का गढ़ :

जयपुर जैसे दिगम्बर ग्रन्थ भण्डारों का गढ़ है, वैसे बीकानेर श्वेताम्बर ग्रन्थ भण्डारों का गढ़ है। यहाँ के विख्यात श्रेष्ठ विद्वान् स्व. अगरचन्दजी नाहटा ने हस्तलिखितों का संग्रह करने में और इनसे सम्बन्धित गवेषणापूर्ण लेख लिखने में अपना पूरा जीवन लगा दिया था। आपका निजी 'संग्रह अभय जैन ग्रंथालय' नाम से है। 'जिनवाणी' के जैन संस्कृति और राजस्थान विशेषांक (अप्रैल-जुलाई १९७५ ई.) में आप स्वयं लिखते हैं—"६० हजार हस्तलिखित प्रतियाँ मैंने अपने अभय जैन ग्रन्थालय में अब तक संग्रह कर ली हैं और संग्रह दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है।"

यहाँ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की शाखा भी है, जिसको कि स्थानीय (१) श्री मोतीचन्दजी खजांची का संग्रह (२) पूज्यजी का (खरतर-गच्छीय उपासरे का) संग्रह (३) लक्ष्मी मोहन शाला भण्डार (४) यति मोहनलाल संग्रह तथा और ४-५ छोटे संग्रहों के ग्रन्थ दे दिये गये हैं।

रांगड़ी चौक उपाश्रय का बृहत् ज्ञान भण्डार भी बीकानेर का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भण्डार है, जो कि यति हिमातुजी के प्रयत्नों द्वारा नौ भण्डार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्र करके ७५–८० वर्षों पूर्व स्थापित किया गया था। हेमचन्द्र सूरि ग्रन्थ भण्डार और कुशलचन्द सूरि ग्रंथ भण्डार नाम से पायचन्द गच्छ के दोनों उपाश्रयों में भी हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह हैं। श्री मानमलजी कोठारी का भी एक निजी संग्रह था, जो कि श्री अजयबाबू कोठारी के कथनानुसार श्री सुशील मुनि जी द्वारा स्थापित अहिंसा भवन (दिल्ली) को दे दिया गया है। फिर भी इनके पास अभी भी ५००–६०० महत्त्वपूर्ण और सचित्र हस्तलिखित पुस्तकें हैं।

उपर्युक्त के अलावा बीकानेर में निम्नलिखित ग्रन्थ भण्डार और हैं। (१) श्री भंसालीजी का गोविंद पुस्तकालय (२) सुगनजी के उपाश्रय का (क्षेमा कल्याणजी अथवा केशव कल्याणजी) भंडार (३) महामहोपाध्याय रामलालजी का संग्रह (४) खरतर गच्छाचार्यों का संग्रह (उपरोक्त पूज्यजी का और रांगड़ी चौक उपाश्रय का इन दोनों से भिन्न) (५) कोचर उपाश्रय का भंडार (६) श्री मंगलचन्दजी मालू का संग्रह (७) राव गोपालसिंह बैद का संग्रह (८) भँवरलालजी रामपुरिया का संग्रह (९) चत्तीबाई उपाश्रय भंडार (१०) पुन्नीबाई उपाश्रय भंडार (११) बोथरों की गवाड़ का जेठीबाई ज्ञान भंडार (१२) श्री अगरचन्द भैंरोदान सेठिया लायब्रेरी (१३) यति जयकरण जी का संग्रह (१४) श्री लच्छीरामजी का संग्रह। ये सभी संग्रह आज किस स्थिति में हैं, यह देखना आवश्यक है।

विश्वविख्यात जैसलमेर के ग्रन्थ संग्रह :

श्वेताम्बर जैनों के भंडारों में जैसलमेर के हस्तलिखित ग्रन्थ भंडार विश्वविख्यात हैं। जेम्स टॉड, डॉ. वूलर, डॉ. हार्मन जेकोबी जैसे योरोपीय विद्वानों का ध्यान इधर आकर्षित हुआ था। डॉ. सी. डी. दलाल, डॉ. भांडारकर जैसे प्राचीन विद्या के श्रेष्ठ विद्वानों ने तथा कुछ श्रेष्ठ मुनिवरों ने इन्हें देखकर संवारने की और सूचियाँ बनाने की कोशिश की थी। स्व. पू. जिनविजयजी ने यहाँ पाँच महीनों तक रहकर भंडार को देखा भाला था। सन् १९०९ ई. और सन् १९२३ ई. में ऐसे दो बार यहाँ के कुछ ग्रंथों की सूचियाँ भी छपकर प्रकाशित हुई थीं। सबसे अधिक ठोस कार्य आगम प्रभाकर पू. पुण्य विजयजी ने किया। वे सोलह महीना जैसलमेर में रहे। २६९७ ग्रंथों की सुव्यवस्थित और विस्तृत सूची तैयार की, जो कि सन् १९७४ ई. में प्रकाशित हो गयी है। अन्यत्र अप्राप्य ऐसे १४ ग्रंथों की प्रेस कॉपी तैयार की। २१४ ग्रन्थों की मायक्रो फिल्म तैयार की। ये सभी ग्रन्थ किले के भोयरे में अत्यन्त सुव्यवस्थित और हिफाजत से रखे हैं।

जैसलमेर शहर की स्थापना सन् ११५८ ई. में राणा जैसलजी द्वारा की गयी थी, किन्तु इसके पूर्व के प्रतिलिपित ग्रंथ यहाँ के संग्रह में हैं। सबसे प्राचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिलिपित प्रति सन् १०६० ई. की है। इससे स्पष्ट होता है कि भयंकर रेतीले मैदान के दूर भीतर के स्थान को अन्य स्थानों से सुरक्षितता के लिए ग्रन्थ भेजे गये।

सन् १९७४ ई. में प्रकाशित सूची के अनुसार जैसलमेर में निम्नलिखित दस भंडार हैं—(१) जिनभद्र सूरि संग्रह (बड़ा भंडार) (२) वेगड़गच्छीय ज्ञान भंडार (३) बड़े उपाश्रय का पंचों का भंडार (४) यति लक्ष्मीचन्दजी ज्ञान भण्डार (५) यति वृद्धिचन्दजी ज्ञान भण्डार (६) आचार्य गच्छ उपाश्रय ज्ञान भण्डार (७) थाहरू शाह का भण्डार (८) तपागच्छीय ज्ञान भण्डार (९) डुंगरसी यति का ज्ञान भण्डार व (१०) लोंकागच्छीय ज्ञान भण्डार।

इनमें से प्रथम तीन किले के भोयरे में स्थित हैं और उपरोक्त सन् १९७४ ई. में प्रकाशित सूची प्रमुखतः इन्हीं से सम्बन्धित हैं। चौथा स्वयं लक्ष्मीचन्दजी यति ने पाटण (गुजरात) भेज दिया है और वहाँ श्री हेमचंद्राचार्य ज्ञान मन्दिर में है। क्रमांक ५ और ६ जिनके अधिकार में थे वे सज्जन यहाँ नहीं हैं। व्यवसाय के लिए बाहर चले गये हैं और पता नहीं वर्तमान में ये भण्डार किस स्थिति में हैं। ७वाँ थाहरू शाह का भण्डार इनके वंशजों के अधिकार में हैं और आठवां तपागच्छीय भण्डार तलाटी उपाश्रय में मौजूद है। डॉ. कासलीवालजी के अनुसार यति डूंगरसी भण्डार ही लोंकागच्छीय भण्डार है। यतिजी के प्रशिष्य यहाँ नहीं हैं तथा इन भण्डारों की कुछ जानकारी नहीं मिलती।

नागौर का दिगम्बर शास्त्र संग्रह :

नागौर का दि. पंचायती मन्दिर भट्टारक मुनिंद्र कीर्ति शास्त्र भण्डार बहुत प्रख्यात है। डॉ. टेसीटोरी ने इसे देखने के लिए काफी प्रयत्न किये थे, लेकिन २५ वर्ष पूर्व तक यह किसी को दिखाया नहीं जाता था। पू. मुनि पुण्य विजयजी ने और श्री अगरचंदजी नाहटा ने तत्कालीन भट्टारकजी को समझाया। वे मान गये और वर्षों बाद भण्डार खोला गया। गट्ठर ऐसे बँधे थे और ऐसे हिफाजत से रखे गये थे कि एक भी प्रति खराब नहीं हुई। नाहटाजी ने और डॉ. कासलीवालजी ने कुल ग्रंथों की संख्या भिन्न-भिन्न लिखी है। किन्तु अब पूरे भंडार की सूची नये सिरे से और व्यवस्थित बना दी गयी है। प्रस्तुत लेखक ने यह सूची देख ली है। इसमें १९०८ ग्रंथों की नोंध है, जिसमें ११०० के करीब गुटके हैं। गुटका विविध रचनाओं के एकत्रित संग्रह को कहते हैं। यहाँ के कई गुटके बहुत बड़े-बड़े हैं। गुटकों के भीतर की रचनाएँ अलग-अलग गिनें तो रचनाओं की संख्या २०,००० से ऊपर होगी।*

* जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से डॉ. पी. सी. जैन के सम्पादन में इस भण्डार के ग्रन्थों की सूची प्रकाशित हुई है। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ और दिगम्बर शास्त्र भण्डार :

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की सूची का ५वाँ भाग भी सन् १९७२ ई. में प्रकाशित हो चुका है। इसमें राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं कस्बों के ३५ दिगम्बर शास्त्र भण्डारों के करीब २०,००० ग्रन्थों की सूची अकारादि क्रम (ग्रंथ नाम का) से दी गयी है। इसमें बून्दी के पाँच; उदयपुर, बसवा और मालपुरा के तीन तीन, अजमेर, अलवर, टोडारायसिंह, बयाना, करौली तथा दौसा के दो-दो और दूनी, भरतपुर, डीग आदि १८-२० स्थानों के एक-एक ऐसे इतने भंडारों को लिया गया है। अलवर के खंडेलवाल दि. जैन मन्दिर तथा अग्रवाल दि. पंचायती मन्दिर इन दो के ग्रन्थों को ही प्रस्तुत सूची में लिया गया है। इनके अलावा और पाँच दिगम्बर मन्दिरों में छोटे-छोटे ग्रंथ भंडार हैं।

कोटा के बोरसली दि. मन्दिर के भण्डार का उल्लेख डॉ. कासलीवालजी ने अपने प्रबन्ध में किया है। देखा तो अनुभव हुआ कि यह अत्यन्त अव्यवस्थित है और इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। इसके अलावा यहाँ 'दि. जैन चैत्यालय (बड़ा) आदिनाथ का' में अच्छा और व्यवस्थित शास्त्र संग्रह है।

दिगम्बर भंडारों में कुचामण में अजमेरी मंदिर, नागौरी मंदिर और तेरहपंथी मन्दिर ऐसे तीनों स्थानों में उल्लेखनीय शास्त्र भण्डार हैं। सीकर के बड़े मन्दिर का संग्रह भी बहुत अच्छा है। ऋषभदेव तीर्थ का भट्टारक श्री यश कीर्ति संग्रह भी महत्त्वपूर्ण है। इस संग्रह के सूची की एक छोटीसी पुस्तिका भी प्रकाशित की गयी है।

इनके अलावा सवाई माधोपुर और नरायना में दो-दो तथा मौजमाबाद, हिण्डौन, झालरापाटन, उणियारा (जि. टोंक), साम्भर, अलीगढ़–रामपुरा (जि. टोंक), खण्डार (जि. सवाई माधोपुर) और भरतपुर में एक-एक ऐसे छोटे दिगम्बर शास्त्र भण्डार हैं।

श्वेताम्बर भण्डारों के पाँच केन्द्र :

जोधपुर में ६–७ हस्तलिखित भंडार थे, किन्तु अब काफी परिवर्तन हो गया है। मंडी के स्थानक में मुनि मंगलचन्दजी स्थिरावास में थे। इनके अधिकार में एक अच्छा हस्तलिखित संग्रह था। अब इनका स्वर्गवास हो गया है। देखना होगा अब इस संग्रह की स्थिति कैसी है। ज्ञान रत्न पुस्तकालय (राजपुर हवेली) नामक ग्रन्थ भण्डार में भी ५००–५५० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। कहा गया कि स्व. धरमचन्दजी गुराँसा के स्वर्गवास के बाद कोलरी उपाश्रय का संग्रह भी यहाँ आ गया है। इनके अलावा डॉ. कासलीवालजी ने उदयचन्द भट्टारक संग्रह, बद्रीभट ब्रह्मचर्याश्रम और रामकरण आसोपा संग्रह का उल्लेख भी व्यक्तिगत संग्रहों के रूप में किया है। आज क्या स्थिति है, देखना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदयपुर में हाथीपोल धर्मशाला का और गोड़ीजी उपाश्रय का संग्रह एकत्र करके 'श्वेताम्बर महासभा का संग्रह' नाम से हाथीपोल धर्मशाला में रखा हुआ है। साथ ही यहाँ श्री वर्धमान जैन ज्ञान मन्दिर में और शीतलनाथ मन्दिर में भी हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह है।

अजमेर के लाखन कोटड़ी जैन स्थानक का मुनि हगामीलालजी संग्रह भी महत्त्वपूर्ण है। लाखन कोटड़ी के श्री सम्भवनाथजी मन्दिर में भी हजार ग्यारह सौ ग्रंथों का अच्छा संग्रह है तथा पाल बिसला के जैन दादावाड़ी में लखनऊ से आया हुआ विजयसेन सूरि ग्रंथ भंडार रखा हुआ है। इसमें भी काफी प्राचीन ग्रन्थ हैं।

डॉ. कासलीवालजी ने अपने शोध प्रबन्ध में कोटा के दो श्वेताम्बर भंडारो का उल्लेख किया है। (१) खरतरगच्छीय ज्ञान भण्डार (२) वीरपुत्र आनन्द सागर ग्रन्थ भण्डार। लेकिन बहादुर बाजार स्थित भ. आदीश्वर मन्दिर के व्यवस्थापकों ने बतलाया कि ये दोनों यहीं एकत्र रखे हुए हैं। जब पुस्तकें देखी तो कम थीं। पता नहीं दोनों एकत्र हैं या नहीं या कुछ पुस्तकें खो गयीं। अच्छी तरह से पता लगाना जरूरी है। इसके अलावा निश्चित रूप से जानकारी मिली है कि मूर्ति पार्श्वनाथ बड़े उपाश्रय में भी हस्तलिखित ग्रन्थ हैं, किन्तु यहाँ के गुराँसा इस तथ्य को नकारते हैं।

जैन विश्व भारती लाडनूँ के दो ग्रन्थ भण्डार भी उल्लेखनीय हैं। एक विश्व भारती के ग्रन्थालय का और दूसरा 'सतियारो ठेकाणो' में रखा हुआ। द्वितीय में केवल तेरापंथी मुनियों द्वारा रचित ग्रंथ ही हैं। एक-एक की ७-७, ८-८ प्रतियाँ बनाकर रखी हैं। सभी पूर्ण हैं। सुन्दर हस्ताक्षरों में हैं। अपनी अपनी परम्परा के सभी ग्रंथों को सुरक्षित रखने की ओर जो ध्यान दिया गया है, वह प्रशंसनीय है।

कुछ और श्वेताम्बर भण्डार :

पीपाड़-सिटी का जयमलजी सम्प्रदाय का स्थानकवासी ग्रन्थ संग्रह भी एक महत्त्वपूर्ण भण्डार बन गया है। इसके लिए स्वतन्त्र भवन बना है। ग्रन्थ व्यवस्थित ढंग से लोहे की अलमारियों में रखे गये हैं। चार साढ़े चार हजार ग्रन्थों के अलावा कपड़ों, लकड़ी और कागज पर चित्रित कई पुराने चित्र, चार्ट आदि संगृहित हैं।

चूरू की सुराणा लायब्रेरी तथा बड़े उपासरे का रिद्धिवरजी ग्रंथ संग्रह और सरदार शहर का तेरहपंथी सभा संग्रह तथा श्रीचन्दजी गधैया का निजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह विशेष उल्लेखनीय हैं। सरदारशहर में श्री नथमलजी सेठिया निजी संग्रह में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं।

जालौर में मुनि कल्याण विजयजी ने हस्तलिखित ग्रंथों का एक बहुत अच्छा संग्रह बनाया था, किन्तु इसके अधिकांश ग्रन्थ अब अहमदाबाद के ला. द. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान को भेज दिये गये हैं। फिर भी इस भंडार में करीबन २५० पुस्तकें मुनि वर्ग ने अपने अध्ययन के लिए रख ली हैं। इसके अलावा यहाँ चार थुई वालों का श्री केसरी विजयजी ज्ञान भंडार और तीन थुई वालों का श्री राजेन्द्र सूरिश्वरजी ज्ञान भंडार है। जालौर जिले के आहोर नामक स्थान में भी इसी प्रकार का तीन थुई वालों का और चार थुई वालों का एक-एक हस्तलिखित ग्रंथ भंडार है।

लोहावट का श्री हरिसागरजी ज्ञान भंडार और फलौदी (पोकरण) का श्री लक्ष्मीश्रीजी ज्ञान भंडार विशेष उल्लेखनीय खरतरगच्छीय ज्ञान भंडार है। फलौदी के स्थानकवासी ग्रंथालय में भी हस्तलिखित पुस्तकें होनी चाहिए।

देलवाड़ा (आबू तीर्थ) के वर्द्धमान पुस्तकालय में कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। ऐसी सूचना मिली है कि छापर (जि. नागौर) के श्री मोहनलालजी दुधेडिया निजी संग्रह में बड़ी संख्या में हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। अलवर के उपरोक्त दिगम्बर शास्त्र भण्डारों के अलावा यहाँ एक स्थानकवासी संग्रह भी है। ब्यावर में पीपलिया बाजार के जैन स्थानक में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ होने चाहिए। झुंझुनूं के श्वेताम्बर मन्दिर में भी एक अच्छा संग्रह था, किन्तु लगता है वह अब तितर-बितर हो गया है। इनके अलावा पाली में चार, भीनासर में तीन, सोजत, सुजानगढ़ और हनुमानगढ़ में दो-दो एवं गंगाशहर, मेड़ता-सिटी, नाकोड़ा-पार्श्वनाथ, कालू, बालोतरा, पचभद्र, ओसिया, रतनगढ़, सिरोही, भिणाय आदि स्थानों में भी एक-एक सामान्य ग्रन्थ भण्डार हैं। [क्रमशः]

—पितृछाया, न्यू प्लॉट, **अमलनेर** (जलगाँव) महाराष्ट्र

ग्रन्थ पढण सूं,
ग्रन्थि नीं कटै।
बात रा वायरा सूं,
वादरा नीं फटै॥

—डॉ. नरेन्द्र भानावत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारावाहिक उपन्यास 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' भाग २

तृतीय प्रवास

स्वार्थ विजय [६]

☐ अनुवादक : श्री लालचन्द्र जैन

[गतांक से आगे]

मुनि स्वार्थ विजय का उपर्युक्त कथन सुनकर दीक्षाकुमारी हृदय में प्रसन्न हुई क्योंकि मुनि का कथन उसे यथार्थ लगा। वह मधुर स्वर में बोली, "भद्र मुनिराज ! तुम्हारे द्वारा कथित भ्रष्टाचार के कारण यथार्थ हैं। दुःख तो यही है कि तुम जानते हुए भी विपरीत मार्ग पर गये। वैसे तुम्हारी बुद्धि और अनुभव प्रशंसनीय हैं। मुनिराज ! 'आचारांग' सूत्र के 'लोक विजय' अध्ययन में तुम्हारे आचरण के विषय में क्या लिखा है, तुम्हें मालूम है फिर भी मैं बताती हूँ। सर्वप्रथम माता-पिता आदि सम्बन्धियों के सम्बन्ध को जीत कर संयम पालन करना चाहिये। सम्बन्धी सभी स्वार्थी होते हैं, अतः उनके संग का सर्वथा त्याग करना चाहिये। इस विषय में मैंने तुम्हें अदृश्य रहकर बताया है। अंत में सूत्रकार लिखता है कि प्रत्येक जीव अपने सुख-दुःख स्वयं सहता है, अतः हे पंडित ! अपने शेष आयुष्य और अवसर को समझ कर जब तक श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना और स्पर्श इन्द्रिय की शक्ति मंद नहीं हुई है, तब तक अपना आत्मार्थ सिद्ध कर लें।

"मुनियो ! इस सूत्रवाणी का उपदेश कितना उत्तम है। आप अपने मन में इसका चिंतन करें। जब तक आप जवान हैं, स्वस्थ हैं, परिषह सहन करने में समर्थ हैं, तब तक आपको किसी से सेवा नहीं करवानी चाहिये, शरीर में तेल मालिश नहीं करवानी चाहिये, पाँव नहीं दबवाने चाहिये। कभी भी शरीर सुख भोगने का स्वभाव नहीं डालना चाहिये। 'आचारांग' में शरीर सुख को छोड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयम पालन के लिये क्या कहा गया है ? इसका विचार करें। उस सूत्र में लिखा है कि बुद्धिमान पुरुष को संयम में होने वाली अरति (शरीर सुखेच्छा) को दूर करना चाहिये, इससे अल्प समय में ही मुक्ति प्राप्त होती है। अज्ञानी और मूर्ख जीवों पर जब परिषह या उपसर्ग आ पड़ते हैं, तब वे आज्ञा से बाहर होकर संयम से भ्रष्ट हो जाते हैं। हम तो अपरिग्रही ही हैं, ऐसा कह कर कई दीक्षित होकर भी भगवान् की आज्ञा के बाहर रहकर काम का सेवन करते हैं और शरीर सुख को प्राप्त करने के उपायों में आसक्त होकर मोह में डूबे रहते हैं, वे मुनि वेष को लज्जित करते हैं। ऐसे लोग न तो मुनि ही हैं और न गृहस्थ ही। जो संयम का सदा पालन कर, लोभ को धिक्कार कर, कामभोग की इच्छा नहीं करते या मूल से ही लोभ को निर्मूल कर मेरे स्वरूप (दीक्षा) को प्राप्त करते हैं, वे कर्म रहित बनकर सर्वज्ञ सर्वदर्शी बनते हैं और वास्तविक अनगार कहलाते हैं।

"सच्चे अनगारों को निम्न ११ बल प्राप्त करने की इच्छा नहीं करनी चाहिये। वे हैं, आत्मबल, जातिबल, स्वजनबल, मित्रबल, प्रेत्यबल, देवबल, राजबल, चोरबल, अतिथिबल, कृपणबल और श्रवणबल। इनको प्राप्त करने में उद्यत मुनि अनेक प्रकार के आरम्भ कर चारित्र से भ्रष्ट हो जाते हैं। स्वार्थ विजय ! तुम्हारे कई शिष्य इन बलों को प्राप्त कर भटक गये हैं। शरीर से पुष्ट मुनि आत्मबल के गर्व से भटक कर दूसरों को दबाते हैं। मैं धनवान और कुलवान कुल से दीक्षित हुआ हूँ, ऐसे जातिबल को धारण करने वाला मुनि भी मदान्ध हो जाता है। मेरे सम्बन्धी धनवान और बड़े लोग हैं, मेरे जैसा कोई नहीं, ऐसी बात स्वजन बल से गर्वित मुनि ही बोलते हैं। मेरे मित्र ऐसे प्रभावी मुनि और गृहस्थ हैं कि कोई मेरा सामना नहीं कर सकता, ऐसे मित्रबल से गर्वित मुनि उच्छृंखल बन जाते हैं। मुझे विश्वास है कि मैं अगले जन्म में अच्छी गति में जाऊँगा, ऐसा कर्म की शक्ति को समझे बिना प्रेत्यबल से गर्वित साधु ही कह सकता है। कई साधु मंत्रों के प्रयोग द्वारा देवबल को प्राप्त कर अन्य साधुओं को आक्रांत करते हैं। मैंने अपने उपदेश से अमुक राजा को अपने वश में कर रखा है, ऐसा राजबल के गर्व गजेन्द्र पर आरूढ़ मुनि ही कह सकते हैं। तुच्छ वृत्ति के साधु चोर लुटेरों की मदद से लोगों को भयभीत करते हैं, इसे चोरबल कहते हैं। कई साधु अतिथि गृहस्थों का पक्ष लेकर अनाचार में प्रवृत्त होते हैं, इसे अतिथिबल कहा जाता है। अमुक आचार्य, पन्यास, विजय या सागरजी मेरे वश में हैं, वे जैसा मैं कहूँगा वैसा ही करेंगे, ऐसा श्रमणबल प्राप्त कर कई साधु अन्य साधुओं को संघाड़े से निष्काषित कराते हैं और निरपराधी श्रावकों को संघ से बहिष्कृत करवाते हैं। हे स्वार्थ विजय ! आजकल इस प्रकार की प्रवृत्ति वाले मुनि अधिकांश में हो रहे हैं। ऐसे साधु अपने चारित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दूषित कर अपनी आत्मा को अधःपतन के गर्त में गिराते हैं। तुम्हें इस विपरीत मार्ग से दूर रहना चाहिये, यह मेरा उपदेश है।

"मुनियो ! 'आचारांग' सूत्र के 'लोक विजय' अध्ययन में जो कुछ कहा गया है, उसे तुम्हें बार-बार पढ़ना चाहिये और याद रखना चाहिये। उस सूत्र में मान को दूर कर भोग में गृद्ध न होने के लिये जो कथन है, वह समझने योग्य है। कहा है कि 'यह जीव अनेक बार उच्च और नीच गोत्र में जन्म ले चुका है, अतः जातिवर्ग नहीं करना चाहिये। बुद्धिमान पुरुष को हर्ष या शोक नहीं करना चाहिये। सभी जीवों को सुख प्रिय है, ऐसा समझ कर समभाव धारण कर विचरण करना चाहिये। प्रभाव के वश होकर जीव को अंधता, बधिरता, गूंगापन, कुबड़ापन, ढूंढपन, टेढ़ापन, काला या काबरा रंग प्राप्त होता है। प्रभाववश ही जीव अनेक योनियों में जन्म धारण कर भयंकर कष्ट भोगता है। अज्ञानी जीव रोग ग्रस्त होकर या अपयश प्राप्त कर जन्म-मरण के चक्कर में फँसता रहता है। ऐसे मूर्ख जीव रंग-बिरंगे वस्त्र, मणि, आभूषण, सुवर्ण और स्त्रियों को प्राप्त कर उनमें ही आसक्त हो जाते हैं। ये मूर्ख लोग इतने अधिक भटक जाते हैं कि वे बार-बार यही कहते रहते हैं कि इस संसार में यम-नियम किसी काम के नहीं हैं। किंतु आचारवान लोग इस प्रकार जीना नहीं चाहते। वे जन्म-मरण के चक्कर को जानकर संयम-पालन में ही उद्यत रहते हैं।

"वीर भगवान् कहते हैं कि अज्ञानी प्राणी दूसरों के लिए क्रूर कर्म करते हैं और उसके फलस्वरूप दुःख को स्वयं भोगते हैं। जो संयम लेकर भी संयम का पालन नहीं कर सकते, वे अज्ञानी जीव असत्य उपदेश को प्राप्त कर असंयम में प्रवृत्त होते हैं, किंतु जो तत्त्व को जानने वाले हैं उन्हें कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं होती। वे समझदार होते हैं अतः स्वयं ही सीधे मार्ग पर चलते हैं। पर मूर्ख जीव विषयासक्त बनकर विषयों का सेवन कर दुःखों को बढ़ाते हैं और दुःख चक्र में ही फँसे रहते हैं।

"हे मुनियो ! यदि तुम चारित्र के परिषहों को सह न सकोगे। और सुखेच्छा से भोगों में आसक्त बनोगे तो परम्परा से रोग के भोग बनोगे, क्योंकि कामभोग से कर्मबन्ध, कर्मबन्ध से मरण, मरण से नरक, नरक से गर्भ और गर्भ से रोग उत्पन्न होंगे। इस जन्म में भी पूर्व कर्म के उदय से रोग उत्पन्न होते हैं। जो जीव धन की अधिक इच्छा करते हैं, उन्हें यदि धन मिल भी जाय तो अंत में वह भाइयो में बंट जाता है, चोरी हो जाता है, राज्य लूट लेता है, व्यापार में नाश हो जाता है या आग में जल जाता है। अतः हे मुनियो ! तुम्हें विषय की आशा और लालच से दूर रहना चाहिये। यदि तुम आशा-शल्य को अपने हृदय में रखोगे तो स्वयं दुःखी बनोगे। स्त्रियों से भी सदा दूर रहना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो स्त्रियों को सुख का कारण मानते हैं, वे अज्ञानी हैं। वास्तव में तो स्त्रियें दुःख, मोह, मरण, नरक और तिर्यंच गति की हेतु भूत हैं। वीर प्रभु ने बल-पूर्वक कहा है कि साधुओं को स्त्रियों का विश्वास नहीं करना चाहिये। कुशल पुरुषों को समझना चाहिये कि अप्रमाद से मोक्ष और प्रमाद से मरण होता है, अतः शरीर को क्षणभंगुर जानकर प्रमाद को दूर करना चाहिये। विषय भोगों से कभी तृप्ति नहीं होती अतः वे किसी भी काम के नहीं हैं। मुनियो! काम भोगेच्छा महा भयंकर है, यह समझ लेना।

"मुनियो! तुम कहोगे कि हमें गृहस्थों के यहाँ भिक्षा लेने जाना पड़ता है, अतः स्त्रियों से परिचय तो होता ही है। इस विषय में सूत्रकार कहते हैं कि भिक्षा लेने जाने पर यदि कोई न दे तो क्रोध नहीं करना चाहिये, थोड़ा मिले तो भी निंदा नहीं करनी चाहिये। मना करने पर तुरन्त वापस लौट जाना चाहिये। ऐसा साधुत्व पालने पर गृहस्थ स्त्रियों से विशेष परिचय नहीं होगा। हे मुनियो! सूत्रकार ने आहार लेने के ऐसे नियम निर्धारित किये हैं कि यदि उनका पूर्ण पालन हो तो चारित्र का निर्बाध पालन हो सकता है। वे लिखते हैं—'उज्ज्वल, आर्य, पवित्र, बुद्धिमान, न्यायदर्शी और तत्त्ववेता अनगार को संयम में कभी दूषित आहार नहीं लेना चाहिये। गृहस्थ अपने परिवार के लिये अनेक प्रकार के आरम्भ द्वारा भोजन बनाकर रखते हैं, यह बात अपने ध्यान में रखें। ऐसे आरम्भ युक्त दूषित आहार को स्वयं न लें, दूसरों से भी न मँगायें और लेने वाले की प्रशंसा भी न करें।'

"हे स्वार्थ विजय मुनि! 'आचारांग' सूत्र में तुमने पढ़ा होगा कि मुनि को नौ बातें जाननी चाहिये, इनको जानकर ममता को दूर करने वाला अनगार यथा समय आचार का पालन करते हुए, निस्पृह रहकर, रागद्वेष का नाश कर मोक्ष मार्ग में चला जाता है।"

स्वार्थ विजय—"महेश्वरी! मैंने ये नौ बातें पढ़ी तो हैं, पर प्रमादवश मैं उन्हें भूल गया हूँ, आप कृपा कर फिर समझायें।"

दीक्षाकुमारी—"अरे मुनि! यह तो बड़े अफसोस की बात है। अपने धर्म के रहस्य को दिग्दर्शित करने वाले 'आचारांग' जैसे महान् सूत्र को पढ़कर भी उसे भूल जाना, यह कितने दुःख की बात है? इसका कारण यह है कि आजकल के अधिकांश विद्वान् मुनि चंदन के बोझ को ढोने वाले गधे के समान मात्र ज्ञान के बोझ को ढोते ही फिरते हैं। अध्ययन के पश्चात् वे इतने गर्वित हो जाते हैं कि प्रमाद के महान् गर्त में गिरकर वे उस ज्ञान की उपेक्षा करने लगते हैं। मानों वे स्वयं संसार से पार हो गये हों या केवलज्ञानी हो गये हों,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों गर्वित होकर अनुक्रम से अनाचार में उतर जाते हैं। तुम्हारे विषय में भी ऐसा ही हुआ है। पर 'जब जागे तभी सवेरा' की कहावत के अनुसार अब पुनः 'आचारांग' सूत्र को मननपूर्वक पढ़ना।

"हे मुनि ! काल, बल, मात्रा, खेद, क्षण, विनय, स्व समय, पर समय और भाव इन नौ बातों को साधु को अवश्य जानना चाहिये। इनको जानकर साधु अपने जीवन को भली प्रकार सुधार सकता है। काल अर्थात् अवसर को बहुत कम मुनि समझते हैं, इसीलिये वे लोगों में अप्रिय होते हैं और इसीलिये एक ही धर्म की अनेक भिन्न-भिन्न विचारों वाली संस्थायें स्थापित होती हैं। बल अर्थात् अपनी शक्ति को समझना चाहिये। कई मुनि अपनी शक्ति से अधिक कार्य करते हैं और बाद में पछताते हैं। मात्रा अर्थात् विभाग, देश, कौन से देश में कैसी प्रवृत्ति करनी चाहिये, इसका ज्ञान मुनि को होना चाहिये, इसके बिना मुनि पराभव को प्राप्त होता है। खेद अर्थात् अभ्यास, मुनि को अभ्यास करने की आदत डालनी चाहिये। अभ्यास से ही साधु की परीक्षा होती है, तभी ज्ञान प्राप्त होता है, फिर परिषह सहन करने को उद्यत होता है। आज-कल के मुनि अभ्यास को त्यागकर आलसी हो गये हैं। श्रावकों की सेवा से वे अमीर बन गये हैं। एक आधुनिक कवि ने संस्कृत में लिखा है कि श्रावक आहार, विहार, भोग, उपभोग और वेष से मुनियों का राजकुमारों जैसा लालन पालन करते हैं। जो साधु राजकुमारों जैसा वैभव भोगते हों वे फिर अभ्यास के परिषह को किस लिये सहन करें। क्षण अर्थात् समय, किसी भी प्रकार अपने समय को व्यर्थ नहीं खोना चाहिये। साधु को प्रति क्षण सावधान रहना चाहिये। प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, आहार, पान, शयन और जागरण आदि के समय को बराबर जानकर तदनुसार प्रवृत्ति करनी चाहिये।

"आजकल अधिकांश मुनि, विशेष कर पदवी धारी मुनि अपने अमूल्य समय को प्रमाद में ही खोते हैं। संघ की मिटिंगों, लोगों की पंचायतों, अन्य संघाड़े के साधुओं की चर्चा, निंदा, अपनी प्रशंसा और व्यर्थ की बातों में ही उनका समय बीतता है। संध्या समय मिलने आये हुए अपने भक्त श्रावकों से यदि बातचीत चल रही हो तो वे प्रतिक्रमण की क्रिया की ओर भी ध्यान नहीं देते। मजबूरी से प्रतिक्रमण करने उठते अवश्य हैं, पर उस आवश्यक क्रिया को बेगार की तरह थोड़े से समय में पूरी कर देते हैं। ऐसे साधुओं के लिये मुझे अत्यन्त शोक होता है, अतः मुनियों को क्षण को पहचानना चाहिये।

"मुनियो ! छठी जानने योग्य बात विनय की है। विनय से विभूषित मुनि अपने धर्म में उत्तम माना जाता है। क्योंकि आर्हत धर्म का मूल ही विनय है। आजकल तुम लोगों ने विनय को तो देश निकाला दे दिया है। जवान मुनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ा पढ़ा लिखा कि तुरन्त गुरु के सामने बोलने लगता है। फिर यदि उसे कोई पद मिल गया तो उसमें विनय का अंश भी नहीं रहता। मैंने अपने पहले प्रवास में कहीं कहीं विनय को देखा था, पर इस दूसरे प्रवास में विनय दिखाई देगा या नहीं, मुझे संदेह है ? साधुओ ! तुम्हें अपने कर्तव्यों में विनय को सर्वाधिक प्राथमिकता देनी चाहिये, उसमें भी ज्ञान आदि का विशेष विनय रखना चाहिये।

"सातवीं जानने योग्य बात स्व समय की है। जैन मुनि को पहले अपने मत का सिद्धान्त भली प्रकार जानना चाहिये। अपने सिद्धान्त में तत्त्व क्या हैं ? क्रिया और आचरण के विषय में क्या कहा गया है ? इसे रहस्य के साथ जानना चाहिये। आजकल अपने सिद्धान्त को जानने वाले मुनि बहुत थोड़े रह गये हैं। कुछ जानने वाले हैं भी तो वे तुम्हारी तरह उस पर चलने वाले नहीं हैं। मात्र तोता रटंत की तरह पढ़ने वाले मिलेंगे। सिद्धान्त के रहस्य का चिंतन कर तदनुसार प्रवृत्ति करने वाले बिरले ही मिलेंगे।

"आठवीं बात पर समय को जानने की है पर मत में तत्त्व के विषय में क्या कहा गया है ? उनके आचरण और क्रिया कैसी है ? यह मुनि को अच्छी तरह जानना चाहिये। जब दूसरों के सिद्धान्त का यथार्थ ज्ञान होता है, तभी अपने और दूसरों के मत में क्या अन्तर है यह समझा जा सकता है। इससे अपने मत पर विशेष श्रद्धा पैदा होती है और मिथ्यात्व के स्वरूप को जाना जा सकता है। आजकल अपने मत का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किये बिना ही कुछ साधु दूसरों के मत से वाद करने या निंदा करने की इच्छा से उनके मत को जानने की कोशिश करते हैं, किन्तु दूसरे मत में सार की बात क्या है ? इसे जानने का प्रयत्न नहीं करते। कुछ साधु अपने सिद्धान्त के अपूर्ण ज्ञान का विचार किये बिना ही, अन्य के सिद्धान्त का खंडन करने को तत्पर हो जाते हैं, फलस्वरूप पराभव को प्राप्त होते हैं।

"हे मुनि ! नौवीं और अन्तिम जानने योग्य बात है भाव अर्थात् दूसरों के चित्त के अभिप्राय को समझना। साधु को सावधानी पूर्वक दूसरों के मन में रही हुई बात को जानना चाहिये। आजकल कई दुःसाहसी साधु दूसरों के अभिप्राय को जानने की कोई अपेक्षा ही नहीं रखते। संघ का उनके प्रति क्या भाव है ? या अमुक पुरुष का उनके प्रति क्या अभिप्राय है ? अथवा स्वयं उनका संघ या व्यक्ति विशेष के प्रति कैसा अभिप्राय है ? इसका कोई भी विचार नहीं करता। कई बार तो संघ के अभिप्राय को बिना जाने ही मुनि दुराग्रह कर बैठते हैं और अनेक प्रकार के षडयंत्र कर श्रावकों को सताते हैं। कोई कोई उन्मत्त साधु तो अपने को राजा या पुलिस अधिकारी मानकर जबरदस्त तूफान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मचाता है और बेचारे अंधभक्त श्रावकों को हैरान करता है। मुनियो ! तुम्हारी यह प्रवृत्ति शासन की निंदा करवाने वाली और साधुत्व के गौरव को घटाने वाली है, अतः प्रत्येक मुनि को भाव का ज्ञाता बनना चाहिये। स्वार्थ विजय ! तुम्हें और तुम्हारे शिष्यों को इन नौ बातों को जानना चाहिये। इनको जानकर ही तुम्हारा चारित्र दूषित होने से बच सकेगा।

"हे मुनि ! तुम्हें सर्वदा अपनी बुद्धि में समा लेना चाहिये कि परिग्रह के लिये कभी ममत्व नहीं रखना। इस विषय में अभी मुझे विस्तार से कहने का समय नहीं है। इस विषय में 'आचारांग' सूत्र में निम्न कथन है, उसे सदा याद रखना :—

"मिले हुए आहार को संग्रह कर नहीं रखना और अन्य परिग्रह से भी दूर रहना। धर्म-उपकरणों को भी परिग्रह न मानकर उन्हें धर्मोपकरण के रूप में ही देखना, उन पर किसी प्रकार का ममत्व नहीं रखना।

"इसी पर से समझ लेना चाहिये कि वस्त्र, पात्र, पुस्तकें आदि धर्मोपकरणों पर भी जब ममत्व न रखने को कहा गया है, तब दूसरी वस्तुओं के ममत्व की तो बात ही कहाँ रही ? आजकल तो इसके विपरीत ही प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। साधु धर्म के उपकरण भी आवश्यकता से अधिक इकट्ठे करते हैं और उन पर इतना ममत्व करते हैं कि उनके कारण परस्पर झगड़े होते हैं। ऐसी कुप्रवृत्ति से तुम्हें दूर रहना चाहिये।

"मुनियो ! कुछ अनगार विषय उपभोग छोड़कर चारित्र धर्म को स्वीकार करने के पश्चात् पुनः उसकी इच्छा करते हैं, वे अपने चारित्र को सर्वथा दूषित करते हैं। वीर शासन को डुबोते हैं और स्वयं गृहस्थपन और साधुत्व दोनों से भ्रष्ट होते हैं। विषय भोगों का त्याग कर उनकी पुनः इच्छा करने को बहुत ही बुरी प्रवृत्ति कहा गया है, इस विषय में 'आचारांग' सूत्र में निम्न वाक्य लिखित हैं, जिन्हें सर्वदा याद रखना चाहिये :—

"बालक जैसे मुँह से बहती हुई लार को वापस चूस लेते हैं, वैसे बुद्धिमान पुरुषों को त्यागे हुए भोगों की फिर से इच्छा नहीं करनी चाहिये।

"मुनियो ! संयम पालन के लिये तुम्हें लोक जीवन का अनुसरण भले करना पड़े, किंतु उसके प्रति तुम्हारा ममत्व नहीं रहना चाहिये। देश और काल के अनसार लोग किसी भी प्रकार की धर्म प्रवृत्ति करते हों, तो उसमें तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधक नहीं बनना चाहिये। कुछ अज्ञानी साधु अपने अनुकूल प्रवृत्ति को न देखकर उसका विरोध करते हैं और उसे भंग करने के लिये अनेक प्रकार के कलह पैदा करते हैं।

"धर्म का उदय देश और काल के अनुसार ही होता है। जिस समय जिस मार्ग से धर्म का उदय होता हो अथवा जन समुदाय जिस पद्धति को विशेषतः अनुसरण करता हो, उसी रीति से धर्म का प्रचार करने की योजना बनानी चाहिये। कोई समय ऐसा होता है कि उसमें तपस्या से ही धर्म का उदय होता है, किसी समय में केवल ज्ञान-विद्या से ही धर्म और संसार का उदय हो सकता है, किसी समय क्रिया मार्ग से ही धर्म की उन्नति हो सकती है, किसी समय दान से ही धर्म की प्रभावना होती है, किसी समय योग-समाधि से लोगों में धर्म का प्रचार हो सकता हो, किसी समय केवल भक्ति से ही धर्म का उदय होता हो और किसी समय उत्तम प्रकार की संस्थाओं की स्थापना से धर्म की वृद्धि होती हो तो उस काल के अनुसार ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। इसके साथ ही जिस देश में जिस मार्ग की तरफ लोगों की रुचि हो, उस मार्ग से धर्म का प्रचार करना चाहिए।

"आजकल अल्प-बुद्धि मुनि इस बात का ध्यान नहीं रखते। वे देश काल के अनुसार होने वाली प्रवृत्ति का विरोध करते हैं और अनेक प्रकार की बाधायें पैदा करते हैं, इससे वे धर्म में अन्तराय देने वाले कर्म का बंध करते हैं और लोक निंदा उठाकर महान् पराभव को प्राप्त होते हैं। कुछ स्वार्थी मुनि अपने मान-भंग के भय से ऐसे धार्मिक कार्यों में विघ्न उत्पन्न करते हैं। कभी किन्हीं संस्थाओं को तोड़ने के लिये वे ऐसे-ऐसे प्रयत्न करते हैं कि स्वयं अनंत कर्मों को बांधते हैं और अपने भक्त श्रावकों के भी कर्मबन्ध करवाते हैं। उनकी इस प्रवृत्ति के लिये मेरा उनके प्रति घोर तिरस्कार है। कुछ पदाधिकारी मुनि पद के गर्व से उच्छृंखल बनकर आर्हत धर्म की वृद्धि करने की बजाय उल्टे हानि पहुँचाते हैं। मुनियों को कैसा उपदेश देना चाहिये, इस विषय की मर्यादा का भंग कर, वे अपने मान की वृद्धि करवाने वाले स्वार्थी उपदेश देते हैं। इसमें भी वे ऐसा पक्षपात करते हैं कि किसी को एक प्रकार का उपदेश देते हैं तो किसी को दूसरे प्रकार का। उनके उपदेश में इतना पक्षपात होता है कि उत्तम पुरुष तो उनका व्याख्यान सुनना ही नहीं चाहते। कुछ उत्तम गृहस्थों ने तो ऐसा नियम बना लिया है कि स्वार्थी मुनियों का पक्षपातपूर्ण व्याख्यान सुनने से तो न सुनना ही अच्छा है। व्याख्यान सुनने के समय का यदि सदुपयोग ही करना है तो उस समय सामायिक ग्रहण कर किसी अच्छे लेखक की पुस्तक का स्वाध्याय करना अधिक उत्तम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हे मुनियो ! साधुओं को कैसा निःस्वार्थी उपदेश देना चाहिये, इस विषय पर आचारांग सूत्र में निम्न वाक्य हैं :—

"मुनि राजा को जो उपदेश दे वही उपदेश गरीब प्रजा को भी दे और गरीब को जो उपदेश दे वही राजा को भी दे अर्थात् निःस्पृहता पूर्वक दोनों के प्रति समान भाव रखे। यह नियम नहीं है कि दोनों को एक ही उपदेश दे, पर जिस प्रकार वे प्रतिबोधित हों, उसी प्रकार समझावे। राजा को उपदेश देते समय उसके अभिप्राय को ध्यान में रख कर उपदेश देना चाहिये वर्ना वह क्रोधित होकर मारने की आज्ञा भी दे सकता है। धर्म कथा कहने की रीति को समझे बिना धर्मकथा करना कल्याणकारी नहीं बन सकती। श्रोता कैसा है और कैसे देव को मानने वाला है, इस बात का ध्यान रखकर ही मुनि को उपदेश देना चाहिये।

"इस प्रकार उपदेश देकर संसार में ऊपर, नीचे और तिरछी दिशा में बंधे हुए जीवों को जो पराक्रमी पुरुष छुड़ाता है, उसकी प्रशंसा होती है। ऐसे पराक्रमी पुरुष सदा ज्ञान और क्रिया से प्रवृत्ति करते हुए हिंसा में लिप्त नहीं होते। जो पुरुष कर्म को दूर करने में कुशल हो तथा बंध और मोक्ष को जानने वाला हो, उसे ही वास्तविक बुद्धिमान समझना चाहिये।

"मुनियो ! इस सूत्र के महावाक्यों को याद कर तुम्हें तदनुसार ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। यदि तुम परमार्थदर्शी बनोगे तो तुम्हें किसी प्रकार का कर्मबंध नहीं होगा। तुम्हारी किसी भी प्रकार की प्रवृत्ति में स्वार्थ का एक अंश भी नहीं आना चाहिये। जो मुनि स्वार्थ की महानदी में बहते हैं, वे साधुत्व से तुरन्त भ्रष्ट हो जाते हैं। तुम्हें तो सर्वथा परमार्थदर्शी बनना ही चाहिये। गृहस्थ भी यदि परमार्थदर्शी हो तो वह तुम से श्रेष्ठ है। वे चाहे वेषधारी साधु न हों, पर भाव मुनि तो हैं ही। परमार्थ के विषय में आचारांग सूत्र में निम्न वाक्य लिखा गया है :—

"परमार्थदर्शी मुनि को किसी प्रकार का डर नहीं है।"

"इस वाक्य का भावार्थ यह है कि यदि मुनि परमार्थदर्शी हो और उसकी प्रवृत्ति अन्य अल्प-बुद्धि साधुओं को पसंद न हो तो भी उसे तो कर्मबंध नहीं होता। यदि परमार्थ को ध्यान में रखकर वह कभी अप्रिय व्याख्यान भी दे डाले तो भी उस मुनि को किसी प्रकार की हानि नहीं होती, परिणामस्वरूप वह लोक विजयी बनता है।

"हे स्वार्थ विजय ! अब मैं अपना उपदेश समाप्त करती हूँ। मुझे अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत से स्थानों की यात्रा करनी है। अंत में फिर संक्षेप में कहती हूँ कि तुम स्वयं तो 'आचारांग' सूत्र का मनन करना ही, पर अपने शिष्यों को भी उसका अध्ययन करवाना और पढ़कर सुनाना। वर्तमान समय में विपरीत भाव की प्रबलता है। देश काल का अनुसरण कर अपनी प्रवृत्ति करें और अपने शिष्यों से भी वैसी ही प्रवृत्ति करवावें। यदि तुम्हारे शिष्य आचार धर्म को मानकर देशकाल के अनुसार उसका आचरण करेंगे तो वीर शासन शीघ्र विजयी बनेगा। वीर शासन की विजय का आधार ही तुम लोग हो। फिर भी यदि तुम विपरीत प्रवृत्ति करोगे, तो तुम्हारे गौरव का नाश होगा। अब मैं अपना कथन समाप्त करती हूँ।"

महेश्वरी दीक्षाकुमारी के उपर्युक्त वचन सुनकर मुनि स्वार्थ विजय और उनके शिष्यों ने विनय से महेश्वरी को प्रणाम किया और उनके उपदेश को स्वीकार किया। मुनि स्वार्थ विजय ने नम्रतापूर्वक कहा, "महेश्वरी ! आपके उपदेश को हमने अपने हृदय में धारण किया है। यथा शक्ति तदनुसार प्रवृत्ति करने का हम प्रयत्न करेंगे। आपके उपदेश से हमें हमारा स्वरूप ज्ञात हुआ है। हमारा आचार और हमारा कर्तव्य क्या है, यह हमारे हृदय में स्फुरित हुआ है। फिर भी आपकी सुधामय वाणी सुनने की हमें पूर्ण तृप्ति नहीं हुई है। कृपा कर इस अमृतवाणी का प्रवाह चलने दें और हमारी दीन आत्मा का उद्धार करें। आपका पवित्र दर्शन करने का हमें जो सौभाग्य प्राप्त हुआ है, इस भाग्योदय को चालू रखें। हम आपका हृदय से उपकार मानते हैं। निर्जीव मनुष्य को जीवन-दान से जो आनन्द प्राप्त होता है, वैसा ही आनन्द हमें प्राप्त हुआ है, क्योंकि आचार रूपी प्राण से रहित हमारे चारित्र जीवन को उपदेश रूपी जीवन-दान देकर आपने संजीवन दिया है।"

मुनि स्वार्थ विजय का उपर्युक्त कथन समाप्त होते-होते ही जैसे बादलों में बिजली चमक कर गायब हो जाती है, वैसे ही दीक्षाकुमारी सबके देखते-देखते ही आकाश में अंतर्ध्यान हो गई। मुनि स्वार्थ विजय और उनके शिष्य उस प्रकाशपुंज के गायब होते ही चकित हो गये और इधर-उधर देखने लगे, पर वह दिव्य मूर्ति फिर उन्हें दृष्टिगोचर नहीं हुई। [क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-कथामृत [२३]

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

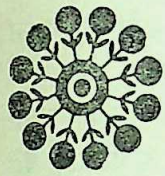

वास्तविकता का बोध

☐ राज सौगानी

राजकुमारी मल्लिका अनिन्द्य सुन्दरी थी। रति भी उसकी रूप छटा देखकर अचकचा गई थी। उसके रूप लावण्य और सौन्दर्य की चर्चा इन्द्र की अप्सराएँ भी करती थीं।

उसका शरीर जितना सुन्दर था उतना ही स्वच्छ और आत्मा उससे भी अधिक पवित्र थी। सांसारिक भोगों में उसकी बिल्कुल भी आसक्ति नहीं थी। बचपन से ही संसार की क्षण भंगुरता, शरीर की नश्वरता और विभूति की चंचलता का विचार कर आत्म-निमग्न रहती थी। यौवन ने अंग-अंग में कब प्रवेश किया, इसका पता यद्यपि कुमारी को नहीं था, पर उस लौ पर शलभ आ-आ कर मंडराने लगे। अनेकों राजकुमार उस पर अपने को न्यौछावर करने के लिए उसकी कृपा-कोर के भिखारी बन रहे थे।

रूपसी मल्लिका ने देखा कि मेरा यह सौन्दर्य स्वयं मेरे लिए भार हो रहा है और माँ-बाप तथा बन्धुजन चिन्तित हो रहे हैं। उसने सोचा कि मेरा रूप ही सबको खाए जा रहा है तो उसने एक दिन अपने पिता से कहा कि "जो-जो राजकुमार मुझसे विवाह करना चाहते हैं, उन सब को बुलवाइए। मैं स्वयं उनसे बात करके निश्चय करूँगी।"

फिर स्वयंवर का दिन निश्चित हुआ। कुमारी ने आठ दिन पहले ठीक अपनी ही आकृति और रूप की पीली स्वर्ण की अनेक मूर्तियाँ बनवाईं। जो भोजन पानी वह लेती थी, वही भोजन पानी उन मूर्तियों के भीतर ढक्कन खोल कर डालती जाती थी।

निश्चित दिन पर सब राजकुमार शोभा-सज्जा के साथ उपस्थित हुए। सब के मन आशा से उत्तरंग हो रहे थे। कुमारी ने एक-एक करके राजकुमारों को उन कमरों में आमन्त्रित किया जिनमें वे मूर्तियाँ सुन्दर वस्त्राभूषणों से सज्जित हो अलग-अलग खड़ी थीं। उसने प्रत्येक राजकुमार को उसके अंग प्रत्यंग के लावण्य का रसपान कराके कहा कि "आप जिस प्रकार से इसके बाह्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप पर मुग्ध हैं, क्या उसी तरह इसके अन्तरंग को भी चाहते हैं ? या केवल बाह्य छटा के ही लोलुपी हैं ?"

राजकुमारों ने जवाब में कहा कि "हम तो इस रूप की माधुरी पर पूरी तरह न्यौछावर हैं।"

फिर राजकुमारी ने एक-एक राजकुमार के सामने एक-एक मूर्ति के ढक्कन क्रमशः खोले। ढक्कन खुलते ही सड़ा-गला अन्न-पानी बाहर भरभरा पड़ा और समस्त प्रकोष्ठ असह्य दुर्गन्ध से व्याप्त हो गया। राजकुमार अपनी नाक दबाकर ज्योंही भागने लगे, त्योंही कुमारी ने उनसे कहा—"ठहरो ! अभी तो इन मूर्तियों का एक ही ढक्कन खोला गया है तो भी आप नाक-भौं सिकोड़ कर विरक्ति से भर उठे हैं। कदाचित यह पूरी मूर्ति अनावृत्त कर दी जाए तो..... ....सच मानिए, जो भोजन पानी गत सप्ताह मैंने लिया है, वही इन मूर्तियों में भी डाला गया है। क्या ही इस चर्म शरीर की दशा है ? अपनी कामनाओं और अभिलाषाओं के प्रतिच्छाया स्वरूप, इस मुग्धापोषा रूपसी रति अंगना कामिनी विलासिनी और रामा का अन्तःसार देखा। विषयकीट ! जरा जी भर कर इसे देखो, चाटो, सूंघो और छुओ।"

कुमारी की वाणी को समस्त राजकुमार सिर नीचा किए सुन रहे थे और लोगों ने देखा कि कुमारी मल्लिका चुपचाप आत्म-साधना के पथ की पथिक बन शान्ति की खोज में चल पड़ी। आये हुए राजकुमारों का मन अपनी ही बुद्धि पर ग्लानि से भर उठा क्योंकि अब उन्हें वास्तविकता का बोध हो चुका था।

द्वारा पी. सी. सौगानी, स्टेशन रोड, भवानी मन्डी (राज.)

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

१. राजकुमारी मल्लिका रूपवती होकर भी क्या सोचा करती थी ?
२. राजकुमारी ने यह क्यों कहा कि मेरा यह सौन्दर्य स्वयं मेरे लिए भार हो रहा है ?
३. राजकुमारी ने राजकुमारों को समझाने के लिए क्या उपाय सोचा और उसका क्या परिणाम रहा ?
४. राजकुमारी ने राजकुमारों को क्या उपदेश दिया ?
५. यदि आप राजकुमारी मल्लिका के स्थान पर होते तो क्या करते ?
६. 'वास्तविकता का बोध' यहाँ किसे कहा गया है ? स्पष्ट कीजिए
७. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के दिसम्बर, १९८३ में प्रकाशित **'पाप का फल'** कहानी के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्न बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं, धन्यवाद !

स्टेशन बजरिया (सवाई माधोपुर) से सर्व श्री मनोजकुमार जैन, मुकेश कुमार जैन, ममता रानी जैन, कु. सरोज जैन, वीरेन्द्र जैन, सुनीलकुमार जैन, उमेशकुमार जैन, सुरेन्द्रकुमार जैन, कु. सुजाता जैन, निरंजन गर्ग, सतीश जैन, कु. सावित्री जैन । **पलासखेड़ा** से कल्पना गुलेचा, सुगनाबाई सोनी, साहनाबाई गुलेचा, सरलाबाई गुलेचा, कु. ज्योतिबाला गुलेचा, कु. भारती चौपड़ा, ताराबाई, हीरालाल सोनी, कु. पुष्पा कुचेरिया, कु. किरण चौपड़ा, **जामनेर** (जलगाँव) से ईश्वरलाल कोठारी, **नीमच** से संजय आँचलिया, **भोपालगढ़** से अजीतराज हुण्डिवाल, **भवानीमण्डी** से रघुनन्दन शर्मा, लाडकंवर जैन, **विजयनगर** से हीराचन्द लुणावत, **हरसाना** (अलवर) से मदनलाल जैन, **पीसांगन** (अजमेर) से नीलेशकुमार जैन, **नागपुर** से मंजू जैन, **मांडल** (जलगाँव) से बैद मूथा महेश कुमार, सुवर्णा खिवसरा, जीवन भागचन्द खिवसरा, **कोसाणा** से ओमप्रकाश जैन, गौतमचन्द नाहर, **मद्रास** से जितेन्द्रकुमार बोथरा, राजेशकुमार सुराणा, महावीर चन्द सुराणा, **देई** (बून्दी) से चन्दनबाला जैन, रवीन्द्रकुमार जैन, जितेन्द्रकुमार जैन, **जयपुर** से कु. ताराकुमारी जालान, शिवकुमार जालान, विकास वैद, **अलीगढ़** (टोंक) से रवीन्द्रकुमार, **मन्दसौर** से सुनीलकुमार पामेचा, **सिवनी** (मालवा) से गौतम चतर, **सिरोही** से महेन्द्रकुमार जैन, **राणावास** से अशोक कुमार चाणोदिया, **पाली** से बक्सीराम प्रजापत, लक्ष्मीचन्द रुणवाल, हंसराज खींवसरा, **बल्लारी** से हंसमुख सोलंकी, **बड़ौद** (मध्यप्रदेश) से अशोककुमार जैन, **चौरासी** (मथुरा) से मनोजकुमार जैन, **धुमका** (राजनांद गाँव) से त्रिलोकचन्द जैन, **कलकत्ता** से विमलकुमार सुराणा, **कुण्डेरा** (सवाई माधोपुर) से कु. रेखा जैन, कु. चन्दनबाला जैन, कु. राजमती जैन, महावीर प्रसाद जैन, **अलसूर** (बंगलौर) से फाल्गुनी प्रतापकुमार ठोलिया ।

पुरस्कृत उत्तरदाता

प्रथम—धर्मचन्द जैन S/o श्री मुन्शीलाल जैन ग्राम व पो. **हरसाना** तह. लक्ष्मणगढ़, जिला अलवर (राज.) ३२१६०७ ।

द्वितीय—सुनीता सांड C/o श्री सरदारमलजी सांड म, नं. ४१०/४३, लाखन कौटड़ी, **अजमेर**-३०५००१ (राज.)

तृतीय—कु. अनीता सीपाणी C/o भंवरलालजी प्रकाशचन्दजी मेहता, खतरी (खत्री) गली, मदारगेट, अजमेर (राज) ।

□ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगोष्ठी-विवरण :

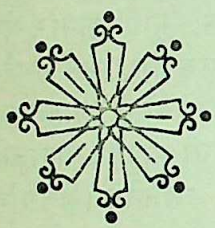

जैन पत्रकारिता

☐ प्रो० संजीव भानावत

श्री जैन विद्यालय, कलकत्ता के स्वर्ण-जयन्ति महोत्सव पर अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् एवं श्री जैन विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में जनवरी के द्वितीय सप्ताह में कलकत्ता में अखिल भारतीय स्तर पर डॉ. नरेन्द्र भानावत के संयोजन में जैन पत्रकारिता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में जैन पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति, सम्पादन एवं प्रबन्ध सम्बन्धी समस्याएँ, धार्मिक एवं सामाजिक समस्याओं के निवारण में जैन पत्रकारिता की भूमिका, जैन पत्रों की नीति, सम्पादक, प्रबन्धक व संवाददाता की आचार संहिता तथा मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में जैन पत्रकारिता की भूमिका विषयों पर गहन एवं व्यापक चर्चा की गयी।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रबुद्ध पत्रकार एवं **"जीवन साहित्य"** के सम्पादक श्री यशपाल जैन ने जैन पत्र-पत्रिकाओं के सीमित प्रसार पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने जैन पत्रों एवं उनके सम्पादकों से आह्वान किया कि वे विविधता में एकता स्थापित करें। दायरों में सीमित पत्र-पत्रिकाएँ उद्यान में पुष्पित बहुरंगी पुष्पों की भाँति एकरूपता स्थापित करने की दिशा में सचेष्ट हों।

संगोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए **"जिनवाणी"** मासिक के सम्पादक डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अपने पत्र में, शताधिक वर्षों से अधिक समय तक जैन पत्रकारिता की मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में रही उल्लेखनीय भूमिका का विवेचन करते हुए उसे सांस्कृतिक सन्दर्भों से जोड़ने की आवश्यकता बताई। जैन पत्र-पत्रिकाओं की सम्पादन दृष्टि एवं प्रबन्ध व्यवस्था पर असंतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार जैन धर्म अपने में विराट मानव मूल्यों को समाहित करके भी संकीर्ण घेरे में बंदी है उसी प्रकार जैन पत्र भी अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार सामग्री में मानव मूल्यवाही, जीवन निर्माणकारी सामग्री संजोकर भी सामान्यतः जैन पाठकों तक ही, कहना चाहिये सम्प्रदाय विशेष तक ही अलग-अलग वर्गों में सीमित हैं। डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अपने वक्तव्य में जैन पत्रकारिता को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार न कर उसे एक विचार तथा जीवन पद्धति बताया।

कलकत्ता से प्रकाशित अंग्रेजी त्रैमासिक **"जैन जर्नल"**, बंगला मासिक **"श्रमण"** तथा हिन्दी मासिक **"तित्थयर"** के सम्पादक श्री गणेश ललवाणी ने जैन लघु पत्रिकाओं की विशद चर्चा करते हुए उनके सम्मुख आने वाली कठिनाइयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जैन पत्रकारिता को सम्प्रदायगत बन्धनों से मुक्त करने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है।

बीकानेर से प्रकाशित **"श्रमणोपासक"** मासिक की सम्पादिका तथा श्री वीर बालिका महाविद्यालय जयपुर की प्राचार्य डॉ. शान्ता भानावत ने अपने पत्र में जैन पत्रकारिता की भूमिका का मूल्यांकन करते हुए धार्मिक एवं सामाजिक समस्याओं के निवारण में जैन पत्रकारिता के योगदान की चर्चा की। आपने जीवन को व्यसन मुक्त तथा सरल सात्विक बनाने तथा विवाह, तपस्या, दीक्षा आदि अवसरों पर बढ़ते प्रदर्शन प्रवृत्ति, फैशन-परस्ती, सम्प्रदायवाद इत्यादि पर अंकुश लगाने की दिशा में जैन पत्रकारिता को गतिशील करने का अनुरोध किया।

बम्बई से प्रकाशित गुजराती मासिक **'कथा मंजूषा"** की सम्पादिका गीता जैन ने गुजराती भाषा में अपने विचार व्यक्त करते हुए जैन कथा साहित्य की अभिवृद्धि में पत्र-पत्रिकाओं के योगदान की चर्चा की। उन्होंने साम्प्रदायिक एवं भाषायी सौहार्द की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाजसेवी श्री गणपतराज बोहरा ने पत्रकारों को सामाजिक शक्ति के विकास करने का सबल माध्यम बताया। विविध क्षेत्रों, भाषाओं तथा स्तरों के पत्रकारों के कलकत्ता में मिलन पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए जैन पत्रकारों के स्थायी संगठन की आवश्यकता बताई और इस दृष्टि से अपनी ओर से २१,०००) रु० का अनुदान देने की घोषणा की।

"दैनिक हिन्दुस्तान" के जयपुर स्थित विशेष संवाददाता डॉ. भंवर सुराणा ने पत्रकारों के स्वाभिमानी तथा तपोनिष्ठ जीवन की चर्चा करते हुए संवाददाता के सामने आने वाली कठिनाइयों की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार संकलन प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में विकसित नयी तकनीकों का परिचय देते हुए उन्हें अपनाने पर बल दिया।

राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के सहायक प्रोफेसर संजीव भानावत ने पत्र-पत्रिकाओं में सम्पादकीय स्तम्भ की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहा कि हमें अभी ऐसे स्वतन्त्र चेता संपादक तैयार करने हैं जो सम्प्रदाय, संस्था या मालिकों की इच्छा का अनुकरण करने में ही अपना धर्म या दायित्व न मानें।

जयपुर से प्रकाशित **"वीर-वाणी"** मासिक के संपादक डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ने अपने निबन्ध में जैन पत्र-पत्रिकाओं की नीति निर्धारण एवं संचालन में सम्पादक, प्रबन्धक तथा संवाददाताओं की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि तीनों पक्षों के समुचित सहयोग व समन्वय से पत्र अपनी श्रेष्ठता व गरिमा कायम कर सकता है।

जयपुर से प्रकाशित एक मात्र जैन दैनिक **"जैन समाज"** के सम्पादक श्री जिनेन्द्रकुमार जैन ने सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक जागरण में दैनिक पत्रों की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए **"जैन समाज"** को समग्र जैन समाज का मंच एवं प्रतीक बनाने की दिशा में संकल्प लिया। श्री जैन ने दैनिक पत्रों के प्रकाशन में आने वाली कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए जैन पत्रकारिता को सार्वजनिक पत्रकारिता के रूप में विकसित करने पर बल दिया।

कलकत्ता से प्रकाशित दैनिक **"सन्मार्ग"** के सम्पादक श्री रामावतार गुप्त ने कहा कि जैन पत्रकारिता ने समाज सुधार और निर्व्यसनी जीवन जीने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि आज समाज में जो भ्रष्टाचार, प्रदर्शन और आडम्बर है उनके खिलाफ आवाज उठाने में भी जैन पत्रकारिता को आगे आना चाहिये।

सुप्रसिद्ध लेखक एवं समाज सेवी शुजालपुर के श्री सौभाग्यमल जैन ने पत्र-पत्रिकाओं में पाठकों की हिस्सेदारी कायम करने की अपील की। इन्दौर से प्रकाशित **"तीर्थंकर"** मासिक के सम्पादक डॉ. नेमीचन्द जैन ने जैन पत्रकारिता के स्वरूप, व्यक्तित्व, मुद्रण और साज-सज्जा पर विस्तार से प्रकाश डाला। जैन पत्रकारिता को मानवीय पत्रकारिता से सम्बोधित करते हुए उन्होंने जैन पत्रकारिता को प्रामाणिक, शुद्ध और शान्तिपूर्ण जीवन का सृजनात्मक आधार और औजार बनाने की बात कही। मनुष्यता की वापसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये संघर्षरत रहने का आह्वान किया तथा समाज से अपील की कि कोई भी तबका किसी भी सम्पादक पर किसी प्रकार का दवाब नहीं डाले। डॉ. जैन ने विज्ञापन एवं सामग्री के मध्य निश्चित अनुपात रखने पर जोर दिया तथा कहा कि किसी भी पत्र में कम-से-कम ८० प्रतिशत तक पाठ्य सामग्री होनी चाहिये।

बम्बई से प्रकाशित गुजराती पाक्षिक **"जिन संदेश"** के सम्पादक श्री गुणवन्त शाह ने साम्प्रदायिक चेतना से जुड़े हुए पत्रों की कटु आलोचना की और सम्पादकों से अपील की वे अपने सम्पादकीय लेखों में समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और मिथ्या प्रदर्शनों पर आग उगलें तथा दुःखित, पीड़ित मानवता को गले लगायें।

वाराणसी से प्रकाशित **"श्रमण"** मासिक के सम्पादक डॉ. सागरमल जैन ने सम्पादकों तथा पत्रकारों के लिये आत्म चेतनता, विवेकशीलता तथा संयम के गुणों की आवश्यकता प्रतिपादित की। पत्र-पत्रिकाओं पर बढ़ते बाह्य एवं आन्तरिक दबाव तथा स्तरीय सामग्री के अभाव पर चिन्ता व्यक्त करते हुए डॉ. जैन ने सामाजिक तथा धार्मिक सहिष्णुता कायम करने का अनुरोध जैन पत्रकारों से किया।

अहमदनगर से प्रकाशित **"सुधर्मा"** व **"आनन्ददीप"** मासिक के सम्पादक डॉ. भागचन्द जैन ने कहा कि पत्रकार का मूल कार्य है हृदय परिवर्तन करना, स्वयं कीचड़ से मुक्त होकर दूसरों को कीचड़ से मुक्त करना। पत्रकारों को सांस्कृतिक चेतना का संवाहक बताते हुए आपने सुरुचिपूर्ण बाल-साहित्य निर्माण में पत्रकारों को आगे आने का आह्वान किया।

मद्रास से हिन्दी, अंग्रेजी एवं तमिल में प्रकाशित **"अहिंसा का अग्रदूत"** के सम्पादक श्री केसरीचन्द सेठिया ने सामाजिक कुरीतियों के निराकरण एवं बढ़ती हुई हिंसा के विरोध में जैन पत्र-पत्रिकाओं से क्रान्तिकारी भूमिका निभाने की अपेक्षा की। जलगाँव के श्री कन्हैयालाल दक ने अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह आदि मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित जैन पत्रकारिता की विवेचना की। कलकत्ता से प्रकाशित **"कुशल निर्देश"** मासिक के सम्पादक श्री भंवरलाल नाहटा ने जैन संस्कृति की ऐतिहासिक परम्परा के संरक्षण तथा प्राचीन जैन साहित्य, कला एवं संस्कृति के शोध एवं संवर्धन के क्षेत्र में जैन पत्रकारिता की संभावना की चर्चा की। अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष श्री भँवरलाल कोठारी ने अहिंसा, संयम और तप जैसे मानवीय मूल्यों की प्रष्ठिापना में जैन पत्रकारिता की भूमिका को रेखांकित करते हुए इस बात पर बल दिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रकारिता का विकास इस ढंग से किया जाना चाहिये कि वह सार्वजनिक पत्रकारिता के लिये भी मार्ग-दर्शक बन सके।

इस संगोष्ठी में जैन विद्यालय के अध्यक्ष श्री सूरजमल बच्छावत, मंत्री श्री सरदारमल कांकरिया, स्थानकवासी जैन सभा के अध्यक्ष श्री माणकचन्द रामपुरिया, जैन विद्यालय के शिक्षक श्री भूपराज जैन, साधुमार्गी जैन संघ के मन्त्री श्री पीरदान पारख, भावनगर के डॉ. शेखरचन्द जैन, आरा से प्रकाशित **"जैन सिद्धान्त भास्कर"** के संपादकीय विभाग से सम्बद्ध श्री ऋषभचन्द जैन तथा कलकत्ता से प्रकाशित **"जैन भारती"** के समाचार संपादक श्री त्रिलोकचन्द डागा आदि ने भी अपने ओजस्वी तथा प्रेरक विचारों से जैन पत्रकारिता को सही दिशा में बढ़ाने के लिये संपादकों एवं पत्रकारों से क्रियाशील होने का अनुरोध किया।

उक्त विचार-विमर्श के फलस्वरूप संगोष्ठी के समापन समारोह में सभी पत्रकारों ने अखिल भारतीय जैन पत्रकार परिषद् स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया और उसकी प्रारम्भिक प्रक्रियाएँ पूरी करने का दायित्व डॉ. नरेन्द्र भानावत तथा गीता जैन को सौंपा गया।

संगोष्ठी में पारित दूसरे प्रस्ताव में पत्रकारों से अनुरोध किया गया कि वे देश में हिंसा, तनाव तथा विघटनकारी शक्तियों के विरुद्ध और राष्ट्र की एकता, अखण्डता की रक्षा के लिये अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग करें।

एक अन्य प्रस्ताव में सभी जैन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों से यह अनुरोध किया गया कि वे विभिन्न सम्प्रदायों, समूहों में परस्पर सद्भाव तथा समन्वय के लिये अधिकतम प्रयास और विग्रहकारी विवादों से बचें और बचावें।

उक्त संगोष्ठी में जैन पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी जिसका उद्घाटन 'सन्मार्ग' के सम्पादक श्री रामावतार गुप्त ने किया। इस प्रदर्शनी में अनेक दुर्लभ जैन पत्रिकाएँ प्रदर्शित की गयीं। इसका संयोजन श्री गणेश ललवाणी, श्रीमती राजकुमारी बैगानी, श्रीमती गायत्री कांकरिया, श्री गुणवन्त शाह एवं श्री भूपराज जैन के सहयोग से किया गया।

—सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता विभाग,
राजस्थान वि० वि०, जयपुर-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मोद्योत :

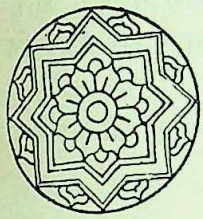

आचार्यश्री की विहार-चर्या

प्रस्तोता – **श्री ब्रजमोहन जैन**

प्रातःस्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी, आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा., मधुर व्याख्याता पं. रत्न श्री मान मुनिजी म.सा. मधुर व्याख्यानी पं. रत्न श्री हीरामुनिजी म. सा., कुशल सेवामूर्ति श्री शीतल मुनिजी म. सा, व्याख्यान रसिक श्री ज्ञान मुनिजी म. सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म. सा., विद्यानुरागी श्री गौतम मुनिजी म. सा., सेवाभावी श्री नंदिषेण मुनिजी म. सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनिजी म. सा., भजनरसिक श्री धन्ना मुनिजी म.सा., नवदीक्षित श्री प्रमोद मुनिजी म. सा. ठाणा ११ तथा महासती श्री शान्तिकंवर जी म. सा. आदि ठाणा ४ राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर का ऐतिहासिक चातुर्मास समापन के पश्चात् विरक्त आत्मा श्री प्रमोद कमार जी मेहता की भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न कर सोडाला कोठारीजी के खेत भाखरोटा विराजकर दि. ३१ दिसम्बर को १३ कि. मी. लम्बा विहार कर मेहता स्टील फैक्टरी **बगरू** पधारे जहाँ धर्म ध्यान का ठाठ लगा और आगन्तुक सधर्मी बन्धुओं का श्री मिलापचन्दजी रतनचन्दजी मेहता ने वात्सल्यपूर्वक सत्कार किया।

दि. १ जनवरी १९८४ को बगरू से ८ कि. मि. का विहार कर आचार्य प्रवर **महलां** पधारे जहाँ स्कूल भवन में विराजे। यहाँ अजमेर तथा किशनगढ़ संघ के शिष्टमण्डल सेवा में उपस्थित हुए। यहाँ से विहार कर २ जनवरी को **गाडोता** पधारे और स्कूल भवन में विराजे। यहाँ के श्री गोपालजी चौधरी आदि बन्धुओं की सेवा सन्तोषजनक रही। दि. ३ जनवरी को १४ कि. मी. का विहार कर दोपहर को **पालू** ठहर कर सायं **गिधाणी** पधारे और पंचायत भवन पर विराजे। दि. ४ जनवरी को ८ कि. मी. का विहार कर **दूदू** पधारे जहाँ पं. रत्न श्री हीरामुनिजी म. सा. आदि ठाणा ३ श्री ज्ञानमुनिजी म. सा. की अस्वस्थता के कारण पहले से ही विराजे हुए थे। यहाँ स्थानकवासी जैन घरों की संख्या १० है। स्थानक भवन बना हुआ है और धर्मानुरागी बन्धु यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मध्यान में रस लेते हैं। आचार्य श्री का यहाँ दो दिन विराजना हुआ। गाँव में धर्मोद्योत का ठाठ रहा। यहाँ श्री लालचन्दजी मेहता, श्री गोरधनजी, लाधूलालजी मेहता, श्री पारसमलजी आदि की सेवा सराहनीय रही। दि. ५ जनवरी को दूदू से ८ कि. मी. का विहार कर **पड़ासोली** पधारे। यहाँ स्था. जैन घर ३ हैं। सायंकालीन वेला में श्री धन्नामुनिजी म. सा. ने कुछ गायन सुमधुर शैली में फरमाये तथा श्री शीतलमुनिजी म. सा. के शुभारम्भ के पश्चात् श्री धन्नामुनि जी ने प्राथमिक अभ्यास-स्वरूप कुछ समय व्याख्यान भी दिया जिससे कतिपय युवकों ने धूम्रपान के त्याग किये। यहाँ के धर्मानुरागी बन्धुओं की आतिथ्य सेवा अति सराहनीय रही।

दि. ६ जनवरी को यहाँ से ६ कि. मी. का विहार कर **दांतड़ी** पधारे जहाँ जैन समाज के तीन घर हैं, उपाश्रय में गुरुदेव विराजे। दि. ७ जनवरी को ११ कि. मी. का विहार कर **डीडवाड़ा** पधारे। यहाँ स्थानकवासी ४ घर हैं। श्री अमरचन्दजी मोदी, श्री अमरचन्दजी झामड़ आदि सुश्रावकों ने अतिथि सत्कार का लाभ लिया।

दि. ८ जनवरी को श्रद्धेय आचार्य श्री के वर्षों बाद **किशनगढ़** आगमन से हर्ष की एक नवीन लहर दौड़ गई। सुविशाल समूह जयघोष के नारों के साथ नगर के मुख्य बाजारों के बीच गुजरता हुआ महावीर भवन पहुँचकर श्रद्धेय आचार्य श्री की मांगलिक श्रवण उपरांत विसर्जित हुआ। यहाँ तीन दिन तक प्रवचन का स्थानीय तथा समागत सधर्मी बन्धुओं ने लाभ लिया।

दि. १० जनवरी को श्रद्धेय आचार्यश्री ने किशनगढ़ शहर से **मदनगंज** को विहार किया और भव्य जुलूस ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता त्यों-त्यों विशेष उमंग के साथ बोले जा रहे जय-घोषों से गगन गूँज उठता। ज्यों ही थोड़े आगे बढ़े कि श्रमण संघ के उपाध्याय राजस्थान केसरी श्री पुष्कर मुनिजी म. सा. विद्वद्वर्य पं. रत्न श्री देवेन्द्र मुनिजी शास्त्री आदि मुनि मण्डल श्रद्धेय आचार्यश्री के स्वागतार्थ उपस्थित हुए। आचार्य प्रवर एवम् उपाध्याय श्री के मधुर मिलन से मदनगंज संघ में हर्ष की लहर फैल गयी। दोनों महापुरुषों के मिलन से खुशियों के ठाठ लग गये। संयुक्त प्रवचन में श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनिजी म. सा. एवम् पं. रत्न श्री देवेन्द्रमुनि जी म. सा. के आचार्य प्रवर के गुणानुवाद से व्याख्यान सभा में एक नवीन हर्ष की लहर फैल गई। समय-समय पर कई विषयों पर आचार्य प्रवर एवम् उपाध्याय श्री के मध्य सौहार्दपूर्ण वातावरण में विचार विमर्श हुआ।

दि. १३ जनवरी को दोपहर २ कि. मी. का विहार कर पूज्य आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवर श्री कालूसिंहजी बाफना की डाईंग फैक्ट्री पधारे जहाँ श्री बाफनाजी ने सजोड़े आजीवन शील का खंद उठाया। दि. १४ जनवरी मकर संक्रान्ति को श्रद्धेय आचार्य श्री १४ कि. मी. का विहार कर **गगवाणा** पधारे यहाँ जैन धर्मशाला में विराजे। दि. १५ जनवरी को गगवाणा से ६ कि. मी. का विहार कर सोनी पाइप फैक्ट्री **घुघरा** पधारे। जहाँ अजमेर के श्रद्धालु भक्तजनों का अच्छी संख्या में आवागमन हुआ। दोपहर उपरान्त यहाँ से विहार कर श्री मूलराजजी चौधरी के बंगले **शास्त्री नगर** (अजमेर) भव्य जुलूस के साथ पधारे। श्रद्धेय आचार्य श्री के पदार्पण से श्री मूलराजजी चौधरी ने अपने बंगले का एक रूम शास्त्री नगर के स्वधर्मी बन्धुओं के सामायिक-स्वाध्याय की साधना के उपयोगार्थ देने का संकल्प किया। यहाँ श्री चम्पालालजी बोगावत ने सजोड़े आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम ग्रहण किया। जयपुर से दूदू तक के प्रवास में श्री पूनमचन्दजी बडेर, श्री कुशलचन्दजी बडेर, श्री सुशीलकुमारजी वैद्य, श्री प्रेमचन्दजी हीरावत, श्री पारसमलजी डागा, श्री माणकचन्दजी कर्णावट आदि जयपुर के कार्यकर्ताओं की सेवायें सराहनीय रहीं तथा श्री उमरावमलजी ढड्ढा, श्री सोहनलालजी मुणोत आदि अजमेर के अनेक श्रद्धालु भक्तों ने सेवा का लाभ लिया।

दि. १६ जनवरी को प्रातः ८ बजे शास्त्री नगर कॉलोनी से विहार कर भव्य जुलूस के साथ महावीर भवन (पाण्डाल) **लाखन कोटड़ी** पधारे। सुविशाल समूह महावीर भवन पहुँचकर व्याख्यान सभा के रूप में परिणत हो गया। सर्व-प्रथम पं. रत्न श्री सोहनलालजी म. सा., महासती श्री कुसुमवतीजी म. सा., महासती श्री जसकंवरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री मैनाकंवरजी म. सा तथा स्वामीजी श्री पन्नालालजी म. सा. की सतियाँ महासती श्री दर्शन-लताजी म. सा. आदि आर्यामण्डल ने श्रद्धेय आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया तथा वर्षों से आपके दर्शनों को लालायित अजमेर की श्रद्धालु जन-मेदिनी ने दर्शन लाभ लिया तथा श्री भंवरलालजी सा. कोठारी ने आजीवन शील का खंद उठाया। दोपहर २.३० बजे के लगभग आचार्य प्रवर अपने अन्तेवासी शिष्य समुदाय के साथ यहाँ से विहार कर महावीर कॉलोनी (पुष्कर रोड़) पधारे जहाँ पूज्य प्रवर्तक, पं. रत्न श्री कुन्दनमलजी म. सा., पं. रत्न श्री सोहनलालजी म.सा. आदि ठाणा ५ एवम् सती-मण्डल आपके दर्शनों को कतिपय वर्षों से लालायित थे सो आपके दर्शन पाकर आनन्द विभोर हो उठे। यहाँ से ३० जनवरी को अपने शिष्य समुदाय सहित विहार कर आचार्य श्री **पुष्कर** पधारे। आगे आपका विहार मेड़तासिटी की ओर होना सम्भाव्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज-दर्शन

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की ७४वीं जयन्ती सानन्द सम्पन्न

पौष शुक्ला चतुर्दशी तदनुसार १७ जनवरी, १९८४ को परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० का ७४वाँ जन्म दिवस देश के विभिन्न भागों में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। **"जिनवाणी"** कार्यालय में विभिन्न क्षेत्रों से जो समाचार प्राप्त हुए, उनका आवश्यक विवरण इस प्रकार है :—

अजमेर—महावीर कॉलोनी में आचार्य श्री की ७४वीं जन्म जयन्ती उसी बरगद के पेड़ के समीप मनाई जाने का सौभाग्य अजमेर संघ को मिला जहां लगभग ६४ वर्ष पूर्व पूज्य आचार्य प्रवर की चारित्र साधना का श्रीगणेश हुआ था। कितनी महान् है यह अजमेर की पावन भूमि, जहां आज पूज्याचार्य प्रवर के सन्तसती, पूज्य प्रवर्तक पण्डित रत्न श्री कुन्दनमलजी म० के सन्त-सती एवं शासन प्रभाविका मेवाड़ सिंहिनी महासती श्री जशकँवरजी म० की सतियाँ यों कुल मिलाकर ५७ सन्त-सतियों की उपस्थिति में आचार्य श्री का ७४वां जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

जयपुर, जोधपुर, पाली, ब्यावर, सवाई माधोपुर, मेड़ता, नागौर, थाँवला, पुष्कर, मदनगंज-किशनगढ़, नीमाज, बीलाड़ा, भीलवाड़ा, कोसाणा, विजयनगर, गुलाबपुरा, रतलाम, सैलाना, भोपालगढ़, पीपाड़, इन्दौर आदि अनेक ग्राम नगरों से आये भक्तों की भारी संख्या से महावीर कॉलोनी का महावीर भवन, व समीपस्थ पांडाल भरा हुआ नजर आने लगा।

सर्वप्रथम गायनप्रिय श्री धन्नामुनिजी म० ने सुमृदु शैली में मंगलाचरण किया, तदुपरान्त श्री मांगीलालजी जैन उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (राज.) ने गुरुदेव को सन्त पारखी बतलाते हुए कहा कि आपने रत्नवंश में अनेक विशिष्ट गुणों वाले सन्त-रत्नों का चयन किया है। अजमेर संघाध्यक्ष श्री लोढ़ा ने कहा कि आचार्य गुरुदेव की छत्रछाया में मैं विकसित-पल्लवित हुआ हूँ और जीवन पर्यन्त इन्हीं की आचार संहिता में रहूँगा। राजस्थान से भी पाँच गुणी भक्तों की संख्या दक्षिण प्रदेश में मुझे आपके दर्शनों को लालायित व उत्कंठित देखने को मिली। यह आचार्य प्रवर की गुण गरिमा, रत्न-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रयादि की छाप है जिससे उत्तर से दक्षिण तक समूचे भारत के भक्त आपसे प्रभावित हैं। मेवाड़ सिंहिनी महासती श्री जशकँवरजी म० ने कहा—मैं आचार्य देव को जिनशासन का तीर्थराज मानती हूँ। समाज की इस महान् हस्ती ने संस्कृति रक्षण और मर्यादा-पालन में बहुत बड़ा योगदान दिया है। शासन के गौरव को बढ़ाया है। ऐसे गुरुराज की मेरी एक जबान क्या महिमा कर सकती है। आप गुणों के भण्डार हैं।

किस विध गुण वर्णन करूँ, मेरी तो एक जबान है।

मेरी मात्र एक ही कामना है कि मैं भी शासन की मर्यादा में रहकर उत्तरोत्तर प्रगति करती रहूँ और श्रावक संघ को मेरा यही कहना है कि वह शासन का गौरव बढ़े, ऐसे कार्य करता रहे।

प० र० श्री मान मुनि म० सा० ने आचार्य देव की जीवन गरिमा को मिश्री की डली की उपमा से उपमित किया जो जीवन के हर क्षण-पल एवं आचरण में मिठास लिये हुए है। आपके जीवन की हर क्रिया, अप्रमत्त भाव आदि हर गुण कथनीय के साथ करणीय भी हैं। आप श्री का फरमान है कि आत्मा पर आये कर्म-कलंक को स्वाध्याय से दूर करो।

महासती श्री दिव्यप्रभाजी म० सा० ने कहा—कि जीव से शिव, नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा को जोड़ने वाले मात्र गुरु ही हैं। अतः आप शतायु होकर इसी तरह मार्ग प्रशस्त करते रहें। प० र० श्री सोहनलालजी म० सा० ने फरमाया कि सामायिक और स्वाध्याय को अधिक से अधिक फैलाकर घर-घर में ज्ञान-क्रिया की ज्योति का शुभ सन्देश देने वाले आचार्य श्री भगवन् दीर्घायु हों। महासती श्री कमलाजी म० सा० ने कहा—निर्ग्रन्थ भगवन्तों की भक्ति करने से कर्मों का नाश होता है। अतः हमें उन्हीं के मार्गानुयायी आचार्य देव की भक्ति में प्रयत्नशील होना चाहिये।

श्री वल्लभ मुनिजी म० सा० ने कहा कि सन्त-समाज में ज्ञान-क्रिया की सौरभ बढ़ाने वाले आचार्य भगवन्त जयवन्त हों। श्री ज्ञानमुनिजी म० सा० ने फरमाया कि लोग कहते हैं कि आचार्य श्री के चरणों में देव आते हैं, आप इसे आश्चर्यकारी नहीं मानें। निशीथ भाष्य की गाथा इसे पूर्ण रूप से प्रमाणित करती हैं—

थोबा हारो थोब भणियो, जो होई थोब निद्दो य।
थोबो वही उवगरणो, तस्सहु देव वि पणमंति॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्—जिनका आहार अल्प है, जो अल्पभाषी हैं, जिनकी निद्रा अल्प है तथा जिनकी उपाधि व उपकरण अल्प हैं, उन्हें देवता भी सविनय प्रणाम करते हैं।

श्री गौतम मुनिजी म० ने एक संगीत के माध्यम से भक्ति पुष्प अर्पित किये।

श्रद्धेय प० र० श्री हीरा मुनिजी म० सा० ने कहा कि एक से अधिक ट्रेनें जहां से छूटती और मिलती हैं वह जंकशन होता है। बहुत से मनुष्यों का मिलना मेला कहलता है तथा एक से अधिक नदियों का मिलना तीर्थ कहलाता है। उसी प्रकार एक आचार और विचार वाले धार्मिकों का मिलना समवसरण होता है। अजमेर जंकशन है—मेरा मतलब यहाँ ट्रेन जंकशन से नहीं है अपितु चतुर्विध संघ के मिलन रूपी जंकशन से है जहाँ सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र और सम्यग्तप रूप चतुर्मार्ग की आराधना का आज अनूठा संगम देखने को मिल रहा है और हम अपने आराध्य आचार्य श्री के चरणों में अधिकाधिक चातुर्मार्गी साधना का संकल्प लेकर उनकी जयन्ती मनायें।

उपसंहार में कुछ समय की पृष्ठभूमि के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य श्री ने सामायिक-स्वाध्याय को घर-घर में पहुंचा कर शासन की प्रभावना करने को ही सच्चे मायने में जयन्ति मनाना फरमाया।

सवाईमाधोपुर—में श्री रामगोपालजी जैन की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में श्री चौथमलजी जैन, रूपचन्दजी जैन, श्री हनुमानप्रसादजी जैन, श्री धनसुरेश जैन आदि ने आचार्य श्री के जीवन एवं साधना पर प्रकाश डाला।

इन्दौर—में तपस्वीराज श्री लालचन्दजी म० सा० आदि ठाणा ७ एवं महासतीजी श्री कौशल्याजी आदि ठाणा १४ के सान्निध्य में यह समारोह श्रीमती कमला माताजी की अध्यक्षता एवं श्रीमती भुवनेश्वरीदेवी के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया। इस दिन श्री लालचन्दजी म० सा० की ४५ दिवसीय तपस्या का समारोह भी था। इस अवसर पर ८१ तेले, ३ दिवसीय अखण्ड भक्तामर जाप, ३७४ व्यक्तियों द्वारा ५-५ सामायिक तथा एक लाख नवकार मंत्र के साथ व सैंकड़ों की संख्या में उपवास, दया, आयम्बिल, एकासना आदि तपस्यायें हुईं। समारोह का संचालन श्री फकीरचन्दजी मेहता ने किया।

मैसूर—में श्री कमलेश मुनिजी के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह में नवकार मंत्र सम्बन्धी परीक्षा में सफल परीक्षार्थियों को पुरस्कृत किया गया। ७४ कबूतरों को अभयदान दिलाकर मैसूर पिंजरापोल में उन्हें अच्छी देखरेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ सुरक्षित रखा गया। गायों और कुत्तों को भी आहार दिलवाया गया। १०५ कुष्ठ रोगियों को खाद्य सामग्री बाँटी गयी।

जलगाँव—में श्री नथमलजी लुंकड़ की अध्यक्षता में एवं श्री शंकरलालजी ललवाणी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ के छात्रों ने आचार्य श्री के वैराग्यपूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला। श्री दलीचन्दजी चौरड़िया की ओर से दया का आयोजन किया गया।

खेरली—(अलवर) में श्री शुभेन्द्र मुनिजी के सान्निध्य में दया, पौषध, उपवास के साथ समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर श्री चद्रभानजी जैन, श्री कजोड़ीमलजी जैन, श्री छगनलालजी जैन, श्री रतनलालजी जैन, श्री लक्ष्मीचन्दजी जैन, श्री उम्मेदीलालजी जैन ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान किया। श्री केवलमलजी लोढ़ा ने माल्यार्पण एवं शाल द्वारा इन व्रतधारियों का अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर जयपुर से सम्यग्ज्ञान प्रचारक के मंत्री श्री टीकमचन्दजी हीरावत, श्री हरिशचन्दजी हीरावत, श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा आदि भी उपस्थित थे। आसपास के गाँवों से भी बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे हुए।

मद्रास—में विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म० सा० आदि ठाणा ६ के सान्निध्य में यह समारोह तप-त्यागमय पूर्वक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

श्री जैन विद्यालय कलकत्ता का स्वर्णजयन्ती महोत्सव सम्पन्न

कलकत्ता—श्री जैन श्वे० स्था० जैन सभा द्वारा संचालित श्री जैन विद्यालय के सप्त दिवसीय स्वर्ण जयन्ती समारोह का समापन १५ जनवरी को हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रमुख समाज सेवी श्री विजयसिंहजी नाहर ने की और पुरस्कार वितरण किया बम्बई के प्रमुख उद्योगपति श्री चुन्नीलालजी मेहता ने। विद्यालय के मंत्री श्री सरदारमलजी कांकरिया ने बताया कि यह विद्यालय आज से ५० वर्ष पूर्व श्री फूसराजजी बच्छावत की प्रेरणा से एक छात्र और अध्यापक से प्रारम्भ हुआ था। पर आज यह कलकत्ता का प्रमुख आदर्श शिक्षा संस्थान है। जिसमें करीब २५०० छात्र और ५० शिक्षक हैं। यह विद्यालय अपने शत-प्रतिशत परीक्षा फल, सर्वधर्म समभाव, राष्ट्रीय एकता और अनुशासन बद्धता के लिये प्रसिद्ध है। विद्यालय के मेधावी छात्रों और समर्पित शिक्षकों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमद् जवाहरचार्य स्मृति व्याख्यान माला एवं स्व. प्रदीप रामपुरिया स्मृति पुरस्कार समारोह

कलकत्ता—यहाँ १४ जनवरी को श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आयोजित श्रीमद् जवाहरचार्य स्मृति व्याख्यान माला का छठा व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रारम्भ में डॉ. नरेन्द्र भानावत ने व्याख्यान माला एवं साहित्य समारोह की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। प्रमुख व्याख्यानदाता थे भागलपुर विश्वविद्यालय के गांधी विचार दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ० रामजी सिंह। उन्होंने आधुनिक युग में जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त जैसे सिद्धान्तों की महत्ता पर प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता श्री सौभाग्यमलजी जैन ने की और मुख्य अतिथि थे प्रो० कल्याणमल लोढ़ा। इस अवसर पर श्री माणकचन्दजी रामपुरिया द्वारा प्रदत्त निधि से श्री प्रदीप रामपुरिया स्मृति पुरस्कार के रूप में ५१००) रुपये गुना के श्री मिश्रीलाल जैन को उनकी काव्यकृति 'गोम्मटेश्वर' पर प्रदान किया गया। इस समारोह में बाहर से पधारे हुए जैन पत्रकारों एवं सम्पादकों का श्री माणकचन्द रामपुरिया द्वारा शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ की ओर से संघ के कोषाध्यक्ष गंगाशहर निवासी श्री चम्पालालजी डागा को तथा महिला समिति की भूतपूर्व मंत्री श्रीमती शान्ता मेहता, रतलाम को उनकी समाज सेवाओं के उपलक्ष्य में अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन श्री भूपराज जैन ने किया।

इस अवसर पर प्रमुख कवि एवं समीक्षक डॉ. नरेन्द्र भानावत की राजस्थानी कविता पुस्तक **'जामणजाया'** तथा श्री माणकचन्द रामपुरिया रचित पुस्तक **'स्मृति रेखा'** का विमोचन डॉ. रामजीसिंह ने किया।

संक्षिप्त समाचार

इन्दौर—यहाँ श्री लालचन्दजी म० सा० के सान्निध्य में श्री जैन धार्मिक शिक्षण समिति बदनावर की ओर से २५ दिसम्बर से १ जनवरी तक आयोजित शिविर में ४४ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर का संयोजन श्री शान्तिलाल जी सुराणा ने किया।

रतलाम—अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर के तत्त्वावधान में स्व. डॉ. नन्दलालजी बोरदिया की स्मृति में इंडियन मेडिकल एसोसियेशन, रतलाम शाखा के सहयोग से ग्राम पंचेड में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालोद—श्री जैन मण्डल एवं महावीर धमार्थ सेवा योजना द्वारा मध्य-प्रदेश में द्वितीय मेजर पोलियो सर्जिकल कैम्प का आयोजन १७ दिसम्बर से २७ दिसम्बर तक किया गया। इसमें कुल १४०० मरीजों की जाँच एवं २६३ मरीजों के ऑपरेशन किये गये।

सवाईमाधोपुर—श्री श्वे० स्था० जैन युवा मंडल के द्वि-वार्षिक चुनाव में श्री रमेशचन्दजी जरखोदावाले अध्यक्ष, श्री रघुवीरप्रसादजी उपाध्यक्ष, श्री पारसचन्दजी मन्त्री, श्री अजयकुमारजी उपमन्त्री एवं अरुणकुमारजी जैन कोषाध्यक्ष चुने गये।

जलगाँव—श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग हाउस के वार्षिक चुनाव में श्री नथमलजी लुंकड़ अध्यक्ष व श्री दलीचन्दजी चौरड़िया जनरल सेक्रेटरी तथा श्री मिश्रीलालजी चौरड़िया सेक्रेटरी चुने गये।

नगरी—श्री जैन बालवीर मण्डल के वार्षिक चुनाव में श्री भंवरलालजी बोहरा अध्यक्ष, आभा नाहटा उपाध्यक्ष, अनिल छाजेड़ मन्त्री, दिनेश नाहटा कार्यालय मन्त्री एवं महेश नाहटा पुस्तकालय मंत्री चुने गये। यहाँ के जैन समता मंच द्वारा **'भटकती पीढ़ी एवं दिशा बोध'** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। निबन्ध २२ फरवरी तक सुरेश गोलछा, अध्यक्ष, जैन समता मंच नगरी (रायपुर) मध्यप्रदेश के पते पर भेजें।

दिल्ली—यहाँ १० जनवरी को विश्व सद्भावना परिषद् की ओर से आयोजित विश्व सद्भावना सम्मेलन में राष्ट्रपति ज्ञानी श्री जैलसिंहजी ने मुनि श्री नगराजजी को **'सद्भावनारत्न'** की उपाधि से सम्मानित किया।

रसीदपुर—आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के शिष्य श्री शुभेन्द्र मुनिजी, श्री बसन्त मुनिजी एवं श्री चम्पक मुनिजी का गंगापुरसिटी, वजीरपुर, सैमाला, श्री महावीरजी, पटोदा, कजानीपुर, बरगमा, फाजिलाबाद, डेहरा, हिन्डौन, नयागाँव, तालचीड़ी आदि क्षेत्रों को फरसते हुए यहाँ पधारना हुआ। भारी संख्या में सामायिक, स्वाध्याय, दया मौनव्रत, एकासन, आयम्बिल आदि के प्रत्याख्यान हुए।

मद्रास—९ जनवरी, १९८४ को भगवान् महावीर अहिंसा प्रचार संघ के तत्त्वावधान में आयोजित विशेष समारोह में विकलांगों को कृत्रिम हाथ पाँव, व्हीलचेयर एवं छात्र-छात्राओं को रजत पदक एवं पारितोषिक प्रदान किये गये। समारोह का संचालन श्री केशरीचन्दजी सेठिया ने किया। यहाँ श्री धर्मेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनिजी के सान्निध्य में आचार्य श्री नानालालजी म० सा० का ३५वाँ दीक्षा महोत्सव तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। वैरागिन बहिन पुष्पा भंडारी का अभिनन्दन किया गया।

पीपलगाँव बसन्त—यहाँ आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० के सान्निध्य में २९-१२-८३ को कुमारी इन्द्रप्रभा की भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। नव दीक्षिता साध्वी का नाम संयम प्रीति रखा गया। इस अवसर पर अचल गच्छाधिपति श्री गुणसागरजी म० सा० के सान्निध्य में चल रहा चतुर्विध संघ भी उपस्थित था।

जयपुर—यहाँ श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की ओर से आयोजित दस दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का समापन समारोह श्री कुशलचन्दजी सुराणा की अध्यक्षता में ३ जनवरी को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि थे डॉ. नरेन्द्र भानावत। इस शिविर में १५० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। शिविर का संचालन बम्बई के श्री कुमारपाल वि० शाह ने किया।

शोक-श्रद्धांजलि

श्रमणसूर्य मरुधर केशरी श्री मिश्रीमलजी म. सा. का स्वर्गवास

जैतारण—यहाँ श्रमणसूर्य मरुधर केशरी, प्रवर्तक वयोवृद्ध संत श्री मिश्रीमलजी म. का १७ जनवरी, १९८४ को स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म वि. सं. १९५५ में श्रावण शुक्ला १४ को पाली के सोलंकी मेहता श्री शेषमलजी की धर्मपत्नी श्रीमती केसरकुंवर बाई की रत्नकुक्षि से हुआ। सं. १९७५ में श्री मानमलजी म. के सान्निध्य में सोजत में आपने दीक्षा अंगीकृत की।

आप आगमों के विशिष्टज्ञाता, प्रबुद्ध विचारक, आशु कवि, कुशल संगठक एवं श्रमण संघ के दृढ़ आधार स्तम्भ थे। विभिन्न साधु सम्मेलनों में आपने सक्रिय भाग लिया। आप आत्म-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण के लिये समाज के विभिन्न अंगों को सतत प्रेरणा देते रहे। आपकी प्रेरणा से देश के विभिन्न क्षेत्रों में बकरा-शालाएँ, गौ-शालाएँ, छात्रावास, पुस्तकालय, विद्यालय, अस्पताल जैसी अनेक लोक-कल्याण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी संस्थाएँ स्थापित हुईं जो निःस्वार्थ भाव से समाज सेवा में अग्रसर हैं। आप वचन सिद्धि एवं प्रवचन प्रभावकता के लिये प्रसिद्ध रहे हैं। आप हिन्दी, राजस्थानी और संस्कृत के सफल कवि थे। राजस्थानी में लिखित आपका **'पाण्डव यशो रसायन'** ग्रन्थ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है। गद्य और पद्य में आपकी शताधिक रचनाएँ प्रकाशित हैं। सन् १९६८ में आपकी ५०वीं दीक्षा जयन्ति पर सोजत में विशेष समारोह आयोजित हुआ था जिसमें आपकी विविध सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था। आप 'कड़क मिश्री' के नाम से प्रसिद्ध थे। आपके निधन से न केवल जैन समाज की वरन् भारतीय संत-परम्परा की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं "जिनवाणी" परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

देश के कोने-कोने में विविध क्षेत्रों में सार्वजनिक सभाएँ आयोजित कर दिवंगत आत्मा का गुणानुवाद करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं। हमें जो समाचार प्राप्त हुए हैं उनका विवरण इस प्रकार है—

अजमेर में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. आदि सन्त-सतियों के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धांजलि-सभा में सर्वप्रथम पं. रत्न श्री सोहनलाल जी म. सा., मधुर व्याख्याता श्री मानमुनिजी म. सा., व्याख्यान रसिक श्री ज्ञानमुनिजी म. सा. ने स्व. मरुधर केशरी म. सा. की जीवन-गरिमा के कतिपय महत्त्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत कर सभा का ध्यान दिवंगत आत्मा के त्यागमय जीवन की ओर आकर्षित किया। ग्राम-ग्राम में विचरण कर स्थानकवासी परम्परा को सुदृढ़ करने वाले कवि-वक्ता-साधना प्रेमी, अनाथों के नाथ, जैन व जैनेत्तरों के उपकारी महान् सन्त का अकस्मात निधन समाज के लिये अपूरणीय क्षति है। उसकी पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं लगती।

शासन प्रभाविका मेवाड़ सिंहनी महासती श्री जसकंवरजी म. सा. ने श्रद्धांजलि स्वरूप दो शब्द फरमाते हुए कहा कि उसे एक-न-एक दिन जाना अवश्य है ? जैसे—मक्खी मीठे पर बैठती है, अग्नि पर नहीं, मौत शरीर की होती है, आत्मा की नहीं। जो होना था वह हुआ, इसमें आश्चर्य क्या ? पर हमारा-चारित्र बल कमजोर होता जा रहा है, अतः मन में विचार आता है। स्व. श्री मरुधर केशरीजी ने समाज के लिए जो किया, उनकी देन हमें सदैव याद आती रहेगी। उनकी आत्मा को शासनेश चिर शान्ति प्रदान करें !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदुपरान्त नगर के गणमान्य जनों में सर्वश्री उमरावमलजी ढड्ढा, श्री मांगीलालजी जैन, श्री अमरचन्दजी कासवा, श्री श्रीलालजी कावड़िया, श्री जीतमलजी चौपड़ा आदि वक्ताओं ने श्रद्धांजलि स्वरूप दो शब्द व्यक्त किये।

तदनन्तर परम श्रद्धेय आचार्यश्री ने श्रद्धांजलि स्वरूप दो शब्द व्यक्त करते हुए फरमाया कि अल्प काल में वयोवृद्ध श्री ब्रजलालजी म., उनके पश्चात् युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म., और श्री मरुधर केशरीजी श्री मिश्रीमलजी म. के स्वर्गवास से राजस्थान के भूधरवंश में ही नहीं बल्कि समस्त स्थानकवासी समाज में एक अपूर्णीय क्षति हुई है।

भूधरवंश की तीन पूज्य परम्पराओं में पूज्य श्री रघुनाथजी म. की परम्परा के श्री मरुधर केशरीजी दीप्ति मानस थे, उन्हें साहस की मूर्ति और अनाथों के नाथ कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं।

आचार्यश्री ने उनके स्वर्गवास से श्रमण संघ में जो एक बड़ी कमी आई उसके लिये हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म. आदि मुनि मण्डल के साथ सहानुभूति प्रकट की और आशा की कि समाज इस क्षति को पूरी करने के लिये संयुक्त रहेगा। श्रमण संघ के ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में अपना पूर्ण योगदान देगा। तदुपरान्त चार-चार लोगस्स का काउसग्ग कर सभा विसर्जित की गई।

रतलाम में—उपाध्याय बहुश्रुत श्री कस्तूरचन्दजी म० सा० एवं मालव केसरी श्री सौभाग्यमलजी म० सा० के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में दिवंगत आत्मा की बहुविध सेवाओं का सादर स्मरण किया गया और उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। श्री अ० भा० रत्न हितैषी श्रावक संघ **जोधपुर** के मंत्री श्री माणकमलजी भंडारी ने मरुधर केसरीजी की समाजोत्थान एवं धार्मिक क्षेत्र में देन को अत्यन्त मूल्यवान बताया। **सवाईमाधोपुर** में श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला द्वारा, **राणावास** में श्री मरुधर केसरीजी उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा, **मद्रास** में श्री श्वे० स्था० जैन संघ द्वारा, **तिरुवण्णा मेल** (तमिलनाडू) में जैन संघ द्वारा, **पल्लावरम्** (मद्रास) में श्री श्वे० स्था० जैन चेरीटेबुल ट्रस्ट द्वारा, **ब्यावर** में मुनि श्री हजारीमलजी स्मृति प्रकाशन, श्री आगम प्रकाशन समिति एवं श्री मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति द्वारा, **राणावास** में श्री वर्धमान स्था० जैन शिक्षण संघ द्वारा, **दौड़ बालापुर** (कर्नाटक) में जैन संघ द्वारा, **बैंगलोर** में जैन संघ द्वारा, **बागलकोट** में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैन संघ द्वारा, **ताम्बरम्** (मद्रास) जैन संघ द्वारा, किशनगढ़ में वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ द्वारा, **अलवर** में स्था० जैन श्रावक संघ द्वारा, **कलकत्ता** में श्री स्था० जैन सभा द्वारा, आयोजित श्रद्धांजलि सभाओं में श्री मरुधर केसरीजी का गुणानुवाद करते हुए वक्ताओं ने उनके वैराग्य-पूर्ण, लोक कल्याणकारी प्रेरक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और लोगस्स के ध्यान के साथ उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

महासती श्री बौद्धकंवरजी का स्वर्गवास

सिवाना—यहाँ ११ जनवरी को महासती श्री बौद्धकंवरजी का ७६ वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक सन्थारा सीज गया। आपकी धर्म साधना उत्कृष्ट थी। आप सरल स्वभावी, विनम्र एवं प्रियभाषी थीं। आपने २२½ साल तक निरतिचार संयम पाला। आप विगत ५ साल से सिवाना में ही विराज रही थीं।

अलवर—यहाँ के प्रमुख श्रावक श्री ज्ञानचन्दजी संचेती (राठौड़ सा०) का १२ जनवरी को लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया। आप श्री नाथूलालजी संचेती के पुत्र एवं तपस्वी श्री सुन्दरलालजी म० सा० के सुपौत्र थे। आप में धर्म के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा एवं रुचि थी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। परिवार की ओर से विभिन्न संस्थाओं को दान दिया गया।

सिरकाली (तमिलनाडू)—श्री सहसमलजी बोहरा का ६८ वर्ष की अवस्था में ७ जनवरी को दुःखद निधन हो गया। आपका सामाजिक प्रवृत्तियों में सदा योगदान रहा। आप धर्मप्रेमी और समाजसेवी थे। पीसांगन तथा सिरकाली में आपने प्रसूति गृह की स्थापना की। आपकी स्मृति में आपके परिवार वालों की ओर से विभिन्न संस्थाओं को दान दिया गया।

हम सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि एवं शोक विह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

"जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु.

सदस्यता संख्या

२०३८ श्री प्रभुदयालजी कैलाशचन्दजी जैन, फाजलीबाद (स. माधोपुर)

२०३९ श्री विनयचन्दजी कोठारी, बम्बई

२०४० श्री कोडम्बाकम संघ, मद्रास

२०४१ श्री जैन रत्नस्थानकवासी स्वाध्याय पुस्तकालय, भनोकर

(जिनवाणी को भेंट एवं सहायता)

१०१) श्री नेमीचन्दजी उगमराजजी लूणावत, बम्बई, स्वर्गीय पूज्य माताजी श्रीमती सीतादेवी धर्मपत्नी श्री मगराजजी लूणावत की पुण्यस्मृति में भेंट।

१०१) श्री सिरहमलजी सागरमलजी बोहरा, सिरकाली, परम् पूज्य भाई साहब श्री सहसमलजी बोहरा का ६८ वर्ष की आयु में दि. १९-१-८४ को प्रातः ४ बाजे स्वर्गवास हो गया, जिनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

१०१) श्रीमती विमलाजी जोटा, बम्बई, श्री नितिनकुमारजी जोटा सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमारजी जोटा का विवाह प्रतिभा सुपुत्री श्री बंशीलालजी नवलखा, पूना के साथ हुआ, उसके उपलक्ष में भेंट।

५१) मै. सुरेश फाइनेन्स कोरपोरेशन, मद्रास, श्री रामलालजी सा. कोठारी ने गुरुदेव के दर्शन किये, जिसके उपलक्ष में भेंट।

५१) श्री हंसराजजी मोहनोत पौत्र श्री सोनराजजी सा. मुणोत, जोधपुर, आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. से सजोड़े आजीवन शीलव्रत लेने की खुशी में भेंट।

५१) श्री दलीचन्दजी हस्तीमलजी चोरडिया, जलगांव, श्री भंवरलाल हीरालालजी जैन के दिनांक ४-१-८४ को अमेरिका में हार्ट का सर्ज ऑपरेशन हुए एक वर्ष बीता, इस उपलक्ष में भेंट।

५१) श्री महेन्द्रकुमार जी नरेन्द्रकुमार जी देवेन्द्रकुमार जी जैन, अलवर दिनांक २४-१-८४ को पूज्य पिताजी श्री ज्ञानचन्दजी संचेती (राट सा.) के देहावसान की पुण्यस्मृति में भेंट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचनामृत :

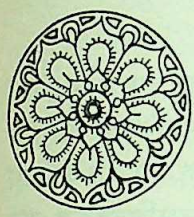

आत्म-स्नानं*

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

प्रभु महावीर ने बड़ा अनुग्रह करके ऐसी व्यवस्था की कि जिससे मोक्ष-मार्ग के साधक गड़बड़ावें नहीं। उनके आचरण में कभी गलती हो गई तो वह दोष की गन्दगी लम्बे काल तक नहीं रहे, इसलिए रास्ता बताया कि साधु दैनिक प्रतिक्रमण करके दोषों की शुद्धि करें। इसमें कमी रह जाय तो पाक्षिक प्रतिक्रमण में उस पर ध्यान दें। पाक्षिक पर्व में भी कुछ असावधानी रह जाय तो चातुर्मासी पर्व में पूरा ध्यान देकर उसकी शुद्धि करें। इसमें भी कोई गफलत रह जाय तो अन्तिम क्या है? वर्ष भर की शुद्धि का दिन है। उस पर्व की अपेक्षा करके बैठा नहीं रहना है। चार महीनों के समय में हमारे व्रतों में, साधना में, नियमों में जहाँ कहीं कमजोरी आई हो उस कमजोरी का संशोधन करने को चातुर्मासिक पर्व पर पहले तो आत्मिक आलोचना करनी है। किसलिये करनी है? चार मास की साधना अच्छी हो। एक तो पर्व का यह लक्ष्य है कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र की शुद्धि करना, उसके लिए आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रायश्चित ये तीन क्रम हैं। आलोचना में पहले की गई भूलों या गलतियों को याद करना और गुरु के सामने दोषों को प्रस्तुत करना है। भूल कबूल करने के पश्चात् दूसरा क्रम है प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण का मतलब है—पीछे हटना अर्थात् दोषों से हटकर आत्मा को मूल स्थिति में ले आना। समझ लो कि आपने सामायिक, स्वाध्याय का नियम लिया है और हमने सर्वविरति धर्म की साधना में महाव्रत लिये हैं, जो कुछ साधना करनी है उसमें प्रमाद से, कषाय से या परिस्थिति के कारण कभी कुटुम्ब आदि के आग्रह के कारण दोष लग जाना भी सम्भव है। लेकिन दोष हो जाने पर दोष को रखना नहीं है। कपड़े पर धूलि लगना सम्भव है लेकिन उस धूलि को कपड़े पर रखना नहीं है।

इसी प्रकार आत्मा पर मैल लग जाय तो उसको रहने नहीं देना है। यह प्रभु महावीर का आदेश है। इसको यथावत रूप में प्रगट करने के लिये क्या जरूरी है? आलोचना और प्रतिक्रमण के जरिये दोषों से पीछे हटना। "प्रति"

*९ जुलाई, १९७९ को जलगांव में दिया गया सम्पादित प्रवचन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याने "पीछे"। दोष की ओर जो कदम बढ़ा है, मर्यादा से बाहर आये हुए उन चरणों को पीछे हटाकर मल स्थान पर स्थापित करना, इसका नाम प्रतिक्रमण है।

आलोचना के बाद प्रतिक्रमण होता है। प्रतिक्रमण केवल पाटियाँ बोलने से ही पूरा नहीं होता है। यह तो एक साधना है जिससे दोष सरलता से याद आ जावे। इसलिये आचार्यों ने, शास्त्रकारों ने प्रतिक्रमण की पाटियां आपके सामने रखी हैं। पाठ तोते की तरह बोल गये, मिच्छामिदुक्कडं जहां आया, वहां मुंह से कह दिया लेकिन किस बात का "मिच्छामिदुक्कडं" इसका पता नहीं। दैनिक व्यवहार करते यदि झूठ बोला गया, माप-तोल में ऊँचा-नीचा हो गया, किसी से कोई बात मंजूर की लेकिन बाद में वचन का पालन नहीं किया, कभी चोरी का माल ले लिया, चोरों को मदद दी या तस्करी करने में हाथ रहा हो तो मैं अपनी आत्मा से पश्चाताप करता हूं, ऐसा ख्याल होना चाहिये। प्रतिक्रमण करने वाले भाई-बहन-जीवन में दोषों का संशोधन करके उसको उज्ज्वल करेंगे।

आत्म-स्नान :

आलोचना और प्रतिक्रमण एक तरह से आत्मा का स्नान है। तन का स्नान आप लोग रोज करते हैं। शरीर को नहलाने का कार्य किसलिये करते हैं ? शरीर पर धूल, कीचड़ अथवा मैल जम गया हो तो उसको साफ करने के लिए स्नान करते हो। साफ करने पर भी दुबारा मैल लगने की सम्भावना रहती है। बहुत से लोग कहा करते हैं कि गलती करते जाते हैं फिर प्रतिक्रमण क्यों करना ? झूठ बोलना छोड़ा नहीं, हिंसा करना और किसी को कष्ट देना भी छोड़ा नहीं, केवल प्रतिक्रमण करते समय "मिच्छामिदुक्कडं" कर गये और कल फिर ऐसा ही करना है तो प्रतिक्रमण का क्या लाभ ? मैं उन भाइयों से कहता हूं कि नहाने के बाद मैल आता है फिर भी आप इस क्रम को बन्द नहीं कर रहे हो और बेकार भी नहीं समझ रहे हो। धूल लगने पर भी रोज नहाते हो, क्योंकि नहाना बन्द करने पर कचरा और बढ़ेगा। रोज नहीं करके कभी ५, १० दिन में किया जाय तो ज्यादा गंदा तो नहीं होगा ? कमरे में झाडू रोज लगाते हैं तो क्या फिर धूल नहीं आती ? अभी झाडू लगाया है, उसके बाद सौ पचास आदमी आ गये तो निश्चित ही उनके पैरों से धूल आयेगी। यदि चपरासी यह सोचले कि अभी क्यों सफाई करूं, बाद में करूं तो क्या होगा ? आने वाले लोगों को अच्छा नहीं लगेगा। पहले सफाई की गई है फिर भी आदमियों के पैरों से कचरा आता रहता है।

इसी तरह हम हजारों आदमियों के बीच रहते हैं, परिवार में भी जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, लेन-देन भी करते हैं, बोलते-बतलाते हैं। अभी जवानी में प्रमाद भाव है, गफलत है इसलिये पाप का मैल लगना सम्भव है। उसको कहीं रोकें नहीं तो क्या उस पाप के मैल को लगा हुआ रहने दें ? क्या यह सोच लें कि मरने के समय जब संथारा करेंगे तब सब साफ कर लेंगे ? ऐसा सोचकर ५०, ६० वर्ष तक गलतियों को यों ही दबाये रखेंगे तो वे गलतियाँ परेशानी करेंगी। किसी मकान में यदि कचरा बढ़ता गया और मकान मालिक ने सोचा कि पांच दिन बाद साथ ही निकालूंगा, रोज-रोज निकाल कर क्या करना है, हाथ दुखते हैं और टाइम बेकार जाता है, इसलिये रोज-रोज क्यों निकाला जाय ? घर में रहने वाले भाई-बहिन घर के कमरों का दो बार कचरा निकालना बेकार समझेंगे ? टाइम फालतू जाता है ऐसा समझेंगे ? आपको शायद पता नहीं होगा लेकिन घर में काम करने वाली बहिनों को दो बार सफाई करनी पड़ती है, वे इसमें क्यों टाइम लगाती हैं ? शाम को रसोई करनी है तो सुबह चौका क्यों धोना ? इससे आप सोच लीजिये कि जैसे सांसारिक लोग कपड़ों को स्वच्छ रखने के लिये शुद्धि करते हैं, वह द्रव्य-शुद्धि है। लेकिन आत्मा को नहीं सम्भाला गया, उसकी शुद्धि यदि नहीं की गई तो आपके मन, मस्तिष्क और आत्मा को शान्ति मिलेगी क्या ? इसलिए तन की तरह मन और आत्मा की शुद्धि भी आवश्यक है। इस शुद्धि के लिए भगवान् महावीर ने दुनिया को प्रतिक्रमण करने का आदेश दिया।

पंचविध प्रतिक्रमण :

प्रतिक्रमण कितनी तरह के हैं ? एक स्वाध्यायी भाई ने कहा—देवसी, रायसी, पाक्षिक, चौमासी और संवत्सरी—ये कुल ५ तरह के बताये हैं। इनके द्वारा दोषों की शुद्धि की जाती है। पहला है देवसी अर्थात् दिन सम्बन्धी-दिन में जो दोष लगे हैं, उनकी शुद्धि सायंकाल के जिस प्रतिक्रमण से की जाती है उसका नाम देवसी प्रतिक्रमण है।

रात्रि में जागते समय या शयन करते समय किसी प्रकार का मानसिक, वाचिक या कायिक दूषण लगा हो तो प्रातःकाल के प्रतिक्रमण से उसकी शुद्धि की जाती है उसका नाम है रायसी प्रतिक्रमण। यह बोलचाल का मुहावरा हो गया। गुजरात में तो भाइयों के नाम रायसी या देवसी भी रखे जाते हैं। वहां पर सामायिक प्रतिक्रमण में अधिक रुचि रखने वाले लोग मिलेंगे। दिन और रात्रि में एक ही तिथि हो गई। उसके बाद फिर भी कोई गलती ध्यान में नहीं आई तो पाक्षिक या पक्खी प्रतिक्रमण से शुद्धि की जा सकती है। पन्द्रह दिनों के व्यवहार में जो गलतियाँ हुईं उनके संशोधन के लिये जो प्रतिक्रमण किया जाय उसका नाम पाक्षिक या पक्खी प्रतिक्रमण है। चार महीनों के काल में जो जीवन-सम्बन्धी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैलापन आ गया उसको दूर करने के लिए, शुद्धि करने के लिये, गुरु की साक्षी से जो आलोचना की जाती है और प्रतिक्रमण किया जाता है उसका नाम है चौमासी प्रतिक्रमण। इसके बाद में पांचवां प्रतिक्रमण आता है—संवत्सरी प्रतिक्रमण। प्रभु कहते हैं कि आत्मार्थी साधु-साध्वी एक दिन के लिए भी दूषण को छिपाकर नहीं रखें, तुरन्त उसकी शुद्धि करलें। दिन का दोष रात्रि प्रतिक्रमण में और रात्रि का दोष प्रातःकाल शुद्ध करलें। यदि नहीं हुआ हो तो १५ दिनों में पाक्षिक प्रतिक्रमण में करलें। यह संत-सतियों से सम्बन्धित है। लेकिन आप श्रावक हैं। गृहस्थ जीवन में रहकर हरेक के साथ कषायों में जूझने का मौका आता है। लेन-देन में लड़ाई-झगड़े का मौका आ जाता है और कभी हाथापाई करने का भी मौका आ जाता है। ऐसा मौका आना कोई असम्भव बात नहीं है। लेकिन आये हुए मौके का असर टिकाकर रखना अच्छा नहीं है। यदि श्रावक देशव्रती रहना चाहता है तो एक दिन में उपशम नहीं भी कर सका तो १५ दिनों में दोषों को साफ करले। यदि १५ दिनों में साफ नहीं किया तो कम से कम चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में तो खमतखामणा कर ही ले। क्रोध और कषायों को शान्त करले तो श्रावकपना रहेगा। १५ दिनों में शुद्धि करने वाला 'साधु' होगा और चार महीनों में संशोधन करने वाला होगा "श्रावक"। यदि चार महीने हो गये फिर भी जिसके साथ बोल-चाल बन्द हो गई उस तरफ नजर उठाकर देखा नहीं, उसके साथ संभाषण नहीं करना, ऐसी यदि "मनोवृत्ति" किसी भाई बहिन की रहती है तो समझना चाहिये कि उसका देशव्रती श्रावकपना खतरे में है। आपके समक्ष एक छोटा सा उदाहरण रखता हूं।

उदयन और अभीचकुमार का दृष्टान्त :

उदयन राजा के लड़के का नाम अभीचकुमार था। महावीर की वाणी सुनकर उदयन को वैराग्य हो गया और उसने सोचा कि अपनी आत्मा का हित साधना चाहिये।

पहले के लोग जीवन की शुद्धि के लिए आत्मिक चिन्तन करते थे, अपने कुटुम्ब में ही रमे ही हुए नहीं रहते थे। उदयन को वैराग्य हुआ और उसने सोचा कि दीक्षा लेनी चाहिये। उसके मन में भावना आई कि अभीचकुमार को उत्तराधिकारी बनाकर फिर दीक्षा लूंगा। लेकिन चलते-चलते उसके विचारों में परिवर्तन आया कि अचीभकुमार कोमल मनवाला है। वह राज्य में आसक्त हो गया तो जीवन और गति बिगड़ जायगी। अतः मैं अपने भानजे केशीकुमार को राज्य देदूं तो अभीचकुमार की कोमलता का संशोधन हो सकता है। ऐसा सोचकर उसने अपना राज्य बड़े लड़के को देने के बजाय भानजे केशीकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दे दिया। उत्तराधिकारी लड़का था लेकिन उसने अपने भानजे को जिसे लड़के के तुल्य पाला था, यह सोचकर कि केशी का मन सबल है अतः यह भोग में आसक्त नहीं होगा, उसने अपना राज्य भानजे को दे दिया।

धार्मिक वातावरण में पले हुए लड़के की कैसी सुन्दर हालत होती है यह अभीच के व्यवहार से ज्ञात होगी। अभीच ने अपना अधिकार छीना जाने पर विरोध नहीं किया। जो कुछ पिता ने कर दिया वह ठीक है। वे बड़े हैं, उनको अधिकार है कि वे किसी को भी राज्य पर अभिषिक्त करें। उसने बिना कोई विरोध प्रदर्शित किये अपने परिवार सहित चम्पा को प्रस्थान कर दिया। वहां जाकर वह श्रावक-धर्म की पालना करने लगा। पर्व तिथि को पौषध करता—प्रतिक्रमण भी करता, परन्तु साधुओं के वन्दन करते समय उदयन मुनि को वन्दन नहीं करता। धर्म करते हुए भी उसके मन में उदयन मुनि के प्रति रोष बना रहा। जीवन भर पौषध प्रतिक्रमण करता रहा। अन्त समय में उसने १५ दिन का संथारा भी किया परन्तु वैर भाव की आलोचना नहीं करने से असुर योनि में चला गया, उसकी गति बिगड़ गई। उसे वैमानिक देव होना चाहिये था लेकिन वह असुर योनि में गया। दोष को दबाये रखने वाला धर्म की आराधना नहीं कर सकता।

आम का अल्प वयस्क पेड़

□ ललिता कोठारी

एक दिन मनुष्य ने आम के अल्प वयस्क पेड़ से कहा—"तुम्हारे मालिक ने तुम्हारे चारों ओर कंटीली झाड़ियों की बाड़ लगाकर तुम्हें कैदी बनाकर अच्छा नहीं किया।"

आम के अल्प वयस्क पेड़ ने उत्तर दिया—"मेरे भोले मित्र! तुम मेरे मालिक को बुरा मत कहो। उनका मेरे ऊपर असीम उपकार है मुझे कंटीली बाड़ में कैदी बनाकर। तुम उनके उपकार को समझ नहीं सके।"

मनुष्य—"कैदी बनाने पर भी मालिक का उपकार, वह कैसे ?"

मनुष्य को समझाते हुए वह बोला—"प्रिय जिज्ञासु मित्रवर! यदि मेरे मालिक ने मेरे बाड़ नहीं लगाई होती तो मुझे कोई भी पशु नष्ट कर देता। मैं अब तक इस बाड़ के कारण ही सुरक्षित रहा हूं।"

"आप भी यदि अपने को अशुभ कर्म रूपी पशुओं द्वारा, मनुष्य योनि प्राप्त पेड़ को नष्ट होने से बचाना चाहते हो तो, अपने धर्मगुरु से सम्यक्त्व रूपी बाड़ लगवा सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

—सेवकों की गली, बड़ीसादड़ी-312 403

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयमी महान् बनता है

□ राजकुमार जैन 'राजन्'

अपने अध्ययन के दिनों में नेपोलियन को एक बार अक्लोनी नामक स्थान में एक नाई के घर रहना पड़ा था। नेपोलियन बहुत सुन्दर युवक था और उसकी आकृति सुकुमार थी। नाई की स्त्री उस पर मुग्ध हो गई और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करने लगी, किन्तु नेपोलियन को तो अपनी पुस्तकों से अवकाश ही नहीं था।

वह स्त्री उनसे हँसने-बोलने का प्रयत्न करती, तभी उन्हें किसी पुस्तक को पढ़ने में निमग्न पाती।

वही नेपोलियन जब देश के प्रधान सेनापति चुने गये, तब फिर उस स्थान पर एकबार गये। नाई की स्त्री दुकान पर बैठी थी। वे उसके सामने जा खड़े हुए और बोले—"तुम्हारे यहां एक बोनापार्ट नाम का युवक रहता था, कुछ स्मरण हैं तुम्हें उसका ?"

नाई की स्त्री झुंझलाकर बोली—"रहने भी दीजिये, महोदय ! ऐसे नीरस व्यक्ति की मैं चर्चा करना नहीं चाहती। उसे न गाना आता था, न नाचना। किसी से मुँह भर मीठी बात करना तो उसने सीखा ही न था। वह तो बस पुस्तकों का कीड़ा था।"

नेपोलियन हँसे—"ठीक कहती हो देवी ! संयम ही मनुष्य को महान् बनाता है। बोनापार्ट तुम्हारी रसिकता में उलझ गया होता, तो देश का प्रधान सेनापति होकर आज तुम्हारे सामने खड़ा नहीं होता।"

अहिंसा

अहिंसा का ज्ञान,
जीव मात्र से
प्रेम का पैगाम।

सत्य

सत्य,
समय की धार में
बहकर भी
अप्रभावित
शाश्वत तथ्य।

□ श्री रमेश 'मयंक'
बी-८, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक

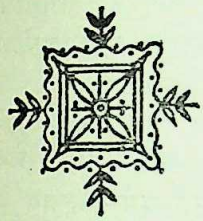

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना

☐ श्री रतन मुनि

मनुष्य के जीवन-दर्शन का व्यवहार रूप धर्म है। धर्म सर्व श्रेयकारी तत्त्वों से युक्त रहता है। धर्म मनुष्य के जीवन को चिन्तन देता है, समझ देता है, उसकी सीमा रेखाएँ निर्धारित करता है। धर्म मनुष्य को दायरा देता है और संरक्षण भी देता है। धर्म एक श्रद्धा है, आस्था है, विश्वास है, प्रकाश है। पर धर्मान्धता जहर है, अंधकार है। जो धर्म दूसरों को बाधा पहुँचाए, वह धर्म नहीं, अधर्म है।

धर्म किसी के भी साथ जुड़कर उसका पूरक बनता है। दर्शन तर्क है, तो धर्म आस्था है। विज्ञान सत्य है तो धर्म सत्यं, शिवं, सुन्दरम् है। धर्म वस्तुतः एक है और वह है मानव-धर्म। पर सम्प्रदायों व जातिगत संदर्भों ने भी आगे चलकर धर्म के दायरों में प्रवेश पा लिया। इन अर्थों में अनेक धर्मों की अवस्थिति हुई। वे छिटके हुए रूप में एक ही समग्रता के पृथक् भेद हैं। महात्मा गांधी ने इस संदर्भ में अच्छी बात कही है—

"सब धर्म एक दूसरे से गुंथे हुए हैं। सब ही कोई न कोई विशेषता लिए हैं। पर एक भी धर्म दूसरे से बढ़ता हुआ नहीं है। ऐसा मेरा मानना है कि सब धर्म एक दूसरे की कमी पूरी करते हैं। इसलिए किसी धर्म की विशेषता दूसरे के खिलाफ नहीं हो सकती।"

अब जब पृथक्ता इतनी विशद हो गई है और हम कहें कि यह एक्यता वाली बात मात्र आदर्श है तो हम इस विविधता में भी एकता को अलग रूप में यूँ देख सकते हैं—

गवामनेक वर्णानां क्षीरस्यास्त्येक वर्णता।
तथैव सर्वेधर्माणां तत्त्वस्यास्त्येक वस्तुता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—गाएं अनेक रंगों की हैं पर उनका दूध एक ही रंग का होता है। धर्म और भाषाएं भी अनेक हैं पर तत्त्व सबका एक है।

अब जब हमने पृथक्ता, विविधता पर मोहर लगा दी हैं तो बात उठी समन्वय की। इसके लिए कहा जा सकता है जिसकी दृष्टि सम्यक् है, समन्वय प्रधान है, अनेकांतवादी है उसके लिए प्रत्येक धर्म, प्रत्येक शास्त्र और प्रत्येक क्रिया सम्यक्, विशुद्ध हो सकती है। एक जैनाचार्य का कथन दृष्टव्य है—

"समन्वय दृष्टि में समभाव बसता है, समभाव में सबके प्रति प्रेम झलकता है, प्रेम भावना पत्थर को भी मोम बना देती है। सर्व-धर्म-समन्वय में हम देखते हैं कई लाभ हैं इससे सहयोग, सहानुभूति व मैत्री की लब्धि सभी को होती है। इससे आत्मशांति, सत्यता व सहिष्णुता की भी प्राप्ति होती है।"

यहाँ यह दृष्टव्य है कि हमने समन्वय की बात कही है, धर्म के विलीनीकरण की बात नहीं कही है। यदि विलीनीकरण की बात कहें तो आज उसे कोई स्वीकारेगा नहीं, क्योंकि सबने अपने-अपने अस्तित्व को पुष्टता दे दी है। अतः हमने समन्वय का सूत्र खोजा है। समन्वय का अर्थ अपने अस्तित्व का विलीनीकरण अथवा किसी अन्य का अनुकरण नहीं है। भिन्न विचार, भिन्न आचार, भिन्न अस्तित्व के परिवेश में जो भावात्मक एकता है, समरसता है, वही समन्वय है। इस प्रकार विविधता समन्वय में कतई बाधक नहीं है। उलझन भिन्नता के आग्रह से होती है।

धर्मो यो बाधते धर्म, न धर्मः कुधर्म तत् ।
धर्माविरोधी यो धर्मः, स धर्मः सत्यविक्रम ।।

जो धर्म दूसरे धर्म को बाधा पहुँचाता है, वह धर्म नहीं कुधर्म है। जो धर्म का अविरोधी है, वही धर्म सत्य पराक्रमशील है।

मतवैभिन्य, धार्मिक विवादों की परिशांति तथा एकांतिक मतों के मध्य समन्वय करने की दिशा में अनेकांतवाद का प्रतिपादन जैनाचार्यों का एक सफल प्रयास है। भगवान् महावीर ने इसकी प्रतीति की, उद्बोधन दिया, दृष्टांत दिये। जैनाचार्यों ने इसे शास्त्रीय स्वरूप दिया और इसका प्रचार किया। अनेकांतवाद में निष्पक्षता का पूरा-पूरा अवकाश है। जो लोग एकांतिक व परस्पर उलझे हैं वे कट्टरता के परिपोषक हैं और वे समन्वय पर आघात करते हैं।

स्वयं जैनों में भी जहां इस सिद्धांत की अवहेलना हुई है वहां कठिनाइयां व साम्प्रदायिकता उद्भूत हुई है। वस्तुतः अनेकांत जैन दर्शन का वैशिष्ट्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इस दर्शन को व्यापक, उदारचेता और सहिष्णु बनाता है, उसे ग्राह्य बनाता है। यह अन्य मतावलम्बियों के दृष्टिकोण का सम्मान करने की सीख देता है। यह दर्शन अनेकांतवादी को कदाग्रही होने से बचाता है।

ऊपर हमने कहा है कि सभी धर्म तत्त्वत: एक हैं। यह कथन उनमें समता, समानता दर्शाता है। इस कथन में कितनी सच्चाई है, यह समझाने के लिए हम परीक्षण करते हैं।

तीन प्रकार के तत्त्व पाश्चात्य विचारकों ने धर्म के माने हैं, वे हैं भावना, बुद्धि और क्रिया। यही बात जैन दृष्टि में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा और सम्यक् चारित्र के रूप में आई। हिन्दू धर्म में इसे ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग व कर्म मार्ग का रूप दिया तो इस्लाम मजहब में मारफत, तरीकत और शरीअत तथा सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् व्यायाम रूप में बौद्ध धर्म में मान्य है। पारसी धर्म में हुमका (पवित्र विचार) हक्का (पवित्र वाणी) और हर्षता (पवित्र कर्म) का जिक्र है। महाभारत में अपनी वाणी, अपने मन और अपने शरीर को बुद्धि के वश में रखने की नियोजना है। इस प्रकार त्रयी में सारा विश्व समाया हुआ है।

संसार के सभी धर्मों में सदाचार को महत्त्व दिया गया है—

हिन्दू धर्म के यम-नियम, बुद्ध धर्म के पंचशील, जैन धर्म के पंच महाव्रत, हजरत मूसा और ईसा के धर्मोपदेशों व कुरान की आयतों में समानता है। सभी धर्मों में कर्म की व्यापक व्याख्या हुई है। चाहे वह बाईबिल हो, कुरान हो, गाथा (पारसी) हो, महावग्ग (बौद्ध) हो या चीन के कन्फ्यूशियस के सिद्धांत हों।

सभी धर्मों में अंतिम लक्ष्य भी एकरूपता लिये हुए है। वैदिक, जैन, बौद्ध इसे मुक्ति या निर्वाण की संज्ञा देते हैं तो इस्लाम में इसे नजात या फना होना निरूपित किया है। यहूदी इसे प्रेम का महल कहते हैं और इसाई स्वर्ग का राज बतलाते हैं। सब वहीं पहुँचने की बात कहते हैं, जहां से प्रारम्भ हुआ है। इसे आत्मपरिणति कहा जा सकता है।

जैन ग्रंथ 'ज्ञानार्णव' में कहा है—यही सबसे बड़ा ज्ञान कहा गया है, यही विज्ञान है, यही ध्यान है, यही परमतप है, आत्मा की अपनी पहचान और अंतत: अपने रूप में लीन होना है। कुरान कहता है—"हम सब अल्लाह से आए हैं और लौटकर अल्लाह में जा मिलेंगे।" पारसी गाथा में उल्लिखित है—"ज्ञान और बढ़ते हुए विचारों के जोर से ए अहुरमज्द हम तुमसे आ मिलेंगे।" यहूदी ग्रंथ में भी ऐसा ही उल्लेख है—"दुनिया की सब चीजें, बस रुहें और उनके सब जिस्म अपने जिस असल से निकले हों, उसी में जा मिलेंगे।" उपनिषद् में आत्मा की तह में पहुँचने का निर्देश है—"अपनी आत्मा को जानो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा ही जानने की चीज है, आत्मा को ही ढूंढो। जिसने आत्मा को जान लिया, सारी दुनिया को जान लिया। सच पूछा जाय तो आत्मा ही देखने की, सुनने की व समझने की एवं ध्यान करने की चीज है। वस्तुतः आत्मा के सिवाय कुछ है ही नहीं।"

मानवीय आत्मा की श्रेष्ठता दर्शाता योगी आनन्दघन का कथन द्रष्टव्य है—

राम कहो, रहमान कहो, कोऊ कान्ह कहो महादेव री ।
पारसनाथ कहो, कोई ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेव री ।।

इस कथन में सर्वधर्म समन्वय की खुशबू पगी हुई है। जैनधर्म में काफी उदारता विद्यमान रही है। यहाँ तक कहा गया है कि—सभी दर्शनों का एकत्र होना ही वास्तव में जैन दर्शन है। वेदांत का अव्दैत, जैन दर्शन का संग्रह नय है। चार्वाक का भौतिक दृष्टिकोण, जैन दर्शन का व्यवहार नय है। बौद्धों का पर्यायवाद जैन दर्शन का ऋजु सूत्र है। वैयाकरणों का शब्दाव्दैत, जैन दर्शन का शब्द नय है। इससे यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि जैन दर्शन ने यह सब इन दर्शनों से बाद में ग्रहण किया। यह साम्य पृथक् विकास होकर भी हो सकता है। परस्पर संगति से भी सम्भव है और प्राचीन पुष्ट जैन धर्म से अन्यों द्वारा ग्रहण किया भी हो सकता है।

भगवान महावीर को समझने वाला, सामान्यवादी, वैदांती, विशेषवादी बौद्ध का समर्थन या विरोध नहीं कर सकता। वह दोनों में समन्वय देखता है, संगति देखता है। वस्तुतः अपने धर्म की प्रशंसा और दूसरे धर्म की निन्दा कर कोई अपने ही धर्म का अहित करता है, उसी पर घात करता है।

भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है कि उसने हर आगन्तुक का आतिथ्य किया, उसे अपने में पचा लिया, स्वयं उसमें रच पच गई। श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' ने 'भारतीय संस्कृति' में समुद्र की विशदता आंकी है—

जो भी जातियां इस देश में आई, वे भारतीय संस्कृति के समुद्र में एक के बाद एक विलीन होती चली गई।

सी. ई. एम. जोड़ का कहना भी इस संदर्भ में अर्थपूर्ण है—

मानव जाति को भारतवासियों ने जो सबसे बड़ी चीज वरदान के रूप में दी है वह यह कि भारतवासी हमेशा ही अनेक जातियों के अनेक प्रकार के विचारों के बीच समन्वय करने को तैयार रहे हैं।

हमें आज भी उसी तत्परता को कायम रखना है और सर्व-धर्म-समन्वय के लिए अपने को प्रस्तुत करते रहना है। इस अपनत्व को जीवंत रखना है और इसी के अनुरूप जीवन व्यवहार करना है। इसी में मानवता की भलाई है। □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरावलोकन :

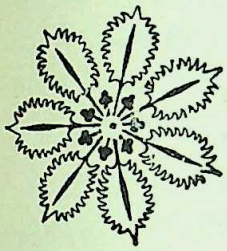

श्रावक का आचार एवं हम

□ श्रीमती स्नेहलता सहलोत

जैन संघ के चार अंग बताए गए हैं। (i) साधु (ii) साध्वी (iii) श्रावक एवं (iv) श्राविका। श्रावक से अभिप्राय गृहस्थ पुरुष से है एवं श्राविका से अभिप्राय गृहस्थ स्त्री से।

श्रावक एवं श्राविका का जैन संघ में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके अभाव में मुनि-आश्रम अग्रसर नहीं हो सकता है। अतः जैन गृहस्थ का आचार एक प्रकार से मुनि आचार का नींव रूप है, जिसके ऊपर मुनि आचार का भव्य प्रासाद खड़ा होता है। अगर जैन गृहस्थ का आचार कमजोर है तो मुनि आचार का प्रासाद ध्वंस हो जाएगा। अतः हमें एक आदर्श श्रावक के चारित्र का पालन करना चाहिए जिससे मुनि आचार भी सशक्त बने।

हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि एक आदर्श श्रावक का चारित्र क्या है? तदनन्तर उसे हम अपने जीवन में स्थान दें।

श्रावक का चारित्र :

जैन गृहस्थ के ८ मूल गुण होते हैं। (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अचौर्य (iv) ब्रह्मचर्य (v) अपरिग्रह का एक देश पालन तथा (vi) मांस (vii) मधु एवं (viii) मदिरा का सर्वथा त्याग। ये मूल गुण हैं जो कि आगे बढ़ने के लिए जड़ रूप हैं। इनके अभाव में कोई जैन श्रावक नहीं कहा जा सकता।

महाकवि वादीभसिंह सूरि ने अपने क्षेत्र चूड़ामणि काव्य में अष्ट मूल गुणों का उल्लेख किया है—

"अहिंसा सत्यमस्तेयं स्वस्त्रीमितवसुग्रहौ।
मद्यमांस मधुत्यागैस्तेषां मूलगुणाष्टकम्॥

महाकवि हरिचन्द्र ने भी पंचोदुम्बर, मद्य, मांस तथा मधु त्याग को अष्टमल गुण बताया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मधुमांसासवत्यागः पञ्चोदुम्बरवर्जनम् ।
अमी मूल गुणाः सम्यग्दृष्टेरष्टो प्रकीर्तिताः ।।"
[धर्मशर्माभ्युदय]

श्रावक को सप्त व्यसन त्याग भी करना चाहिए । कहा भी है—

"द्यूतं मांस सुरा वेश्या पापर्धिः स्तेयवृत्तिता ।
परदाराभियोगश्च त्याज्यो धर्म धुरन्धरैः ।।
मोहादभूति यः सप्तव्यसनान्यत्र सेवंते ।
अपारे दुःखकान्तारे संसारे बम्भ्रमीति सः ।।"

ये तो श्रावक के मूल गुण हैं । इनके अतिरिक्त ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत एवं ४ शिक्षाव्रत हैं । ५ अणुव्रत मूल गुणों में आ गए हैं । आरंभ के सिवा अन्य कार्यों में होने वाली हिंसा (संकल्पी हिंसा) का त्याग करना अहिंसा-अणुव्रत है । स्वयं झूठ नहीं बोलना, न दूसरों से बुलवाना सत्याणुव्रत है । किसी की गिरी पड़ी या भूली हुई वस्तु को न स्वयं लेना, न प्रेरित करना अचौर्याणुव्रत है । स्वविवाहित पत्नी के अतिरिक्त संसार की अन्य स्त्रियों को माँ, बहन और पुत्री के समान समझना ब्रह्मचर्याणुव्रत है । आवश्यकता को कम करते हुए भोगोपभोग की सामग्री की मर्यादा करना और अवशेष परिग्रह का त्याग करना परिग्रह परिमाण व्रत है । दिग्, देश और अनर्थदण्डों से मन, वचन और काय-पूर्वक निवृत्त होना तीन गुण व्रत हैं । सामायिक, पौषधोपवास, भोगपभोग परिमाण एवं अतिथि संविभाग शिक्षा व्रत हैं ।

दान, शील, तप और सद्भावना इन चार तत्त्वों का निर्देश पद्मानन्द, शान्तिनाथ चरित, एवं अभयकुमार चरित काव्यों में आया है । संग्रह एवं अर्जन का जितना मूल्य है उससे भी अधिक दान का । प्रकृति ने स्वभाव से ही जीवन मात्र को दानी बनाया है । जो केवल बटोरता है, बाँटना नहीं जानता, उसके जीवन में आनन्द नहीं आ सकता । दान से सच्चा संतोष प्राप्त होता है । अतः सदा यह ध्यान रहना चाहिए कि संचय का उद्देश्य संचयमात्र न हो अपितु दान देना भी हो । जो अपने ही स्वार्थों, अपनी ही मान्यताओं में बंधा रहता है, वह व्यक्ति दान नहीं दे सकता है ।

शील जीवन का मूल्य है । इसमें कर्त्तृत्व, भोक्तृत्व एवं ज्ञातृत्व इन तीनों गुणों की सम्पृक्त अन्विति विद्यमान है । जीवन के बनावटी व्यवहारों का त्याग करके सच्चे हृदय से सभी के प्रति निर्मल भावना रखना सद्भावना है । ईर्ष्या, राग-द्वेष, घृणा आदि का त्याग सद्भावना से होता है ।

उपर्युक्त एक आदर्श श्रावक का आचार है । उसके गुण हैं । इन सभी के अभाव में जैन गृहस्थ आदर्श श्रावक की श्रेणी में नहीं आ सकता है । आज ऐसे आदर्श श्रावक ईद के चाँद हैं अर्थात् इने गिने प्राप्त होते हैं । आज मानव की भोग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिप्सा एवं स्वार्थपरक प्रवृत्तियाँ इतनी प्रबल हो गई हैं कि वह स्वार्थान्ध होकर अपने गुण एवं कर्त्तव्यों को भूल गया है या तिलाञ्जलि दे दी है। उसका आराध्य काम एवं अर्थ रह गया है। यदि वह धर्माचरण भी करता है तो उसी की पूर्ति के लिए। न उसे न्याय का विचार है और न अन्याय का। न उसे दया से प्रेम है न पाप से घृणा। वह इन्द्रियों का दास बन गया है तथा उसी की तुष्टि के लिए वह सब कुछ करता रहता है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में व्यक्ति बिना कार्य के फल की कामना करता है। वह उद्यम करने में कतराता है। इसी का एक परिणाम दहेज प्रथा है। इस प्रथा से व्यक्ति अपनी मनोवांछित वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा गलत कदम उठाने को भी तत्पर हो जाता है क्योंकि उनके नैतिक मूल्यों (गुणों) का ह्रास हो गया है। उसे अच्छा-भला का ज्ञान नहीं है। वह अपना विवेक खो बैठा है। मेरा क्या कर्त्तव्य है? क्या दायित्व है? लोगों के प्रति मेरा किस प्रकार का व्यवहार हो? आदि बातों का आज के मानव में अभाव है। वह तो सिर्फ अपने ही कार्य की पूर्ति एवं सुरक्षा के लिए तत्पर रहता है। वह मानव को दानव समझ कर व्यवहार करता है।

आज आदर्श श्रावक के गुणों पर धूल की परत चढ़ गई है। अतः अब हमें उस धूल की परत को हटा कर उसके गुणों को जीवन में उतारना होगा। आज का युवा-वर्ग इस बात को स्वीकार नहीं करता है कि आधुनिक युग में सभी गुण जीवन में लाए जा सकते हैं एवं उन पर अमल किया जा सकता है। यह ठीक है कि सभी गुण जीवन में उतारने में संभव न हों। लेकिन कुछ तो हो ही सकते हैं। उदाहरणार्थ—अहिंसा व्रत है। इसमें हमारा यह कर्तव्य है कि बिना प्रयोजन के किसी जीव की हत्या न करें। जैसे जहाँ एक गिलास पानी से कार्य किया जा सकता है, वहाँ एक लोटा पानी गिराने से क्या फायदा? अतः हमें चाहिए कि हम व्यर्थ की हिंसा से दूर रहें। मद्य, मांस आदि का त्याग तो आवश्यक है ही। इसके साथ ही रात्रि भोजन का भी त्याग करना चाहिए। रात्रि में बिजली की रोशनी में भो सब्जी में कीड़े-मकोड़े गिर जाते हैं तथा वे दिखाई न देकर पेट में चले जाते हैं जिनसे विविध रोग उत्पन्न हो जाते हैं। स्वास्थ्य के अनुसार भी सूर्य की रोशनी में भोजन करना उत्तम रहता है। व्यर्थ के दिखावे से दूर रहना चाहिए।

इसी प्रकार भोगोपभोग व्रत में भी परिग्रह की मर्यादा कर सकते हैं। एक ओर तो व्यक्ति को पहनने के लिए वस्त्र नहीं मिल रहे हैं तो दूसरी ओर हम अपनी आवश्यकता से भी ज्यादा वस्त्र इकट्ठे करने में लगे हैं। यह उचित नहीं है। अतः हमें अर्जन के साथ-साथ कुछ दान-पुण्य आदि कार्य करना चाहिए। अगर अपने पास धन दौलत है तो उसे सत्कार्यों में लगाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीन-दुखी की सहायता में तत्पर रहना चाहिए। उनके सहायतार्थ स्कूल, औषधालय आदि की व्यवस्था भी की जा सकती है। अतः हमें सद्भावना बनाई रखनी चाहिए। अपने नैतिक मूल्यों पर अवलोकन कर उनमें ह्रास नहीं आने का प्रयत्न करना चाहिए।

तपस्या से भी शरीर स्वस्थ बनता है। अतः अपनी सामर्थ्य शक्ति के अनुसार तप-त्याग करना चाहिए। जहाँ तक संभव हो वहाँ तक प्रतिदिन एक शुद्ध सामायिक का प्रत्याख्यान अवश्य करना चाहिए। सामायिक से चित्त एकाग्र बनता है एवं समभाव स्थापित होता है।

आज, अगर हम अपने श्रावक-आचार पर दृढ़ रहें तो मुनि धर्म भी दृढ़ बनेगा। साथ ही विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

आज अपने समाज में विभिन्न कुरीतियाँ एवं प्रथाएँ प्रचलित हैं। जैसे—दहेज प्रथा, मृत्यु भोज (१२ वां), मरण तिथि पर भोजन का आयोजन करना एवं मरण पर तीन-चार माह तक खाना खाने से पहले रुदन करना आदि। ये सब गलत प्रथा हैं। दहेज प्रथा ने निम्न एवं मध्यम वर्ग को कुचल दिया है। अगर दहेज दें तो जीवन भर तक ऋण का बोझ तथा दहेज के अभाव में अपनी लड़की को कुँआरी रखना पड़ता है। विचित्र स्थिति है। इधर मृत्यु भोज। एक ओर तो शोक प्रकट करते हैं तथा दूसरी ओर मुँह में लड्डू देते हैं। कितनी हास्यास्पद बात है एवं कहते हैं कि ऐसा करने से मृत व्यक्ति को पुण्य की प्राप्ति होती है। जैन धर्म के अनुसार जीते जी व्यक्ति अपने हाथों से जो शुभाशुभ कार्य करता है, उसी का परिणाम उसे प्राप्त होगा, मृत्य बाद नहीं। पुरानी परम्पराओं में ग्रसित व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन करना अत्यन्त आवश्यक है, वे स्वयं सोचें समझें तो यथार्थ का अनुभव हो जाएगा।

इसी प्रकार लम्बे समय तक किसी से मिलने के समय भी जोर-जोर से (मरण-शोक) रोना, चिल्लाना आदि से कर्म बन्धन होते हैं। केवल रुदन मात्र से ही व्यक्ति की गरिमा नहीं बनती है। दुःख है तो दिल में। उसे लम्बे समय तक आलाप करने एवं प्रकट करने से क्या फायदा ? इसी प्रकार मृत व्यक्ति की वर्षी की जाती है। इस समय सभी बहन-बेटी आदि को खाना खिलाने का प्रोग्राम किया जाता है। इसके पीछे भी यही अन्धविश्वास है कि मृत आत्मा को शांति मिलेगी तथा उसके लिए आगे द्वार खुले मिलेंगे। इन सभी कुप्रथाओं से मध्यम एवं निम्न वर्ग की स्थिति चिन्ताजनक बन गई है। अतः हमें इन सभी को दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील बनना है तथा यह तभी संभव है जब हम श्रावक आचार को समझें और उसे जीवन में स्थान देकर देश व समाज में चार चाँद लगा दें।

—रवीन्द्रनगर, उदयपुर—३१३ ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म का स्वरूप

☐ श्री राजकुमार जैन 'राजन'

व्यक्ति, जाति और राष्ट्र की उन्नति धर्म के सिद्धान्तों और विशुद्ध आचरणों पर ही निर्भर करती है। किन्तु यह तभी संभव होगा जब युग धर्म, व्यक्ति धर्म और जाति धर्म में सामन्जस्य उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाए। धर्म मानव भक्ति है। इसलिए धर्महीन नीति को अपनाने में मानव का लाभ नहीं। धर्महीन नीति और राजनीति दोनों ही मत्युपाश के समान हैं क्योंकि उसमें आत्मा का हनन होता है।

उपनिषद्-आगम प्रदर्शित धर्म मार्ग में ज्ञान, भक्ति और कर्म का सामंजस्य है। ये तीनों परस्पर एक दूसरे के पूरक बनकर मनुष्य जाति तथा मानव समाज की उन्नति में सहायक होते हैं। यदि सर्वव्यापी और सर्वजन सम्मत सनातन सत्य का आचरण करना है, तो इसे पहले सच्चे धर्म सिद्धान्तों पर प्रतिष्ठापित करना होगा।

जिस जाति में चिन्तन प्रणाली का मूल मन्त्र 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' है, उस जाति में ज्ञान पिपासा, वैराग्य और संन्यास-प्रियता का होना स्वाभाविक है। किन्तु यह सिद्धान्त जीवन सत्य के एक पक्ष से उदासीन है। मनुष्य के जीवन में ज्ञान पिपासा के साथ-साथ और भी बहुत सी प्रबल और उपयोगी वृत्तियाँ क्रीड़ा करती हैं। उन सबकी उपेक्षा करके, कोई भी व्यक्ति, जाति और समाज के धरातल पर अपना अस्तित्व चिरकाल तक नहीं रख सकता। इस सिद्धान्त को समझने में प्रायः भ्रम भी हो जाया करता है। 'ब्रह्म सत्य है' इस सत्य का कोई भी खण्डन नहीं कर सकता। 'जगत् मिथ्या है' यह सिद्धान्त भी सत्य है किन्तु यह सिद्धान्त विषय-वासनाओं के प्रति साधक के हृदय में उदासीनता एवम् वैराग्य प्रकट करने के लिए बनाया गया है न कि उस जगत् के प्रति जो कि हमारे जीवन में साधन-सामग्री प्रदान करता है। यह निर्भ्रान्त सत्य है कि बिना साधनों के मनुष्य उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सकता। जब तक मनुष्य स्वार्थ और वासनाओं के सामन्जस्य में निवास करता है और उसको एक मात्र सत्य मानकर चलता है, तब तक वह 'जगत् मिथ्या' की कल्पना नहीं कर सकता। इसलिए धर्म का आदेश है कि महापुरुषों को वही आचरण करना चाहिये जो व्यवहार में शुद्ध हो, और सबके लिए अनुकरणीय भी हो। जनता

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी वही आचरण करना चाहिये जो कि उसके लिए हितकर और उपयोगी हो।

धर्म एक व्यापक शब्द है। जैसे जीव के ऊपर दया करना धर्म है, परमार्थ पथ पर मनुष्य अपने प्राणों की आहूति दे देता है, वह उसको धर्म मानता है। उच्च और श्रेष्ठ धर्म यह है कि हम ईश्वर-अर्पण बुद्धि से निःस्वार्थ होकर मानव-समाज के लिए कर्तव्य पालन करते रहें। इस प्रकार हमारे सभी कार्य धार्मिक होने चाहिये। हमारा समस्त जीवन धर्म है और धर्म को ही जीवन बना लेना चाहिये। अर्थात् जो कुछ हम करते हैं, उन सभी क्रियाओं में पहले मन की वासना और आसक्ति को त्याग कर कर्म के स्रोत से जो कुछ मिल जाए, उसको अर्पण बुद्धि से भोग करते रहना ही धर्म है। वासना का त्याग ही सच्चा त्याग है। साधनों का निर्माण करना धर्म का एक अंग है। 'यतो धर्मः ततो जयः' जहाँ धर्म होता है वहीं विजय होती है। किन्तु धर्म के पीछे शक्ति भी होनी चाहिये अन्यथा मनुष्य, धर्म का उत्थान और धर्म मनुष्य की उन्नति नहीं कर सकता। यह हमारे धर्म का संक्षेप में आदेश है कि 'चिरजीवी रहो और सबको जीवन प्रदान करो।'

आज कितना आधिभौतिक सभ्यता से मन अशान्त है उससे अधिक रूढ़ि और वासनाओं की पूजा ने भी मानव को नास्तिकता और अविश्वास के गर्त में डाल दिया है। धर्म की हानि अन्धविश्वासियों और उनके गुरुओं ने की है, जिससे जनसाधारण को यह ज्ञान नहीं हो पाता कि धर्म क्या है, और उसका मानव-जीवन में क्या स्थान है? जिस धर्म को समझने के लिए कर्तव्य त्याग कर वन-वन डोलना पड़े, क्या वह धर्म कहा जा सकता है? जिसमें गिरे हुए मनुष्यों के उत्थान के लिए नियम ही नहीं, वह भी क्या धर्म है? धर्म तो प्रगतिशील साधनों और अनुभवों से उत्पन्न वह विभूति है जिसके आलिंगन करने से मानव प्रगति पथ पर अग्रसर होने लगता है। धर्म समानता, एकता और पुरुषार्थ आदि सद्गणों से मनुष्य को दीक्षित करता है।

धर्म मानव-जीवन के कल्याण में सदा सहायक रहा है, लेकिन मनुष्य को पहले उसे अपनाने की आवश्यकता पड़ती है। अधर्मी बनकर कुछ भी प्राप्त नहीं होता। धर्म पालन करने वाला सदा शान्त बना रहता है। धर्म के प्रति विद्रोह की भावना मन में रखकर मनुष्य सुखी नहीं रह सकता। किन्तु ऐसा धर्म गोपनीय नहीं है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने सत्य ही जाना है और अपनी अनुभूति के प्रसाद को मानव जगत् को वितरित किया है। गीता, बाईबिल, कुरान, धम्मपद, जैनागम आदि जितने ग्रन्थ हैं, उनमें ज्ञान सूर्य की तरह सबके लिए प्रकाशित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म सिद्धान्त और विश्वास से अधिक आचरण में बसता है। यदि हम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं तो हमारे आचरण में उसका पूर्णरूपेण प्रमाण मिलना ही चाहिये। ऐसा नहीं हो सकता कि हमारे सिद्धान्त उच्चादर्शों से भरपूर हों और हमारे आचरण भ्रष्ट एवम् निषिद्ध हों और फिर भी हम धार्मिक बने रहें। शुभ आदर्शमय सिद्धान्तों के अनुरूप ही आचरण होना चाहिए क्योंकि आचरण के बिना सिद्धान्त व्यर्थ हैं, जो केवल मन बहलाव के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर सकते। रोचक गाथाओं को हम यूं ही मन बहलाने के लिए धर्म के नाम पर सुनते हैं। जैसा सिद्धान्त हो वैसा ही आचरण भी होना चाहिये। जब तक हमारे समाज में धार्मिक आदर्श नहीं अपनाएं जायेंगे तब तक शांति प्राप्त नहीं हो सकती। आज से २५०० वर्ष पूर्व हमारा धर्म जितना पुनीत था उतना ही शुद्ध हमारा कर्तव्य था। इसके बाद क्रमशः हमारे सिद्धान्त कुछ, और आचरण कुछ होते गये। हम सिद्धान्तों को अपने जीवन का आदर्श भी मानते आये हैं। आदर्श—आदर्श के लिए नहीं, अपितु जीवन उन्नत करने के लिए तथा व्यावहारिक जीवन में प्रयोग किये जाने के लिए होते हैं।

प्रत्येक आत्मा को अपने अन्दर धर्म भावनाएँ सजीव करने की आवश्यकता है। यह तभी होगा जबकि वे शास्त्रों में प्रतिपादित धर्म को जानें। यदि हम अपने गुरुओं की बहुमूल्य देन को नहीं अपनाते तो भारत पर अन्ध-विश्वासों का तिमिराच्छादन सदा ही बना रहेगा। अन्ध परम्परा बुद्धि को कुण्ठित करती है। शास्त्रोक्त धर्म तो सन्देह और तर्क करने का पूर्व आदेश देते हैं किन्तु सन्देह, सन्देह ही बनकर न रह जाय, इसका निर्णय भी होना चाहिये। **निर्णय ही तो जैन दर्शनों का सार है।** "दृश्यते, अनेन इति दर्शनम्" के सिद्धान्त में हमारी प्रत्येक शंका का धर्म-निर्णीत साधना द्वारा समाधान होना चाहिये। दर्शन का तात्पर्य इसी में है।

आज संसार के सभी धर्मों पर अंध-विश्वास का प्रगाढ़ परदा है। आज संसार में जो कोलाहल छाया है, वह वास्तव में मनुष्यों में छाये अन्तर्द्वन्द्व और मलीनता का ही प्रतिबिम्ब है। **किन्तु जैन-धर्म मानव की सभी जिज्ञासाओं का समाधान करता है। उसे कुछ निरे तर्क युक्त बुद्धि-आश्रित तार्किक दोषी भी ठहराते हैं; क्योंकि वह अति अनुभवगम्य और रहस्यमय है। जैन-धर्म की विशेषता यह है कि वह मनुष्य को शारीरिक प्रलोभनों से ऊपर उठाकर आत्म-शान्ति की ओर उन्मुख होने पर अधिक बल देता है। वह जिज्ञासाओं की पूर्ति करने एवम् अपनी गहराइयों के साथ एकाकार होने की प्रेरणा देता है। वह सहज सुखद अनुभूति की चोटी पर मानव को पहुँचाने का आदेश देता है।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव को दुःखों और पीड़ाओं से तभी मुक्ति मिल सकती है जब आत्मा अपने विकारों को नष्ट करे। स्वार्थ और क्षुद्रवासनाओं के दोषों से मनुष्य मुक्त इसलिए नहीं हो पाता कि वह अपने सिद्धान्तों को छोड़कर ऐसे सिद्धान्त अपना लेता है, जिनका आधार सत्य अनुभूति नहीं होता। यह भी एक प्रकार की नास्तिकता है कि हम धार्मिक होते हुए भी धर्माचरण नहीं कर पाते। सत्य धर्म वही है जिसे बाह्य और आभ्यन्तर जीवन में धारण कर मनुष्य आनन्द प्राप्त कर सके। सत्य धर्म के धारण करने पर ही व्यक्ति और समाज में आनन्द की वर्षा हो सकती है। अतएव धर्म पालन करना ही श्रेयस्कर है। किन्तु जिस धर्म को हम अपनाएं वह सत्य सिद्धान्तों पर प्रतिष्ठित होना चाहिये न कि अन्ध रूढ़ियों पर। धर्म इसलिए सुरक्षित नहीं रहता कि उसका अनुयायी अन्धानुकरण करता है। प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति को अन्दर से क्षुद्र दोषों को हटाकर उनके स्थानों पर सद्गुणों को स्थापित करना पड़ता है। सभी सुखों का स्रोत प्रेम-बिन्दु से बहता है, और इन्हीं स्रोतों को अपने बाह्य जीवन में बहा देना मनुष्य का सांसारिक उद्देश्य है। वह प्रेम धर्म से नितान्त अभिन्न है, इतना ही नहीं, वरन् प्रेम ही आत्मा का धर्म है। धर्म का शुद्ध स्वरूप न जानने के कारण ही आज लोक-धर्म का नाम सुनते ही लोग अपना बौद्धिक सन्तुलन खो बैठते हैं। धर्म का नाम सुनते ही वे नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि धर्म के मर्मज्ञ कहलाने वालों का स्वयं का आचरण विशुद्ध नहीं है। धर्म केवल अन्धविश्वासों पर ही जीवित है। यह दोष धर्म का नहीं वरन् उसके वर्तमान उपदेशकों का है। धर्म संयम और नियम पर निर्भर करता है, जिसकी कमी हमारे देशवासियों में सर्वत्र दृष्टिगत होती है।

आज मानव जिस धर्म में जी रहा है, वह स्वार्थपरायणता और अकर्मण्यता से निकली हुई एक विचित्र प्रणाली है, जो उसके जीवन का नेतृत्व कर रही है। जिस समाज में जर्जर रूढ़ियों का आचरण होने लगा है, उस समाज में अन्धरूढ़ि के भयंकर रोग से बीज अंकुरति होने लगते हैं। इस प्रकार के धर्म का आचरण करने से मानव का विकास अवरुद्ध हो जाता है। मानव का अर्थ ही यह होता है कि वह ऐसे विशुद्ध धर्म का पालन करे जिसके द्वारा उसे सुख-शान्ति का अनुभव हो सके, और सुन्दर भविष्य का निर्माण करते हुए वह अपने ध्येयों को प्राप्त कर सके। धर्म के सुप्रभात का उदय पुनः भारत भूमि में तब होगा जब प्रत्येक व्यक्ति में धार्मिक प्रेरणाएँ जागृत होने लगेंगी। धर्म के सम्बन्ध में कतिपय आवश्यक ज्ञातव्य बातें इस प्रकार हैं :—

१. धर्म का तात्पर्य है शरीर के स्थान पर आत्मा को स्वीकार करना। आत्मा की स्वीकृति का अर्थ है सत्य और विवेक को जीवन भर शासन करने देना, स्वार्थपरता, दरिद्रता, अविवेक एवम् काम क्रोधादि को दूर भगाना। धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निचोड़ नैतिकता के पालन में है। अपने अन्दर जितनी पवित्रता एवम् शुद्धता होगी आत्मा उतनी ही निकट ज्ञात होगी।

२. किसी भी बाल, वृद्ध, युवा पुरुष एवं स्त्री का पवित्र आचरण ही धर्म है। एक नारी पवित्र एवं स्वच्छ हो। एक बालक स्वच्छ-बुद्धिमान हो और अपने कर्तव्य का पालन करने वाला हो। एक पुरुष अपना तथा अन्य मानव का कल्याण करने में समर्थ हो। यही सच्चा धर्म है।

३. धर्म मनुष्य को सांसारिकता में विलीन होने से बचाता है। यदि धर्म अपने इस स्वभाव को समेट ले तो आसुरी शक्तियां उसका गला घोंट देंगी। धर्म ने यदि भौतिकता से समझौता कर लिया तो बहुत बुरा होगा।

४. सत्य एवं शान्ति के अनुसंधान का नाम धर्म है। धर्म का प्रारम्भ व्यष्टि से होकर उसका समापन समष्टि में होना चाहिए।

५. धर्म मनुष्य के प्रदत् जीवन के अनुसंधानों की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में धर्म किसी सम्प्रदाय या किसी ग्रंथ को सत्य का अन्तिम उद्घोष नहीं मानता।

—आकोला–३१२२०५ (चित्तौड़गढ़) राजस्थान

फार्म–४

(नियम ८ देखिये)

१.	प्रकाशन का स्थान	:	जयपुर
२.	प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	:	फ्रैण्डस प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३
४.	प्रकाशक का नाम	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	बापू बाजार, जयपुर-३०२००३
५.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. नरेन्द्र भानावत डॉ. (श्रीमती) शान्ता भानावत
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२००४
६.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल बापू बाजार, जयपुर-३०२००३ (राज.)

☐ मैं टीकमचन्द हीरावत, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सही हैं।

दिनांक ६-३-१९८४

टीकमचन्द हीरावत
प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार किस्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला :

जैन हस्तलिखित ग्रंथ भंडार [२]

☐ प्राध्यापक उ० भा० कोठारी

गुजरात में जैन धर्म और साहित्य :

शत्रुंजय और गिरनार तीर्थों की पवित्र भूमि गुजरात भी प्राचीन काल से जैन धर्म और संस्कृति के प्रभाव से पूरित है। गुजरात में जैन धर्म के विकास में योगदान देने वाले अमोघवर्ष, कुमारपाल जैसे अनेक राजा, वस्तुपाल, तेजपाल जैसे अनेक मंत्री हुए। गुजरात के ही वल्लभी नगर में प्रख्यात वाचना हुई और श्वेताम्बर श्रमण संघ ने आगम ग्रंथों को व्यवस्थित करके लिपिबद्ध किया। षट खंडागम के रचयिता आचार्य भूतबली एवं पुष्पदंत ने प्राकृत भाषा और सिद्धान्त का ज्ञान आचार्य धरसेण से प्राप्त किया था, जो कि सौराष्ट्र में हुए थे। गुजरात में जिनसेनाचार्य, जिनदत्तसूरि, हेमचन्द्राचार्य जैन अनेक महान् आचार्य हुए। विद्वान् पंडित और कवि हुए। विशाल साहित्य की रचना हुई। ग्रंथ भंडारों की स्थापना हुई। साहित्य की सुरक्षा के लिए अथक प्रयास किये गये। इसीलिए गुजरात में भी अनेक जैन ह० लि० ग्रंथ भंडार उपलब्ध हैं।

अहमदाबाद के ह० लि० ग्रंथ भंडार :

गुजरात का प्रमुख शहर अहमदाबाद तो श्वेताम्बर जैनों का बहुत ही बड़ा केन्द्र बन गया है तथा और भी बनता जा रहा है। यहाँ बीसों मंदिर, उपाश्रय और दूसरी सेवाभावी संस्थाएँ हैं। यहाँ पहले ही ८–१० ह० लि० ग्रंथ भंडार थे। अब लालभाई दलपतभाई प्राच्य विद्या संशोधन मंदिर ने तो इस क्षेत्र में चार चाँद लगा दिये हैं। ह० लि० ग्रंथों का संग्रह करना, उनकी हिफाजत रखना, महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित ग्रंथों का संपादन और प्रकाशन करवाना या फिल्म तैयार करवाकर रखना, ह० लि० ग्रंथों की सूचियाँ तैयार करवाना और यथासंभव उन्हें प्रकाशित करवाना, विद्वानों के लिए अध्ययन सुविधाएँ उपलब्ध कराना आदि कार्य प्रस्तुत संस्था बड़े सुचारु रूप से करती है। संस्था का बहुत बड़ा अहाता और भवन है। जहाँ ग्रंथों की हिफाजत ठीक तरह से नहीं होती, ऐसे स्थानों के भंडार यह संस्था समझा बुझाकर और जरूरत पड़े तो खरीदकर ले आती है। उन्हें सुरक्षित रखती है। अनेक स्थानों के जैन संघों ने अपने संग्रह यहाँ दिये हैं — दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमदाबाद का सागर गच्छीय नेमिसागर उपाश्रय का ग्रंथ भंडार पूर्णतः ला० द० संशोधन मंदिर में दिया गया है। जालौर का पू० कल्याण विजयजी का संग्रह यहां आने का उल्लेख ऊपर कर ही दिया गया है। इनके अलावा खेड़ा, भरूच, बोटाद आदि कई स्थानों के संग्रह यहाँ आ गये हैं। संग्रह विशाल से विशालतर होता जा रहा है।

'डेलानो उपाश्रय' का आदर्श भंडार :

अहमदाबाद में 'डेलानो उपासरो' ग्रंथ का भंडार बहुत महत्त्वपूर्ण एवं व्यवस्था व हिफाजत की दृष्टि से एक आदर्श ग्रंथ भंडार है। यहाँ करीबन १७,००० ह० लि० ग्रंथ हैं। उपासरे में इन ग्रंथों के लिए एक स्वतंत्र कमरा बनाया गया है। कमरे का दरवाजा तिजोरी के दरवाजे का सा गोदरेज का है और भीतर भी गोदरेज कम्पनी की लोहे की आलमारियाँ रखी हुई हैं। आलमारियों में एक साइज के लकड़ी के सुन्दर डिब्बे बनाकर रखे हैं। प्रत्येक डिब्बे पर तीर्थंकर भगवान का चित्र अंकित है। इन डिब्बों में रैपर लगाकर ह० लि० ग्रंथ क्रमशः रखे हैं। सब ग्रंथों की एक पुरानी बनी हुई सूची तो है ही, किन्तु अब कार्ड भी तैयार कर दिये गये हैं। प्रत्येक कार्ड पर संबंधित ग्रंथ की पूरी जानकारी मिल जाती है। ह० लि० ग्रंथों के भंडारों की व्यवस्था और हिफाजत हो तो ऐसी हो।

अहमदाबाद के शेष भंडार :

अहमदाबाद में और भी कई ह० लि० ग्रंथ भंडार हैं। विद्या शाला में विद्या शाला ग्रंथ भंडार के साथ-साथ विजय सिद्धि सूरिश्वर ज्ञान भंडार भी है। पालड़ी बस स्टैण्ड के पास जैन प्राच्य विद्या भवन में भी एक अच्छा ह० लि० ग्रंथों का संग्रह है। श्री विजय दानसूरिश्वर जी ज्ञान भंडार, विमल गच्छ उपाश्रय भंडार और वीर विजय ज्ञान भंडार नाम से तीन और उल्लेखनीय भंडार हैं और लगता है पांजरापोल स्थित विजय नेमिसूरिश्वरजी ज्ञान भंडार में भी ह० लि० ग्रंथ होने चाहिए।

इनके अलावा डॉ० कासलीवाल जी ने अहमदाबाद के (१) हंस विजय हस्तलिखित लायब्रेरी (२) मोहनलाल ह० लि० लायब्रेरी (३) मेघ विजय शास्त्र भंडार (४) कुसुम मुनि नो भंडार (५) दया विमल ज्ञान भंडार (६) उत्तम भाई धर्मशालानो भंडार (७) वर्द्धमान पुस्तकालय (८) जैन सरस्वती भवन (९) ज्ञानवर्द्धक पुस्तकालय ये नाम और दिये हैं। इनमें क्रमांक ७ और ९ में ह० लि० ग्रंथ नहीं हैं। क्रमांक ८ नयी पुरानी पुस्तकों का विक्रेता है। शेष के लिए पता लगाना चाहिए कि वे कहाँ हैं और किस स्थिति में हैं ?

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंभात और पाटण :

खंभात का श्री शांतिनाथ प्राचीन ताड़पत्रीय भंडार तो विश्वविख्यात है, जिसमें केवल ताड़पत्रीय ग्रंथ हैं। इसकी सूची डॉ० पीटरसन नामक अंग्रेज ने तैयार करके सन् १८८३ ई० में ही प्रकाशित की थी। बाद में स्व० पुण्य विजय जी ने इस भंडार को व्यवस्थित करके और नयी सूची बनाकर सन १९४२ में प्रकाशित करवायी। यहाँ का दूसरा महत्त्वपूर्ण भंडार है विजयनेमीश्वर ज्ञान भंडार। कहा गया कि इसमें बारह से पंद्रह हजार तक ह० लि० ग्रंथ हैं, किन्तु देखने के लिए सहयोग नहीं मिलता। साथ ही तपागच्छीय अमर जैन शाला में (१) जैन शाला ज्ञान भंडार (२) कमल लब्धीसूरि ज्ञान भंडार (३) श्री नीति विजयजी ज्ञान भंडार और (४) ज्ञान विमलसूरि ज्ञान भंडार, ये चार ह० लि० भंडार हैं। इनके अलावा डॉ० कासलीवालजी ने (१) सुबोध पुस्तकालय (२) मुनि लाल यति नो भंडार (३) भौन्यारा पाड़सानो भंडार (४) हरीसागर ज्ञान भंडार (५) श्यामलाल जैन भंडार (६) भगवानदास ज्योतिष भंडार ये नाम और दिये हैं। जानकारी लेना होगा।

गुजरात का विख्यात पाटण शहर अपनी स्थापना से ही जैन धर्म का अच्छा केन्द्र रहा है। ११वीं १२वीं और १३वीं शती ई० में यहाँ जैनों को राजाश्रय था। तब से साहित्यिक गतिविधियाँ भी प्रशंसनीय मात्रा में होती रही हैं। यहाँ के नकल करवाकर भेजे सैंकड़ों ग्रंथ दूर-दूर के अनेक स्थानों के ग्रंथालयों में मिलते हैं। डॉ० कासलीवाल ने अपने शोध ग्रंथ में पाटण के १५ ग्रंथ भंडारों की सूची दी है। लेकिन नयी व्यवस्था के कारण उसमें पूरा हेर फेर हो गया है। यहाँ हेमचन्द्राचार्य सभा भंडार ने एक स्वतंत्र विशाल इमारत बनाकर और उसमें १२–१३ भंडारों की पुस्तकें एकत्र रखकर उत्तम व्यवस्था कर दी है। इन सब ग्रंथों की बाकायदा सूची बनकर छप भी गयी है। यहाँ कुल करीबन २०,००० ह० लि० ग्रंथ हैं। पाटण में अब अलग ऐसे तीन ही भंडार रह गये हैं—(१) विमलगच्छ उपाश्रय भंडार (२) संघवी पाड़ानो भंडार (३) खेतर वसहितस्थ भाण्डागार। इनके अलावा दर्यापुरी आठ कोटि स्थानकवासी जैन उपाश्रय में भी एक स्वतंत्र भंडार है और इसमें हजार बारह सौ ह० लि० ग्रंथ होने चाहिए।

सूरत बड़ोदरा :

भंडारों की संख्या की दृष्टि से गुजरात से सूरत का क्रम बहुत ऊपर लगेगा। प्रस्तुत लेखक के सन् १९३८ ई० में छपी 'सूर्यपुर अनेक जैन पुस्तक भांडागार दर्शिका सूची'' नामक एक जीर्णशीर्ण फटी पुस्तिका हाथ लगी। इसमें सूरत के १२ भंडारों की संक्षिप्त जानकारी दी है। लगता है डॉ० कासलीवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इसी के आधार पर नाम दिये हों। इन भंडारों में अब काफी हेरफेर हो गया है। अभी निम्नलिखित भंडार देखने को मिले। (१) जैन आनंद पुस्तकालय—एक बहुत महत्त्वपूर्ण एवं व्यवस्थित संग्रह (२) श्री नेमि विज्ञान—कस्तूरिसूरि ज्ञान भंडार—इसका स्वतंत्र भवन बनाया गया है और इसमें आणसुरगच्छ का आदिनाथ मंदिर ज्ञान भंडार, देवसुर गच्छ धर्मनाथ मंदिर ज्ञान भंडार, हुकुम मुनि उपाश्रय ज्ञान भंडार आदि तीन चार भंडार रख दिये गये हैं। यह भी एक महत्त्वपूर्ण और बड़ा भंडार बन गया है (३) श्री मोहनलालजी जैन ज्ञान भंडार (४) खरतरगच्छीय जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार (५) बाबूभाई अमरचंद ज्ञान भंडार—यही बड़ा चौटा ज्ञान भंडार है—तथा शायद इसी में विद्याशाला ज्ञान भंडार आ गया हो।

इस तरह सूरत के ८-९ ह० लि० भंडारों का हिसाब लग जाता है। शेष ३-४ का पता नहीं चलता। उपर्युक्त के अलावा एक मगनभाई प्रतापचंद लायब्रेरी और देवचंद लालभाई लायब्रेरी भी थी। इनकी भी जानकारी न मिल सकी। डॉ० कासलीवाल द्वारा उल्लिखित दो दिगंबर शास्त्र भंडार भी थे। पूरी तरह पूछताछ की। लगता है तितर बितर हो गये हों और अब नहीं हैं। एक श्री साराभाई नबाब द्वारा निजी संग्रह किया गया है। यह नया संग्रह है।

साहित्य और शोध के क्षेत्र में बड़ोदरा (बड़ौदा) का नाम बहुत जाना माना है। यहाँ की सेंट्रल लायब्रेरी और गायकवाड़ ओरिएन्टल इन्स्टीट्यूट (विशेषत: जब इसके डायरेक्टर श्री सी० डी० दलाल थे।) द्वारा जैन साहित्य क्षेत्र में भी शोध-खोज का कार्य किया गया है। मुनि श्री हेमचंद्रजी ने यहाँ ह० लि० ग्रंथों का बहुत विशाल संग्रह किया था। यह अब बडोदरा विश्वविद्यालय में हैं। दूसरा विशाल और महत्त्वपूर्ण संग्रह नरसिंहजी पोल उपाश्रय में श्री आत्मारामजी महाराज जैन ज्ञान मंदिर नाम से है। इसमें (१) श्री हंसविजय जी ज्ञान भंडार और (२) श्री कांतिविजय जी ज्ञान भंडार सम्मिलित हैं। कुल मिलाकर १२,००० के करीब ह० लि० ग्रंथ हैं, जिनमें ताड़पत्रीय ६०–७० हैं। रावपुरा के मुक्तिकमल मोहन ज्ञान मंदिर में भी कुछ ह० लि० ग्रंथ होने चाहिए।

शत्रुंजय तीर्थ के ह० लि० ग्रंथ भंडार :

शत्रुंजय या पालीताणा केवल तीर्थस्थान ही नहीं, ह० लि० संग्रहों की दृष्टि से भी काफी पुराने समय से महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँ (१) देवार्थी गणी क्षेमा श्रमण ज्ञान भंडार (२) बाई वीरबाई पाठशाला भंडार (३) आगम साहित्य मंदिर (४) श्री सिद्ध क्षेत्र जैन मोटी टोली भंडार (५) श्री सिद्ध क्षेत्र जैन साहित्य मंदिर (यही श्री मुक्तिकमल ज्ञान मंदिर है। इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री यशोविजयजी ज्ञान भंडार नाम से भी जाना जाता है) ऐसे पाँच महत्त्वपूर्ण ह० लि० भंडार हैं। यहाँ के श्री आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी में कुछ ह० लि० ग्रंथ थे, शायद वे अब अहमदाबाद ला० द० प्राच्य विद्या मंदिर में भेज दिये गये हैं। जबानी सूचना मिली है कि हरिविहार में भी श्री कांतिसागर जी महाराज ज्ञान भंडार है और उसमें भी ह० लि० ग्रंथों का बड़ा संग्रह है। यहाँ एक कपूरविजयजी भंडार नामक भी कोई भंडार होना चाहिए।

भावनगर, जामनगर :

भावनगर के डोसाभाई अभेचंद पेढ़ी के भंडार में (१) संघणो भंडार (२) डोसाभाई अभेचंद भंडार (३) ललित विजय ज्ञान भंडार (४) गंभीर विजय ज्ञान भंडार, इन चार भंडारों का समावेश है। जैन आत्मानंद सभा का संग्रह भी महत्त्वपूर्ण है। जहाँ तक प्रस्तुत लेखक को जानकारी मिली है जैन धर्म प्रचारक सभा में कोई ह० लि० ग्रंथ नहीं है और प्रेमचंद रतनचंद भंडार तितर-बितर हो गया है। डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल ने (१) वर्द्धीचन्द्र भंडार (२) कस्तूर सागर भंडार (३) वस्तु सागर भंडार (४) मगनलाल बेचरदास भंडार ऐसे चार भंडारों के नाम और दिये हैं। इनका पता लगाना जरूरी है।

जामनगर में भी निम्नलिखित ह० लि० ग्रंथ संग्रह हैं। (१) तपागच्छ ज्ञान भंडार (२) जैनानंद ज्ञान मंदिर (३) डूंगरसिंहजी स्वामी पुस्तकालय (४) अचलगच्छ उपाश्रय ज्ञान भंडार। इनके अलावा यहाँ विनय विजय ज्ञान भंडार नाम से भी कोई संग्रह होना चाहिए।

लींबड़ी, राधनपुर :

लींबड़ी बहुत समय से स्थानकवासियों का केन्द्र रहा है। यहाँ (१) पू० गोपालस्वामी पुस्तकालय (२) पू० आचार्य देवचंदजी सूत्र भंडार (३) पू० अजरामरजी स्वामी ज्ञान भंडार ऐसे तीन स्थानकवासी भंडार हैं, किन्तु अपेक्षाकृत छोटे ही हैं। साढ़े तीन हजार ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण भंडार तो श्री श्वेताम्बर जैन ज्ञान भंडार है, जो यहाँ के आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी के अधिकार में है। इसका सूचिपत्र सन् १९२८ ई० में आगमोदय समिति मुंबई द्वारा प्रकाशित किया गया था। विशेषता यह कि सूची में दिया क्रम अभी तक वैसा ही बना हुआ है और हाथ डालते ही अपेक्षित ग्रंथ मिल जाता है। व्यवस्था की संजीदगी हो तो ऐसी हो।

डॉ० कासलीवाल ने राधनपुर में छः ग्रंथ भंडार होने का उल्लेख किया है। उनमें कड़वमति गच्छ भंडार छोटा सा था और अब तितर-बितर हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। श्री यशोविजयजी जैन पुस्तकालय में केवल छपी पुस्तकें हैं। शेष (१) नवल खुशाल नो भंडार (२) सागरगच्छ नो भंडार (३) विजयगच्छ नो भंडार (४) वीर विजय ज्ञान भंडार। इन चारों में ह० लि० ग्रंथ होने चाहिए। प्रस्तुत लेखक वहाँ दो बार गया था, किन्तु व्यवस्थापकों द्वारा बिल्कुल सहयोग न मिलने से कुछ भी जानकारी नहीं मिली। तपागच्छीय आचार्य पू० रविविजय जी का सहयोग लिया जाय तो चक्षुप्रवेश हो सकता है

ईडर के भंडार :

गुजरात में ईडर दिगंबर जैनों का प्राचीन और प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ भट्टारक की गद्दी विक्रम संवत की १५वीं शताब्दि में स्थापित हुई थी और इसका राजस्थान और महाराष्ट्र के भट्टारक पीठों से सतत संपर्क बना रहता था। इसने बीच की कड़ी का काम किया है। यहाँ का भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र भंडार बड़ा महत्त्वपूर्ण है और भ० पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर में रखा हुआ है। अभी यहाँ कोई भट्टारक नहीं है। फिर भी संग्रह सुरक्षित और व्यवस्थित है। ईडर में आत्मकमल लब्धिसूरीश्वरजी ग्रंथ भंडार नामक एक श्वेताम्बर भंडार भी है।

ग्राम छोटा, काम बड़ा :

वास्तव में गुजरात में दभोई एक छोटा कस्बा है, किन्तु यहाँ के दोनों भंडार विशाल, व्यवस्थित और महत्त्वपूर्ण हैं। एक है मुक्ताबाई ज्ञान मंदिर जिसमें १२,३७५ ह० लि० ग्रंथ, १० ताड़पत्रीय ग्रंथ, तथा १३९ नक्शे चित्रादि हैं। इसका स्वतंत्र भवन है। दूसरा श्रीमद् यशोविजयजी शास्त्र संग्रह है, जिसमें (१) श्री रंगविजयजी शास्त्र संग्रह और (२) श्री अमरविजयजी जैन ज्ञान भंडार सम्मिलित हैं। कुल ग्रंथ दस हजार के करीब हैं।

छाणी भी एक छोटा सा कस्बा ही है, किन्तु यहाँ के भंडार भी बड़े एवं महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ के संघ ने एक स्वतंत्र भवन बनाकर उसमें (१) श्रीमद् वीर विजयजी शास्त्र संग्रह (२) श्री कांति विजय जी महाराज शास्त्र संग्रह और (३) श्री मुक्ति विजयजी जैन ग्रंथ संग्रह सम्मिलित रख दिये हैं। छाणी में और एक ग्रंथ संग्रह श्री विजयलब्धि सूरि शास्त्र संग्रह है और सूचना मिली है कि इसमें भी कुछ थोड़े ह० लि० ग्रंथ हैं।

गुजरात के शेष ह० लि० ग्रंथ भंडार :

विजापुर में श्रीमद् बुद्धिसागर सूरि जैन श्वेताम्बर ज्ञान मंदिर और श्री रंग विमलसूरि ज्ञान भंडार तथा वीरम गाँव का श्री दर्यापुरी आठ कोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानकवासी जैन संघ का भंडार भी विशेष उल्लेखनीय है। वीरमगाँव के श्री माणकचंद खेतसीभाई ज्ञान भंडार में तथा यहाँ के आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी में थोड़ी-थोड़ी ह० लि० पुस्तकें हैं। जहाँ तक प्रस्तुत लेखक को जानकारी मिली है। कपडवंग के माणकभाई ज्ञान भंडार में कोई ह० लि० ग्रंथ नहीं है, लेकिन यहाँ के क्षोत्रियवाड पाठशाला में मात्र श्री अभयदेव सूरि ज्ञान भंडार और मुनि श्री सूर्योदय सागर ज्ञान भंडार रखे हुए हैं तथा कुल संग्रह अच्छा बन गया है। इनके अलावा यहाँ श्री मीठाभाई गुलाबचंद ज्ञान भंडार नामक एक छोटा सा ग्रंथ संग्रह है।

सुरेन्द्रनगर का भ० वासुपूज्य जैन ज्ञान भंडार १२५ वर्ष पुराना है और ह० लि० ग्रंथों का अच्छा महत्त्वपूर्ण संग्रह मानने योग्य है। यहाँ अभी भी ग्रंथ हाथ से नकल करवाकर रखे जाते हैं। वढ़वाण में स्व० नानचंदजी यति के ग्रंथ भंडार में ४५०-५०० ह० लि० ग्रंथ हैं, जिनमें आयुर्वेद की पुस्तके अधिक हैं। यह इनके बच्चुभाई नामक पुत्र के अधिकार में हैं। सानंद ('आनंद' नहीं) नामक कस्बे में (१) श्री हेतश्रीजी ज्ञान भंडार और (२) सागरगच्छ ज्ञान भंडार है। ऐदा (Aida, Dist.–Bhuj) में भी दो ह० लि० ग्रंथ भंडार होने की सूचना मिली है।

धोधा के शेठ काला मीठा ज्ञान भंडार के, खेडा के श्री सुमतिरत्न सूरि ग्रंथालय के और बोटाद के श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संग्रह के सभी ह० लि० ग्रंथ ला० द० प्राच्य विद्या संशोधन मंदिर अहमदाबाद को भेज दिये गये हैं। बोटाद में स्थानकवासी ग्रंथ संग्रह होने की सूचना मिली है।

डॉ० कासलीवालजी ने भैपा (Bhaipa), धुंधाव (Dhundhav), जालीमोरा (Jalimora) और सिनोर (Sinor) का उल्लेख ह० लि० ग्रंथ संग्रह के लिए किया है। पता नहीं लग सका कि ये स्थान कहाँ हैं। प्रस्तुत लेखक को लगता है कि शायद इन स्थानों के नामों में छपाई की भूल हो। शायद वे कहना चाहते हो धंधुका, बिलीमोरा, सिहोर। हेमचन्द्राचार्य की जन्मभूमि धंधुका में कोई संग्रह नहीं है। बिलीमोरा के लिए पूछताछ करनी होगी। सिहोर दो हैं। गुजरात के सिहोर में कोई संग्रह नहीं है। मध्यप्रदेश के सिहोर का ब्यौरा आगे दिया जा रहा है। भैपा की खोज करनी होगी।

इनके अलावा चाणस्मा, झिंझुवाड़ा, महेसाणा, पालनपुर, वीरनगर, कोडाय, गोधावी और मांगरोल में भी एक-एक ह० लि० ग्रंथ भंडार उपलब्ध है। [क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

□ □ □

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

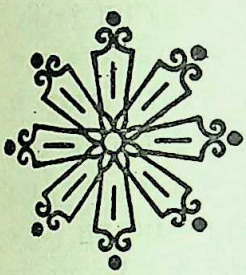

अजमेर से मेड़ता तक अपूर्व धर्मोद्योत

प्रस्तोता—**जिनेश्वर जैन 'शीतल'**

प्रातः स्मरणीय, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, महामहिम, चारित्र चूड़ामणि, परम पूज्य श्रीमज्जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा., पं. रत्न, मधुर व्याख्याता श्री मानमुनिजी म. सा., पं. रत्न मधुर व्याख्यानी श्री हीरा-मुनिजी म. सा., कुशल सेवा-मूर्ति श्री शीतलमुनिजी म. सा. आदि ठाणा ११ एवम् महासतीजी श्री शान्तिकंवरजी म. सा. आदि ठाणा ११ के साथ मेड़ता में विराजमान हैं। जयपुर का ऐतिहासिक एवं यशस्वी चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर आचार्य प्रवर अपनी शिष्य मण्डली के साथ अपनी दीक्षा स्थली **अजमेर** पधारे, जहाँ पर स्व. पूज्य प्रवर्तक स्वामी पन्नालालजी म. सा. के सुशिष्य प्रवर्तक श्री कुन्दनमलजी म. सा. आदि ठाणा ५ विराजित थे। प्रवर्तक श्री का आचार्य प्रवर के प्रति अनन्य वात्सल्य एवं आदर शुरू से ही रहा है, जिससे यह प्रेम संबन्ध आज तक अच्छी तरह से निभ रहा है। आचार्य प्रवर का प्रवर्तक श्री कुन्दनमलजी म. सा. के साथ लगभग पन्द्रह दिनों का सहवास बड़ा ही आनन्दप्रद एवं परिवार सा रहा। विभिन्न आयोजनों की शृंखला में यहाँ पर अनेक कार्यक्रम हुये।

आचार्य प्रवर सामायिक-स्वाध्याय का दिव्य आघोष गुंजायमान करते हुए अपनी शिष्य मण्डली के साथ महावीर कालोनी (अजमेर) से ३० जनवरी ८४ को प्रातः ११ बजे लगभग १२ कि. मी. का विहार कर विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल **पुष्कर** पधारे। पुष्कर की जैन-जैनेतर जनता ने धर्म और सन्त सेवा का अपूर्व लाभ लिया, भक्तों की भावना को देखकर आचार्य प्रवर ने सरल सरस और सुबोध भाषा में उद्बोधन दिया।

पुष्कर से ५ कि. मी. का विहार कर आचार्य प्रवर **तिलोरा** तथा तिलोरा से ९ कि. मी. का विहार कर **थांवला** पधारे। थांवला सन्तों के आवागमन की विशेष धर्म-भूमि रही है। यहाँ पर आचार्य प्रवर की ६३वीं दीक्षा जयन्ती तप त्याग एवं जप साधना के साथ-साथ उत्साह पूर्वक मनायी गई। यहाँ पर जयपुर से सुश्रावक सेवाभावी श्री पूनमचन्दजी बडेर, श्री सुशीलकुमारजी वैद्य तथा श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैलाशजी कोठारी सपरिवार दर्शनार्थ पधारे और सेवा का लाभ लिया। त्रिदिवसीय प्रवास के साथ ज्ञान-दर्शन-चारित्र के उद्बोधन के पश्चात् १४ कि. मी. का विहार कर **भैरूंदा** पधारे, यहां से विहार कर आचार्य श्री के साथ दीक्षित स्व. पं. रत्न श्री चौथमलजी म. सा. की जन्म स्थली **मेवड़ा** में पधारे। मेवड़ा के जैन-जैनेतर भाइयों ने आचार्य प्रवर के अखण्ड बाल ब्रह्मचारी जीवन को आदर्श मानते हुए श्री मोतीलालजी राजपूत (उम्र ४७ वर्ष) एवं श्री भंवरलालजी छाजेड़ (उम्र ५९ वर्ष) ने आजीवन सजोड़े चौथे व्रत (शील व्रत) के प्रत्याख्यान आचार्य प्रवर के श्री मुख से लिये। यहां से ६ कि. मी. का विहार कर आचर्य प्रवर **बड़ी पादु** वसन्त पंचमी को पधारे। यहां दोपहरी के प्रेरक-प्रवचन में आचार्य प्रवर ने स्वामी जी पन्नालालजी म. सा. के जीवन चरित्र का चित्रण किया।

८ फरवरी को बड़ी पादु से ३ कि. मी. का विहार कर आचार्य श्री शिष्य समुदाय के साथ **छोटी पादु** पधारे। यहां पर दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। दर्शनार्थियों की शृंखला में युवाश्रावक रत्न, अनन्य श्रद्धालु भक्त श्री सुमेरसिंह जी सा. बोथरा अपनी मण्डली के साथ आचार्य श्री के दर्शनार्थ आये। ९ फरवरी को मेड़ता से श्रद्धालु श्रावक श्री जतनराजजी मेहता कर्मठ स्वाध्यायी अपने मित्र-जनों के साथ तथा जयपुर से युवारत्न श्री टीकमचन्द जी हीरावत (मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर) तथा श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा (संयोजक, अ. भा. सामायिक संघ) आदि दर्शनार्थ पधारे। यहां पर सन्तों के सान्निध्य में स्थानीय संघ के सहयोग से सामायिक संघ की शाखा की स्थापना की गई।

छोटी पादु से १२ फरवरी को सेसड़ा, जड़ाव फरसते हुए १८ कि. मी. का लम्बा विहार कर **चामुण्डया** पधारे। यहां पर गोठन, मेड़ता संघ से अनेक श्रावकगण आचार्य प्रवर की सेवा में उपस्थित हुए। यहां पर जैनेतरों की भक्ति प्रशंसनीय रही। समस्त भारत की लम्बी विहार यात्रा सम्पन्न कर आचार्य प्रवर अपनी शिष्य मण्डली के साथ १३ फरवरी को मीरा नगरी मेड़ता में पधारे। सुदूर विहार यात्रा के बाद आचार्य श्री का मारवाड़ में यह प्रथम प्रवेश मीरा नगरी में हुआ। यहां पर अनेक क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं के झुण्ड के झुण्ड संघ रूप में आचार्य प्रवर के श्री चरणों में अपने-अपने क्षेत्रों की विनती लेकर उपस्थित हुए! अनेक क्षेत्रों की भावभीनी विनतियों की शृंखला में जोधपुर श्री संघ की ओर से न्याय मूर्त्ति श्री कृष्णमलजी सा. लोढ़ा (राजस्थान हाईकोर्ट), एवं मरुधरा के प्रसिद्ध आशुकवि, अनुभवी स्वाध्यायी श्री दौलतरूपचन्दजी सा. भण्डारी द्वारा हृदय झकझोर देने वाली, अन्तरपट खोलने वाली, काव्यमयी आगामी चातुर्मास की विनती प्रस्तुत की गई। गोठन श्री संघ की ओर से सेखकाल फरसने की विनती श्रीमान् नेमीचन्दजी बाफना एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्राविका सुश्री ललिता बाफना ने की। नागौर श्री संघ की ओर से होली चातुर्मास एवं शेखेकाल फरसने की विनति श्री घीसुलालजी सुराणा ने की। भोपालगढ़ श्री संघ की ओर से श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने आचार्य प्रवर के चरण कमलों में श्रद्धायुक्त विनती करते हुए कहा कि भोपालगढ़ रत्न परम्परा की पवित्र एवं २१ बोलों की नियमा करके क्रियोद्धार वाली भूमि रही है। विनती की लड़ी में कड़ी जोड़ते हुए पीपाड़ श्री संघ की ओर से श्रावकों की भावभीनी विनती युवा स्वाध्यायी श्री सुमतिचन्दजी ने की और आचार्य श्री को अपनी जन्म भूमि की याद दिलायी। श्रावक रत्न श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ आदि ने इस हेतु विनती सन्तों की सेवा में की।

दिन-प्रतिदिन अनेक क्षेत्रों से अनेक श्रद्धालु श्रावकों का आवागमन नियमित हो रहा है। स्थानीय श्रावक-संघ गुरुदेव के दर्शन, प्रवचन एवं सेवा का अपूर्व लाभ ले रहा है। यहां पर बालकों का त्रिदिवसीय सामायिक शिविर आयोजित किया गया। शिविरार्थियों को ज्ञान, दर्शन, चारित्र के मूलभूत सिद्धान्तों को सुबोध एवं सरल भाषा में समझाया गया, साथ ही साथ सामायिक का स्वरूप, आवश्यकता, महत्त्व, विधि, आदि का विशद् विवेचन सन्तों के द्वारा किया गया। जैन काव्य श्रृंखला में सामायिक गीत, शिविर गीत, एवं जैन आचार गीत भी नैतिक बातों का लक्ष्य रखते हुए सिखाये गये।

२० फरवरी ८४ को प्रवर्तक श्रीकुन्दनमलजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार पाते ही यहां विराजित आचार्य प्रवर सहित साधु-साध्वी समुदाय ने निर्वाण काउस्सग्ग में चार-चार लोगस्स का ध्यान किया। प्रवाहित व्याख्यान को बन्द कर स्वर्गस्थ मुनि श्री के जीवन पर संक्षिप्त परिचय देते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त की। स्वर्गीय प्रवर्तक श्री शान्त स्वभावी, सरल परिणामी, श्रमण संस्कृति के हिमायती, निराडम्बरी सन्त थे। उनके आकस्मिक स्वर्गवास से साधु-समाज में बड़ी खामी हुई है। स्वर्गीय प्रवर्तक श्री के स्वर्गवास पर खेद प्रकट करते हुए यहां विराजित मुनि-मण्डल ने मधुर व्याख्याता पं. रत्न श्री सोहनमुनिजी म. सा. श्री वल्लभमुनिजी म. सा. आदि मुनि मण्डल के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए स्वर्गस्थ आत्मा की चिर शान्ति की कामना की।

यहां पर अनेक कार्य-क्रम सानन्द सम्पन्न हुए। यहां से आचार्य प्रवर का विहार नागौर की ओर होने की संभावना है।

संत विहार

आचार्य प्रवर के अन्तेवासी शिष्य मधुर व्याख्यानी पं. रत्न श्री हीरामुनिजी म. सा., व्याख्यान रसिक श्री ज्ञान मुनिजी म. सा., अध्यवसायी श्री महेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनिजी म. सा. आदि ठाणा ३ अजमेर से विहार कर पुष्कर, तिलोरा, थांवला, लाड़पुरा, गोविन्दगढ़, पिंसागन, शेरसिंहजी की रिया एवं पादु होते हुए १६ फर. ८४ को मीरा नगरी मेड़ता में पधारे।

मद्रास—आचार्य प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म. सा. की सुशिष्या विदुषी महासतीजी श्री मैनासुन्दरीजी म. सा. आदि ठाणा कोडमबाकम (मद्रास) का चातुर्मास पूर्ण कर साहूकार पेठ, महावीर कालोनी, एग्मोर, टी. नगर, नक्शा बाजार आदि उपनगरों में विचरण कर अभी माम्बलम् (मद्रास) में विराज रहे हैं।

पल्लीवाल क्षेत्र—मधुर व्याख्यानी श्री शुभेन्द्रमुनिजी म. सा., सेवाभावी तपस्वी श्री बसन्त मुनिजी म. सा. एवं तत्वरसिक श्री चम्पक मुनिजी म. सा. आदि ठाणा ३ ने आचार्य प्रवर के सान्निध्य में जयपुर चातुर्मास पूर्ण कर पल्लीवाल क्षेत्र में सामायिक-स्वाध्याय का नाद गुंजाने के लिए प्रस्थान कर दिया। आप मनोखर, जहाड़ू, खोह, नागेंल, बडेर, बुर्जा, मालाखेड़ा, बारामड़-कोल, मौजपुर, सहाड़ी, लक्ष्मनगढ़, विंचगांव आदि में विचरण कर हरसाना विराज रहे हैं।

महासतीजी श्री शान्तिकंवरजी म. सा आदि ठाणा अजमेर से विहार कर पुष्कर, तिलोरा, थांवला, भकरी आदि क्षेत्र फरसते हुए दि. १६ फरवरी को मेड़ता पधारे।

जोधपुर—महासती श्री श्री तेजकंवरजी, श्री सुशीलाकंवरजी म. सा. श्री राजमतिजी म. सा., श्री सरलाकंवरजी म. सा. ठाणा ४ जोधपुर से विहार कर पीपाड़ होते हुए मेड़ता पधारे।

महासतीजी श्री शान्तिकंवरजी म. सा., श्री सुशीलाकंवरजी म. सा., श्री सोहनकंवरजी म. सा., श्री सरलाकंवरजी म. सा. का मेड़ता से सुखे समाधे विहार होकर अजमेर, जयपुर होते हुए पल्लीवाल क्षेत्र की ओर पधारने की संभावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारावाहिक उपन्यास 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' भाग २

चतुर्थ प्रवास

ज्वलनाचार्य और क्षमा विजय [७]

☐ अनुवादक : श्री लालचन्द्र जैन

[गतांक से आगे]

दोपहर का समय था, विश्व में प्रवृत्ति और निवृत्ति का मिश्रित राज्य चल रहा था। अतृप्त और लोभी लोग प्रवृत्ति में ही पड़े थे जबकि संतोषी और समय को पहचानने वाले लोग प्रवृत्ति से हटकर निवृत्त होकर आराम कर रहे थे। इस समय एक उपाश्रय में साधुओं और गृहस्थों की मिली जुली सभा हो रही थी। मुनियों में दो पदवीधारी थे। उनमें से एक पदवीधारी मुनि उत्तम थे, जिससे उनमें मतभेद हो गया था। उन दोनों के शिष्य अलग-अलग थे पर किसी कारणवश वे दोनों एक होने के लिये इकट्ठे हुए थे। एक उत्तम और दूसरे अनुत्तम, ऐसे भिन्न स्वभाव वाले मुनियों की एकता होनी मुश्किल थी, पर अन्यों को हानि पहुँचाने के लिए वे कृत्रिम एकता का दिखावा कर रहे थे। उनमें संगठन करवाने वाले भद्र श्रावकों को भारी प्रयत्न करना पड़ रहा था। 'अमुक सेठ को बुलाओ, अमुक सेठ के गले यह बात उतारो, अमुक मुनिराज को समझाओ, अमुक पन्यास के पाँव पकड़ कर इस संघठन में शामिल करो, अमुक आचार्य को क्रोध से शांत करो, अमुक विजय तथा सागर को कैसे भी समझाओ।'

यों अनेक प्रकार का कोलाहल हो रहा था। उनकी प्रतिध्वनियाँ उपाश्रय की दीवारों से टकरा कर यों गूँज रही थीं मानो उपाश्रय की पवित्र भूमि भयभीत होकर पुकार कर रही हो। पवित्र और शांतिपूर्ण धर्मकार्यों की यह भूमि अपवित्र और अशांति के कार्यों से आकुल-व्याकुल हो रही थी। एक ओर परस्पर ईर्ष्या करने वाले [illegible] मार कर बैठे थे, उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्रों से द्वेष की विकरालता झलक रही थी। जिन मुख मुद्राओं पर सर्वदा शांति और क्षमा का प्रकाश रहना चाहिये उन मुनियों की मुख मुद्राओं पर अशांति और अक्षमा की छाया प्रसारित हो रही थी। उनमें भी पदवीधारी मुनियों के मुख की रौनक कुछ और ही थी, ऐसा दिखाई दे रहा था मानो दीक्षा और पद को प्राप्त कर उन्होंने महान् साम्राज्य को प्राप्त कर लिया हो। वे सारे विश्व को तृण के समान समझते थे, मानो सारे विश्व पर उन्हीं की सत्ता हो। ऊपर से यह घमण्ड भी था कि हमने दीक्षा लेकर एवं पद प्राप्त कर विश्व का कल्याण ही किया है, हमें किसी की परवाह नहीं है, किसी को हमसे कुछ भी पूछने का अधिकार नहीं है।

दूसरी तरफ गृहस्थ श्रावकों का व्यवहार भी विचित्र लग रहा था। वे अपने-अपने मुनियों के प्रति रागासक्त होकर पक्षपात करने के लिए सावधान हो रहे थे। अपने माने हुए गुरुओं की विजय हो और अन्य के गुरुओं की हार हो, ऐसा उनका दृढ़ निश्चय उनके हावभाव से झलक रहा था। वे राग द्वेष से प्रेरित होकर अपनी दृष्टि को पलट रहे थे। 'अमुक सेठ को मात देनी है, अमुक की संघ पर रही हुई सत्ता को तोड़ना है, अमुक के गुरुबल को ठंडा करना है, अमुक को नीचे गिरा कर रुलाना है, अमुक के छल कपट को प्रकट करना है, अमुक के धन का घमण्ड उतारना है, अमुक की झूठी धर्मश्रद्धा को प्रकट करना है और अमुक की जमी हुई प्रतिष्ठा को बिखेर देना है।

यों स्पष्ट और गुप्त दोनों प्रकार से गृहस्थों का कोलाहल हो रहा था और उन सब के कोलाहल से उपाश्रय में मानो नगाड़े बज रहे हों ऐसा लग रहा था।

उसी समय दीक्षाकुमारी अदृश्य रूप से उस उपाश्रय में आई। उपाश्रय में प्रवेश कर उन्होंने उस कोलाहल को सुना।

उसका हृदय आश्चर्यान्वित हो गया और ऐसा लगा जैसे कोई भयंकर हाथापाई/मारपीट होने वाली हो। वह उपाश्रय की भूमि में प्रवेश कर मुख्य गृह के द्वार में अदृश्य रहकर घुसी और आकाश में स्थित होकर वह तमाशा देखने लगी। प्रतिस्पर्धी साधुओं और गृहस्थों की विचित्र सभा को देखकर महादेवी को आश्चर्य होने लगा।

साधुओं और गृहस्थों का समाज एकत्रित हुआ था, फिर भी कुछ मुख्य साधु और श्रावक नाराज होकर उसमें नहीं आये थे। उनके आने की प्रतीक्षा हो रही थी और उसी विषय में परस्पर विचार विमर्श चल रहा था। उसमें अनेक प्रकार की बाधाएं खड़ी हो रही थी और अनेक प्रश्न उठ रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेश्वरी दीक्षाकुमारी उपाश्रय-भवन में आकाश में स्थित रह कर यह सब देख रही थी।

समाज के अधिकांश लोगों के आ चुकने पर गृहस्थ श्रावक अधीर होने लगे और उनके नेता ने सारे लोगों को हाथ जोड़कर उच्च स्वर में कहा, 'आप सभी मुनियों और गृहस्थों से हमारे परम पूज्य गुरु महाराज श्री ज्वलनाचार्य-जी ने यहाँ आना स्वीकार किया है, पर उनको बुलाने के लिये आप सभी मुनियों और सेठों को कुछ शर्तें मंजूर कर उनका पालन करने की प्रतिज्ञा ले ली गई तो वे आचार्यजी इस सभा में आयेंगे।

उपरोक्त घोषणा सुनकर एक वृद्ध सेठ बोला, "भाई! आचार्यजी की क्या शर्तें हैं, उन्हें प्रकट करो।"

तभी एक जवान गृहस्थ बोल पड़ा, "भाइयो! इन पन्यासजी महाराज के पास आने के लिये कैसी शर्तें? आजकल के साधु आचार्य बन जाने पर अपने आपको विश्व में सर्वश्रेष्ठ समझने लगते हैं। वे कैसे भी आचार्य क्यों न हों, हमारे पूज्य महाराज के समक्ष तो छोटे ही हैं। उनकी दीक्षा पन्यासजी के हाथ से हुई है, अतः दीक्षा-पर्याय और उम्र से भी वे छोटे हैं। तब इन वृद्ध पन्यासजी के पास आने से क्या वे छोटे हो जायेंगे? उनको सोचना चाहिये कि आज सब को एकत्रित होकर कुछ शुभ काम करने हैं। वे काम कोई वृद्ध पन्यासजी के नहीं, वरन् संघ के हैं, आचार्यजी को इस विषय में सोचना चाहिये।

एक आचार्यजी का भक्त और अधीर स्वभाव का सेठ बीच में ही बोल पड़ा, 'अरे भाई! आप बीच में क्यों बोलते हैं? हम श्रावक साधुओं की बातों को क्या समझें? साधुओं का व्यवहार गृहस्थों से भिन्न होता है, उन्हें अपने पद के अनुसार मर्यादा रखनी पड़ती है। कैसे भी हों, वे आचार्य हैं, संघ के नायक हैं, फिर आचार्य कम उम्र के हों तो भी बालक, बुड्ढे, जवान सभी साधुओं पर उनकी सत्ता लागू होती है। सभी मुनियों को उनके अनुशासन को मानना चाहिये। अतः आचार्यजी की मांगों को हम सभी गृहस्थों और मुनियों को माननी चाहिये।"

तीसरे मध्यस्थ और शांत-प्रकृति सेठ ने कहा, "सेठो! क्यों अधीर होकर बोल रहे हो। वे क्या शर्तें मनवाना चाहते हैं, यह तो पहले सभी साधुओं को और हमें जानना चाहिये। अतः पहले हमें उनकी शर्तें सुननी चाहिये।

उपरोक्त बात सुनकर और सब साधुओं की सहमति से शर्तें लेकर आने वाले गृहस्थ ने कहा, "आचार्य महाराज ने कहलाया है कि जब वे आवें तब सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु उपाश्रय से बाहर उनका स्वागत करने सामने आवें। कोई भी वृद्ध या युवक साधु उपाश्रय में नहीं रहे। हमारे उपाश्रय में प्रवेश करने के बाद सभी मुनि हमारे पीछे-पीछे प्रवेश करें। हमें देखते ही सभी मुनि मस्तक झुकाकर वन्दन करें। जब हम तख्त पर बैठें तब सभी श्रावक हमारी जय बोलें। फिर सभी साधु अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार हमें विधि पूर्वक वंदन कर बैठें। वृद्ध पन्यासजी भी हमें विधि पूर्वक वन्दन कर हमारे पास विनय से बैठें। हम जो कुछ कहें, कोई भी उसके बीच में नहीं बोले और सभी हमारी आज्ञा के अनुसार करें। कोई भी हमारी आज्ञा के विरुद्ध प्रवृत्ति नहीं करे। संघ का जो भी कार्य होना है, उसका निर्णय हमारी इच्छानुसार होना चाहिये। हमारे साधु जो पहले से ही सभा में उपस्थित हैं, उन सबका आदर सम्मान करना पड़ेगा। साधुओं की परस्पर वन्दना में भी कौन वन्दनीय है, इसका निर्णय हमारे द्वारा ही होगा। हमारे समक्ष कोई गृहस्थ श्रावक अविनय नहीं करेगा और हम जिन-जिन श्रावकों का नाम बतायेंगे, उनको समाज के कार्यों का निर्णय करने की सत्ता देनी होगी। जब तक हम वहाँ रहें, तब तक हमारी आज्ञा बिना कोई कुछ भी नहीं बोलेगा। हमारे पूज्य आचार्य महाराज उपरोक्त शर्तों को मानने पर यहाँ आना चाहते हैं। यदि सभी साधुओं और गृहस्थों को ये शर्तें स्वीकार हों, तो वे यहाँ आयेंगे।"

उस गृहस्थ की बात सुनकर सभी साधु और गृहस्थ विचार में पड़ गये। आचार्य की ऐसी अविनय युक्त माँगें सुनकर विपक्षी साधुओं और गृहस्थों के दिल में उनके प्रति तिरस्कार होने लगा। कुछ आचार्य के भक्त थे, पर प्रामाणिक थे, उनके हृदयों में भी आचार्य के प्रति तुच्छता के भाव आने लगे। आचार्य की ऐसी विपरीत माँगों को सुनकर कुछ लोगों ने तो समाज के कार्य को स्थगित रखने की इच्छा भी प्रकट कर दी। कुछ लोग भयभीत होने लगे कि इस परिस्थिति में भारी कलह होगा और कुछ का विचार था कि वृद्ध पन्यासजी का अपमान करने के लिये ही यह सारी योजना बनाई गई है।

सभा में वृद्ध मुनि क्षमा विजय पन्यास भी अपने शिष्यों से घिरे हुए बैठे थे। नाम के अनुसार ही उनमें क्षमा गुण भी था। साथ ही वे बहुश्रुत विद्वान्, जैनागम के रहस्य को जानने वाले, मुनि धर्म और आचार के यथार्थ स्वरूप को समझने वाले थे। स्वयं तदनुसार प्रवृत्ति करने वाले और अपने शिष्यों से वैसा ही आचार का पालन करवाने वाले थे। वे देश काल के यथार्थ स्वरूप को जानने वाले थे। दशवैकालिक और आचारांग सूत्र का वे सर्वदा अध्ययन करते रहते थे और अपने शिष्यों को उसे निरंतर सुनाते रहते थे। शांति, क्षमा, करुणा और विनय इन चार गुणों को उन्होंने हृदयस्थ कर लिया था, इसीलिये वे यथार्थ क्षमाश्रमण कहलाने के योग्य थे। कुछ विशेष कारणों से उन्होंने यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा बुलाने की सहमति दी थी, पर ऐसी उपाधि के लिये मन में तो वे नाराज ही थे। वे वृद्ध मुनि विहार करने में अशक्त थे, फिर भी प्रयत्न पूर्वक थोड़ा-थोड़ा विहार कर निकट के गाँवों में घूमते रहते थे। इस समय वे इस शहर में आये हुए थे और संयोग से ज्वलनाचार्य भी इसी समय इस शहर में आ गये थे। उपाश्रय में वृद्ध मुनि ठहरे हुए हैं, यह जानकर स्वतन्त्र विचार के ज्वलनाचार्य शहर के बाहर किसी गृहस्थ के विशाल बंगले में ठहर गये थे, उनके साथ उन्हीं की प्रकृति से मिलते कुछ शिष्य भी थे। प्रारम्भ में तो आचार्य के आडम्बर से प्रभावित होकर बहुत से साधु उनके साथ मिल गये थे, पर बाद में नाम के अनुसार उनके ईर्ष्यालु स्वभाव को देख कर कुछ साधु उन्हें छोड़ कर चले गये थे। कुछ गरीब स्वभाव के साधु और कुछ सेर के सवासेर जैसे नकटे साधु ही उनके पास रह गये थे, फिर भी उनको आचार्य के साथ रहने में बहुत कुछ सहना पड़ता था। उनके जलने के स्वभाव से उद्विग्न होकर कई साधु उनसे अलग होने का विचार कर रहे थे, और कई तो उन्हें छोड़ भी चुके थे।

यह सभा बुलाने के चार कारण थे। (१) विद्वान् युवक श्रावक पर मुनियों के विरुद्ध लेख लिखने का आरोप था, जिससे उसे विश्व संघ से बहिष्कृत करना था। (२) एक गृहस्थ ने अन्य संघाड़े के विद्वान् मुनि को इस शहर में चातुर्मास करने का निमंत्रण दे दिया था, अतः उसे दंड देना था। (३) किसी साधु ने किसी बड़े शहर में साधुओं के अनाचार पर व्याख्यान दे दिया था, उसे संघ और संघाड़े से बहिष्कृत करवाना। (४) कुछ श्रावकों ने देव द्रव्य और धर्म द्रव्य के हिसाब में गोलमाल किया, उनसे हिसाब लेना। इन्हीं कारणों को लेकर शहर के साधुओं एवं स्थानिक और बाहर के गृहस्थों की यह सभा बुलाई गई थी। इसी अवसर पर ज्वलनाचार्च के शिष्य मण्डली सहित शहर में आने से लोगों की यह धारणा हुई थी कि आचार्य द्वारा इन चारों विषयों में निर्णय लेने से ठीक रहेगा, किन्तु अग्नि के समान ज्वलनाचार्य ने सभा में आने की जो शर्तें रखी, उससे तो अव्यवस्था खड़ी हो गई थी।

आचार्य की शर्तें सुनकर बहुत देर तक तो लोग विचार मग्न रहे, कोई उसका उत्तर नहीं दे सका। विलम्ब होते देख एक प्रतिष्ठित सेठ ने वृद्ध पन्यास-जी से पूछा, "महाराज ! इन शर्तों के विषय में आपकी क्या राय है ?"

पन्यास क्षमा विजय ने शांत स्वर से कहा, "देवानुप्रिय श्रावको ! इस विषय में मैं अपनी राय नहीं दे सकता। सभी प्राणी अपने-अपने कर्म के अनुसार प्रवृत्ति करते हैं। हमें क्या प्रिय है और क्या अप्रिय है, इस विषय में निर्णय लेने में प्रत्येक जीव स्वतन्त्र है। आचार्य को जैसा अनुकूल लगा होगा, वैसे विचार उन्होंने प्रकट कर दिये। अब मैं या हम में से कोई उनके प्रतिकूल विचार प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे, तो वह उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। अतः हम या आप कोई उनकी शर्तों के विषय में राय नहीं दे सकता। यदि हम कोई अभिप्राय प्रकट भी करें और वह आचार्य को पसंद न आये तो हमारा अभिप्राय व्यर्थ होगा।"

क्षमा विजय के उपरोक्त वचन सुन कर उस सभा में पहले से आये हुए आचार्य के कुछ शिष्यों में से एक तीव्र स्वभावी मुनि बोल पड़ा, "महाराज! हमारे पूज्य आचार्य की निन्दा क्यों करते हैं? उन महात्मा को तो कुछ भी प्रतिकूल नहीं है, सभी अनुकूल ही है। आपको सोचना चाहिये कि जिनके विषय में आप बोल रहे हैं, वे कौन हैं? वे हम सब साधुओं के अनुशासक और संघ के नायक हैं। हम सब को उनके अनुशासन में रहना चाहिये। उन्होंने जो शर्तें रखी हैं वह तो उनका विनय है, वैसे तो हमें और आपको उनकी इच्छानुसार करना ही चाहिये। इन महान् सत्ताधारी आचार्य की आज्ञा हम सबको शिरोधार्य है। आप वृद्ध होकर ऐसे कटाक्ष वचन क्यों कहते हैं? आप यह न समझें कि वे अकेले हैं। वे एक नहीं अनेक हैं। उनके वचनों से जाग्रत होकर सैंकड़ों श्रावक हाजरी में खड़े रहते हैं और बड़े-बड़े धनपति अहर्निश उनकी सेवा में रहते हैं। उन्होंने विहार कर अनेक देशों को अपने वशीभूत कर रखा है। गुजरात और काठियावाड़ तो उनकी सब प्रकार की सेवा करने को सदा तत्पर रहता है। हम साधु तो उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर उनके लिए प्राण न्यौछावर करने वाले हैं। यदि कभी लड़ाई करने की आवश्यकता हो जाय तो हम वीर पुरुषों के समान विपक्षी से लड़ने के लिये भी तैयार रहते हैं। यदि किसी से युद्ध करना पड़े तो ये डंडे, ओघे और पात्र शस्त्रों का काम दे सकते हैं। हमारे साथ यहाँ बैठे हुए शंख विजय और दंड विजय एक-एक साधु दस-दस योद्धाओं के समान बलशाली हैं। उनमें बुद्धि बल भले न हो, पर बाहुबल इतना है कि, जैसे सिंह बकरियों के झुण्ड को भगा देता है, वैसे ही वे अकेले तुम्हारे साधुओं को भगा सकते हैं। हमारे अवसरवादी आचार्य ने इसी इरादे से उन्हें दीक्षा देकर अपने साथ रखा है। अतः आप हमारे आचार्य की किसी प्रकार की निंदा न करें वर्ना उसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

मुनि के उपरोक्त कटु वचन सुनकर सारी सभा सखेद आश्चर्यचकित हो गई। प्रामाणिक, मध्यस्थ और आस्तिक श्रावकों को मुनि के मुँह से युद्ध की चेतावनी वाली बात सुनकर और भी शोक हुआ। पवित्र वृद्ध पन्यासजी एवं अन्य शांत स्वभावी मुनि तो यह सुनकर विचार में पड़ गये। पवित्र वीरप्रभु के परिवार में ऐसी विपरीत वाणी का उच्चारण हो, यह किसे शोकदायक न होगा? आचार्य ज्वलन विजय के भक्त कुछ उन्मत्त साधुओं और उच्छृंखल श्रावकों के अतिरिक्त अन्य किसी को यह कठोर और अनुचित वाणी अच्छी नहीं लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षण भर बाद शांतमूर्ति क्षमा विजय ने शुद्ध हृदय से उपदेश देते हुए कहा, "मुनि ! आप यह क्या कह रहे हैं ? साधुओं के मुख से ऐसी बातें अच्छी नहीं लगतीं । आप जैसे शिष्य ऐसी विपरीत बात कहें और आपके गुरु आपको कुछ न कहें, यह बहुत अफसोस की बात है । भाई ! हम सब यहाँ कुछ उत्तम कार्य करने के लिये इकट्ठे हुए हैं । मैंने आपके आचार्य गुरु की न तो निंदा की है और न निंदा करने की कोई इच्छा ही है । मेरे शब्दों में एक भी निंदा का शब्द नहीं है, फिर भी आप मुझ पर आरोप लगाते हैं तो आपको मिथ्या दुष्कृत देना चाहिये । भाई ! हमें सर्वदा विचार कर बोलना चाहिये । साधुओं का क्या धर्म है, इसे भूलना नहीं चाहिये । यह उपाश्रय की पवित्र भूमि है । इस भूमि में शांति और क्षमापूर्वक धर्म के कार्य ही हो सकते हैं । यहाँ उपदेश रूपी गंगाजल का पवित्र प्रवाह बहता है । इस स्थान पर युद्ध की बात ही नहीं करनी चाहिये । आप मुनि हैं, अतः मुनि के आचार धर्म को तो आप जानते ही होंगे । हमारे आचार ग्रन्थों में क्या लिखा है ? इसका विचार करें । आचारांग सूत्र के शीतोष्णीय नामक तीसरे अध्ययन में हमारे आचार के विषय में जो शब्द लिखे हैं, उसका हमें सर्वदा मनन करना चाहिये । महात्मा सूत्रकार लिखते हैं कि—

"गृहस्थ हमेशा सोते रहते हैं और मुनि सर्वदा जागृत रहते हैं ।" यह महावाक्य हमें किस बात की सूचना देता है ? हम मुनि चारित्र-आचार के विषय में सदा जागृत रहते हैं, साथ ही हमें प्रमाद से भी सदा दूर रहना चाहिये । कहीं हम से किसी प्रकार का कर्म बंधन न हो जाय, कहीं हम से कोई आरम्भ का कार्य न हो जाय, कहीं हम धर्म से च्युत न हो जायें, इस प्रकार सोचते हुए हमें सदा जागृत रहना चाहिये । इस सूत्र के हेतु को ध्यान में रख कर ही मैंने अपनी बात कही है, किसी प्रकार की निन्दा करने की इच्छा से नहीं कही है ।

"हे मुनि ! मेरे कहने के हेतु को समझे बिना आपने जो तुच्छ शब्द कहे हैं, वे आपको शोभा नहीं देते । साधु तो धर्म का जानकार होता है । मन, वचन और काया से क्या करना चाहिये, इसका पुष्ट विचार साधु को सदा रखना चाहिये । मन से निर्दोष बात सोचनी चाहिये, वचन से निर्दोष वाणी बोलनी चाहिये और काया से निर्दोष काम करना चाहिये, यह मुनि का त्रिशुद्ध धर्म है । आचारांग सूत्रकार मुनि के लिए क्या लिखते हैं, यह सावधानीपूर्वक सुनें—

"जिस पुरुष को शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श सुन्दर या असुन्दर होने पर भी समान लगते हों, उसे ही चैतन्य, ज्ञान, वेद, धर्म और ब्रह्म का जानने वाला समझना चाहिये । ऐसा पुरुष अपने ज्ञान बल से लोगों को जान सकता है और ऐसा पुरुष ही मुनि कहलाता है । ऐसे धर्म के ज्ञाता सरल मुनि संसार चक्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा विषय-अभिलाषा को राग-द्वेष का कारण जानते हैं, अतः सुख या दुःख की आशा न रखकर ऐसे निष्परिग्रही मुनि रति अरति रूपी परिषह को सहन करते हुए संयम की कठिनाइयों की परवाह नहीं करते। इस प्रकार वे पराक्रमी मुनि सदा जागृत रह कर वैर विरोध को दूर कर दुःखों से मुक्त होते हैं।"

"अरे मुनि ! इन सूत्र वाक्यों पर थोड़ा चिन्तन करो। कोई भी मुनि जो आचारांग सूत्र के वाक्यों पर विचार करे तो वह मन, वचन और काया की शुद्धि से पतित न हो। महात्मा सूत्रकार आगे लिखते हैं कि—'जो कर्म रहित मुक्त जीव हैं, उनका संसार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। कर्म से ही सारी उपाधियाँ उत्पन्न होती हैं, अतः कर्म के स्वरूप को समझ कर कर्म को दूर करना चाहिये। हिंसा को कर्म का मूल कारण जानकर उससे दूर रहना चाहिये। कर्म के स्वरूप का चिन्तन कर, कर्म दूर करने के उपदेश को ग्रहण कर, राग और द्वेष दोनों का परिहार करना चाहिये।"

सूत्र के जानकर वृद्ध पन्यासजी के उपरोक्त वचन सुनकर वह युवक मुनि क्षण भर कुछ नहीं बोला। इतने में ही एक दूसरा उन्मत्त मुनि बोल पड़ा, "महाराज ! उपदेश देकर आप हमें दबाना चाहते हैं, पर हम यों दबने वाले नहीं हैं। आप समझते हो कि आप ही सूत्र के जानकार हो, पर ऐसा व्यर्थ अभिमान आपको नहीं रखना चाहिये। हमारे आचार्य सभी सूत्रों को और उनके अर्थ को जानते हैं। उनके जैसा विद्वान् और पंडित कोई दूसरा जैन मुनि इस समय नहीं है। उनके पास बड़े-बड़े वैयाकरण और नैयायिक शास्त्री रहते हैं। उनके साथ शास्त्रीय चर्चा करने में कोई समर्थ नहीं हो सकता। यदि इस वक्त वे यहाँ उपस्थित होते तो आप से एक शब्द भी नहीं बोला जाता। फिर उनके शिष्यों में भी व्याकरण, न्याय, साहित्य और सूत्रों को जानने वाले कुछ ऐसे समर्थ साधु हैं कि उनके समक्ष आपका कोई साधु टिक नहीं सकता। उनकी असाधारण विद्वत्ता से बड़े-बड़े पंडित और शास्त्री थर्राते हैं, इसलिये आपको ज्यादा बकझक नहीं करना चाहिये।"

[क्रमशः]

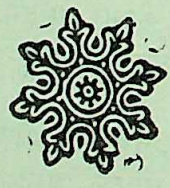

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज—दर्शन

कलकत्ता—जैन धर्म–दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान्, सफल कथाकार एवं 'तित्थयर' हिन्दी मासिक, 'श्रमण' बंगला मासिक, 'जैन जरनल' अंग्रेजी त्रैमासिक के सम्पादक श्री गणेश ललवाणी का १५ जनवरी, १९८४ को भारतीय भाषा परिषद् में उनकी साहित्यिक, सांस्कृतिक सेवाओं के उपलक्ष्य में सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। सर्वश्री मदनकुमार मेहता, कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. नेमीचन्द जैन, डॉ. प्रभाकर माचवे, श्री विजयसिंह नाहर, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, डॉ. नरेन्द्र भानावत आदि ने ललवाणीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष श्री कमलकुमार जैन ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया एवं समारोह की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। श्री ललवाणी को २५ हजार रु. की राशि एवं अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर ललवाणीजी द्वारा लिखित **'नीलाञ्जना'** और **'चन्दन मूर्ति'** पुस्तकों का विमोचन डॉ. नरेन्द्र भानावत द्वारा सम्पन्न हुआ। राजकुमारी बैगानी द्वारा सम्पादित 'गणेश ललवाणी स्मारिका' का विमोचन पश्चिम बंगाल के न्याय व विधिमन्त्री श्र हब्बीबुल्ला ने किया। समारोह के अन्त में श्री ललवाणी द्वारा लिखित गीति नाट्य **'कवि आलेख्य'** का मंचन किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने में श्री सरदारमल कांकरिया, श्री दिलीपसिंह नाहटा, श्री क्रान्तिलाल श्रीमाल, श्रीमती राजकुमारी बैगानी आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

जयपुर—राजस्थान विश्वविद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र में ११ फरवरी, १९८४ को व्याख्यान माला का उद्घाटन श्री डी. आर. मेहता, संयुक्त सचिव वित्त विभाग, भारत सरकार ने किया। उन्होंने जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त सिद्धान्तों की आधुनिक सन्दर्भ में विवेचना की। समारोह के प्रमुख वक्ता डॉ. नरेन्द्र भानावत ने जैन शोध की सम्भावनाओं एवं दिशाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता पं. विष्णुदत्त शर्मा ने की। प्रारम्भ में केन्द्र के निदेशक डॉ. भागचन्द जैन ने सबका स्वागत किया। जैन अनुशीलन केन्द्र की प्रवृत्तियों एवं भावी योजनाओं का परिचय दिया। केन्द्र के व्याख्याता डॉ. पी. सी, जैन ने धन्यवाद अर्पित किया।

आदर्श नगर (सवाई माधोपुर)—श्री वर्धमान स्था. जैन नवयुवक मण्डल के चुनाव में श्री दिनेश बाबू जैन अध्यक्ष, श्री कमलेश कुमार जैन मन्त्री एवं श्री गौतमचन्द जैन कोषाध्यक्ष चुने गये।

डूँगला—श्री जैन विद्यालय संचालन समिति डूँगला १९६९ से जैन पाठ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालाओं का संचालन कर बालक-बालिकाओं के धार्मिक नैतिक संस्कारों के बीजारोपण का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसकी संस्थापना में श्री कन्हैयालालजी नन्दावत (भीलवाड़ा) एवं श्री भंवरलालजी चौपड़ा, जावद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इसके ओंकारलालजी सेठिया, सनवाड़ अध्यक्ष, श्री मोहनलालजी दक, डूँगला मन्त्री, श्री विजयकुमारजी मेहता, डूँगला कोषाध्यक्ष चुने गये।

पीपाड़ सिटी—स्वाध्याय पाठशाला में धार्मिक अध्ययन कराने के लिए योग्य शिक्षक की आवश्यकता है। आवास, बिजली पानी की सुविधा सहित मासिक वेतन योग्यतानुसार। सम्पर्क सूत्र—श्री पूनमचन्द गांधी, श्री वर्धमान स्था. जैन स्वाध्याय पाठशाला, पीपाड़ शहर (जोधपुर)।

जावरा—अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ एवं रोटरी क्लब जावरा के सहयोग से ग्राम सरसी में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ३५० रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें निःशुल्क औषधि वितरित की गई। ५० पशुओं का उपचार भी किया गया। श्री मानव मुनि एवं श्री समीरमल कांठेड़ का विशेष सहयोग और प्रेरणा रही।

भवानीमंडी—जैन पाठशाला के छात्र-छात्राओं द्वारा **'अनंगजयी'** का मंचन किया गया। कुमारी मीनाक्षी की जम्बूकुमार के रूप में भूमिका सराहनीय रही। कुमारी साधना हींगड़, अनिता श्रीश्रीमाल, सुनिता, मनीषा, सुशीला एवं सन्तोष जैन के अभिनय भी प्रशंसनीय थे। श्री प्रमोद जैन ने सफल संचालन किया।

मद्रास—मद्रास एगमोर जैन संघ की ओर से आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. की ६४वीं दीक्षा जयन्ती ४ फरवरी को तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। महासती श्री मैनासुन्दरी जी व अन्य वक्ताओं ने आचार्यश्री के साधनामय जीवन पर विशेष प्रकाश डाला।

आबूपर्वत—प्रतिवर्ष की भाँति चैत्र मास में ८ से १६ अप्रैल तक आयम्बिल ओली तप का आयोजन पं० रत्न मुनि श्री कन्हैयालाजी म. सा. 'कमल' के सान्निध्य में किया गया है। १० अप्रैल को मुनिश्री के ७२वें जन्म दिवस पर 'दन्त शिविर' का भी आयोजन रखा गया है।

सायरा—श्री वर्धमान जैन स्वाध्याय संघ सायरा के तत्त्वावधान में सूरत नगर स्थित संग्रामपुरा उपाश्रय में १३ से १५ जनवरी तक एक धार्मिक शिविर आयोजित किया गया जिसमें ५७ स्वाध्यायियों एवं २७ बालिकाओं ने भाग लिया।

सहाडी—आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य श्री शुभेन्द्र मुनिजी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसंत मुनिजी एवं चम्पक मुनिजी भनोखर, कांटवाड़ी, खोह आदि फरसते हुए यहाँ पधारे। २८ जनवरी को जैन-अजैन बन्धुओं का विशेष का समागम रहा। इस अवसर पर श्री बुद्धालालजी जैन, भनोखर, श्री सुखलालजी जैन, साहड़ी, श्री रतन लालजी जैन, कांटवाड़ी, श्री बिहारी भूषणजी जैन ने आजीवन सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया। श्री जौहरीलालजी जैन ने संघ की ओर से इनका सम्मान किया।

शोक-श्रद्धांजलि

पूज्य प्रवर्तक ज्योतिषाचार्य श्री कुन्दनमलजी म.सा. का स्वर्गवास

अजमेर—पूज्य प्रवर्तक ज्योतिषाचार्य पं० रत्न श्री कुन्दनमलजी म. सा. का २० फरवरी, १९८४ को अजमेर स्थित महावीर कॉलोनी में स्वर्गवास हो गया है। आपका जन्म मेवाड़ आसीन्द के अंचल में छोटे से गाँव शम्भूगढ़ में श्री चौथमलजी आंचलिया के घर में माता जैलबाई की कुक्षि से सम्वत् १९७५ में हुआ। सम्वत् १९९६ की अक्षय तृतीया को जामोला में आपने पूज्य प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म. सा. के चरणों में दीक्षा अंगीकृत की और प्रवर्तक श्री छोटमलजी म. की नेश्राय में उनके शिष्य हो गये। आपने ४५ वर्ष तक निरतिचार संयम धर्म का पालन किया और जिनशासन की प्राणपण से सेवा की। आप जैन आगमों के प्रकाण्ड विद्वान्, सरल स्वभावी तथा साधनारत महान् सन्त थे। आपका ज्योतिष ज्ञान अत्यन्त गहन और व्यापक था। श्री नानक जैन छात्रावास, स्था. जैन स्वाध्याय संघ, प्राज्ञ जैन मृगीरोग निवारक समिति गुलाबपुरा जैसी कई धार्मिक एवं लोक कल्याणकारी संस्थाओं के पीछे आपकी सबल प्रेरणा थी। आपके निधन से जैन समाज के प्रतिभाशाली अन्तरदृष्टा, निरभिमानी आगमज्ञ, ज्योतिषाचार्य सन्त की कमी हुई है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये श्रद्धांजलि सभाएँ आयोजित की गईं। विभिन्न संघों और संस्थाओं ने ४-४ लोगस्स का ध्यान कर आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। **मेड़ता-सिटी** में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा., श्री मान मुनिजी, श्री हीरा मुनिजी ने आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आपकी साधुचर्या व सरलता उच्चकोटि की थी। आपने पं. रत्न श्री सोहन मुनिजी, श्री वल्लभ मुनिजी आदि मुनिमंडल के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए स्वर्गस्थ आत्मा की चिरशांति की कामना की। संघ अध्यक्ष श्री जवरीलालजी ओस्तवाल एवं मन्त्री श्री सुखराजजी भांमड़ ने भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की। श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ **मसूदा** के अध्यक्ष श्री गजराजजी नाहर ने समाज के प्रमुख प्रभावशाली एवं एकता प्रिय सन्त के रूप में आपको स्मरण किया। अ. भा. श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ **जोधपुर** के महामन्त्री श्री माणकमलजी भंडारी ने एक अच्छे ज्योतिषी, सफल वक्ता, कवि व तत्त्वज्ञानी के रूप में आपका गुणानुवाद करते हुए कहा कि अभी जनवरी में अजमेर में आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के साथ आपका मधुर मिलन हुआ था। श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ **गुलाबपुरा** की ओर से श्री भीमसिंहजी संचेती की अध्यक्षता में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कहा गया कि मुनि श्री स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक तथा समता के अक्षय स्रोत थे। उनकी दूरदर्शिता, समाज हित की चिन्ता तथा दीन-दुखियों के प्रति करुणा की भावना प्रशंसनीय थी। श्री प्राज्ञ जैन मृगी रोग निवारक समिति की ओर से भी मुनिश्री को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आप ही की प्रेरणा से यह संस्था स्थापित की गई। लगभग ९७० रोगी इसके माध्यम से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ **भीलवाड़ा** की ओर आयोजित सभा में संघ मन्त्री श्री शान्तिलालजी पोखरणा ने आपके संयम पूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला और वयोवृद्ध श्रावक श्री शोभालालजी नागौरी ने श्रद्धांजलि गीतिका प्रस्तुत की। श्री जैन ऐस्ट्रोलोजिकल ब्यूरो **ब्यावर** के प्रमुख श्री बालचन्दजी मेहता ने मुनिश्री की सेवा को समाज के लिये अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक बताया। **रायपुर** (झालावाड़) के वयोवृद्ध श्रावक श्री पूनमचन्दजी धूपिया ने भी मुनिश्री के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं "**जिनवाणी**" परिवार की ओर से हम दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पद्मश्री मोहनमलजी चौरड़िया का स्वर्गवास

मद्रास—जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी, आदर्श श्रावक, शिक्षा प्रेमी, उदारमना सेठ श्री मोहनमलजी चौरड़िया का ५ फरवरी, १९८४ को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आपका व्यक्तित्व बहु आयामी था। शिक्षा, चिकित्सा, जीवदया, सधर्मी वात्सल्य आदि विविध क्षेत्रों में आपकी सेवाएँ रहीं। आपकी सामाजिक एवं मानवीय सेवाओं के लिये तत्कालीन जोधपुर सरकार ने आपको **'पालकी सिरोपाव'** भेंट किया। भारत की केन्द्र सरकार ने आपको **'पद्मश्री'** की उपाधि से अलंकृत किया।

आपका जन्म २८ अगस्त, १९०२ को जोधपुर में हुआ। १६ वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आयु में आप कुचेरा के सेठ श्री सोहनमलजी चौरड़िया के दत्तक पुत्र के रूप में गोद आये। आपने अपनी व्यावसायिक फर्म 'श्री अगरचन्द मानमल' मद्रास का यश एवं व्यवसाय का उत्तरोत्तर विकास किया। आपने हर तबके के वर्ग को आवश्यक सहयोग और मार्गदर्शन दिया। अ. भा. स्था. जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष के रूप में आपकी सेवाएँ महत्त्वपूर्ण रहीं। आप शताधिक संस्थाओं के प्रेरक, संस्थापक, संरक्षक और सक्रिय सदस्य रहे हैं। सन्त-सतियों की सेवा में भी आप सदैव अग्रणी रहे। आप नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण और स्वाध्याय किया करते थे। मद्रास में शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में आपकी अनुपम सेवाएँ रही हैं। श्री एस. एस. जैन एज्युकेशन सोसायटी के अन्तर्गत श्री अगरचन्द मानमल जैन कालेज, श्री श्वे. स्था. महिला विद्या संघ के अन्तर्गत महिला विद्यालय चलते हैं। कुचेरा में राजकीय डिस्पेन्सरी एवं श्रीमती नैनीकंवर प्रसूति गृह आपकी उदार सहायता का ही परिणाम है। आप राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति रहे हैं। राजस्थानी भाषा, साहित्य और कला के प्रति आपका अनन्य अनुराग है। आपके निधन से जैन समाज का ही नहीं राष्ट्र का महान् व्यक्तित्व उठ गया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में श्रद्धांजलियाँ सभाएँ की गई। पुलिस कमिश्नर श्री श्रीपाल की अध्यक्षता में **मद्रास** में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मद्रास की विभिन्न संस्थाओं ने आपका गुणानुवाद करते हुए आपके धार्मिक एवं समाजसेवी जीवन पर प्रकाश डाला। जैन संघ मद्रास के मंत्री श्री भीखमचंद बाफना, श्री श्वे. स्था. जैन महिला विद्या संघ के मंत्री श्री पी. एम. चौरड़िया, श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ के मंत्री श्री भंवरलाल गोठी, श्री महावीर अहिंसा प्रचार संघ के मंत्री श्री के. सी. सेठिया आदि ने आपके सेवाभाव एवं चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला। श्री ओसवाल जैन संघ विल्लुपुरम् तथा श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ **सिकन्दराबाद** ने भी शोक सभा आयोजित कर आपको श्रद्धांजलि अर्पित की। अ. भा. रत्न हितैषी श्रावक संघ **जोधपुर** के महामंत्री श्री माणकमलजी भंडारी ने आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आप महान् दानी मृदुभाषी एवं सरल आत्मा थे। जो भी आपके द्वार पर आया खाली हाथ नहीं लौटा। आपने अनेक व्यक्तियों को स्वावलम्बी बनाया और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया।

मद्रास—जैन समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री मनोहरराज जी काँकरिया की माताश्री एवं भोपालगढ़ निवासी स्व. श्री मोहनलालजी कांकरिया की धर्मपत्नी श्रीमती झणकारबाई का ८ फरवरी को ६५ वर्ष की आयु में असामयिक निधन हो गया। आप तपस्या, स्वाध्याय सेवा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रत-प्रत्याख्यान आदि में सदैव अग्रणी रहीं। ३० वर्ष की अल्प आयु से ही आप चौविहार एवं मास खमण, अठाई आदि की तपस्या करने लग गई थीं। स्वाध्यायी सदस्या के रूप में पर्युषण के दिनों में अनेक क्षेत्रों में आपने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। आपके सुपुत्र श्री रिखबचन्दजी की सुपुत्री ने रायचूर में आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार की। आप आचार्य श्री की अनन्य भक्त एवं श्रद्धालु थीं। साध्वी श्री मैनासुन्दरीजी के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में विभिन्न वक्ताओं ने आपका गुणानुवाद करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। आपके निधन से समाज का आदर्श महिला रत्न उठ गया है।

अजमेर—यहाँ के सुप्रसिद्ध श्रावक श्री रावतमलजी कोठारी का ७७ वर्ष की आयु में संथारे सहित ४ जनवरी को निधन हो गया। आप आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के अनन्य भक्त थे। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

उदयपुर—राजस्थान चिकित्सा विभाग में प्रशासनिक अधिकारी पद से सेवा निवृत्त, सामाजिक धार्मिक वृत्ति के श्री रंगलालजी भाणावत का ६४ वर्ष की आयु में ६ फरवरी को निधन हो गया। आप सेवाभावी परिश्रमी तथा कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। आप रिश्ते में सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी से सम्बद्ध समाजसेवी कार्यकर्त्ता श्री पार्श्वकुमारजी मेहता के बहनोई थे।

भीलवाड़ा—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री अर्जुनलालजी डांगी का २४ फरवरी को निधन हो गया। आप सरल सात्विक वृत्ति के निरभिमानी व्यक्ति थे। शिक्षा, चिकित्सा, स्वाध्याय आदि धार्मिक प्रवृत्तियों में आप मुक्तहस्त से सहायता करते थे। आप वर्षों तक स्थानीय जैन संघ के अध्यक्ष रहे। आपके निधन से एक सेवाभावी दानदाता की कमी हुई है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक विह्वल परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

"जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु.

सदस्यता संख्या

२०४२—पटेल श्री बसन्तकुमारजी जयन्तीलालजी जवेरी, खम्भात (गुजरात)

(जिनवाणी को भेंट एवं सहायता)

५००) श्रीमान् पृथ्वीराजजी सा. कवाड, मद्रास आचार्य प्रवर की दीक्षा जयन्ती पर विराजने एवं विहार कर मारवाड़ की तरफ सुखे समाधे पधारने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१) डॉ. नरेन्द्र भानावत, शान्ता भानावत, जयपुर अपने सुपुत्र प्रो. संजीव का विवाह श्री तेजसिंहजी नागौरी उदयपुर की सुपुत्री सौ. कौशल्या के साथ २५ फरवरी, ८४ को व सुपुत्री सौ. तृप्ति का विवाह श्री सुल्तानसिंहजी मेहता बड़ी सादड़ी के सुपुत्र श्री अमरसिंह के साथ २७ फरवरी, ८४ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५१) श्री एस. एम. दीन, करांची (पाकिस्तान) अपने सुपुत्र एस. एम. इकबाल के ग्यारह वर्ष बाद पुत्र रत्न प्राप्ति की खुशी में भेंट।

५१) श्री महावीर प्रसादजी जैन, सवाई माधोपुर, दि. ७-२-८४ को नूतन गृह प्रवेश व शान्ति जाप सम्पन्न होने की खुशी में सादर भेंट।

५०) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैतारण पूज्य गुरुदेव मरुधर केशरी १००८ श्री मिश्रीमलजी म. सा. का जैतारण में स्वर्गवास होने की पुण्य स्मृति में भेंट।

३१) श्री शान्तिलालजी छाजेड़, वैलूर, श्रीमान् गूदरमलजी छाजेड़, की सुपुत्री सौ. कां. प्रकाश कंवर का मांगलिक विवाह मद्रास निवासी श्रीमान् मोहनलालजी सिंगी के सुपुत्र श्री निर्मलकुमारजी C A. के साथ सम्पन्न हुआ, उस पावन प्रसंग पर सप्रेम भेंट।

३१) मै. गजेन्द्रगढ़ बाघमार क्लोथ स्टोर, सिद्धनूर (रायचूर) श्रीमान शेषमलजी बाघमार गजेन्द्रगढ़ निवासी का स्वर्गवास दि. १-२-८४ को हो गया, उनकी पुण्य स्मृति में सादर भेंट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१) श्री भंवरलालजी आशकरणजी बोथरा, जैयपुर (उड़ीसा) हमारे पूज्य माताजी का आकस्मिक निधन तारीख १५-१-८४ को ६ घंटे के सन्थारा सहित हुआ, उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

२१) श्री दानमलजी तखतमलजी कटारिया, सैलाना चि. ललितकुमार के विवाह की खुशी में सादर भेंट।

२१) श्री अनराजजी पारसमलजी कोठारी, मद्रास, आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के कुशल पूर्वक छोटी पादू में विराजने के उपलक्ष में सादर भेंट।

२१) श्रीमान जवेरीमलजी छाजेड़, जोधपुर सौ. कां. हेमलता (सुशीला) छाजेड़ का श्री पूनमचन्दजी मेहता के साथ दि. १८-२-८४ को पाणि-ग्रहण हुआ, उसकी खुशी में सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

साहित्य प्रकाशन–आजीवन सदस्यता ५०१) रु.

सदस्य संख्या

१४५) श्री एच. एम. सिंघवी C.A.

(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल भेंट एवं सहायता)

५१) श्री नेमीचन्दजी चोरड़िया, जलगाँव, वर पक्ष मदनलालजी सुभाषचन्द जी कर्नावट, देवला निवासी तथा वधू पक्ष नेमीचन्दजी नीलमचन्दजी चोरड़िया जलगाँव निवासी की तरफ से चि. जवरीलाल एवं सौ. कां. भारतीदेवी के विवाहोपलक्ष में सप्रेम भेंट।

(स्वाध्याय संघ भेंट एवं सहायता)

२१) श्री महावीर प्रसादजी जैन, सवाई माधोपुर, दि. ७-२-८४ को नूतन गृह प्रवेश व शान्ति जाप सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

—मंत्री

कविजी का सफल ऑपरेशन

जयपुर—कवि श्री अमर मुनिजी के प्रोस्ट्रेट का सफल ऑपरेशन सन्तोकबा दुर्लभजी अस्पताल में १२-२-८४ को डॉ. के. सी. गंगवाल द्वारा सम्पन्न हुआ। कविश्री स्वस्थ व प्रसन्न हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचनामृत :

अशुभ से शुभ की ओर*

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान छोड़ें :

मानव जीवन का जो मानसिक झुकाव है वह अनादि काल से आर्त्त ध्यान की तरफ, रौद्र ध्यान की तरफ बिना चाहे, बिना सोचे, बिना समझे, बिना प्रेरणा किये निरंतर चालू रहता है। पशु, पक्षी, मानव और देव कोई इससे बच नहीं पाता। लेकिन कोई पुण्यशाली प्राणी होता है और कुछ जन्म-जन्मान्तर के संस्कार होते हैं तब अच्छे निमित्त को पाकर धर्म ध्यान की ओर अभिमुख होते हैं।

आप जो दूर-दूर से सत्संग में आते हैं और साधना मार्ग में जो भाई-बहिन सामायिक व्रत की साधना करते हैं उनको सबसे पहले यह निर्णय करना है कि हमें पाना क्या है? हमारा चिन्तन क्या है? इन दो बातों का सही रूप में निर्णय करके तदनुकूल आचरण करेंगे और जो लेना है, लेकर चलेंगे तो आपको शान्ति, आनन्द और आत्मबल प्राप्त होने में कोई शंका नहीं रहेगी।

धर्म ध्यान की ओर अभिमुख हों :

छोड़ना क्या है? अनादि काल से आर्त्त और रौद्र ध्यान के दो चक्कर हैं। ये मन को घेरे हुए हैं, दबाये हुए हैं, पराधीन किये हुए हैं। ये दो कौन हैं? आर्त्त ध्यान और रौद्र ध्यान। इनसे बचने के लिये धर्म ध्यान की ओर अभिमुख होना आवश्यक है। दुनिया के वैभव में, वाणिज्य में, सरविस में रह कर आप अपने समय का उपयोग करके सौ-दो सौ या हजार दो हजार का द्रव्य मिला पाते होंगे, परिमित संख्या में द्रव्य पाते होंगे। इस द्रव्य के साथ आपको मानसिक और व्यावहारिक कितनी परेशानियां धर दबाती हैं, यह गणना और लेखा-जोखा आप करेंगे। लेकिन एक लाभ ऐसा है कि यदि सच्चे ढंग से इसको कोई

*१९-१०-८२ को जलगांव में दिया गया प्रवचन। प्रो० संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़े तो निहाल हो जाय। कौनसा लाभ ? जिसको हम शास्त्रोय शब्दों में धर्म ध्यान कहते हैं। अशुभ से शुभ में आने वाले प्राणी को धर्म ध्यान का लाभ होता है।

सबसे बड़ा बन्धन राग :

बन्धन के दो कारण हैं राग और द्वेष। उनमें सबसे बड़ा बन्धन शास्त्रों ने बताया है राग को—'न राग बन्धो परमत्थि बंधो।' कई प्रकार के बन्धन हैं, रस्से से बांधा जाता है, सांकल से बांधा जाता है, ताले में बन्द किया जाता है, बेड़ी में जकड़ा जाता है। इस तरह के बन्धन हैं। आपने और वर्तमान बच्चों ने शायद नहीं देखा हो, लेकिन शायद बुजुर्गों को देखने का मौका पड़ा होगा। कई वक्त उद्दण्ड प्राणी होते हैं, उनके पैर आगे भी बांधे जाते हैं और पीछे भी बांधे जाते हैं। आपने ऐसे हाथी को देखा या नहीं ? लेकिन हम लोग विचरण-शील हैं इसलिए हमको बचपन में राजाओं के हाथियों को बंधन में देखने का मौका मिला है। मैदान में ऐसे हाथियों के दोनों पीछे के पांव बड़ी-बड़ी सांकलों से बंधे हुए देखे। मुकना हाथी होता है। वह मस्ती में झूमता रहता है इसलिये उसके आगे के और पीछे के पाँव बड़ी-बड़ी सांकलों से बांध दिये जाते हैं। वैसे तो महावत का छोटासा अंकुश भी हाथी को वश में कर लेता है और अंकुश लगते ही वह चिंघाड़ता है लेकिन मदमस्त हो जाने पर बड़ी-बड़ी सांकलों को भी तोड़ डालता है। उसके लिये सांकल का बंधन भी ज्यादा जोरदार नहीं होता है। गाय, बैल, भैंस आदि को रस्सी के बंधन से बांधा जाता है। जो जन्म कैदी होते हैं उनको जेल की चार दीवारी में पैरों में बेड़ी डाले बिना कोठरी में बन्द कर देते हैं। ये द्रव्य बन्धन कई-कई प्रकार के होते हैं। लेकिन इन द्रव्य बन्धनों में से कठोर से कठोर बन्धन को तोड़ कर भागने वाले जानवर, मानव और पक्षीगण हैं। इनके किस्से रात-दिन आपको सुनने को मिलते हैं। इसलिये शास्त्रकारों ने कहा कि बन्धनों में सबसे बड़ा बन्धन कौनसा है न राग बन्धो परमत्थि बंधो। राग के बन्धन से बढ़कर कोई बन्धन नहीं है। आप अपने घर में, कुटुम्ब में, कबीले में क्यों बंधे हैं। आपके पैरों में कोई डोरी लगी हुई है क्या ? नहीं। हाथों में नहीं है, गले में कोई रस्सी नहीं है, गले में रस्सी तो जानवरों के होती है। फिर मानव को सत्संग से, सदाचार से, शास्त्र की आरा-धना से, साधना करने से कौन रोकता है ? आप सोचना। राग से अटक जाने के बारे में शास्त्र विशिष्ट व्यक्ति का दाखला देते हैं। श्रेणिक और अभयकुमार के जमाने में एक आद्रकुमार नाम के राजकुमार की कथा आई है।

राग, अनुराग, वीतराग :

इस राग को अनुराग में बदलना है। वीतरागता तो बड़ी बात है। पहले राग से अनुराग में पहुंचना है। अनराग से विराग में चलते हैं और विराग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीतरागता तक पहुंचना है। यदि इस तरह से डगर-डगर चलते रहे तो आपके लिये परम पद पाना दुर्लभ नहीं होगा।

लेकिन सबसे बड़ी बाधा तो यह है कि राग जल्दी साथ छोड़ने को तैयार नहीं है। सामायिक, स्वाध्याय की बात भी गले में हाथ डाल देती है, वरमाला तोड़ देती है। इसको दूर करने के लिये आचार्यों ने धर्म ध्यान को बताया और उसमें मन को लगाने के लिये सामायिक साधना बताई। छोटासा रूप है एक श्लोक याद रखिये—

त्यक्तार्त रौद्र ध्यानस्य, त्यक्त सावद्य कर्मणः।
मुहूर्तं समतायास्तं, विदुः सामायिकं व्रतम्।

आर्त और रौद्र ध्यान का त्याग कर सामायिक का चिन्तन किया जाय। यदि आप चाहते हैं कि आर्त और रौद्र ध्यान से हमारा दिमाग हल्का हो तो आचार्यों ने कहा कि अकेले सामायिक में बैठें तो तुम्हारा आर्त और रोद्र ध्यान चला जायगा। सामायिक में बैठ कर आर्त और रौद्र ध्यान छोड़ देते हैं और 'त्यक्त सावद्य कर्मणाः।' सामायिक में तीन बातें बताईं, दिमाग में नोट कर लीजिये। आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान को छोड़ना और क्रिया में सावद्य क्रियाओं को छोड़ना अर्थात् १८ पापों से संबंध रखने वाले जो काम हैं, उनको छोड़ कर एक मुहूर्त के लिये कम से कम धर्म-चिन्तन में मन और मस्तिष्क को लगावें। इसका नाम है सामायिक। मैं कह चुका था कि सामायिक में राग नहीं छूटता तो कम से कम राग का परिष्कार होता है। यह घर मेरा, ये माँ मेरी, बाप मेरा, कोठी मेरी, यह जो सांसारिक चीजों के लिये मेरा-मेरा करता है उसके बजाय धर्म ध्यान में बैठेगा तो सोचेगा कि ये संत मेरे, यह धर्म ध्यान मेरा, ये गुरु मेरे, यह ज्ञान मेरा, यह दर्शन गुण मेरा, यह चारित्र गुण मेरा, यह मेरा धर्म परिवार। धर्म परिवार अलग है और पाप परिवार अलग है। क्रोध, मान, लोभ, तृष्णा ये सारे के सारे पाप परिवार के सदस्य हैं जो रात-दिन राग की जेल में हैं। और ये इसी प्रकार का चिन्तन करते हैं। यह पैसा कैसे मिलाना, मिले हुए को बढ़ाना कैसे, बढ़े हुए का रक्षण कैसे करना। यह पूंजी मेरी, यह इनकम मेरी, यह बैंक में जमा रकम मेरी, मेरी-मेरी यह सब अशुभ राग है। इस अशुभ राग को शुभ राग में परिवर्तित करें तभी इस लोक में कुछ कर पाओगे। शुभ राग में चलने वाले कहते हैं कि इतनी सामायिक हो गई, इतनी चढ़ गई। इतना व्रत स्वीकार किया था उसमें से इतना हो गया, इतना करना बाकी है। ज्ञान का धन इतना मिलाना था उसमें से इतना मिला लिया, इतना बाकी है। कुछ लोग इसकी डायरी भरते हैं। क्योंकि वे सोचते हैं कि यह धर्म धन मेरी सम्पदा है। धर्म गुरु मेरे मां-बाप हैं। ये सब जो यहाँ पर बैठे हैं ये मेरे धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्धु हैं। ये बहिनें मेरी माताएं हैं। इस तरह से धार्मिक सम्बन्ध के चिन्तन से राग बदल दिया गया तो अशुभ से शुभ में चले जायेंगे।

मित्र बनाने की कला :

महाराज श्रेणिक अभयकुमार को किसी अनार्य देश के राजा से मिलने भेजते हैं। अभयकुमार ने सोचा कि मेरा वहां कोई मित्र नहीं है तो क्यों नहीं मैं भी राजकुमार आद्रकुमार को भायला या मित्र बनाऊं। संसार में शत्रु बनाने की कला छोड़ कर मित्र बनाने की कला सीख जाओ तो आपको दुःख नहीं होगा। धन्धा करना है तो धन्धा जानने वाले को मित्र बनाओ। ग्राम-ग्रामेतर जाना हो तो रास्ते में जो साथी मिलें उनको मित्र बनाओ। पहले-पहल विलायत जा रहे हैं, इसलिए वहां कोई जानता नहीं। हवाई जहाज में बैठे हो, विलायत पहुँचने से पहले दो चार को मित्र बना लिया तो वहाँ पहुँचने पर सहायता ही मिलेगी। इसके विपरीत कुछ लोगों की आदत है कि साथ में बैठे हैं उनसे झगड़ा कर लिया। वह उसकी पेटी खोस रहा है तो दूसरा उसका बींटा खोस रहा है। एक को आता है मित्र बनाना और एक को आता है शत्रु बनाना। इन दोनों में से कौन सुखी रहेगा ? आप इसका हिसाब कर लीजिये।

दशहरा नजदीक आ रहा है। जैनेतर लोग दुर्गा की पूजा करते हैं, दुर्गा अष्टमी मनाते हैं। जैन आचार्यों ने कहा कि आप लोग नवपद की आराधना करो। नवरत्ता मनाओ। पुराणों में अष्ट दुर्गा मानी जाती है तो आपके यहाँ भी ५ समिति और ३ गुप्ति की आराधना का विचार है। इन आठों की आराधना करने की बात सीख जावें और 'नवरत्ते' का उपयोग किया जाय तो ये छोटी-मोटी शास्त्र की चीजें हमारे जीवन का कल्याण कर सकती हैं और आर्त-रौद्र से बच कर धर्म ध्यान में लगना हो सकता है।

आचार्यों ने मिथ्यात्व से हट कर सम्यक्त्व में लगने का, राग से विराग में लगने का और अशुभ से हट कर शुभ में लगने का ९ दिन की साधना का रूप बताया है। समाज के कई भाई-बहिन नवपद की ओली करते हैं। सप्तमी से पूर्णिमा तक। आसोज शुक्ला दशमी को आचार्य श्री भूधरजी की स्मृति का दिन है। वे तपस्या की साधना करने वाले थे। शुक्ला ११ को आचार्य श्री धर्मदासजी म० की स्मृति का दिन आ रहा है। आचार्य श्री आत्मारामजी म० ने स्वाध्याय प्रेम का परिचय दिया था। इन सारी स्मृतियों को निमित्त बनाकर अशुभ से शुभ में, राग से वैराग में, वैराग से वीतरागता पर पहुँचेंगे तो आपकी एक-एक घड़ी, एक-एक पल उपयोगी सिद्ध होगा।

अभयकुमार तो घर में बैठा यह सब कर गया। कैसी करणी आद्रकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बताई कि उसको लेकर आद्रकुमार समकितधारी बन गया। धर्म का राग पाकर धर्मी बन गया। धर्मी जीवन से आगे वह साधु बन गया। लेकिन उसे कर्मों का उदय भोगना बाकी था। उदय कर्म और भोगावली कर्मों के कारण वह संयमी जीवन से गिर कर फिर रागी जीवन में चला गया। संसार के सम्बन्ध से सम्बन्धित हो गया। इसके कारण उसके मन में खेद था। वह सोचता रहता कि मैं हाथी पर से उतर कर घोड़े पर नहीं, गधे पर बैठ गया। मुझे अपने आपको फिर उठाना है–संभालना है। उसने अपनी पत्नी से कहा–कि तेरे को यह पुत्र आजीवन प्राप्त है, तू इसको तैयार करना, मैं अब फिर से संयम ग्रहण कर प्रायश्चित से अपना कल्याण करना चाहता हूँ। पत्नी ने सोचा कि इनकी जबान से जो निकल गया है, वह होकर रहेगा। एक बार बोल गये तो पीछे हटने वाले नहीं हैं। मुझे अब सादा जीवन अपनाना चाहिये। उसने चर्खा कातना प्रारम्भ किया।

अशुभ से शुभ में आओ :

उसका पुत्र कुछ बड़ा हुआ तो उसने पूछा कि माँ तू चर्खा क्यों कात रही है ? उसने कहा कि बेटा चर्खा ही अपने जीवन यापन का साधन है। तेरे पिताजी तो साधु होने वाले हैं। उस बच्चे ने चर्खे से काती गई सूत की कूकड़ी ली और पलंग पर उसके पिताजी सो रहे थे, उसने नीचे से ऊपर तक उस सूत से पलंग को लपेट दिया और मां से कहने लगा कि माँ अब पिताजी कैसे जायेंगे ? मैंने उनको बांध दिया है। जब आद्रकुमार की निंद्रा भंग हुई और उसने अपने आपको सूत से बन्धा हुआ देखा तो सोचा कि इसने जितने आंटे दिये हैं उतने वर्ष और घर में रहना पड़ेगा। देखा तो १२ आंटे दिये हुए थे। वह १२ वर्ष पहले रह गया था और १२ वर्ष फिर रह गया। अति संक्षेप में मैंने यह बात आपके सामने कही है आप इस पर चिन्तन कीजिये कि १२ वर्ष तक आद्रकुमार को रोकने वाला कौन है ? आद्रकुमार को रोकने वाला राग है। जिसने बांधा। राग के अलावा बांधने वाला कोई नहीं है। आद्रकुमार ने वैराग्य की प्रबल भावना से बन्धन काटा और तप-संयम की साधना कर सद्गति प्राप्त करली। इसीलिये शास्त्र कहता हैं कि सामायिक-साधना के द्वारा अशुभ से पहले शुभ में आओ, राग से वैराग में आओ और वैराग से वीतरागता में आओ। यदि इस रूप में चलोगे तो इस लोक और परलोक में शान्ति, आनन्द और कल्याण प्राप्त करोगे।

□ • □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहंकार का समाधान—नमो

☐ श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद'

मनन करना मन की मौलिक प्रवृत्ति है, मन अपने निकटवर्ती विषयों पर चिन्तन करता रहता है। चिन्तन की यह विशेषता ही मन को महत्त्व प्रदान करती है। मन आत्मा की अद्भुत सिद्धि है। महानतम पुण्यों के उदय का फल होता है मन। आत्मा मन पाकर ही मुक्ति पा सकती है। मन को पाकर आत्मा निहाल हो जाती है। आत्माएँ तो अनन्त-अनन्त हैं। किन्तु 'मन' को धारण करने वाली पुण्यात्माएँ थोड़ी हैं। जिन्हें मन मिला, उन्हें एक अद्भुत खजाना मिला है, चिन्तन मन नहीं करता है, आत्मा करती है, किन्तु मन चिन्तन का साधन है। वायर करन्ट नहीं है, किन्तु करन्ट को सार्थकता वायर से मिलती है। आत्मा अनन्त शक्तिमान है, उसमें चिन्तन शक्ति भी उसका श्रेष्ठतम गुण है, किन्तु मन के बिना वह सार्थक नहीं है। मन मिलते ही आत्मा धन्य होती है कि वह चिन्तन कर सकती है।

अनन्त-अनन्त पुण्यों का उदय होता है तब आत्मा असंज्ञी से संज्ञी (समन) अवस्था पाता है। मन आत्मा की अनुपम उपलब्धि है। किन्तु इसे इसकी दुर्लभता के अनुरूप पवित्र बनाये रखना बड़ा ही कठिन है। मन में विचारों की लहरें खड़ी करने की शक्ति एक समुद्र से भी अधिक तीव्र है। यही कारण है कि वहाँ विकृतियों का समावेश भी बड़ी तीव्रता के साथ हो जाता है।

मन बहुत जल्दी और बड़ी आसानी के साथ जिन विकृतियों को अपने में समाविष्ट कर देता है, "अहंकार" उनमें से प्रथम है। अहंकार एक ऐसी मानसिक विकृति है जो ठेठ बचपन से ही मन में घर कर लेती है और जीवन के आखिरी दिनों तक निरन्तर पुष्ट होती चली जाती है, हाँ यदि किसी विशिष्ट प्रयोग द्वारा इसे खण्डित कर दिया जाए तो निर्मूल भी हो सकती है।

अहंकार का प्रारम्भ कहाँ से हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। बच्चों को आपस में किसी अपनी वस्तु की श्रेष्ठता सम्पादित करते हुए, और दूसरे की वस्तु के दोष बताते देखा होगा। यह अहंकार का शैशव स्वरूप है। अपनी वस्तु और उपलब्धियों में उपलब्ध और अनुपलब्ध अनेक गुण दिखाई देने लगते हैं और अन्य की वस्तु और उपलब्धियों में उपलब्ध-अनुपलब्ध अनेक कमियाँ दिखाई देने लगती हैं।

शास्त्रों में अहंकार का नाम है "थंभा" स्तम्भ जैसा कड़क हो जाना।

मन यों तो बड़ा गतिमान तरल प्रतीत होता है। किन्तु ज्यों-ज्यों इसमें अहंकार पुष्ट होता जाता है, त्यों-त्यों उसकी संवेदनशीलता कठोरता में बदलती जाती है, थंभा उसी अवस्था को व्यक्त करने वाला शब्द है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा निजी अनुभव है कि ऐसे कई धार्मिक व्यक्तियों को देखा है जो अपने व्यवहार में नम्र से नम्र दिखाई देते हैं किन्तु ज्योंही उनके अहं को कहीं चोट पड़ती दिखाई देती है वे स्तम्भवत कठोर ही नहीं खूंखार भी हो उठते हैं।

अनेक गाँवों में तड़ें (धड़ा-फूट) हैं। भाई-भाई एक साथ बैठकर खाना नहीं खा सकते। समाज का एक हिस्सा मिठाइयाँ उड़ाता है और दूसरे हिस्से के बच्चे तक वहाँ नहीं आ सकते, यह कितनी बड़ी निर्दयता और कठोरता है। यदि गाँव-गाँव में फैले फूट फजीतों के मूल में जाया जाए तो जो कारण मिलेंगे, वे होंगें आपस में टकराते अहंकार।

कई बार तो ऐसा आश्चर्य होता है कि दो वर्ग या दो व्यक्ति जो संघर्षरत हैं, एक ही तरह का समाधान चाहते हैं किन्तु फिर भी समाधान नहीं हो पाता तो इसका एकमात्र कारण होता है कि पहल कौन करे ?

और समझौता नहीं हो सका :

एक गाँव की बात है, किसी बात को लेकर तनाव पैदा हो गया। अनेक समस्यायें थीं, मध्यस्थों के द्वारा सभी उभयस्पर्शी समाधान निश्चित हो गया। समझौता सभी को मान्य था, किन्तु जब भोजन विधि का प्रसंग आया तो एक पक्ष इस बात पर अड़ा रहा कि पहले हमारे यहाँ जीमना पड़ेगा तो दूसरा पक्ष भी इसी बात पर तन गया, जीमना दोनों चाहते थे और जिमाना भी किन्तु पहल करने पर विवाद बढ़ गया और इतना बढ़ा कि समझौते रद्द हो गये और बात जहाँ की तहाँ रह गई। आप समझ गये होंगे कि इस तनाव के मूल में क्या था ?

कुछ व्यक्तियों का अहंकार था और वही फलीभूत रहा। तो कहने का तात्पर्य यह है कि अहंकार एक नागपाश है, यह जब मन को जकड़ लेता है तो मन जैसा तरल-संवेदनशील तत्त्व भी स्तम्भ की तरह कड़क हो जाता है।

अहंकार का समाधान—नमो :

नमो, जी हाँ, नमो, अहंकार का समाधान है, नमन। अपने आपको तन से ही नहीं, मन की कोमलता के साथ झुका देना अहंकार का समाधान है।

यही कारण है कि हमारे महामंत्र में नमो सर्वप्रथम है।

अन्य अनेक मंत्रों में नमः शब्द का उपयोग है किन्तु मंत्राक्षरों के बाद में। वीतरागीय महामंत्र में 'नमो' प्रथम है, आप समझ गये ? इसका अर्थ क्या रहा ?

आप पहले नमो, अपने अहंकार को खो दो। अरिहंताणं की प्राप्ति बाद में होगी। अहं नहीं गया तो अरिहंत भी नहीं। वीतराग शासन में अहंकार का प्रबल विरोध है।

जिन शासन में अहं के लिए कोई स्थान नहीं, किन्तु यह कितने खेद की बात है कि उन्हीं के अनुयायी आज इस सत्य को पहचानने में पीछे हैं। □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

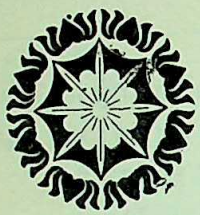

जैन द्रव्य दर्शन की उपयोगिता

☐ डॉ० विजय लक्ष्मी फोफलिया

ज्ञान के क्षेत्र में—चाहे वह भारतीय दर्शन हो, चाहे पाश्चात्य दर्शन हो या चाहे ग्रीक दर्शन हो—तत्त्वों की प्रधानता को स्वीकार किया गया है। इन तत्त्वों पर ही दर्शन की समस्त प्रणालियाँ अर्थात् नीति शास्त्र, तर्क शास्त्र एवं धर्म शास्त्र, निर्धारित होती है। इतना होते हुए भी पाश्चात्य दर्शन में मात्र तत्त्वों का विवेचन मिलता है। उनकी उपयोगिता का स्पष्टीकरण कम ही दृष्टिगोचर है जबकि भारतीय दर्शन में तत्त्वों के विवेचन के साथ ही साथ उनकी उपयोगिता का भी कथन मिलता है। तत्त्व वही है जिसमें "अर्थ-क्रिया-कारित्व" का गण है। अर्थात् जिसके द्वारा किसी कार्य की सिद्धि होती है। 'तत्त्व' शब्द का प्रयोग—'वस्तु', 'द्रव्य', 'पदार्थ', 'गुणी', 'धर्मी' 'परमसत्ता' एवं 'उपादान' के अर्थ में होता है।

यथा–सांख्य दर्शन द्वारा स्वीकृत—प्रकृति एवं पुरुष—ये दो तत्त्व हैं।[1] प्रकृति जड़ है और पुरुष—चेतन है। प्रकृति अपने अन्य २३ तत्त्वों[2] के साथ चेतन पुरुष के भोग और अपवर्ग के लिए सदैव क्रियाशील रहती है, पुरुष उसका भोग करता रहता है—अर्थात् "भोक्ता" है। पुरुष जब तक बन्धन की अवस्था में है तब तक वह प्रकृति द्वारा निर्मित वस्तुओं का भोग करता है। वहाँ पुरुष (चेतनात्मा) इन्द्रियाँ, मन एवं बुद्धि द्वारा प्रकृति के सत्त्व गुण अर्थात् शुद्ध सत्त्व द्वारा श्रवण, चिन्तन, मनन द्वारा अपवर्ग (मोक्षावस्था) को प्राप्त हो जाता है।

सांख्य दर्शन की तरह ही अन्य भारतीय दर्शन की शाखाओं ने भी द्रव्यों की उपयोगिता का कथन किया है। "जैन दर्शन" में षट् द्रव्यों–जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल[3] को स्वीकार किया गया है। ये द्रव्य अपने-अपने गुण और पर्यायों से युक्त होते हैं अर्थात्–

"गुण पर्यायवद् द्रव्यम्"[4]

गुण द्रव्य का "सहभावी" धर्म है और पर्याय द्रव्य का "क्रमभावी" धर्म है। प्रत्येक द्रव्य अपने गुणों द्वारा एक-दूसरे द्रव्य पर उपकार करता है,

१. सांख्यकारिका, गा. २१, पृष्ठ ४५,

२. वही, गा. २२, पृष्ठ ४६

३. (अ) एते धर्मोदयः पंच जीवाश्च प्रोक्त लक्षणः।
षड् द्रव्याणि निगद्यन्ते द्रव्यायाथात्म्पवेदिभिः।। स्था. १; सू. १
(आ) उत्तराध्ययन सूत्र, अ. २८, गा. ८

४. तत्त्वार्थ सूत्र, अ. ५, सू. ३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथा–धर्म द्रव्य अपने गति गुण द्वारा जीव और पुद्गल द्रव्य को गति प्रदान करके उपकार करता है। वह गति का नियामक कारण भी है।[1]

अधम्मो ठाणलक्खणो।[2] अर्थात् अधर्म द्रव्य स्थिति लक्षण वाला है।

अधर्म द्रव्य जीव और पुद्गल को स्थिति प्रदान करता है।

आकाश, द्रव्य इनको रहने के लिए स्थान (देश) प्रदान करता है।[3] काल द्रव्य द्वारा परत्व, अपरत्व, लघु गुरु का ज्ञान प्राप्त होता है।[4] पुद्गल द्रव्य द्वारा जीव के व्यवहार में अत्यधिक सहायता मिलती है। या यह कहना अधिक तर्कसंगत होगा कि जीव अपने प्रत्येक कार्य के लिए पुद्गल पर निर्भर करता है।[5] यह सब जीव की बन्धन की अवस्था में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि जीव की मुक्ति के लिए सहायक नहीं होते हैं। यथार्थ में समस्त द्रव्य जीव की मुक्ति के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जब जीव मुक्त होने के लिए साधना, ध्यान इत्यादि क्रिया करता है, तब "आकाश द्रव्य" उसको अवगाहित (अवगाहना गुण द्वारा) करता है, "अधर्म द्रव्य" के द्वारा उसे मन की स्थिरता (स्थिति गुण द्वारा) प्रदान होती है, उसी स्थिति में (अवस्था में) "धर्म द्रव्य" द्वारा चिन्तन की प्रक्रिया (गति गुण द्वारा) चलती रहती है। किन्तु इससे भी पहले "पुद्गल द्रव्य" द्वारा अत्यधिक सहायता मिलती है क्योंकि वह जीव द्रव्य के अति निकटवर्ती होने से बहुत ही उपकारी है, क्योंकि मन और इन्द्रियाँ जीव के लिए साधन का कार्य करती हैं, जो कि सभी पुद्गल द्वारा अंग रूप से निर्मित होते हैं। फिर एक ऐसा समय (काल) भी आता है कि जीव को मुक्ति मिलती है। इस प्रकार से "जीव द्रव्य" अपने ऊपर उपकार करता है, परन्तु वह इतना स्वार्थी नहीं कि स्वयं ही मुक्त होता है, बल्कि स्व-मुक्ति के पश्चात् परजीव मुक्ति का कार्य करता है। वह ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप का मार्ग बतलाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि जैन दर्शन द्वारा स्वीकृत षट् द्रव्य बन्धनावस्था से लेकर मुक्तावस्था तक अर्थ-क्रिया-कारित्व से युक्त है। यही इस दर्शन का उपयोगितावाद है।

—द्वारा ए. आर. जैन, ४१, गोलीमार लैण्ड, भवानीसिंह, रोड,
सी-स्कीम, जयपुर–३०२ ००१

१. गइलक्खणो धम्मो, उत्तराध्ययन सूत्र, अ. २८, गा. ९
२. उत्तराध्ययन सूत्र, अ. २८, गा. ९
३. "आकाशस्यावगाहः"–तत्वार्थ सूत्र अ. ५, सू. १८
४. तत्त्वार्थवार्तिक, भा. २, अ. ५, सू. २२, पृ. २८
५. तत्त्वार्थ सूत्र, अ. ५, सू. १९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार किस्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला :

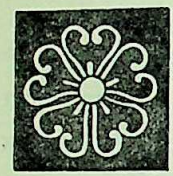

जैन हस्तलिखित ग्रंथ भंडार [४]

☐ प्राध्यापक उ० भा० कोठारी

अजैन शोध प्रतिष्ठान :

उच्च प्रकार की शोध संस्थाएँ और सच्चे विद्वान् हस्तलिखित ग्रंथों को बहुत महत्त्व देते हैं, चाहे वे किसी धर्म या सम्प्रदाय के हों, किसी भाषा के हों या किसी देश-प्रदेश से सम्बन्धित हों। इसलिए कई जैन ग्रन्थ भण्डारों में अनेक महत्त्वपूर्ण अजैन ग्रन्थ उपलब्ध हैं। सुरक्षित हैं। इसी प्रकार अनेक शोध संस्थाओं और ग्रन्थ भण्डारों में भी जैन ग्रन्थ केवल उपलब्ध ही नहीं, सुरक्षित भी हैं। जैन धर्म, दर्शन, संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाले शोध छात्रों को चाहिये कि वे अजैन ग्रन्थ भण्डारों को भी देखें। जहाँ जैन ग्रन्थ काफी प्रमाण में उपलब्ध हैं, ऐसी कुछ अजैन संस्थाओं की जानकारी नीचे दी जा रही है।

(१) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर प. पू. स्व. मुनि जिन विजयजी के भगीरथ प्रयत्नों से राजस्थान सरकार ने राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना करके ग्रन्थ संग्रह और उसकी सुरक्षा का कार्य हाथ में लिया। जोधपुर इसका मुख्यालय (Head Office) और जयपुर, बीकानेर, उदयपुर, चित्तौड़, अलवर, कोटा, टोंक ऐसे स्थानों पर शाखाएँ खोलीं। भारत के दूसरे किसी राज्य ने शायद ही इस प्रकार का कार्य किया हो। राजस्थान सरकार का यह कार्य बड़ा प्रशंसनीय है। संग्रह के लिए ग्रन्थ प्राप्त करना, उनकी हिफाजत रखना, व्यवस्थित सूचियाँ बनाना, शोध छात्रों के लिये सब प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराना आदि कार्य प्रतिष्ठान के सब शाखाओं में होता है। सूचियाँ प्रकाशन की योजना भी है। जोधपुर के संग्रह की सूचियों के २, ३ भाग छपे भी हैं, किन्तु बाद में शासन के आर्थिक सहयोग का हाथ खींच लेने के कारण सूची प्रकाशन योजना बन्द सी दिखाई देती है।

इस प्रतिष्ठान की स्थापना और संग्रह स्व. जिन विजयजी की योजना के अनुसार होने के कारण और इन्होंने अनेक ग्रन्थ दिलवाने के कारण जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, उदयपुर और चित्तौड़ शाखाओं में जैन ग्रन्थ काफी अधिक प्रमाण में हैं। कार्ड सिस्टम से पूरी सूचियाँ भी बनी हुई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) राजस्थान साहित्य शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर—प्रस्तुत संस्थान जोधपुर विश्वविद्यालय से संलग्न है। यहाँ अधिकांश रचनाएँ राजस्थानी भाषा की हैं और इनमें जैन रचनाएँ काफी संख्या में हैं। समग्र ग्रन्थों की व्यवस्थित सूचियाँ बनाकर प्रकाशित कराने की योजना कार्यान्वित हो रही है और सूचियों के ३–४ भाग छप चुके हैं।

(३) प्राचीन साहित्य शोध संस्थान, उदयपुर—यह भी उदयपुर विश्वविद्यालय के अन्तर्गत उसकी एक शाखा के रूप में कार्य कर रहा है। स्व० अगरचन्दजी नाहटा आदि के सम्पादकत्व में इसकी सूचियों के ३–४ भाग प्रकाशित हो गये हैं। संग्रह अच्छा है और उसमें जैन ग्रन्थ काफी प्रमाण में हैं।

(४) अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर—बीकानेर के दसवें महाराजा स्व. अनूपसिंहजी द्वारा स्थापित इस ग्रंथालय की स्व. अगरचन्दजी नाहटा ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। यहाँ करीबन चौदह हजार ह. लि. ग्रन्थ हैं। जैन ग्रन्थ अलग छांटे हैं, जो करीबन एक हजार हैं। महत्त्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थों की दृष्टि से यह संग्रह सचमुच प्रशंसा योग्य है। सूचियाँ व्यवस्थित बनी हुई हैं।

(५) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी– सभी जानते हैं कि साहित्य और शोध के क्षेत्र में कार्य करने वाली एक बड़ी और प्रख्यात संस्था है। इसकी स्थापना सन् १८९३ में हुई थी। इसने सन् १९०० ई. में उत्तर प्रदेश के ह. लि. ग्रन्थों का खोज कार्य हाथ में लिया। विद्वानों को भेजकर पूछताछ करके ह. लि. ग्रंथों का पता लगाया और इनकी विस्तृत सूचियाँ रिपोर्टों के रूप में प्रकाशित कीं। ग्रंथ जहाँ के तहाँ छोटी बड़ी संस्थाओं में या व्यक्तिगत अधिकार में हैं। किन्तु रिपोर्टों में उनकी पूरी जानकारी अते-पते सहित प्रकाशित की है। सन् १९०० ई. से १९४३ ई. तक किया हुआ खोजकार्य १ से १८ रिपोर्टों के रूप में प्रकाशित किया है। आगे सन् १९४४ ई. से १९५५ ई. तक के खोज कार्य के ४, ५ रिपोर्ट तैयार हैं, किन्तु अर्थाभाव के कारण वे उस समय प्रकाशित नहीं हो सकीं। बाद में यह कार्य छोड़ ही दिया गया। आगे न खोज कार्य चला न सन् १९४४ के बाद के रिपोर्ट प्रकाशित हो सके। किन्तु इतना ही कार्य बहुत विशाल और महत्त्वपूर्ण है। शोध छात्रों को ये रिपोर्ट देख लेने चाहिये, क्योंकि इनमें भी स्थान-स्थान पर जैन ग्रंथों का विवरण मिलता है।

इनके अलावा नागरी प्रचारिणी सभा का निजी संग्रह भी अच्छा और महत्त्वपूर्ण है। इसमें भी जैन ग्रन्थ हैं और इनकी हस्तलिखित सूचियाँ सभा में उपलब्ध हैं।

(६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग—राष्ट्रभाषा हिन्दी के क्षेत्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण काम करने वाली इस संस्था के ग्रन्थालय में भी तीन हजार के करीब ह. लि. ग्रन्थ हैं, जिनमें ३००-३५० जैन ग्रन्थ हैं। करीबन आधी संख्या के ग्रन्थों का विवरण देने वाली इनकी सूचियाँ सम्वत् २०१४ और २०१८ में छपी हैं। शेष ग्रन्थों का ब्यौरा हाथ की लिखी सूचियों में वहाँ जाकर ही देखना पड़ता है। प्रस्तुत लेखक यहाँ सन् १९७६ ई. में गया था तो कुछ अव्यवस्था का अनुभव हुआ था।

(७) दि ओरिएन्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा—महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा में यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शोध संस्थान है। यहाँ के करीब चौदह हजार ह. लि. ग्रन्थों की सूचियाँ दो भागों में छपी हैं। इनमें जैन ग्रन्थ एक हजार के करीब हैं। सूची का दूसरा भाग सन् १९४२ ई. में छपा था। इसके बाद भी करीब दस हजार ह. लि. ग्रन्थ संस्था में इकट्ठे हो गये हैं। इनकी सूची कार्डों के रूप में बनी है, जो कि संस्था में जाकर ही देखनी पड़ती है।

(८) भुवनेश्वर पीठ, गोंडल (गुजरात)—इस संस्था में संगृहीत ह. लि. ग्रन्थों का सूची पत्र १९६० में प्रकाशित हुआ था। यह देखने से पता चलता है कि इसमें भी जैन ग्रन्थ हैं। लेकिन ये ग्रन्थ अब यहाँ नहीं हैं। पीठ के व्यवस्थापक जी द्वारा दि. ४.८.१९७६ के पत्र में सूचना दी गयी है—"हमने ह. लि. ग्रन्थों का पूरा संग्रह गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर को भेज दिया है।" अतः अब ये सब ग्रन्थ जामनगर में हैं।

(९) कन्हैयालाल मुन्शी हिन्दी विद्यापीठ, आगरा—प्रस्तुत विद्यापीठ में भी एक छोटा ह. लि. ग्रन्थ संग्रह है, जिनमें कुछ थोड़े जैन ग्रन्थ भी हैं।

(१०) सिंधिया शोध केन्द्र, उज्जैन—विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के अन्तर्गत इस शोध केन्द्र का ह. लि. संग्रह विशाल और महत्त्वपूर्ण है। यहाँ भी जैन ग्रन्थ हैं। सूचियाँ और कार्ड हाथ से लिखे हुए हैं। सूचियों के प्रकाशन की कोई योजना सोची नहीं गयी।

(११) एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता—सोसायटी का म्यूजियम प्राचीनता की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें संस्कृत प्राकृत ग्रंथ अधिक हैं। जैन ग्रन्थ भी हैं। बहुत वर्षों पूर्व कैटलाग छपे थे। स्वाभाविकतः बाद का संग्रह इनमें आया नहीं। बाद के संग्रह की हाथ से बनी सूचियाँ यहाँ उपलब्ध हैं।

(१२) रायल एशियाटिक सोसायटी, मुम्बई—सोसायटी के ह. लि. ग्रंथों की सूचियाँ सन् १९२६ ई. से १९३० ई. के दरमियान चार भागों में छप चुकी हैं। भाग ३, ४ में जैन और देशी भाषा (Vernacular) के ग्रंथ अलग विभाग में दिये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) इण्डिया ऑफिस ग्रंथालय, लन्दन—सभी जानते हैं कि लन्दन के इण्डिया ऑफिस ग्रंथालय में भी भारतीय ह. लि. ग्रंथ हैं। इनमें कुछ थोड़े जैन ग्रंथ भी हैं। इन्होंने भाषावार सूचियों की छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं। इनके आधार पर जैन ग्रंथों की नोंध लेनी चाहिये।

ग्रंथ भण्डारों की असुरक्षितता :

संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती एवं कन्नड़ आदि भाषाओं में रचित यह विशाल जैन साहित्य देखकर हमारा सिर गौरवाभिमान से ऊँचा होता है। हृदय फूलकर कुप्पा हो जाता है, किन्तु दूसरे ही क्षण मन विषाद से भर जाता है। निराशा सिर पर नाचने लग जाती है। यहाँ तक कि जैन समाज का इस धरोहर की ओर दुर्लक्ष देखकर क्रोध की भावना तक उभरने लग जाती है। क्योंकि जैन विद्या के विद्वानों द्वारा हाथ में लिये गये शोध संस्थानों को छोड़कर शेष सारे मन्दिरों, उपाश्रयों के या व्यक्तिगत आदि सभी ह. लि. भण्डार मिट्टी में मिल रहे हैं। इनकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। साहित्य के अध्ययन के लिये विद्वानों को प्रोत्साहित करना और सुविधाएँ उपलब्ध करा देना तो दूर ही रहा, किसी को इनकी सुरक्षितता का खयाल नहीं है। मन्दिरों और उपाश्रयों में स्थित सैंकड़ों ग्रंथ भण्डारों में मुश्किल से १०–२० ऐसे मिलेंगे, जिनकी सुरक्षा का खयाल उचित ढंग से रखा जा रहा है। यह बात किसी के दिमाग को स्पर्श नहीं करती कि छपी पुस्तक गुम गयी या फट गयी तो दूसरी मिल सकती है। बाजार में न मिले तो आवश्यकता पड़ने पर किसी ग्रंथालय में तो मिल ही सकती हैं। क्योंकि एक बार छपी कि करीबन हजार पाँच सौ स्थानों को वह जाती है। लेकिन हस्तलिखित ग्रंथ नष्ट हो गया कि लाख रुपया खर्च करें तो भी दूसरा मिलने वाला नहीं है।

अव्यवस्था यहाँ तक देखने में आयी है कि जिन भण्डारों को डॉ कस्तूरचन्द कासलीवाल जैसे विद्वानों ने व्यवस्थित किया, उनमें से कई भण्डार पुनः अव्यवस्थित हो गये हैं।

कई भण्डार २–२, ५–५ बरस खोले नहीं जाते। टूटी-फूटी लकड़ी की आलमारियों में या सन्दूकों में भरे पड़े हैं, जो कि ग्रंथों के आलय नहीं चूहों के बंगले बन गये हैं। उन पर मनों धूल जम गयी है। वेष्टन के कपड़े मैले जीर्ण-शीर्ण हो गये हैं। संग्रहों के कमरों के सामने टूटा-फूटा सामान रखा हुआ है। चाबियों का पता नहीं है।

प्रस्तुत लेखक को कई स्थानों पर चाबियाँ खोजने के लिये जिन्द बनना पड़ा। व्यवस्थापकों को मनाने के शब्दों पर बोरियों शक्कर का लेप चढ़ाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा। टूटे-फूटे दीगर सामान को हटाने के लिये कुली बनना पड़ा। धूल झाड़ने के लिये अपने कपड़ों का झाड़न बनाना पड़ा और इतना करने पर भी जो हाथ आया, वह इतना खराब, अव्यवस्थित और बिखरा था कि आँखों में आँसू लेकर बाहर निकलना पड़ा। किसी छपी सूची या शोध ग्रंथ के आधार पर नोंध लेकर जावे कि अमुक भण्डार में अमुक ग्रंथ महत्त्वपूर्ण है और वहाँ जाकर खोजे–देखे तो वह गायब है, खराब हो गया है या बिखर गया है और अपूर्ण है।

कई स्थानों पर सूचियाँ उपलब्ध नहीं होती। कहा जाता है—थीं, हैं, किन्तु मिलती नहीं हैं। फिर प्रत्येक बंडल खोलकर प्रत्येक ग्रंथ टाइटल देखने के अलावा और कोई मार्ग ही नहीं रह जाता।

अविश्वास और असहयोग का अनुभव :

जहाँ व्यवस्थापकों ने रोते झींकते क्यों न हो सहयोग दिया वहीं प्रस्तुत लेखक उपरिनिर्दिष्ट प्रयत्न कर सका। कई जगहों से खाली हाथ उल्टे पाँव लौटना पड़ा। ह. लि. ग्रंथों के बारे में विद्वानों और शोध छात्रों को सहयोग प्राप्ति सपुष्पवत् है। इसका सबसे बड़ा कारण अविश्वास की भावना है। दिगम्बर श्वेताम्बरों पर विश्वास नहीं करते, तो श्वेताम्बर दिगम्बरों पर। ग्रंथ चूहों का भोजन भले ही बने पर जब दूसरे पंथ का कोई देखने पहुँचता है तो व्यवस्थापकों को एकदम ग्रंथ के अमूल्यता की याद आ जाती है और मन में विचार उभरता है कि सामने वाले सज्जन (?) कहीं हमारी धरोहर उड़ा न ले जायं। अविश्वास की भावना स्वपंथ के शोधार्थी के बारे में भी दिखायी देती है। मानो वह चोर ही हो। इसी डर से प्रथम तो सीधा कह दिया जाता है कि हमारे यहाँ कोई ह. लि. भण्डार ही नहीं है। गलत जानकारी लेकर आये हो। या फिर चाबियाँ नहीं मिलती।

असहयोग का दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण व्यवस्थापकों का अज्ञान और समयाभाव है। ऐसी संस्थाओं के ट्रस्टी या प्रधान व्यवस्थापक बहुधा नगर के बड़े सेठ होते हैं। ये सब बहुत कम सीखे हुए और अपने व्यवसाय में अत्यन्त व्यस्त होते हैं। वे भण्डारों को ताला लगाकर कुण्डली मारकर बैठ जाते हैं। शोधकर्ता के कार्य का महत्त्व ये कतई नहीं समझते। उसका समय, दूर का प्रवास और खर्च इनके लिए नगण्य चीजें हैं। इसके अलावा साथ चलकर खोल दिखाने और अध्ययन सुविधा उपलब्ध कराने के लिये उनके पास समय नहीं होता। अतः वे टाल देते हैं और टरका देते हैं। कोई हजार पाँच सौ मील चलकर आया हो तो भी इन्हें पर्वाह नहीं। सहज ही बोल जाते हैं—'हमारे पास समय नहीं है, अथवा कल आना, परसों आना, आठ दिनों से आना।' प्रस्तुत लेखक ने एक दो स्थानों पर सत्याग्रह करके अनुकूलता निर्माण की है। लेकिन यह भी सब मामलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कारगर नहीं हो सकता। ऐसे सेठों की तुच्छ भावना कहीं-कहीं इतनी अखरती है कि चुल्लूभर पानी में डूब मरें, किन्तु इनके सामने कभी न जावें।

ग्रंथों की एक पंक्ति भी न समझने वाले अमीरों के अधिकार-हाथ कहीं-कहीं इतने दीर्घ नजर आते हैं कि जिसकी कोई सीमा नहीं। देखने को मिलता है कि भण्डार चुरू में हैं, चाबी अमुक सेठ के कमर को बन्धी है और सेठजी का पधारना अपने बेटे के यहाँ कलकत्ता हुआ है, जो कि चार या छः महीनों के बाद ही लौट आयेंगे। भण्डार पीपाड़ में है और चाबी अजमेर में सेक्रेटरी के पास है।

कुछ भण्डार अमुक मुनिराज या आचार्य प्रवर के अधिकार में होते हैं। ऐसे भण्डारों को देखने जावें तो उत्तर मिलता है—'चाबी यहाँ नहीं है अथवा है तो लेकिन अमुक महाराज साहेब का पत्र ले आवो।' कैसे और कब लावें? भण्डार खम्भात में है और मुनिराज का चातुर्मास मुम्बई या कलकत्ता में है। भण्डार राधनपुर में है और मुनिराज पाटण या सूरत में बिराजमान हैं। यहाँ तक कि अमुक आचार्य महाराज या भट्टारकजी का स्वर्गवास हो गया। शिष्यों या भक्तों में झगड़े हो रहे हैं। भण्डार को सील लगी है। अब स्वर्ग में जाकर लौट सकें तो काम बने।

कुछ आचार्यों का और उनके श्रद्धावान श्रावक शिष्यों का तो यह स्पष्ट और दृढ़ मत है कि हस्तलिखित ग्रंथ केवल मुनिवर्ग के काम की चीज है। विद्वान् श्रावक इन्हें समझ नहीं सकते। साथ ही ये सब उटपटांग अर्थ लगाने वाले होते हैं। ये सब सच्चे ज्ञान को विकृत कर देंगे या हमारे पवित्र ग्रन्थों को म्लेच्छों के हाथ दे देंगे।

प्रस्तुत लेखक को इस प्रकार के विचार का शिकार होकर कई स्थानों से निराश होकर लौटना पड़ा है। दो चार स्थानों पर अधिक आग्रह किया, थोड़ी कुछ बहस की तो गालियाँ सुनकर बाहर निकलना पड़ा।

व्यवस्था और सुरक्षा की दिशा :

समग्र उपलब्ध जैन ग्रंथ संग्रह इतना विशाल, इतना महत्त्वपूर्ण, इतना श्रेष्ठ और बहुमूल्य है कि उसकी कीमत रुपयों-पैसों में आँकी नहीं जा सकती और उसका मूल्यांकन शब्दों में नहीं किया जा सकता। ऐसे इस अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचाना जैन समाज का परम और पवित्र कर्त्तव्य है और इस कार्य को अग्रक्रम देना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित ढंग से कार्य किया जा सकता है।

प्रथम तो विद्वानों का सहयोग लेकर इनके जो पृष्ठ बिखर गये हैं, उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक से जहाँ कि तहाँ लगवावें। फिर पूर्ण और अपूर्ण ग्रंथ अलग-अलग छाँटे। किसी अपूर्ण ग्रंथ के बहुत थोड़े पृष्ठ शेष हों तो भी उन्हें न फेंके। संजोकर रखें। हो सकता है अन्यत्र वही ग्रंथ आधा अधूरा या पूरा मिले। कम से कम इस प्रकार का एक ग्रंथ लिखा गया था इसकी भी तो नोंध साहित्य के इतिहासकार ले सकें इसलिये वे दो चार पृष्ठ भी काम आ सकते हैं।

ग्रन्थ व्यवस्थित करने पर एक अच्छे बाइण्ड बुक में सब पूर्ण अपूर्ण ग्रन्थों की सूची बनायी जावे। सूची बनाने का काम अच्छे जानकार विद्वानों द्वारा ही होना चाहिये। क्योंकि ग्रंथ पढ़े बगैर सूची ठीक तरह से नहीं बन सकती। कम से कम ग्रन्थ का आदि अन्त का कुछ भाग तो सतर्कता से पढ़ना आवश्यक होता है।

सूची में निम्नलिखित १५ स्तम्भ (Column) होने चाहिए—१. ग्रन्थ क्रमांक २. वेस्टन/डिब्बा क्रमांक ३, ग्रंथ नाम ४. भाषा ५. रचनाकार ६. रचना काल ७. लिपिकार ८. लिपिकाल ९. लिपिका स्थान १०. ग्रंथ की स्थिति (पूर्ण या अपूर्ण और जीर्ण, उत्तम या मध्यम) ११. ग्रंथ का आकार १२. पंक्तियां प्रति पृष्ठ १३. कुल पृष्ठ (बन सके तो श्लोक प्रमाण) १४. पेटे का तफशील (गुटका हो तो) १५. टिप्पणी (Remarks) इनके अलावा ग्रंथालय का नाम ऊपर लिखा रहता ही है। सूची किसी मासिक पत्रिका में प्रकाशित करनी हो या अन्य दस पाँच भण्डारों की सूची के साथ छापनी हो तो भण्डार का पूरा पता भी देना चाहिये।

भण्डार का संग्रह बहुत बड़ा हो तो प्रथम भाषा के आधार पर वर्गीकरण करें, फिर प्रत्येक भाषा के ग्रंथों का अनुयोगों के अनुसार (जैसे द्रव्यानुयोग, करणानुयोग आदि।) वर्गीकरण करें। फिर एक-एक वर्ग के ग्रंथ लेकर उनकी अकारादि क्रम से सूची बनावें।

बड़े-बड़े शोध प्रतिष्ठानों या विश्वविद्यालयों के ग्रंथालयों में ग्रंथों की जानकारी कार्ड सिस्टम द्वारा उपलब्ध करायी जाती है। उपरोक्त स्तम्भों की सारी बातें कार्ड पर लिखकर वे कार्ड अकारादि क्रम से उनके लिए बने खास दराजों (Drawers) में रखे जाते हैं।

इतना सब न हो सके तो (१) ग्रन्थ क्रमांक (२) ग्रन्थ का नाम (३) रचनाकार (४) रचनाकाल (५) भाषा और (६) कुल पृष्ठ इतनी बातें तो कम से कम सूची में होनी ही चाहिए। अन्यथा सूची का कोई उपयोग नहीं है।

देखने में आया है कि ग्रंथ की भाषा लिखते समय बहुत गड़बड़ियाँ होती हैं। साथ ही रचनाकार और लिपिकार के नामों के बारे में भी सूचियों में बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूलें परिलक्षित होती हैं। लिपिकाल को रचनाकाल समझ लिया जाय और लिपिकार को रचनाकार बना दिया जाय तो सारे सन्दर्भ ही गलत हो जाते हैं। अतः सूची में जानकारी की नोंध करते समय अत्यन्त सतर्कता बरतना आवश्यक है।

सूचियाँ तैयार होने के बाद पुराने वेष्टन बदल कर प्रत्येक ग्रंथ को ब्राऊन पेपर का वेष्टन लगाया जाय। इस पर भी ग्रंथ क्रमांक, ग्रन्थ नाम, रचनाकार और कुल पृष्ठों की संख्या लिखी जाय। फिर कपड़ों में उत्तम ढंग से बान्धे या डिब्बों में रखें और ये बण्डल या डिब्बे क्रम से अलमारी में रखें। अलमारियाँ लोहे की हों, क्योंकि लकड़ी की अलमारियों को भी चूहे काट डालते हैं। ग्रन्थों का क्रम कभी बिगड़ने न दें। यह कार्य करने वाला कार्यकर्त्ता किसी अच्छे जैन ग्रन्थ भण्डार की व्यवस्था देखकर सीखकर आवे। बन सके तो अहमदाबाद का 'डेलानो उपासरों' का ग्रन्थ भण्डार अवश्य देखें। ऐसी आदर्श व्यवस्था अन्यत्र मिलना मुश्किल है।

हर छः महीनों से अलमारियों से बाहर ग्रन्थ निकालकर उन्हें झाड़-पोंछ कर साफ किया जावे। धूप दिखायी जावे। छः महीनों से न बने तो कम से कम वर्ष में एक बार तो हो ही। 'आसोजा को तावड़ो' अवश्य दिखावें।

कई स्थानों पर ज्ञान पंचमी को ग्रन्थालय खोला जाता है और ग्रंथों की पूजा की जाती है। यह प्रथा ग्रंथों की सफाई और उन्हें धूप दिखाने के लिए है। केवल कुंकुम चावल चढ़ाने के लिए नहीं।

अगर सम्भव हो तो सूचियाँ प्रकाशित करवावें। छपाई सम्भव न हो तो छः कॉलमी सूची चक्रमुद्रांकित करके सो पचास प्रतियाँ बड़े-बड़े शोध केन्द्रों और ग्रन्थालयों को भिजवादें, ताकि शोध छात्र, विद्वान् एवं मुनिवरों को सूची देखने के लिए दूर का प्रवास न करना पड़े।

भण्डार खुलवाकर ग्रन्थ निकालकर लेने के लिए भले ही प्रधान ट्रस्टी को बुलाना पड़े। किन्तु केवल सूची के लिए उनके पास जाना न पड़े। सूची देखना सहज सम्भव हो ऐसी व्यवस्था की जावे।

ह० लि० ग्रंथ कहीं बाहर न ले जाने दें। नगर के लोगों को भी ह० लि० ग्रन्थ घर पर पढ़ने के लिए न दें। कोई शोध छात्र या विद्वान् अथवा मुनिवर्ग से कोई अगर किसी ग्रन्थ विशेष का अध्ययन करना चाहे तो इन्हें ग्रन्थ अवश्य निकाल दें। वहीं उनके अध्ययन की व्यवस्था करें। किन्तु उस व्यक्ति की पूरी पूछताछ करके बाद में ही विश्वास किया जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई अध्ययन शील व्यक्ति इस सीमा तक पूछताछ या सतर्कता को अपना अपमान न समझे। क्योंकि कई मौलिक और महत्त्वपूर्ण श्रेष्ठ ग्रन्थ चुराकर परदेसियों के हाथों बेचने की अनेक घटनाएँ अतीत में हुई हैं। सतर्कता बरतना योग्य भी है और जरूरी भी।

इधर अध्येता का भी कर्त्तव्य है कि ग्रन्थ का उपयोग हिफाजत से करें। बाहर या अपने स्थान ले जाने के लिए माँगे ही ना। ऐसा अनुभव है कि माँग कर ले जाया गया ग्रंथ वापस नहीं आता। अखिल भारतीय कीर्ति के श्रेष्ठ विद्वानों के बारे में ऐसी वारदातें घटी हैं कि ग्रन्थ माँगकर ले गये और लौटाये ही नहीं। अपना भण्डार भर लिया।

व्यवस्थापक ग्रंथों की सुरक्षा का खयाल नहीं रखते हैं तो बहुत बड़ा नुकसान करते हैं। एक तरह से बहुत बड़ा अपराध करते हैं। अध्ययन करने न देना उतना ही बड़ा दूसरा अपराध है। अध्ययन करने के लिए ग्रन्थ न मिलें तो भण्डार का उपयोग ही क्या और प्राचीन साहित्य में जो श्रेष्ठ बातें भरी पड़ी हैं वे प्रकाश में कैसे आयेंगी ?

बड़े-बड़े सेठ लोग अब भण्डारों की देखरेख का काम नगर के किसी पढ़े लिखे श्रावक को सौंप दें। अर्थात् इस प्रकार की नियुक्ति से पूर्व सम्बन्धित व्यक्ति की प्रामाणिकता और विश्वासार्हता का एहसास कर लेना चाहिए। साथ ही वह व्यक्ति ऐसा हो कि आवश्यकता पड़ने पर अधिक समय दे सके। भण्डार और सूचियाँ दिखाने, अध्ययन हेतु पुस्तकें निकाल देने आदि कामों में आनाकानी करने वाला न हो।

इतना सब कुछ जिनसे न होता हो वे व्यवस्थापक या ट्रस्टी अपना ग्रंथ भण्डार (१) ला. द. प्राच्य विद्या संशोधन मन्दिर, अहमदाबाद (२) श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर (३) श्री महावीर शोध संस्थान (दिगम्बर), जयपुर (४) श्री हेमचन्द्राचार्य लायब्रेरी, पाटण (५) डेलानो उपाश्रय का चंचलभाई ज्ञान भण्डार, अहमदाबाद आदि जैसी संस्थाओं को या राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की किसी शाखा को दे दें। अपने मूल नाम की अलग अलमारी रखने की शर्त भी इनमें से कोई भी मान सकता है। व्यक्तियों को तो निजी भण्डार संस्थाओं में भेज ही देने चाहिए। अगली पीढ़ियों के बच्चों का क्या भरोसा कि वे हिफाजत करेंगे ही। हो सकता है उनमें वह प्यार और वह दृष्टि ही न हो या परिस्थितिवश वे ध्यान न दे सकें। [समाप्त]

—पितृछाया, न्यू फ्लैट्स अमलमेर (जलगाँव) महाराष्ट्र

• •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसक समाज से सीधा सवाल

☐ श्री जिनेन्द्रकुमार जैन

जैन धर्म का मूल आदर्श अहिंसा और दया है। ढाई हजार वर्ष पूर्व हिंसा, अन्याय व शोषण के विरुद्ध जो संघर्ष आरम्भ किया था, उसकी सफलता का नाम ही जैन धर्म है। यही कारण है कि आज भी जैन समाज अहिंसा व करुणा की प्रतिष्ठा अपनी व्यक्तिगत व नैतिक जिम्मेदारी अनुभव करता है।

जैन धर्म के ग्यारह हजार से अधिक साधु व सतियाँजी महाराज अपने एक करोड़ से अधिक अनुयायियों को न केवल अहिंसक बनाये हुये हैं, अपितु उन्हें हिंसा व शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने के लिए भी प्रेरित कर रहे हैं। निश्चय ही इसे साधारण बात नहीं समझना चाहिये।

जैन धर्म में कई समुदाय हैं लेकिन भगवान महावीर के अहिंसा व करुणा के सिद्धान्त पर कहीं कोई भेद नहीं है। कभी कभी मैं सोचता हूँ कि इस गुट-बाजी के कारण भले ही सामाजिक ढाँचा तनिक कमजोर हुआ है, लेकिन अहिंसा प्रचार की प्रतिस्पर्धा रहती है और हर समुदाय अहिंसा प्रचार में सबसे आगे रहना चाहता है।

जैन धर्म सूक्ष्म हिंसा भी पसन्द नहीं करता। अण्डा, माँस-मछली आदि का सेवन करना तो अलग, हम किसी प्राणी के सम्बन्ध में बुरा सोचना भी धर्म के विरुद्ध आचरण मानते हैं। छोटे से छोटे जीव की रक्षा में हमें धर्म की अनुभूति होती है, इसलिए हम पानी भी छान कर पीते हैं।

लेकिन वर्तमान युग के हालात को देखकर संदेह होता है कि क्या हमारा अहिंसा का आदर्श "भविष्य की दुनिया" को प्रेरित कर सकने में सक्षम बना रह सकेगा ?....और लोगों की चिन्ता छोड़ भी दें, लेकिन यह प्रश्न भी है कि क्या आने वाले समय में हम स्वयं तो अहिंसक बने रह सकेंगे ?

आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के युग पर एक दृष्टि डालिये। उस समय लोग पेट भरने के लिए पूरी तरह से पशु-पक्षियों पर निर्भर थे। लेकिन भगवान ने उन्हें करुणा का संदेश दिया और "प्राणी आहार" के विकल्प के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में "खाद्यान्न आहार" को प्रस्तुत किया। यह मानना भी मुश्किल है कि भगवान के कहने मात्र से लोगों ने "प्राणी आहार" छोड़ दिया था। सम्भवत: उन्होंने यह भी सिद्ध किया होगा कि मांस की अपेक्षा खाद्यान्न अधिक पौष्टिक व स्वादिष्ट है। मेरी धारणा है कि अगर यह बात भगवान ऋषभदेव लोगों को ठीक प्रकार से समझा नहीं पाते तो उनकी बात का तात्कालिक समाज पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

इसके बावजूद "प्राणी आहार" पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ। कुछ प्रसिद्ध इतिहासकारों का मत है कि भगवान् महावीर के युग में भी "प्राणी आहार" का प्रचलन था।

अब आप वर्तमान हालात पर भी एक दृष्टि डालिए। विशेषज्ञों का मत है कि आने वाले पचास वर्षों में पृथ्वी इतना खाद्यान्न उत्पन्न नहीं कर सकेगी, जितना कि उस समय की जनसंख्या को आवश्यकता होगी। सन् १९०० में विश्व की जनसंख्या १५५ करोड़ थी जो तीव्र गति से निरन्तर बढ़ती जा रही है। अनुमान है कि सन् २००० तक उसके ६०० करोड़ से भी अधिक हो जाने की आशा है। जनसंख्या के अनुपात में खाद्यान्न का उत्पादन गिर रहा है।

अब एक क्षण अपने देश भारत की वर्तमान और भावी स्थितियों पर दृष्टि डालें। आज बाजार में प्रचुर मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध है फिर भी आर्थिक तंगी के कारण हमारी आधी जनसंख्या भुखमरी व कुपोषण की शिकार है। शेष आधी जनसंख्या पेट तो भरती है, लेकिन इसमें से आधे से अधिक को पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता।

देश का बहुत बड़ा हिस्सा गाँवों और जंगलों में रहता है, जहाँ हर अगले वर्ष लोगों को अनावृष्टि या अतिवृष्टि का सामना करना पड़ता है, फलतः फसलें चौपट हो जाती हैं। गाँवों में रोजगार के साधन भी विकसित नहीं हैं, इस स्थिति में उनके लिए जीवित रहने के लिए कौनसे साधन बचे रहते हैं? मानव सभ्यता से काफी दूर आदिवासी व घुमक्कड़ जातियाँ तो पूरी माँसभक्षी ही हैं। जो लोग शहरों में रहते हैं, उनमें से कितने लोग सूखे मेवे, मौसमी फल, देशी घी, व दूध-दही आदि पौष्टिक पदार्थ खरीदने की क्षमता रखते हैं? हरी सब्जियाँ भी इतनी महँगी हैं कि आम लोगों की पहुँच से बाहर होती जा रही हैं।

अण्डा, माँस मछली के प्रचलन का एक कारण यह भी है कि गाँवों तथा जंगलों में यह सब मुफ्त सुलभ है, और शहरों में शाकाहारी पौष्टिक पदार्थों की अपेक्षा सस्ती है। भले ही हम कितना ही प्रचार करते हैं कि अण्डा, माँस,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मछली खाना मानवीय गुणों के विपरीत और स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है, लेकिन हमारा यह प्रचार शिथिल हो जाता है, जब स्वयं हमारी सरकार पौष्टिक तत्त्वों की पूर्ति के लिए अण्डा, माँस-मछली आदि खाने का आह्वान करती है।

अपने विषय को मैं और अधिक स्पष्ट करना चाहता हूँ। हाल ही वैज्ञानिकों ने मिट्टी, उर्वरता, फसलों आदि के बारे में विविध परीक्षण व अनुसंधान किए हैं। उनकी मान्यता है कि कीटनाशक दवाओं एवं उर्वरकों के प्रयोग से प्रदूषण फैला है और भू-रक्षण को भारी क्षति पहुँची है, अतः मानव आहार के नये विकल्प खोजने आवश्यक हो गए हैं। मनुष्य को जीवित रखने के लिए वैज्ञानिकों ने प्रयत्न भी आरम्भ कर दिए हैं। लेकिन भारत जैसा अविकसित देश, जहाँ कृषि योग्य भूमि कम और इन्सान ज्यादा हैं, साथ ही आधुनिक तकनीक के मामले में विकसित देशों से काफी पीछे है, नये प्रयोग करने की जिसकी आर्थिक क्षमता नहीं, उस स्थिति में हम अपना पेट कैसे भर सकेंगे ?

यह मान लेते हैं कि हम खाद्यान्न के अभाव में अण्डा, माँस-मछली नहीं खायेंगे, लेकिन अन्य लोगों को अहिंसक बने रह सकने के लिए कैसे प्रेरित कर सकेंगे....और क्या लोग हमारी बात सुनेंगे भी ?

हम एक सभ्य दुनिया में जी रहे हैं, जहां प्रतिपल कोई न कोई समस्या उत्पन्न होती है, और उसका समाधान भी निकलता है। लेकिन समाधान व्याख्यान देने या पर्चेबाजी करने मात्र से नहीं निकल सकता, इसके लिए हमको नए ढंग से चिन्तन-मनन करना होगा। हमारे उन नौनिहालों के लिए जो पचास वर्ष बाद भी जीवित रहेंगे। वैसे भी अहिंसक समाज या अहिंसक विश्व की रचना हमारा नैतिक दायित्व है।

अतः यह आवश्यक है कि अहिंसा प्रेमी रचनात्मक भूमिका तैयार करें, या तो खाद्यान्न का प्रबन्ध करें अथवा खाद्यान्न का कोई विकल्प खोजें। सिर्फ प्रवचन देने या पर्चेबाजी से लोगों का पेट नहीं भरा जा सकता।

—सम्पादक, 'जैन समाज' दैनिक,
घीवालों का रास्ता, जयपुर

• कीट को और इन्द्र को जीने की समान आकांक्षा है, और दोनों को मृत्यु का भय भी समान है।

• जो अपने सुख के लिए जीवहिंसा नहीं करता, वह सुख प्राप्त कर लेगा।

—धम्मपद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल कथामृत (२५)

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

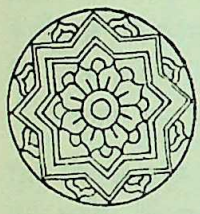

संगत का प्रभाव

□ ललिता कोठारी

एक शहर में धनपत नाम का एक सेठ रहता था। जैसा उसका नाम, वैसा ही धन भी था। बुरी संगत के प्रभाव से वह सज्जन से दुर्जन बन गया। उसे मदिरा सेवन की आदत पड़ गई। शराब पीने में उसने अपना सारा धन ही बर्बाद कर दिया। यहाँ तक कि उसने पत्नी के जेवर और वस्त्र तक बेच डाले। निगोड़ी शराब ने उसके मन और मस्तिष्क को निगोड़ा बना दिया।

शराब पीने के लिये रुपये तो चाहिये। रुपये बिना श्रम किये मिल नहीं सकते थे। अतः उसने चोरी करना प्रारम्भ कर दिया। चोरी से मन चाहा धन प्राप्त होने लगा तो वह मांसाहार, वैश्यागमन भी करने लगा। जुआ खेलना भी चालू कर दिया। इस प्रकार वह लगभग सभी व्यसनों का अड्डा बन गया।

सभी व्यसन अपना नाटक बताने लगे। भिखारी और पागलों की तरह धनपत गलियों, सड़कों और चौराहों पर घूमता-फिरता। पीछे-पीछे पांच, सात कुत्तों की फौज। कभी किसी को गालियां बकता तो कभी किसी को पत्थर भी मार देता या फिर गाने लगता।

एक रात नशे में चूर धनपत अपने घर जा रहा था। उसके घर जाने का रास्ता एक बगीचे में से होकर निकलता था। बगीचे में एक महात्मा आये हुए थे। भक्तजन उनके समीप बैठे भजन गा रहे थे। जब धनपत बगीचे में से गुजर रहा था तो भजन की मधुर स्वर-लहरी उसके कानों में झंकृत हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराबी धनपत अपने आपको भूलकर गाने लगा—"अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय।" दूसरे दिन भी वह उसी समय बगीचे से निकला, तो पहले दिन की भांति ही भजन की मधुर स्वर-लहरी बह रही थी। वह पूर्व दिन की भांति आज भी गाने लगा—"अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय।"

धनपत प्रतिदिन भजन सुनता और गा-गा कर आत्मविभोर होता। इसका परिणाम यह हुआ कि "अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय" उसकी जबान पर चढ़ गया। वह दिन में किसी भी समय इसको गाने लगता।

शराबी धनपत शराब के नशे में चूर घर की ओर गाता हुआ जा रहा था। रास्ते में उसे चोर मिले। वे किसी के घर से धन चुराकर जा रहे थे। चोरों को देखते ही शराबी अकड़ के साथ बोला—"इतनी रात गये तुम कहाँ से आ रहे हो ? अवश्य दाल में कुछ काला है, जरा रुको तो।" सुनते ही चोर सिर पर पैर रखकर भागे।

शराबी धनपत 'पकड़ो-पकड़ो' चिल्लाता हुआ चोरों के पीछे दौड़ पड़ा। उसकी आवाज को सुनकर और लोग भी आ गये। जब चोरों की तलाशी ली गई तो उनसे चोरी का बहुत-सा माल बरामद हो गया। पुलिस ने उसकी प्रशंसा की व पुरस्कार दिया।

शराबी धनपत का मन हर्ष से नाच उठा। उसने सोचा—"यह पुरस्कार अवश्य "अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय" भजन से प्राप्त हुआ है। इसे दूर से सुनने पर जब इतना लाभ हुआ, तो पास बैठकर भजन करने व सुनने से कितना लाभ होगा ?"

शराबी धनपत शराब तो पीता था, किन्तु उस दिन से वह रात में महात्मा के पास नित्य जाने लगा और भजन सुनता। वहाँ उसे उपदेश भी सुनने को मिलते जिससे उसका जीवन बदलने लगा। अब उसने मांसाहार करना, वैश्यागमन और जुआ खेलना छोड़ दिया। धीरे-धीरे शराब पीना, गालियाँ बकना तथा पत्थर मारना बंद कर दिया। अब वह भजन-कीर्तन में ही अपना समय लगाता व परोपकार को जीवन-धर्म समझता।

शराबी धनपत ने सोचा—"महात्मा के उपदेश सुनने से वह इतना बदल गया है यदि दिन-रात उनके साथ रहे तो जीवन सोना बन जाएगा।"

एक दिन महात्मा ने उपदेश दिया—"अच्छे व्यक्तियों की संगत से हमारी बुराइयाँ उसी प्रकार दूर हो जाती हैं, जिस प्रकार तेज हवा के चलने पर पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की काई। जब मन बुराइयों से दूर हो जाता है, तो मनुष्य को किसी प्रकार का कष्ट नहीं रहता।"

उपदेश समाप्त होने पर सभी श्रोता उठकर चले गये। धनपत वहीं रुका। महात्माजी को अकेला देख, लपक कर महात्माजी के चरण पकड़ लिये। कहने लगा—"मैं आपकी शरण में हूँ।"

"पर तुम हो कौन ? मेरे पास क्यों रहना चाहते हो ?" महात्माजी ने पूछा।

शराबी ने अपनी पूरी कहानी महात्माजी को सुना दी। महात्माजी ने कहा—"तुम्हें मेरे पास रहने से पूर्व, मेरी एक बात माननी होगी। वह यह कि—तुम्हें एक वर्ष तक मदिरालय में नौकरी करनी पड़ेगी।"

शराबी धनपत ने महात्मा की बात मान ली। मदिरालय में एक वर्ष रहकर महात्मा की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा—"अब तो मुझे आपकी शरण मिलेगी।"

महात्मा ने कहा—"निश्चित मिलेगी। तुमने यह बात सिद्ध कर दी कि सत्संग से दुष्ट से दुष्ट व्यक्तियों में भी साधना का रस पैदा हो जाता है। सत्संग से दानव भी मानव बन जाता है।"

—पंचायती नोहरे के पास,
सेवकों की गली, बड़ी सादड़ी (राज.) ३१२४०३

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'जिनवाणी' कार्यालय को लिखकर भेजिये :—

१. शराब पीने की आदत का धनपत के जीवन पर क्या दुष्प्रभाव पड़ा ?

२. "अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय" भजन याद कर पूरा लिखिए।

३. अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये 'पंचपरमेष्ठी' कहे गये हैं। संक्षेप में इनकी विशेषताएँ लिखिए।

४. जिस घटना से धनपत का जीवन बदला, उसे संक्षेप में लिखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. महात्मा का उपदेश सुनने से धनपत के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

६. महात्मा ने धनपत की परीक्षा कैसे ली और उसका क्या परिणाम रहा ?

७. 'सत्संग से दानव भी मानव बन जाता है।' इस कथन की पुष्टि कोई उदाहरण देकर कीजिये।

उत्तरदाताओं के नाम

"जिनवाणी" के फरवरी, १९८४ में प्रकाशित **"वास्तविकता का बोध"** कहानी के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्न बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं, धन्यवाद !

स्टेशन बजरिया (सवाईमाधोपुर) से कु० सुजाता जैन, कु० साधना जैन, कु० सरोज जैन, कु० बीना जैन, कु० ममता जैन, श्री मुकेश जैन, श्री मनोज जैन, कु० इन्द्रा जैन। **बर** से उत्तमचन्द रुणवाल, लक्ष्मीचन्द रुणवाल। **भवानीमंडी** से रेखा शर्मा। **मांडल** (महाराष्ट्र) से सुवर्णा खिवसरा, संगीता खिवसरा, **बावड़ी** (मध्यप्रदेश) से अशोककुमार कटारिया, **गुलाबपुरा** से भागचन्द नाबेड़ा, श्री युधिष्ठिरसिंह शक्तावत। **जोधपुर** से श्री कल्याण, आनन्द जैन।

पुरस्कृत उत्तरदाता

प्रथम :—धर्मचन्द जैन S/o श्री मुन्शीलाल जैन, ग्राम व पो० हरसाना, तह० लक्ष्मणगढ़, जिला अलवर (राज०)।

द्वितीय :—कुसुमलता सुराणा, C/o श्री चम्पालाल सुराणा, डेन्डों का बास, पाली (राज०)।

तृतीय :—श्री रघुनन्दन शर्मा C/o श्री सीताराम, गौतम निवास, भवानीमंडी–३२६५०२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ प्रवास

ज्वलनाचार्य और क्षमा विजय [९]

☐ अनुवादक : श्री लालचन्द्र जैन

[गतांक से आगे]

श्रावक विनयचन्द्र के स्पष्टीकरण ने आग में घी का काम किया, ज्वलनाचार्य का क्रोध भड़क उठा, वे भयंकर मुँह बनाकर गरज पड़े ।

अरे अधम श्रावक ! थोड़ा सोच समझकर बोल ! क्या तू हमें अनाचारी मानता है ? हम सब मुनि तुम्हें दण्ड देने के लिये तत्पर हुए, इसलिये हम अनाचारी हैं, क्यों ? मूर्ख ! तेरे ये शब्द तुझे बहुत भारी पड़ेंगे । अभी भारत-वर्ष का समस्त संघ तुझे बहिष्कृत करेगा और तू निकृष्ट गति को प्राप्त होगा । यदि तूने विनय से काम लिया होता तो तुझ पर दया आती, अब तुझ पर दया नहीं की जा सकती । इतना कहकर आचार्य ने संघ के कार्यकर्त्ताओं की ओर देखा और कहा—"श्रावको ! अब किस बात की देरी है ? सर्वसम्मति से निश्चय करने के अतिरिक्त अब क्या चारा है ? इस मूर्ख के वचन कितने अविनीत हैं ? इसने हमें अनाचारी कहा है । तुमने इस उद्धत श्रावक का लेख पढ़ा है या नहीं ? उसमें इसने मुनियों की ऐसी निन्दा की है कि पढ़कर रोम-रोम खड़े हो जाते हैं । अब इस अनाचारी युवक को तत्काल संघ से बाहर करना चाहिये । तुम सबको भी मेरी आज्ञा माननी चाहिये । तुम्हें मालूम है कि मैं संघ का नायक आचार्य हूँ और मुनियों का अनुशासक भी हूँ । यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे तो तुम्हारे विषय में भी मुझे सोचना पड़ेगा ।"

ज्वलनाचार्य की आज्ञा और चेतावनी सुनकर शांतमूर्ति पन्यास विचार में पड़ गये । फिर भी वे शुद्ध क्षमाश्रमण क्षमा धारण कर चुप रहे । पन्यासजी के भक्त श्रावकों के मन भी दुःखित हुए, आचार्य के प्रति उनके मन में निकृष्ट अभिप्राय उत्पन्न हुए, फिर भी वे उस समय मौन रहे, कुछ न बोले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा में एक कल्याणचन्द्र नामक धर्मिष्ठ और प्रामाणिक और सत्यवादी श्रावक बैठा था। उसने प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्राप्त की थी। वह आजकल के साधुओं और श्रावकों के आचार को जानता था। उसमें कैसे सुधार की आवश्यकता है, इस विषय में उसने लम्बे समय तक मनन किया था। उसने विनयचन्द्र का सम्पूर्ण लेख पढ़ा था और उसके विषय में उसको उच्च अभिप्राय था। कल्याणचन्द्र नगर के प्रतिष्ठित श्रावक का पुत्र है, धनवान और विद्वान् है, चापलूसी से दूर रहने वाला और सबसे हिलमिलकर चलने वाला युवक है। आचार्य के उग्र वचन सुनकर उसका हृदय उत्तेजित हो गया। अतः सत्य निष्ठा का आलंबन लेकर वह बोला, "महाराज! आप क्या फरमा रहे हैं? क्या आप कुछ भी सोचकर नहीं बोलते? आचार्य को ऐसी उग्र वाणी नहीं बोलनी चाहिये। आपको यह नहीं समझना चाहिये कि आचार्य बन गये तो सारे जैनियों के अधिष्ठाता बन गये, क्योंकि आचार्य के पद की योग्यता को आप स्वयं ही नहीं समझते। जैनाचार्य को क्षमावान् और विनयवान् होना चाहिये, साथ ही ज्ञान का महा सागर होना चाहिये। आपमें ऐसा कोई भी गुण दिखाई नहीं देता, अतः मैं और अन्य यहां बैठे हुए प्रामाणिक तथा समदृष्टि श्रावक आपको आचार्य नहीं मानते।

"विनयचन्द्र विद्वान्, प्रामाणिक और धार्मिक युवक है, उसके विषय में आप अयोग्य शब्द नहीं बोल सकते। जब तक आप अपनी योग्यता और मर्यादा में रहेंगे, तभी तक अन्य लोग भी आपकी मर्यादा रखेंगे। जब आप स्वयं अपनी योग्यता और मर्यादा का भंग करेंगे, तब अन्य लोग भी आपकी मर्यादा नहीं रखेंगे। विनयचन्द्र ने जो लेख लिखा है, वह ठीक है और साधुओं को शिक्षा देने वाला है। जिस विद्वान् मुनि या गृहस्थ ने शुद्ध बुद्धि से उस लेख को पढ़ा होगा, वह उसे कभी दूषित नहीं बतायेगा। महाराज! यह युग ही भिन्न है, आजकल तो भेड़चाल का जमाना है। आजकल जब भारत के सार्वभौम राजाओं के दोष भी प्रकट किये जाते हैं, तब आप जैसे सत्ता रहित भिक्षु किस खेत की मूली हैं? इन महाशय ने साधुओं के आचार-विचार में होने वाली विपरीतता को बताने के लिये और उसमें सुधार करने के लिए यह लेख लिखा है, साधुओं पर द्वेष रखकर नहीं लिखा है। आप नाम मात्र के आचार्य होकर, धर्मांध श्रावकों को दबाकर, इस धार्मिक युवक का इतना अपमान कैसे कर रहे हैं? आप बार-बार उसे संघ से बाहर निकालने का भय दिखा रहे हैं, तो क्या आप भारत के समस्त जैन संघ के अधिपति हो गये हैं? मन से ऐसे गर्व को निकाल दीजिये। दो-चार शहर या गाँवों के आपके भक्त श्रावकों पर आपकी सत्ता चलती होगी, पर विश्व के संघ पर आपकी सत्ता कदापि नहीं चल सकती। आपने इस गृहस्थ श्रावक के प्रति यहां के संघ के प्रति और इन महात्मा वृद्ध पन्यासजी के प्रति जो शब्द कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, उससे तो आपकी अयोग्यता सिद्ध हो चुकी है। आपने इस विद्वान् लेखक, संघ और वृद्ध पन्यासजी का अपमान किया है, उसमें भी इस विद्वान् लेखक के लिये आपने जो शब्द कहे हैं, वे तो एकदम असत्य हैं। इन शब्दों को सहन करने वाला यह गृहस्थ वास्तव में धन्यवाद का पात्र है और आपके जैसे ज्वलनाचार्य से तो हमें इसमें अधिक योग्यता दिखाई दे रही है। वास्तव में तो गृहस्थ होने पर भी क्षमा-श्रमण का विशेषण इसी के लिये उपयुक्त लगता है। महाराज ! आपके जैसे क्रोधी आचार्यों के होने पर जैनधर्म विनष्ट हो जायगा। वीरशासन के अनेक टुकड़े हो जायेंगे और गच्छों की शाखाओं में से प्रशाखायें निकलेंगी। महाराज ! आप साधु हैं और मुझे आपको इतने कटु वचन कहने पड़े हैं, इसलिये मैं माफी मांगता हूँ। आप अपने स्वरूप का विचार करें और मेरे अपराधों को क्षमा करें। इस समय क्रोध कषाय के उदय से मुझे कर्मबन्ध हुआ है, यह मैं जानता हूँ, पर आपके उग्र वचनों को सुनने की असमर्थता ने ही मुझसे यह कर्मबन्ध करवाया है। तथापि मुझे सन्तोष है कि यदि मेरे वचनों का असर आपके हृदय पर हुआ होगा तो भविष्य में आप कभी ऐसी उग्र वाणी का उच्चारण नहीं करेंगे, जिससे मेरे जैसी प्रकृति वाले अन्य किसी पुरुष को कर्मबंध नहीं होगा और आपको भी फिर कभी असत्य बोलने का प्रसंग नहीं आने से कर्मबन्ध नहीं होगा।"

कल्याणचन्द्र इतना कहकर बैठ गया। उसके वचन सुनकर ज्वलनाचार्य अति क्रोधित हुए। उनका मुँह लाल हो गया और आँखों से आग बरसने लगी। यद्यपि इस गृहस्थ के स्पष्ट वचनों ने उनके आवेश को शिथिल कर दिया था क्योंकि अधिकांश साधु और संघ के लोग उसके कथन से सहमत हो रहे हैं, ऐसा चतुर आचार्य को भासित हो गया था और वे जान गये थे कि अब उन्हें पूरा समर्थन नहीं मिलेगा, तथापि वे उग्र आचार्य पूर्ण शांत नहीं हुए। वे अपने स्वभाव के वशीभूत थे, उनका आवेश एकदम नष्ट नहीं हो सका, उच्च स्वर से बोले, "अरे श्रावक ! क्या तू ऐसा समझता है कि तू धनवान है इसलिये आचार्य तुझसे डर जायेंगे ? पर मैं तेरे जैसे धनवान से डरने वाला नहीं हूं। मुझे बड़े राजा की भी परवाह नहीं, फिर तेरे जैसे सामान्य गृहस्थ की क्या परवाह करूँगा। अभी तो तू अकेला मेरे विरुद्ध हुआ है, पर इस नगर का पूरा संघ भी यदि मेरे विरुद्ध हो जाय तब भी मैं डरने वाला नहीं हूँ। मेरा एक रोम भी किसी से डरने वाला नहीं है। क्योंकि मेरे पीछे अन्य बड़े-बड़े नगरों के संघ मेरी आज्ञा को मानने वाले हैं। मैं ऐसा वैसा ज्वलनाचार्य नहीं हूँ। मेरी शक्ति से ही मैंने आचार्य पद प्राप्त किया है। मुझे आचार्य बनाने का अनेक साधुओं और श्रावकों ने विरोध किया था, तो भी मैंने अपनी असाधारण शक्ति से विजय प्राप्त की। अरे अविचारी श्रावक ! तूने भी विनय का त्याग कर बुरे वचन कहे हैं, यह मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान में हैं। याद रखना, प्रसंग आने पर तुझे इसका भी बदला मिलेगा, मैं ज्वलनाचार्य हूँ, बदला लिये बिना नहीं छोड़ूंगा।"

आचार्य की उत्तेजना को देखकर उनके अगल-बगल बैठे शंख विजय और दंडविजय खड़े हो गये और कहने लगे, "महाराज जी! आपकी आज्ञा हो तो आपके इस विरोधी से लड़ पड़ें, कहें तो थप्पड़ें मारकर उपाश्रय के बाहर निकाल दें और कहें तो डंडे और ओघे से मार-मारकर कचूमर करदें, आपकी जैसी आज्ञा हो वैसा करने को हम सदा तैयार हैं।"

आचार्य ने कहा, "भाई! अभी चुप रहो। ऐसा प्रसंग आयगा तो मैं तुम्हें सूचित करूँगा।"

यह बातचीत सुनकर कुछ श्रावक परस्पर विचार करने लगे कि यह बहुत गलत हो रहा है, यह आचार्य वास्तव में क्रोधमूर्ति ही हैं। अभी लड़ाई-झगड़ा, मारपीट हो जायगी और नगर में जिनशासन की बड़ी निंदा होगी। लोग कहेंगे कि जैन साधु बहुत तूफान मचाने वाले होते हैं। यदि मारपीट हो गई तो फौजदारी केस बन जायगा तथा प्रतिष्ठित श्रावकों एवं मुनियों को न्यायालय के चक्कर लगाने पड़ेंगे। इससे तो अच्छा है कि इस सभा को ही विसर्जित कर दिया जाय। सेठ लोग यों आपस में वार्तालाप करने लगे पर कोई हिम्मत कर ज्वलनाचार्य को कुछ भी नहीं बोला। उनके प्रचण्ड क्रोध से डरकर सब भीगी बिल्लियें बनकर बैठ गये।

कुछ देर बाद एक वृद्ध सेठ ने हिम्मत कर के कहा, "आचार्य जी! आप कृपा कर शांत रहें। यदि इस प्रकार अशांति होगी तो यह सभा बुलाने का हेतु ही असफल हो जायगा। भाई कल्याणचन्द्र! आप समझदार श्रावक हैं, किसी को क्रोध उत्पन्न हो ऐसी बात इस प्रसंग पर आपको नहीं कहनी चाहिये। यद्यपि आचार्यजी का स्वभाव कुछ तेज है, तथापि वे हमारे गुरु हैं। अतः हमें उनका मान रखना चाहिये। अब हमें जो कार्य करना है उसे करें और वीर-शासन की जिससे शोभा हो वैसा कार्य करें। यदि हम इस प्रकार कलह करेंगे तो नगर में हमारी भारी निंदा होगी और अन्य देखने वाले भी हमारी हँसी उड़ायेंगे। मुझे विश्वास है कि आप सभी शांति से सभा का कार्य चलायेंगे और एकमत होकर संघ का कार्य करेंगे।"

कुछ अन्य श्रावकों ने भी उस वृद्ध सेठ के कथन का अनुमोदन किया, जिससे आचार्य भी कुछ शांत हुए। कुछ देर बाद आचार्य फिर तीव्र स्वर से बोले, "श्रावको! इस अपराधी विनयचन्द्र ने, उसका समर्थन करने वाले कल्याणचन्द्र ने मेरा पूर्ण अपमान किया है। तब भी सभा के कार्य में विघ्न न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये मैं शांति धारण कर रहा हूँ। यद्यपि मैं जैसा चाहूं वैसा करने में समर्थ हूं, तथापि कुछ वृद्ध श्रावकों का मान रखने के लिये इस वक्त क्षमा कर रहा हूँ। तब भी जिन्होंने मेरा इस भरी सभा में अपमान किया है, उन्हें तो प्रसंग आने पर दंड दिये बिना मैं नहीं रहूंगा।"

इतना कहकर आचार्य ने संघ के कार्यकर्ताओं से कहा, "श्रावकों! यह विनयचन्द्र सर्वप्रकार से अपराधी सिद्ध हो चुका है, अतः इसे संघ से बहिष्कृत करने का प्रस्ताव तुम्हें स्वीकार करना चाहिये। पहले इस शहर का संघ उसका बहिष्कार करेगा और यहां जो अन्य गाँवों के गृहस्थ उपस्थित हैं, वे भी अपने-अपने गाँव के संघ से उसका बहिष्कार करेंगे। जिन बड़े-बड़े शहरों के संघपति यहां उपस्थित नहीं हैं, उन्हें हमारी ओर से पत्र भेजे जायेंगे, अतः अपने प्रस्ताव का अनुसरण कर वे भी अपराधी को हमारे समान ही दंड देंगे। अतः आप सब विचार कर लेख द्वारा साधुओं की निंदा करने वाले विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करें, इसके लिये मैं आपको विशेष आज्ञा देता हूं।"

आचार्य की बात सुनकर कार्यकर्ता विचार करने के लिए एक तरफ चले गये। काफी देर विचार करने के बाद भी सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकार न हो सका। आचार्य के पक्के भक्त और उनसे डरने वाले कुछ श्रावकों के अतिरिक्त सभी विनयचन्द्र को संघ से बाहर निकालने के पक्ष में नहीं थे। फिर वे आचार्य वृद्ध पन्यास और अन्य मुनियों के समक्ष आये और मौन धारण कर बैठ गये। तब आचार्य ने उच्च स्वर से पूछा, "श्रावको! क्या विचार किया? मुझे विश्वास है कि आप सब एकमत हुए होंगे। अपना निर्णय प्रकट करें।" आचार्य के प्रश्न को सुनकर एक प्रामाणिक एवं संघ के कार्यकर्ता ने कहा, "महाराज! विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करने में सभी एकमत न हो सके। कुछ योग्य गृहस्थों की दृष्टि में विनयचन्द्र अपराधी नहीं लगता। उसने मुनियों के विरुद्ध जो लेख लिखा है, वह द्वेष बुद्धि से नहीं लिखा है, पर मुनियों के सुधार की आवश्यकता को बताने के लिये लिखा है। वह गृहस्थ विद्वान्, प्रामाणिक और समदर्शी है, ऐसा अनेक लोगों का विश्वास है। अतः उसे संघ से बहिष्कृत करने की सब की सहमति प्राप्त नहीं हो सकती।"

कार्यकर्ता की बात सुनकर आचार्य अधिक क्रोधित होकर बोले, "श्रावको! जो लोग विनयचन्द्र को निरपराधी बताते हैं वे पक्षपाती हैं, वे उससे डरते भी हैं। यदि वे विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करें तो वह उनके विरुद्ध लेख लिखकर उनको भी अपमानित कर सकता है। इसी भय से कुछ सेठ उसके पक्ष में हो गये हैं, पर याद रखें, जो ऐसे अपराधी का पक्ष लेते हैं, उनको मैं दण्ड देकर उनकी आँखें खोलूँगा। गृहस्थो! संघ के कार्यकर्ता कुछ सेठ ऐसा समझते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि यह कार्य हम ही कर सकते हैं, पर उन्हें ऐसा अभिमान नहीं रखना चाहिये। यदि हम सभी साधु मिलकर विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करदें तो तुम्हें उस बहिष्कार को मानना ही पड़ेगा, क्योंकि चतुर्विध संघ में साधुओं का स्थान सर्वप्रथम है और साधुओं में भी आचार्य का पद सर्वप्रथम है।"

इतना कहकर फिर आचार्य ने वृद्ध पन्यासजी से पूछा, "क्यों पन्यासजी, इस विषय में आपका क्या मत है ? यदि हम एकमत होकर विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करें तो उसके पक्षपाती श्रावकों का पक्षपात नहीं चल सकेगा। आपका जो अभिप्राय हो, उसे स्पष्ट कहें।"

महात्मा वृद्ध पन्यासजी शुद्ध चरित्र के पालने वाले, दशवैकालिक और आचारांग सूत्र के अर्थ का मनन करने वाले और मुनिधर्म के शुद्ध स्वरूप को समझने वाले थे, साथ ही वे कषाय रहित, शांत स्वभावी और क्षमा से विभूषित थे। क्षणभर सोचकर उन्होंने कहा, "आचार्य ! आप विद्वान् है। अतः आपको कुछ कहना पुनरुक्ति करना जैसा है, तथापि सत्य का अवलम्बन लेकर मुझे कहना पड़ता है कि हम मुनियों को ऐसा कलह और विक्षेप पैदा करने वाले कार्य नहीं करने चाहिये। यद्यपि आप आचार्य हैं अतः आपको संघ को सुधारने के कार्य में भाग लेना चाहिये, तथापि जिस कार्य से कलह और विक्षेप की उत्पत्ति होती हो और जिससे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती हो, वह कार्य न करना ही अच्छा है। ऐसे विक्षेपकारी विषय में आग्रह नहीं रखना चाहिये। आचारांग सूत्र के चौथे सम्यक्त्व अध्ययन में जो बात लिखी है वह तो आप जानते ही होंगे। सूत्रकार भगवान् ने लिखा है कि—

"मैं कहता हूं कि जो तीर्थंकर हो चुके हैं, जो वर्तमान में हैं और जो भविष्य में होने वाले हैं, वे सब कहते हैं, बोलते हैं, समझाते हैं और वर्णन करते हैं कि किसी प्राणी को मारना नहीं, उस पर आज्ञा नहीं थोपना, उसे वशमें नहीं रखना, जीवन रहित नहीं करना और हैरान नहीं करना। ऐसा पवित्र और नित्य धर्म लोक के दुःख को जानने वाले भगवान् ने सुनने को तत्पर और अतत्पर मुनियों, गृहस्थों, रागियों, त्यागियों, योगियों तथा भोगियों को बताया है। यह धर्म ही वास्तविक है, जो मात्र जिन प्रवचन में ही वर्णित है। अतः धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझकर उस पर श्रद्धा करने के पश्चात् प्रमाद नहीं करना चाहिये और समझे हुए धर्म को कभी छोड़ना भी नहीं चाहिये। संसार में दिखाई देने वाले ठाट-बाट में मूर्च्छित न होकर वैराग्य को धारण करना चाहिये और दुनिया वालों की नकल नहीं करना चाहिये। जो किसी की नकल नहीं करता उसे अन्य किसी प्रकार की कुमति भी नहीं होती, परन्तु जिसे स्वीकृत धर्म पर श्रद्धा नहीं होती उसे अन्य सुमति भी कैसे हो सकती है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आचार्यजी ! हमें सर्वप्रथम इस सूत्र वाणी पर विचार करना चाहिये। सूत्रकार उसी स्थान पर यह भी लिखते हैं कि संसार में आसक्त होकर उसमें फँसने वाले चिरकाल तक संसार में भ्रमण करते हैं। अतः तत्त्वदर्शी धैर्यवान पुरुषों को प्रमादियों को धर्म से बाहर मानते हुए रात दिन जागृत रहकर सावाधानीपूर्वक प्रवृत्ति करनी चाहिये।

"जो कारण कर्म बांधने के हैं, वे ही कारण कर्म क्षय करने के भी हो सकते हैं और जो कर्म क्षय करने के हेतु हैं वे कभी कर्म बांधने के कारण भी हो जाते हैं। या यों कहें कि जितने कर्मक्षय के हेतु हैं, उतने ही कर्मबंध के हेतु भी हैं और जितने कर्मबंध के हेतु हैं, उतने ही कर्मक्षय के हेतु भी हैं।"

"आचार्यजी ! हमें भी इस सूत्रवाणी को लक्ष्य में रखकर प्रवृत्ति करनी चाहिये। यदि विनयचन्द्र ने शुद्ध बुद्धि से लेख लिखा होगा और उसकी मनोवृत्ति में निर्मलता और पवित्रता होगी और हम दुस्साहसपूर्वक उसे संघ से बहिष्कृत करवायेंगे तो हमें दोष लगे बिना नहीं रहेगा। हो सकता है आपके मन में उसके प्रति विपरीत विचार आये हों, पर ऐसा विचार क्यों आया, इस पर दीर्घ चिन्तन करना चाहिये। कभी-कभी कषाय जीव को दबा देते हैं और उससे दुस्साहसपूर्वक काम करवाकर उसे कर्मबंध में जोड़ देते हैं। मुझे ऐसा ही लग रहा है कि कषायों के प्रबल वेग से ही यह बड़ा दुस्साहस पूर्ण कार्य हो रहा है। आचारांग सूत्र के चौथे अध्ययन के तीसरे तपोऽनुष्ठान नामक उद्देश्य में जो लिखा है, उसे हमें मनन करना चाहिये :—

"हे मुनि ! इस मनुष्य जन्म का आयुष्य समाप्त हो रहा है, यह समझ कर साहसपूर्वक क्रोध को दूर करें। विचार करें कि क्रोध आदि से भविष्य में कैसे दुःख प्राप्त होंगे। क्रोध आदि कषायों से लोग किस प्रकार दुःख झेल रहे हैं इसे अपनी आँखों से देख, उसकी परीक्षा करें। जो लोग कषायों का उपशमन कर शांत हो गये हैं, वे ही परम सुखी कहलाते हैं। अतः सच्चे विद्वान् पुरुष को कभी भी क्रोध से स्वयं को नहीं जलना चाहिये।"

"आचार्यजी ! हमको इन वचनों पर श्रद्धा रखकर मनन करना चाहिये। यदि हम इन वचनों का अनुसरण करें तो जिसमें क्रोध का उदय अवश्य होने वाला हो, ऐसे कलह के कार्य में हमें नहीं पड़ना चाहिये। ऐसे प्रसंगों में कषाय का उदय हुए बिना नहीं रहता। इस प्रसंग में आपके प्रचण्ड क्रोध को देखकर मेरे हृदय में विविध विकल्प उठते थे और सांसारिक उपाधियों का प्रत्यक्ष दर्शन होने से मेरे वैराग्य को पुष्टि प्राप्त हो रही थी। ज्वलनाचार्य ! यदि आपको अधिक आत्मा के हित की इच्छा हो और अपने चारित्र मार्ग को निष्कंटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना हो तो कभी भी ऐसी उपाधि मोल नहीं लेना। आज की घटना से मुझे बहुत बोध प्राप्त हुआ है। यदि ऐसे प्रसंगों का निराकरण पदवीधारी मुनियों को करना ही पड़े तो यह याद रखना चाहिये कि स्वयं अपनी आत्मा की स्वतंत्रता को न खोयें अर्थात् स्वयं कषायों के अधीन न बनें। जिन्होंने कषायों का एकदम उच्छेद कर दिया है और जिनके हृदय में शांति और क्षमा का निरन्तर निवास रहता है, ऐसे महापुरुष ही ऐसे प्रसंगों में निर्भय होकर भाग ले सकते हैं। फिर भी उन्हें दो बातों से सदा दूर रहना चाहिये, एक अहंकार और दूसरी पक्षपाती बुद्धि से, यदि इन दोनों बातों से दूर रहा जा सके तो पदवीधारी मुनि शुद्ध न्याय कर सब के हृदय को सन्तुष्ट कर सकते हैं।

"आचार्यजी ! एक दूसरी बात और कहनी है कि हम साधु सदा संयम की दृढ़ शृंखला से बंधे हुए हैं। यदि साधु ऐसी प्रवृत्तियों में पड़ें तो यह शृंखला शिथिल पड़े बिना नहीं रह सकती। जैसे ही यह शृंखला से शिथिल हुई, वैसे ही साधु सांसारिक जंजालों में फँसे बिना नहीं रह सकता, तब वह शरीर-दमन से घबड़ाकर तप से विमुख हो जाता है। आचार्यजी ! इस विषय में आचारांग सूत्र के लेखक ने जो शब्द लिखे हैं, वे सर्वदा चिंतनीय हैं। वे महानुभाव लिखते हैं कि—

"मुनि को सब सांसारिक जंजालों को छोड़कर प्रथम से ही उपशम पूर्वक सदा शरीर को तप से दमित करना, फिर अधिक तप से दमित करना और अन्त में सम्पूर्ण दमित करना। अतः पराक्रमी मुनियों को शांत मन से संयम में राग धारण कर समिति तथा ज्ञानादिक हितकारक वस्तुओं के साथ सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये। मुक्ति प्राप्त करने वाले वीर पुरुषों का मार्ग बहुत कठिन है। अतः हे मुनि ! तू अपने मांस और रक्त को सुखा दे क्योंकि जो पुरुष ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए शरीर को तप से दमित करता है, वही वीर पुरुष मुक्ति प्राप्त करने वाला होने से माननीय समझा जाता है। जो पुरुष प्रारम्भ में इन्द्रियों को वश में करके रहा हो, पर बाद में मोहवश विषयासक्त हो गया हो तो वह अज्ञानी किसी प्रकार के बन्धन से मुक्त नहीं हुआ और न किसी प्रकार के प्रपंच से ही मुक्त हुआ माना जायगा। ऐसे अज्ञानी पुरुष को मोह के अन्धेरे में रहते हुए परमेश्वर की आज्ञा का लाभ नहीं हो सकता, इस प्रकार जिसे पूर्व भव में आज्ञा प्राप्त नहीं हुई और भविष्य में भी नहीं होगी, तब वर्तमान जन्म में कैसे हो सकती है ? अतः ज्ञानवान् और परमार्थी पुरुष आरम्भ से दूर रहते हैं। उनकी यह प्रवृत्ति बहुत ही प्रशंसनीय है। इसके लिये प्रारम्भ से ही जीव को वध, बन्धन आदि भयंकर दुःख तथा असह्य पीड़ायें भोगनी पड़ती हैं। अतः हे मुनियो ! तुम्हें बाह्य प्रतिबन्धों को काटकर मोक्ष की तरफ लक्ष्य रखकर इस संसार में आरम्भ का त्याग कर प्रवृत्ति करनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आचार्यजी ! यह सूत्रवाणी हमें कितना बोध दे रही है ? हमें इससे विमुख नहीं होना चाहिये ।"

वृद्ध पन्यास के वचन सुनकर आचार्य क्षणभर तो सोच में पड़ गये पर उनकी पत्थर जैसी मनोवृत्ति में कुछ विशेष अन्तर नहीं पड़ा । वे अपने कुस्वभाव को नहीं छोड़ सके और अपने आवेश को दूर किये बिना ही बोल पड़े, "पन्यास जी ! आप जो उपदेश दे रहे हैं, उसे मैं जानता हूँ । आचारांग सूत्र के रहस्य को मैं भली प्रकार समझता हूँ । आपने तो मात्र उसका भावार्थ ही कहा है, पर उसका विशेष अर्थ भी मैं जानता हूं । आप तो उसे समझ भी नहीं सकते । इस प्रसंग पर उसको अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है । मैं यह भी समझता हूँ कि साधुओं को ऐसी उपाधि में नहीं पड़ना चाहिये, पर आचार्य के पद के कारण मुझे इस उपाधि में पड़ने के सिवाय कोई चारा नहीं है । यदि आचार्य ही ऐसे विषयों की उपेक्षा करें तो धर्म और संघ की मर्यादा की रक्षा कौन करे ? संघ और धर्म की मर्यादा की रक्षा के लिए आचार्य को कुछ उपाधियें रखनी ही पड़ती हैं । यह बात भी शास्त्रकारों ने बताई है, शायद आपने उसे नहीं पढ़ा है । इस विषय में अब अधिक चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है । मुझे तो आपसे यही पूछना है कि इस विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करने में आपका क्या अभिप्राय है ? माया कपट छोड़कर जो कुछ आपके दिल में है उसे स्पष्टतः मुझे बता दीजिये । यदि आप मेरे विरुद्ध होंगे तो भी मुझे कुछ डर नहीं है । मैं तो इस संसार में निर्भयता से ही प्रवृत्त होता हूँ ।"

"आचार्य के दुराग्रही और गर्वित वचन सुनकर पन्यास क्षणभर सोच में पड़ गये, पर अन्त में अपने सत्य वीर्य को प्रकट कर बोले, "आचार्यजी ! मैं किसी प्रकार का मायाभाव रखता ही नहीं । माया हो तो फिर साधुत्व कैसा ? माया के त्याग के लिये ही तो साधुत्व स्वीकार किया जाता है । मुझे तो माया और कर्म का भय यमराज से भी अधिक लगता है । यद्यपि मैं व्यर्थ समय खोने और संगठन के सेतुओं को भंग करने वाले प्रसंगों से बचना ही चाहता हूं, तथापि किसी कर्म के उदय से मैं इस प्रसंग में जुड़ गया हूं तो अब मुझे सत्य और प्रामाणिकता के आधार पर ही इससे निकलना चाहिये । आचार्यजी ! आप मेरे मत को मानें या न मानें, इससे मुझे न हर्ष होगा न शोक, किन्तु धर्म और सत्य का अवलम्बन लेकर मुझे कहना पड़ेगा कि विनयचन्द्र निर्दोष है, निरपराधी है । उसने जो लेख लिखा है वह शुद्ध बुद्धि से लिखा है, यह मुझे उसका लेख पढ़ने से स्पष्ट लगता है । उस लेख में उसने शब्दों की जिस प्रकार योजना की है, उससे प्रकट होता है कि लेखक ने धर्म के प्रति लगाव से ही यह लेख लिखा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लेखक ने साधुओं के विषय में जो कुछ लिखा है, वह यथार्थ है। आजकल साधुओं के व्यवहार में परिवर्तन हो गया है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि साधुओं को इस लेख से शिक्षा लेनी चाहिये। यदि ऐसे लेख लिखे नहीं जायेंगे तो साधुओं के चरित्र में जो स्खलन आ गया है उसका सुधार कैसे होगा? यद्यपि अपने स्वभाव के पराधीन बने हुए साधु शायद अपने अपने वर्तमान स्खलन में सुधार न कर सकें, तथापि अपने दोषों को देखकर उसमें संशोधन करने वाले मुनियों के लिये तो यह लेख उपकारक हुए बिना नहीं रहेगा। स्वयं मुझे भी यह लेख पढ़ते समय अनेक उत्तम विचार आये थे। मेरे कई शिष्य इस लेख को पढ़कर अपने शुद्ध चारित्र में दृढ़ रहने लगे। आचार्यजी! आप तो गुणग्राही हैं, आपको तो ऐसे लेख को उत्तेजन देना चाहिये। आजकल गृहस्थ श्रावक और श्राविकाएँ भक्ति के बहाने से साधुओं की झूंठी चापलूसी करते हैं और उन्हें सदाचार से पतित करते हैं, फिर वे पतित साधु स्वतंत्र और उछृंखल बन जाते हैं, ऐसे विपरीत समय में तो ऐसे लेख की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः विनयचन्द्र ने जो लेख लिखा है, वह हम साधुओं के लिए उपकारक होने से हमें मानना चाहिये कि उसने साधुओं का महान् उपकार किया है। ऐसे उपकारक युवक को अपकारक मानकर अपराधी ठहराना और उसे संघ से बहिष्कृत करने का भयंकर दंड देना, यह मुझे तो अतिशय अनुचित लगता है। आपको भी इस विषय में विचार करना चाहिये।" वृद्ध पन्यास के वचन सुनकर आचार्य ज्वलनविजय और उनके कुछ भक्त श्रावकों के अतिरिक्त, सभी मुनियों तथा प्रतिष्ठित और न्यायप्रिय गृहस्थों का हृदय प्रसन्न हुआ। उन्होंने वृद्ध पन्यास का हृदय से अभिनन्दन किया और उन महान् मुनिवर की परस्पर प्रशंसा करने लगे।

आचार्य जलभुन कर बोले, "पन्यास! आप अपने मन में अपने को प्रामाणिक मानते हो और उसे दिखाने के लिये ही विनयचन्द्र का पक्ष ले रहे हो, पर उससे हम डरने वाले नहीं हैं। हमने तो निश्चय किया है कि विनयचन्द्र को संघ से बहिष्कृत करना ही है। आपके जैसे एक दो साधुओं के उसका पक्ष लेने से कोई सब की सहमति उसके पक्ष में नहीं हो जायगी। भारत के अधिकांश लोग मेरे निर्णय को मानेंगे। मैं अभी सब के समक्ष आज्ञा देता हूँ कि साधुओं की निंदा का लेख लिखने वाला विनयचन्द्र आज से ही संघ से बहिष्कृत किया जाता है, मेरी आज्ञा को मानने वाले कोई भी साधु या गृहस्थ विनयचन्द्र के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखें।"

आचार्य के दुस्साहसपूर्ण वचन सुनकर सभा में गड़बड़ मच गई। कुछ आचार्य के पक्ष में और अधिकांश वृद्ध पन्यास के पक्ष में बोलने लगे और विनयचन्द्र के शुद्ध पक्ष में बहुमत हो गया। वृद्ध पन्यास और विनयचन्द्र के पक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मजबूत देखकर ज्वलनाचार्य के मुँह पर ग्लानि छा गई और उनके भक्त श्रावक भी ठंडे पड़ गये। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति को समझकर किसी वृद्ध श्रावक ने आचार्य के निकट आकर गुप्त रूप से उन्हें समझाया, जिससे आचार्य शांत हुए और उन्होंने देश काल के अनुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन किया। पश्चात् उनकी सूचना के अनुसार वृद्ध श्रावक ने खड़े होकर कहा—"गृहस्थो ! यह प्रसंग अभी पक्षपात के भँवर में फँस गया है, अतः अभी विनयचन्द्र के विषय में कुछ भी निर्णय करना ठीक नहीं होगा। इस विषय में विचार कर बाद में निर्णय किया जायगा। अभी इस विषय को स्थगित किया जाता है और अब हमें इस सभा के अन्य कार्यों को करना चाहिये।"

वृद्ध श्रावक की बात सुनकर भद्रिक हृदय के पन्यासजी ने भी उसे स्वीकार किया, अन्य कई मुनियों और गृहस्थों ने भी उसका समर्थन किया और ज्वलनाचार्य शांत होकर बैठ गये।

(क्रमशः)

दो कविताएँ :

सच्चा सुखी

तृष्णा

☐ श्री रामनिवास बारुपाल

धन के दुरुपयोग से
अर्जित किये सुख,
दूसरों को दुखी बनाकर
हासिल किये सुख,
इन्सान को सच्चा सुखी नहीं बनाते।
आत्मा को झूठा भरमाते
स्वप्न की तरह क्षणभंगुर हैं,
दर्पण की तरह।
पर जो नर—
दूसरों की खुशी में, स्वयं की खुशी,
समर्पित कर निज मन को बहलाता है।
वही इन्सान, जीवन में
सच्चा सुखी कहलाता है।

निज पथ से विचलित कर,
छोड़ असत्य के पथ पर,
आत्मा को बनाती मूढ़
पाने न देती सत्य का गूढ़।
प्राणियों को निष्प्राण,
सा बना देती है,
सन्तोष से नित,
दूर ही रहती है।
इच्छा पैदा करती है धन की,
मोह, क्रोध अरु संग विषयन की।
अरु जो परिग्रह को अपनाती है,
वही तो दुष्टा,
तृष्णा कहलाती है।

—बारुपाल निकेतन, डेह–341022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागौर में धर्म लहर, दीक्षाएँ सम्पन्न आचार्य श्री का जन्म भूमि पीपाड़ शहर की ओर विहार

☐ प्रस्तोता—**श्री ब्रजमोहन जैन**

प्रातः स्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी, महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा., मधुर व्याख्यानी प. र. श्री मान मुनिजी म. सा., आगमज्ञ पं. र. श्री हीरा मुनिजी म. सा., कुशल सेवा मूर्ति श्री शीतल मुनिजी म. सा., व्याख्यान रसिक श्री ज्ञान मुनिजी म. सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म. सा., विद्याभिलाषी श्री गौतम मुनिजी म. सा., सेवाभावी श्री नन्दीषेण मुनिजी म. सा., तपस्वी श्री प्रकाश मुनिजी म. सा., भजन रसिक श्री धन्ना मुनिजी म. सा., नवदीक्षित श्री प्रमोद मुनिजी म. सा. ठाणा ११ तथा महासती श्री सुगन कँवरजी म. सा., महासती श्री तेज कँवरजी म. सा., महासती श्री राज कँवरजी म. सा., महासती श्री इन्दुबालाजी म. सा., ठाणा ४ के पवित्र सान्निध्य में नागौर नगर में धर्म ध्यान का ठाठ लगा। आशातीत तपस्यायें हुई। स्वाध्याय का बिगुल बज उठा। नागौर का जयमल्ल जैन उपाश्रय स्वाध्यायी बंधुओं की नित्य प्रति धार्मिक साधना से नया ही रूप देने लगा। स्वधर्मी बन्धुओं का आगमन क्रमशः होता ही रहा।

इसी मंगल बेला में नगर में शुभोदय का पुनीत प्रसंग उपस्थित हुआ कि पिछले २-३ वर्षों से वैराग्य साधना में रत विरक्त बंधु श्री हरिदासजी गजेन्द्रगढ़ निवासी एवं विरक्ता बहिन सुश्री निर्मलाजी सुराणा नागौर निवासिनी की भागवती दीक्षा नागौर में सम्पन्न हो। इस ओर नागौर संघ एवं सुराणा परिवार ने साग्रह विनती की। विशेषकर गढ़जी पणजी परिवार के पुनः पुनः निवेदन पर श्रद्धेय आचार्य श्री ने चैत्र शुक्ला ६, शनिवार, सं. २०४१, ७ अप्रैल को नागौर में दीक्षा की स्वीकृति प्रदान करदी जिससे संघ और शहर में हर्ष की नवीन लहर परिव्याप्त हो गई।

विरक्त-विरक्ताओं का बहुमान होने लगा। घर-घर में उनको अन्तिम विदाई हेतु बुलाने का तांता लगा रहा। दिनांक ६ अप्रैल की दोपहर दोनों दीक्षार्थियों की शोभा-यात्रा जुलूस निकाला गया जिससे नगर के हजारों नर-नारियों ने अपने गवाक्षों से दृश्यावलोकन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैताला निवास पर सायं ८ बजे अभिनन्दन समारोह का आयोजन श्री जसराजजी चौपड़ा, विधि सचिव, राजस्थान की अध्यक्षता तथा श्री इन्दरचन्द-जी हीरावत, अध्यक्ष, जयपुर संघ के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर दोनों विरक्तों के आदर्श त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनके सम्मान में अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर, अ. भा. महावीर जैन श्राविका संघ मद्रास द्वारा संयुक्त रूप में अभिनंदन-पत्र पढ़ कर सुनाने के बाद भेंट किये गये। भेंटकर्ता थे सर्वश्री नथमलजी हीरावत, माणकमलजी भण्डारी और उमरावमलजी ढढ्ढा। नागौर संघ की ओर से भी अभिनन्दन किया गया। विरक्तों के माता-पिताओं का भी उपर्युक्त संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया। कतिपय वक्ताओं द्वारा अभिनन्दन स्वरूप वक्तव्य देने के पश्चात् अध्यक्षीय दो शब्दों के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

७ अप्रैल को भव्य दीक्षा-महोत्सव :

प्रेमजी की बाड़ी में अपार जनमेदिनी शान्त विराज रही थी। समीपस्थ पीपल वृक्ष के नीचे उच्चासन पर, श्रद्धेय आचार्य प्रवर पंक्तिबद्ध विराजे हुए अपने शिष्य समुदाय के मध्य सुशोभित हो रहे थे। श्रमणोचित मर्यादानुसार कुछ ही दूरी पर श्रमणसंघीय महासती श्री झणकार कँवरजी म. सा. अपनी शिष्याओं के साथ विराज रही थीं और उनके सन्निकट महासती श्री सुगन कँवरजी म. सा. ठाणा ४ एवं मन्दिर मार्गी परम्परा की कतिपय सतियाँ भी वहाँ उपस्थित थीं।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार घड़ी की सूइयां टक-टक की आवाज करती साढ़े आठ बजने का संकेत करने को जा रही थीं कि अध्यक्ष श्री कृष्ण-मलजी लोढ़ा न्यायाधिपति राजस्थान उच्च न्यायालय व मुख्य अतिथि श्री डी. आर. मेहता संयुक्त सचिव भारत सरकार के पदासीन होने के पश्चात् श्री जसराजजी चौपड़ा, श्री ज्ञानेन्दुकुमारजी मेहता, श्री गुमानमलजी चौरड़िया, श्री दौलत रूपचन्दजी भंडारी, आदि कतिपय वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किये।

ठीक आठ बजे परमाराध्य आचार्य श्री के समक्ष विरक्त बंधु श्री हरि-दासजी एवं विरक्ता बहिन सुश्री निर्मलाजी सुराणा मुण्डित हो वेश परिवर्तन कर उपस्थित हुए। दोनों के अभिभावकों (श्री भंवरलालजी सुराणा एवं श्री परशुरामप्पाजी) द्वारा सहर्ष सभा के समक्ष आज्ञा प्रदान करने के पश्चात् श्रद्धेय आचार्य श्री ने जैन भागवती दीक्षा का संक्षेप में विवेचन फरमाते हुए दोनों मुमुक्षु आत्माओं को जीवन पर्यन्त के लिये सामायिक चारित्र (दीक्षा मंत्र) प्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षार्थी बन्धु
श्री हरिदासजी

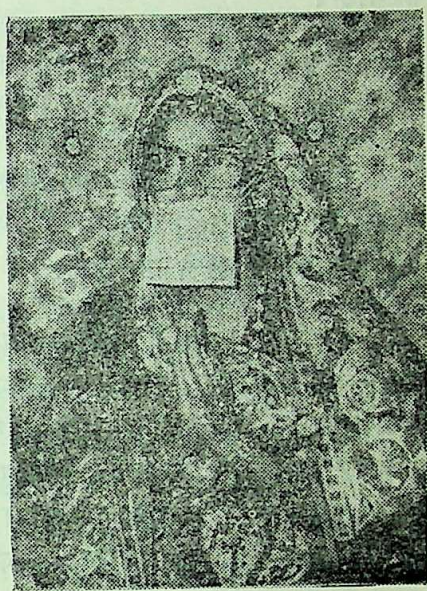

दीक्षार्थी बहिन
सुश्री निर्मला सुराणा

किया। फिर पं. र. श्री मान मुनिजी म. सा. एवं श्री हीरा मुनिजी म. सा. ने संक्षिप्त में प्रकाश डाला। जय-जयकार से सभा मण्डप में हर्ष का वातावरण छा गया। यहां श्री भंवरलालजी सुराणा एवं श्री परशुरामप्पा सोमपुर ने सजोड़े शील का खंद स्वीकार किया। तदन्तर आचार्य श्री जैन स्थानक पधार गये।

दोपहर को श्री जसराजजी चौपड़ा की सद्प्रेरणा से श्री नागराजजी मेहता जिला एवं सत्र न्यायाधीश मेड़ता ने नित्य प्रति एक सामायिक जीवन पर्यन्त करने का नियम ग्रहण किया तथा श्री जीवनरामजी मीणा पुलिस अधीक्षक नागौर एवं श्री प्रेमनाथजी उप पुलिस अधीक्षक नागौर ने जीवन पर्यन्त के लिये सप्त कुव्यसन का त्याग किया। अनेक युवक-युवतियों ने अपनी-अपनी शक्ति मुताबिक त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार किये।

तीन महत्त्वपूर्ण घोषणाएं :

(१) जोधपुर में स्थिरवास विराजित महासती साध्वी प्रमुखा प्रवर्तनी सुन्दर कंवरजी म. सा. और उप प्रवर्तनी श्री बदन कंवरजी म. सा. की अस्वस्थता और संघ की अत्याग्रह भरी विनती को ध्यान में लेकर विक्रम सं. २०४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का चातुर्मास स्थान और व्यवस्था की अनुकूलता रहते, शारीरिक अस्वस्थता आदि आगारों को खुला रखते हुए सुखे समाधे **जोधपुर** करने की स्वीकृति फरमाई।

(२) पीपाड़ शहर संघ की विनती को मान देकर अक्षय तृतीया (वर्षी तप) पारणों पर **पीपाड़ सिटी** की स्वीकृति प्रदान की।

(३) श्री बादलचन्दजी मेहता एवं कडलू संघ द्वारा बार-बार किये गये आग्रह पर बड़ी दीक्षा एवं महावीर जयन्ती पर **कडलू** विराजने की स्वीकृति श्रद्धेय आचार्य श्री ने प्रदान की।

आचार्य प्रवर के नागौर प्रवास में होली चौमासी एवं दीक्षा प्रसंग पर बाहर से—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, अजमेर, ब्यावर, बालोतरा, मेड़ता सिटी, अलीगढ़-रामपुरा, सवाई माधोपुर, मद्रास, बंगलोर, गजेन्द्रगढ़, रायचूर, उखलाना, बल्लारी, भरतपुर, अहमदाबाद, इन्दौर, रतलाम, सैलाना, कोटा, भोपालगढ़, गोटन, खजवाणा, नाडसर, आसोप, गोगोलाब, डेह, बाड़मेर, कडलू, कोसाणा, पीपाड़सीटी, आगोलाई, बागांवास, श्यामपुरा, आदि अनेक ग्राम नगरों से आये हजारों भक्त जनों का सुराणा भाइयों ने अच्छा स्वागत-सत्कार किया एवं श्री गढ़जी पणजी सुराणा परिवार ने साधर्मी वत्सलतापूर्वक अतिथि-सेवा का दिल खोल कर लाभ लिया। श्री सन्तोषजी, श्री सोहनराजजी, श्री उमरावमलजी एवं श्री डूंगरमलजी सुराणा के साथ समूचे स्थानकवासी समाज का प्रेमयुक्त सहयोग अच्छा रहा। गर्मी के मौसम में भी नागौर में तपस्याओं का भारी ठाठ रहा।

दिनांक ९ अप्रेल को श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने नागौर में धर्मोद्योत का नवीन वातावरण उत्पन्न कर **कडलू** की दिशा में विहार किया। विदाई की वेला में नागौर निवासियों का हृदय भर आया। सैंकड़ों श्रद्धालु भक्तों ने बहुत दूर जाकर विदाई दी। नसियाँजी में विदाई का संदेश देकर दूसरे दिन रामनवमी १० अप्रेल को आचार्य श्री **हेमलसर (तालसर)** पधारे। यहाँ भी नागौर निवासी सैंकड़ों की संख्या में अपने आराध्य आचार्य देव को विदा करने आ पहुंचे। हेमलसर के भावुक हृदय श्री भंवरलालजी पंवार के मकान में आचार्य प्रवर विराजे। स्वधर्मी वात्सल्य का लाभ गढ़जी पणजी परिवार ने लिया। श्री डूंगरमलजी सुराणा की लगन-उमंग देखते ही बनती थी।

दिनांक ११ अप्रेल को आचार्य श्री ५ मील के विहारोपरान्त **फिडोद** पधारे। यहां श्री रामलालजी चौधरी की बैठक में दिन भर विराजे। यहां के निर्व्यसनी चौधरी बन्धुओं की भक्ति मन को अपनी ओर आकर्षित किये बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहती। दिनांक १२ अप्रेल को श्रद्धेय आचार्य प्रवर १३ कि. मी. का लम्बा विहार कर **कडलू** पधारे। ग्राम में प्रवेश करते समय अच्छा खासा जुलूस सा बन गया। भक्तहृदयी सेठ श्री बादलचन्दजी मेहता के मकान पर आचार्य श्री विराजे।

दिनांक १३ अप्रेल को कडलू में, इन्दौर, मद्रास, जोधपुर, भोपालगढ़ एवं नागौर, गोटन के अलावा आसपास के सैंकड़ों भक्त गुरु-वंदन एवं बड़ी दीक्षा के लिए उपस्थित हुए। साथ ही श्रमण भगवान् महावीर का जन्म कल्याणक यहां मनाया जा रहा था। ठीक साढ़े आठ बजे पं. र. श्री मान मुनिजी म. सा. ने होने वाली बड़ी दीक्षा व महावीर जयन्ति के प्रसंग पर प्रेरक प्रकाश डाला। तदनन्तर आचार्य श्री भी मुनि मण्डल के साथ व्याख्यान मंच पर पधार गये। प्रासंगिक बड़ी दीक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालने के पश्चात् आचार्य श्री ने पूर्व दीक्षित भव्य जनों को दशवैकालिक सूत्र के छज्जीवणी नामक अध्ययन से बड़ी दीक्षा—(छेदोपस्थानीय चारित्र) प्रदान की। श्री हरिदासजी को मुनि हरिश्चन्द्रजी तथा श्री निर्मलाजी को सती निर्मलाजी नवीन नाम प्रदान किये गये। तदनन्तर प्रभु महावीर की पावन शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। आचार्य श्री की पातक प्रक्षालिनी वाणी के प्रभाव से यहां सर्वश्री चम्पालालजी मेहता, रामचन्दजी शर्मा, मदनलालजी व लालसिंहजी पुरोहित ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किये। संघ द्वारा शाल व दुशालों एवं उनकी धर्म-पत्नियों को शील की चुंदडियों द्वारा सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर श्री बादलचन्दजी मेहता एवं परिवार के साथ श्री लालसिंहजी पुरोहित आदि ने मिलकर कोई ८० हजार रुपये की राशि शुभ खाते में लगाने की घोषणा की।

आगन्तुक बन्धुओं का सत्कार व अतिथि सेवा का लाभ भी मेहताजी ने शालीनता से लिया।

कडलू में बडी दीक्षा सम्पन्न कर परमाराध्य आचार्य श्री १४ अप्रेल को ४ मील दूर **मुण्डयार** पधारे, जहाँ श्री राजमलजी कटारिया की हवेली विराजे। दिनांक १५ अप्रेल को गोवां पधारे और स्कूल भवन में विराजे। यहां के ग्रामीण जनों ने अच्छी उपस्थिति के साथ धर्म श्रवण का लाभ लिया। दिनांक १६ अप्रेल को १६ कि. मी. का लम्बा विहार कर पूज्याचार्य **वासनी** (हरिसिंहजी) पधारे। यहां स्था. ५ घर हैं। भक्ति उत्साह अच्छा है। यहां तक श्री चिमनलालजी मूथा रायचूर ने सेवा का लाभ लिया। दिनांक १७ अप्रेल को **आसोप** विराज कर १८ अप्रेल को ४ मील के विहार उपरान्त आचार्य श्री **वारणी** पधारे। जहां जोधपुर भोपालगढ़, पीपाड़ सिटी आदि स्थानों से संघ दर्शनार्थ पधारे। यहाँ के ग्रामीण भक्त जनों की भक्ति से आचार्य श्री दो दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विराजे। श्री पारसमलजी नाहर एवं श्री पुनवानचन्दजी भण्डारी एवं सिंघवी परिवार ने अच्छी भक्ति उत्साह युक्त की।

दिनांक २० अप्रेल को ५ मील के विहारोपरान्त आचार्य श्री **नाडसर** पधारे। यहाँ गुरुदेव के पदार्पण के उपलक्ष में सर्वश्री माणकचंदजी लोढ़ा ने २ वर्ष, श्री सम्पतमलजी लोढ़ा एवं श्री भंवरलालजी लोढ़ा ने क्रमशः १-१ वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत सपत्नीक अंगीकार किया। दिनांक २१ अप्रेल को आचार्य श्री क्रियोद्धारक भूमि **भोपालगढ़** पधारे। भव्य स्वागत के साथ नगर प्रवेश हुआ तथा श्री सोहनलालजी हुंडीवाल एवं श्री सूरजराजजी ओस्तवाल ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत का खंद उठाकर गुरुदेव को त्याग की भेंट प्रदान की। श्री हुंडीवालजी ने इसी अवसर पर कोई ५ हजार से अधिक राशि शुभ खाते में निकालने की घोषणा की। आचार्य श्री का विहार यहां से **पोपाड़ सिटी** की ओर हो रहा है जहां अक्षय तृतीया पर वर्षी तप के पारणे आपके सान्निध्य में सम्पन्न होंगे।

संत-विहार :

जोधपुर (राज.)—साध्वी प्रमुखा प्रवर्तनी श्री सुन्दर कंवरजी म. सा., उप प्रवर्तनी श्री बदन कंवरजी म. सा. आदि ठाणा १४ सुख-शान्तिपूर्वक विराज रही हैं।

मद्रास—विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरीजी म. सा., महासती श्री रतन कंवरजी म. सा. ठाणा ६ सुखसातापूर्वक विराजमान हैं।

पहरसर (भरतपुर)—महासती श्री शान्ति कंवरजी म. सा., महासती श्री सुशीलाजी म. सा. ठाणा ४ के पहरसर में विराजने की सूचना मिली है। आगे वे पल्लिवाल क्षेत्र में विचरणरत हैं।

भोपालगढ़ (राज.)—महासती श्री सुगन कंवरजी म. सा., महासती श्री तेज कंवरजी म. सा. ठाणा ५ नागौर से विहार कर यहां पधार गयी हैं।

पहरसर (भरतपुर)—मधुर व्याख्यानी पं. र. श्री शुभेन्द्र मुनिजी म. सा., सेवाभावी श्री बसन्त मुनिजी म. सा., तत्त्व जिज्ञासु श्री चम्पक मुनिजी म. सा. ठाणा ३ पहरसर में धर्म ध्यान की लहर परिव्याप्त कर पल्लिवाल क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं।

□ • □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समीक्षा

१. **धन्ना शालिभद्र चौपाई:**—सं० डॉ० रमणलाल ची० शाह, प्र० रेखा बिल्डिंग नं० १, फ्लेट नं० २१-२२, चौथी मन्जिल, ४६, रीज रोड, मलाबार हिल, बम्बई-४०० ००६, पृ० २६०, मू० ३०.०० ।

धन्ना—शालिभद्र जैन कथा साहित्य में महावीर युग के महत्त्वपूर्ण चरित्र हैं। ये बहनोई और साला थे। अत्यन्त वैभवशालो परिवार में जन्म लेकर भी ये भगवान् महावीर के चरणों में दीक्षित हुए और आत्म-कल्याण किया। 'अनुत्तरोपपातिक' सूत्र के तृतीय वर्ग के प्रथम अध्ययन में इनका वर्णन आया है। इनका चरित्र अत्यन्त प्रेरक और आदर्श रहा है। संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओं में इनके चरित्र को लेकर विभिन्न कवियों ने अनेक कृतियों की रचना की है। आलोच्य ग्रन्थ १७वीं शती के महत्त्वपूर्ण कवि उपाध्याय गुण विनय द्वारा रचित है। ये उपाध्याय जयसोम के शिष्य थे। बड़ा उपासरा बीकानेर के ज्ञान भण्डार से प्राप्त हस्तलिखित प्रति के आधार पर गुजराती के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० रमण भाई ने बड़े परिश्रम और कौशल से इस गुजराती कृति का सम्पादन किया है। यह ग्रंथ ६१ ढालों में निबद्ध है। डॉ. शाह ने अपनी विस्तृत भूमिका में गुण विनय के जीवन साधना और साहित्य का आलोचनात्मक परिचय देते हुए धन्ना शालिभद्र सम्बन्धी ५० ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण दिया है। ग्रन्थ के अन्त में उदय रत्न कृत 'श्री शालिभद्र नो सलोको' का मूल पाठ दिया है तथा प्रस्तुत ग्रन्थ का ढाल क्रमानुसार कथासार दिया है। ग्रन्थ को सभी प्रकार से उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है।

२. **यशोदा:**—श्री कुमुद विद्यालंकार, प्र० सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा-२ पृ० ११६, मू० ६.०० ।

महावीर की पत्नी यशोदा को आधार बनाकर लिखा जाने वाला यह प्रथम प्रबन्धकाव्य है। सीता, उर्मिला, यशोधरा की तुलना में यशोदा का चरित्र कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। पर अब तक यह चरित्र कवियों और साहित्यकारों द्वारा उपेक्षित रहा है। कवि कुमुद ने नौ सर्गों में निबद्ध इस काव्य में यशोदा को जनवादी चेतना और जनक्रान्ति के प्रतीक रूप में चित्रित करते हुए उसके सेवाभावी, साहसशील शक्तिसम्पन्न चरित्र का उद्घाटन किया है। भाषा परिष्कृत, प्रभावपूर्ण और शैली रोचक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. **चुने हुए मोती**:—संकलनकर्ता श्री मोतीचन्द कर्णावट, प्राप्ति स्थल सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-३०२ ००३, पृ० १०८, मू० ३.०० ।

श्री कर्णावट ने धर्मरुचिपूर्वक आत्म चैतन्य को जागृत करने वाले प्रभु-भक्ति एवं गुरु महत्त्व से सम्बन्धित प्रेरणादायी सहज सरल गेय गीतों का चयन इस संग्रह में किया है। अधिकांश गीत आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० (गजेन्द्र मुनि) और उनके शिष्यों श्री हीरा मुनि, गौतम मुनि और धन्ना मुनि द्वारा रचित हैं। इन गीतों में स्वाध्याय और सामायिक की विशेष प्रेरणा दी गई है। पुस्तक के उत्तरार्द्ध में 'गुरु गुणाञ्जली' खण्ड में आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के जीवन और व्यक्तित्व से सम्बन्धित श्रद्धा भक्तिपूर्ण गीत हैं। सभी गीत आत्मोत्थान एवं भाव-शुद्धि में सहायक हैं। पुस्तक का गेटअप भव्य एवं आकर्षक है।

४.–५. **प्रभा पीयूष घट, संगीत-प्रभा**:—रच० महासती प्रभावतीजी प्र० श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, शास्त्री सर्किल, उदयपुर। पृ० ८०, म० २.५० प्रत्येक।

उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी की शिष्या एवं पं० रत्न देवेन्द्र मुनिजी की संसार पक्षीय माताजी स्व० साध्वी प्रभावतीजी कुशल वक्ता होने के साथ-साथ सरस कवयित्री थीं। उन्होंने समय-समय पर तीर्थंकरों, सतियों व धर्म के विभिन्न अंगों एवं भावनाओं से सम्बन्धित सरस गीतिकाएँ विविध रागों में रची हैं। उनकी शिष्या महासती पुष्पवतीजी द्वारा संकलित-सम्पादित उक्त कृतियों में क्रमशः ६० एवं ६६ गीतिकाएँ हैं। भावों में गांभीर्य एवं भाषा में लालित्य व प्रवाह है।

६. **श्रमणोपासक—धर्मपाल विशेषांक**:—सं० जुगराज सेठिया, डॉ० शान्ता भानावत, प्र० श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर, पृ० ५००, मू० १०.०० ।

आचार्य श्री नानालालजी म० सा० के सदुपदेश से प्रेरित होकर मालवा क्षेत्र में अस्पृश्य समझे जाने वाले हजारों लोगों ने मांस, मदिरा आदि सप्त व्यसनों का त्याग कर संस्कारी जीवन जीने का संकल्प लिया। आचार्य श्री ने इन्हें 'धर्मपाल' कहकर सम्बोधित किया। संघ द्वारा इनके धार्मिक एवं सामाजिक उत्थान के लिये जो कार्य किया जाता है, वह 'धर्मपाल प्रवृत्ति' नाम से जाना जाता है। इस विशेषांक के चार खण्डों में क्रमशः धर्म के स्वरूप की धार्मिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक संदर्भों में विवेचना करते हुए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मपाल प्रवृत्ति के उद्गम विकास एवं सम्भावनाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस प्रवृत्ति से सम्बन्धित विभिन्न व्यक्तियों के संस्मरण और अनुभव भी दिये गये हैं। अन्तिम खण्ड में अहिंसा, करुणा, क्षमा, मदिरा त्याग, मांसाहार त्याग, धूम्रपान निषेध, रात्रि भोजन निषेध सम्बन्धी बारह सचित्र कथाएँ दी गई है। यह विशेषांक पठनीय और संग्रहणीय बन पड़ा है।

५. **सम्बोधि**—सं० रतनलाल जैन, संजीव भानावत, चाँदमल बाबेल, प्र० श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा–३११०३१, पृ० ६४।

महाप्रज्ञ प्रवर्तक स्वर्गीय श्री पन्नालालजी म. की प्रेरणा से संस्थापित स्था. जैन स्वाध्यायी संघ गुलाबपुरा विगत कई वर्षों से समाज की सेवा करता आ रहा है। संघ द्वारा प्रतिवर्ष संत-सतियों से वंचित क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना के लिए स्वाध्यायी भेजे जाते हैं। स्वाध्यायियों को स्वाध्याय सम्बन्धी विशेष सामग्री मिलती रहे, इस भावना से इस 'सम्बोधि' त्रैमासिक पत्रिका का आरम्भ किया गया है। इस प्रवेशांक में स्वाध्याय के स्वरूप और महत्त्व के सम्बन्ध में विशेष सामग्री दी गई है। पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क ८ रु. रखा गया है। इस प्रवेशांक का स्वागत है।—**डॉ. नरेन्द्र भानावत**

पाँच प्रेरक कथा संग्रह

☐ **दुर्गाशंकर त्रिवेदी**

नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन किशोर पीढ़ी में ही अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़कर सम्भव है। पंन्यास प्रवर की भद्रगुप्त विजयजी गणीवर ने यही दृष्टि सामने रखकर किशोर पाठकों के लिए कई छोटी-छोटी सस्ती पुस्तकें लिखी हैं जो हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। हिन्दी में भावानुवाद श्री भद्रबाहु विजय ने किया है।

१. **समर्पण** में ४ ऐतिहासिक कथाएँ हैं। दण्डनायक साजन की चरित्र–उदात्तता, वीरमती की शौर्य गाथा बड़ी प्रेरक है।

२. **फूलपत्ती** में १५ महापुरुषों के ऐसे जीवन क्षणों को कहानियों में पिरोया गया है जो हमारे जीवन की दिशा को नया मोड़ देने में सक्षम हैं। प्रत्येक संस्मरण आचरण करने योग्य तथ्य प्रस्तुत करता है।

३. **गुलमोहर** में ४ ऐतिहासिक साँस्कृतिक सन्दर्भों से जुड़ी किन्तु जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्यों के लिए जीवन संघर्ष करने की प्रेरणा देने वाली कहानियाँ हैं। हर कहानी सुनें और उस पर आचरण करें तो धन्य हो जाएँ।

४. **वीणा की झंकार**—जितनी मीठी संगीत धारा वीणा के स्वरों में होती है उससे भी कुछ अधिक इस संकलन की ३ प्रेरक कथाओं में जीवन संगीत है।

५. **सूरज की पहली किरण** की तरह ही इस संकलन की १२ प्रेरक कथाएँ हमारे अन्धकारमय जीवन में प्रकाश बिखेर सकती हैं। जरूरत है इन कहानियों के सन्देश को हम सुनें व आचरण में उतारें।

ये सभी प्रकाशन एक रुपये पच्चीस पैसे मूल्य के हैं। प्रकाशक हैं—श्री विश्व कल्याण प्रकाशन ट्रस्ट, कम्बोई नगर के निकट, **मेहसाना**–२८४००२ (गुजरात)।

□ □ □

दो प्रेरक प्रसंग | □ कल्पना आंचलिया

(१) नफरत

शिकागो में वर्णभेद के विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन करते हुए स्व. मार्टिन लूथर किंग को किसी उपद्रवी ने पत्थर मार दिया। श्री किंग घायलावस्था में भी अपने काम में पूर्ववत् लगे ही रहे। एक पत्रकार ने पूछा—"किंग महोदय ! इन खतरों से बचने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ? जानबूझ कर उनका सामना क्यों करते हैं ?"

"मित्र ! मैं खतरों के सामने इसलिए पड़ता हूँ कि मेरे विरोधियों के मन की सारी नफरत आसानी से बाहर आ जाए।"

(२) आसान तरीका

यूनानी दार्शनिक डायोजिनीस से उसके एक अभिन्न मित्र ने पूछा—"कोई तरीका है, जिससे मैं अपने शत्रुओं से बदला ले सकूँ ?"

डायोजिनीस ने उत्तर दिया—"एक बहुत आसान तरीका है—अपने शत्रुओं से अधिक सज्जन बनने का प्रयत्न करो।"

—११६, देवाली, उदयपुर–३१३००१ (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज–दर्शन

विरक्ता सुमित्रा की दीक्षा सम्पन्न

जयपुर : पहुना निवासिनी सुमित्रा बहिन की दीक्षा दिनांक १६-४-८४ को रामलीला मैदान में सम्पन्न हुई। डॉ० शिव मुनि ने दीक्षा मन्त्र प्रदान किया व महासती श्री जसकँवरजी ने आशीर्वाद प्रदान कर नवदीक्षिता का नाम साध्वी श्री सुप्रभाजी घोषित किया। दीक्षा समारोह का संचालन श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के मंत्री श्री गुमानमल चौरड़िया ने किया। प्रमुख वक्ता डॉ० नरेन्द्र भानावत ने विषम भावों से समभावों में गमन की प्रक्रिया के रूप में दीक्षा का विवेचन किया। इससे पूर्व दीक्षार्थी बहिन की शोभायात्रा लाल भवन चौड़ा रास्ता से निकाली गई।

धार्मिक स्वाध्यायी शिक्षण शिविर के आयोजन

अलवर : पल्लीवाल क्षेत्र के स्वाध्यायियों को सूचित किया जाता है कि श्री श्वे० स्था० स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर दि० २६ मई, १९८४ से दि० ३ जून, १९८४ तक खेरली (अलवर) में लगाया जा रहा है। जो स्वाध्यायी शिविर में भाग लेना चाहें उनका आवेदन-पत्र दि० २० मई, १९८४ तक निम्न पते पर पहुँचना अनिवार्य है। आवेदन-पत्र निम्न पते से प्राप्त किया जा सकता है। शिविर में उसी शिविरार्थी को प्रवेश दिया जावेगा जिसको सम्पूर्ण सामायिक सूत्र याद है तथा जिसकी आयु २० वर्ष से अधिक हो या जिसने आठवीं कक्षा की परीक्षा दी हो। शिविर में पल्लीवाल क्षेत्र के स्वाध्यायी ही भाग ले सकेंगे। शिविरार्थियों को परम श्रद्धेय १००८ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के सुशिष्य मधुर व्याख्यानी श्री शुभेन्द्र मुनि जी म० सा० ठा० ३ के दर्शन एवं प्रवचन का लाभ मिल सकेगा।

—सूरजमल मेहता
संयोजक, स्वाध्याय संघ,
छाजूसिंह के दरवाजे के सामने, अलवर (राज०)

सोजत सिटी : श्री श्वे० स्था० जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन उदारमना सेठ मेहता अचलदासजी फौजमलजी छाजेड़ सांचोर निवासी की ओर से दि० १८-५-८४ से ५-६-८४ की अवधि में सांचोर (जिला जालौर–राज०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में होगा। शिविर में जैनागम, तत्त्वज्ञान, इतिहास आदि का शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

शिविर में भाषण, निबन्ध, कहानी आदि कई प्रतियोगितायें होंगी, उनमें तथा कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले और सभी प्रथम श्रेणी प्राप्त छात्रों को विविध तथा विशिष्ट पारितोषिक प्रदान किये जायेंगे। भोजन आवास आदि की सुन्दर व्यवस्था रहेगी तथा एक तरफ का रेल किराया भी दिया जायेगा। निम्न पते से आवेदन-पत्र मंगवाकर शीघ्र भेजें।

—गाढ़मल चंपालाल
किराणा मर्चेन्ट, पो० सोजतसिटी (जि० पाली–राज०)

महावीर जयन्ती के विविध कार्यक्रम

जयपुर : राज० जैन सभा की ओर से महावीर जयन्ती पर सप्त दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विचार गोष्ठी, संकीर्तन, निबन्ध प्रतियोगिता, शोभा-यात्रा, सार्वजनिक सभा, सांस्कृतिक प्रतियोगिता आदि थे। लालभवन में महासती श्री जसकँवर जी आदि सतियों के विशेष प्रवचन हुए। **तिलकनगर** में डॉ० शिव मुनिजी के सान्निध्य में महावीर जयन्ती पर विशेष कार्यक्रम रखा गया। जिसमें मुनिश्री व डॉ० नरेन्द्र भानावत ने भ० महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकान्त सिद्धान्तों की समसामयिक सन्दर्भ में विवेचना की। डॉ० रामगोपाल शर्मा ने महावीर की सामाजिक, धार्मिक क्रान्ति पर प्रकाश डाला। श्री पवनकुमार जैन ने सांस्कृतिक चेतना के विकास में भाव शुद्धि का महत्त्व प्रतिपादित किया। जयपुर **रोटरी क्लब** की ओर से रोटरी भवन में आयोजित महावीर जयन्ती के विशेष कार्यक्रम में डॉ० नरेन्द्र भानावत का "वर्तमान युग में जैन विचारधारा की प्रासंगिकता" विषय पर मुख्य व्याख्यान हुआ। डॉ० भानावत ने कहा कि जैन विचारधारा ने साधना के केन्द्र में मनुष्य के पुरुषार्थ को प्रतिष्ठित किया और उपभोगमूलक संस्कृति के स्थान पर उपयोगमूलक जीवनदृष्टि का विकास किया। क्लब के मंत्री श्री राधेश्याम धूत ने स्वागत किया व जस्टिस बेरी ने धन्यवाद भाषण दिया। इस दिन **मेवाड़ जैन मित्र मण्डल** का स्नेह सम्मेलन एवं विशेष अधिवेशन भी आयोजित किया गया। इसके श्री कनकमल मेहता अध्यक्ष, डॉ० नरेन्द्र भानावत व डी० एस० पोखरना उपाध्यक्ष तथा श्री मानमल दक मंत्री मनोनीत किये गये। सम्मेलन में श्री रणजीतसिंह कूमट, डॉ० नरेन्द्र भानावत, डॉ० डी० एस० पोखरना, कौशल किशोर जैन, मानमल दक, सुरेन्द्र पोखरना, चन्द्रसिंह बाबेल आदि ने अपने विचार रखे। बजाजनगर स्थित **साधना भवन** में डॉ० शिव मुनि के सान्निध्य में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान वि० विद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र की ओर से "युगदृष्टि बनाम आत्मदृष्टि" विषय पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुनिश्री के अतिरिरिक्त डॉ० नरेन्द्र भानावत, श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, श्रीचन्द गोलेछा, भागचन्द जैन, शीतलचन्द जैन, श्रेयांसकुमार सिंघई, चुन्नीलाल ललवाणी आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर श्री ललवाणीजी ने अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् के महामंत्री डॉ० नरेन्द्र भानावत को 'वृद्ध कल्याण कोष' के लिए १००१/- रु० का चैक प्रदान किया। हाल ही में जीवन बीमा निगम ने ललवाणीजी की दीर्घकालीन सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें सम्मानित किया है।

नगरी : नगरी में जैन संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर की परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। साध्वी श्री मंजुलाश्री जी के प्रेरणादायी प्रवचन से प्रभावित होकर कई लोगों ने आजीवन सप्त व्यसन का त्याग किया। श्री जैन बाल वीर मण्डल का वार्षिक उत्सव भी मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन दिनेश नाहटा ने किया। **गौतमपुरा** में महावीर जैन नवयुवक मण्डल की ओर से आयोजित कार्यक्रम में डॉ० उदय जैन, श्रीमती कुसुमलता जैन, श्री रामनाथ जोशी, श्री मानव मुनि आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। **इन्दौर** में आयोजित कार्यक्रमों में रायपुर के डॉ० ओमप्रकाश वर्मा का विशेष व्याख्यान हुआ। इस अवसर पर महावीर स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा दो दिवसीय निःशुल्क स्त्री रोग परीक्षण शिविर लगाया गया। मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ की ओर से सामूहिक सामायिक साधना का कार्यक्रम रखा गया। स्था० जैन युवक संघ ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। जिसमें ४१ लोगों ने रक्तदान दिया। अन्य विभिन्न संस्थाओं द्वारा जगह-जगह बच्चों को मिठाई, फल आदि वितरित किये गये। **परमणी** (महाराष्ट्र) में वाणीभूषण श्री रतनमुनिजी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनिश्री ने सिकन्दराबाद चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की। **पहरसर** में श्री शुभेन्द्र मुनिजी एवं महासती श्री शान्तिकँवरजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री टीकमचंद हीरावत, श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, श्री राजेन्द्र पटवा ने भी अपने विचार रखे। श्री सुमेरचंदजी जैन ने सजोड़े अखण्ड शीलव्रत ग्रहण किया।

संक्षिप्त समाचार

भरतपुर–भोपालगढ़ : यहाँ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के शिष्य श्री शुभेन्द्र मुनिजी, बसन्त मुनिजी एवं चम्पक मुनिजी के आगमन से विशेष धार्मिक जागृति आई है। 'स्थूलिभद्र चरित्र' के माध्यम से ब्रह्मचर्य की महिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रवणकर मुनिश्री की प्रेरणा से निम्नलिखित महानुभावों ने सजोड़े ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया है—

(१) श्री केलाप्रसादजी जैन एवं श्रीमती कंचनदेवी जैन
(२) श्री फतेहसिंहजी जैन एवं श्रीमती शान्तिदेवी जैन
(३) श्री महाराजसिंहजी जैन एवं श्रीमती सज्जनवती जैन
(४) श्री राजेन्द्रसिंहजी जैन एवं श्रीमती मुन्नीदेवी जैन
(५) श्री रघुवीरसिंहजी जैन एवं श्रीमती शकुन्तलादेवी जैन
(६) श्री प्रकाशचंदजी जैन एवं श्रीमती कंचनदेवी जैन ।

इनके अलावा श्री मुरारीलालजी जैन व श्री अशोककुमारजी जैन ने श्रावक के बारह व्रत अंगीकार किये हैं। कई लोगों ने सामायिक-स्वाध्याय आदि के नियम भी लिये। यहाँ आदिनाथ जयन्ती भी तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। वैराग्यी बन्धु श्री एलप्पा एवं विरक्ता निर्मला सुराणा का अभिनन्दन किया गया।

आबूपर्वत : यहाँ अनुयोग प्रवर्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल' के सान्निध्य में विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए। धर्म कथानुयोग भाग-२, कमल सम्मान सौरभ, सदुपदेश सुमन उपमा संग्रह आदि ग्रन्थों का विमोचन हुआ। आगम पाठियों का सम्मान किया गया। पुष्पाकुमारी मुणोत रतलाम सर्वप्रथम रही।

गोटन : यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री नेमीचंदजी बाफना ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दरदेवी सहित एक मार्च को अपने पौत्र सिद्धार्थकुमार (सुपुत्र श्री राजेन्द्रकुमार) के जन्म की खुशी में बधाई स्वरूप आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० से आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये व शुभ खाते में ५९ वर्ष की आयु होने से ५९०१) रु० दान देने की घोषणा की।

बम्बई : यहाँ श्री समता युवा संघ का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष श्री हुकमीचंद खिवसरा, मंत्री श्री गौतमकुमार नागौरी, सहमंत्री श्री सुरेशकुमार धींग एवं कोषाध्यक्ष श्री भँवरलाल बोहरा चुने गये।

जयपुर : यहाँ जैन संगम के तत्त्वावधान में सुबोध जैन स्कूल भवन में संस्कृत, प्राकृत के प्रमुख विद्वान् श्री चन्दन मुनिजी का नागरिक अभिनन्दन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि धर्म पूजा-पाठ तथा उपासना तक सीमित नहीं किन्तु जीवन में धारण करना ही वास्तव में सच्चा धर्म है। मुनि श्री रूपचंदजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं साध्वी श्री मंजुला श्री जी ने भी अपने विचार रखे। राजमाता गायत्रीदेवी विशेष अतिथि थीं।

सिकन्दराबाद : यहाँ २५ अप्रेल को आयोजित अ. भा. स्था. जैन कांफ्रेंस की कार्यसमिति की बैठक में वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री संचालालजी बाफना अध्यक्ष चुने गये। अ. भा. वर्धमान स्था. जैन श्रमण संघ व श्रावक संघ संगठन समिति के अध्यक्ष श्री एस. हस्तीमल मुणोत निर्वाचित गिये गये। श्री रतनचंद रांका की अध्यक्षता में कांफ्रेंस की आंध्रप्रदेश प्रान्तीय शाखा का गठन किया गया। हैदराबाद नगर के स्था० जैन श्रावक महासंघ के गठन के लिए श्री माणकचंद बरमेचा व श्री संपतराज कोठारी संयोजक नियुक्त किये गये।

भोपालगढ़ : श्री जैन रत्न नवयुवक सेवा संघ द्वारा बंगलोर शाखा के नेतृत्व में आयोजित अखिल भारतीय जैन निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा—विषय—"दहेज से समाज पतन : कारण और समाधान"

प्रथम—सुश्री पुष्पा चौरड़िया, खैरागढ़ (म० प्र०)

द्वितीय—श्री प्रवीणकुमार जैन, इन्दौर

तृतीय—श्री उषा कोठारी, बागल कोट (कर्नाटक)

—गौतमचन्द ओस्तवाल
महामंत्री

शोक—श्रद्धांजलि

जयपुर : यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं प्रमुख जौहरी स्व. श्री राजमलजी सुराणा की धर्मपत्नी श्रीमती उमरावकंवर का २४ अप्रेल को देहावसान हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की उदारमना आदर्श महिला थीं। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। सर्वश्री कुशलचंद जी, विमलचंदजी, सुराणा आदि आपके सभी पुत्र विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए हैं।

जयपुर : जैन तेरापंथी सभा, जयपुर के अध्यक्ष श्री उत्तमचंदजी सेठिया की माताजी श्रीमती मनोहरदेवी सेठिया का देहावसान हो गया। आपका जीवन त्याग-तपस्या आदि धार्मिक क्रियाओं से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटा : समाजसेवी श्री शान्तिलालजी जैन श्यामपुरा वालों की माताजी श्रीमती गेंदीबाई का ९ अप्रेल को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की भद्र महिला थीं।

मद्रास : श्री बजरंगलालजी सुराणा की धर्मपत्नी श्रीमती मानकंवर बाई का १ अप्रेल को ५२ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आप एक सरल स्वभावी धर्मपरायण महिला थीं। आपने समय-समय पर अनेक प्रकार की तपस्याएँ एवं त्याग-प्रत्याख्यान किये। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

बड़प्पन

□ श्री राजकुमार जैन 'राजन्'

नदी तट पर खड़े विशाल वृक्ष ने नन्हें वृक्ष से कहा--"कैसा जीवन है तेरा ? यह भी कोई जीवन है ? जीना है तो मेरे जैसा विशाल होकर जीओ।"

बात पूरी भी न हो पाई थी कि भयंकर तूफान आया, जिससे विशाल वृक्ष झुक न सकने के कारण टूट कर धरती पर गिर पड़ा; परन्तु नन्हें वृक्ष ने झुक कर अपनी रक्षा करली।

तूफान समाप्त हो गया तो नन्हें वृक्ष ने सर उठाया और अपनी महानता का प्रदर्शन करने वाले विशाल वृक्ष को धरती पर गिरे देखा।

वह बड़प्पन की विडम्बना पर मुस्करा उठा।

—आकोला–३१२ २०५ (चित्तौड़गढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

'जिनवाणी' आजीवन सदस्यता २०१) रु० प्रत्येक

सदस्यता संख्या :

२०६० श्री किशोरीमलजी चंचलमलजी सुराणा, बीकानेर

२०६१ श्री सिद्धार्थ कुमारजी बाफना, गोटन (नागौर)

२०६२ श्रीमती आशाकंवर ललवानी, चेनगम (तमिलनाडु)

२०६३ श्री मदनलालजी बेताला, नागौर

२०६४ श्री मोहनलालजी रिखबचन्दजी जैन, कोडम्बाक्कम (मद्रास)

'जिनवाणी' को भेंट एवं सहायता

२५१) श्री उत्तमचन्दजी सेठिया, जयपुर
पूज्य माताजी श्रीमती मनोहरदेवीजी सेठिया की पावन स्मृति में भेंट ।

२०१) श्री नरेन्द्रकुमारजी कल्याणमलजी कटारिया (पीपाड़ वाले), नागपुर
पूज्य मातु श्री श्रीमती चन्दराज बाई धर्मपत्नी स्व. श्री कल्याणमलजी सा. कटारिया का पीपाड़ में दि. २-२-८४ को स्वर्गवास होने की स्मृति में भेंट ।

१०१) श्री जवाहरलालजी राजेशकुमारजी मूथा, होसपेठ
श्री प्रदीपकुमारजी का विवाह सौ. कां. उर्मिला के साथ होने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

१०१) श्री केवलचन्दजी नगीनचन्दजी बाफना, हरदा
श्री नेमीचन्दजी बाफना की हृदय गति रुक जाने से दिनांक १९-३-८४ को स्वर्गवास होने की स्मृति में बाफना परिवार हरदा एवं खिड़किया की तरफ से भेंट ।

५१) श्री बी. चम्पालालजी जैन, खण्डप
विरक्ता बहिन विमला विनायकिया के दीक्षा के उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

५१) दीक्षार्थी बहिन सुमित्रा, पहुना (भीलवाड़ा)
विरक्ता बहिन सुश्री सुमित्रा की श्री यशकंवरजी म. सा. के पावन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सान्निध्य में दिनांक १६-४-८४ को सम्पन्न होने वाली दीक्षा के उपलक्ष में भेंट ।

२१) श्री बजरंगलालजी सुराणा, मद्रास
"जिनवाणी" को सप्रेम भेंट ।

२१) श्री भीकमचन्दजी सायरमलजी सुराणा, नागौर
विरक्त बन्धु श्री यल्लपाजी विरक्ता बहिन सु. श्री निर्मला सुराणा की भागवती दीक्षा आचार्य प्रवर के पवित्र सान्निध्य में नागौर में ७ अप्रैल को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

११) श्री तेजराजजी पारसमलजी (खरियार रोड, उड़ीसा वाले), बाग बहार (म. प्र.)
सौ. कां. सरला का विवाह दिनांक ५-३-८४ को होने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

११) श्रीमती सूरज बाई सुराणा, नागौर
विरक्त बन्धु श्री यल्लपाजी एवं विरक्ता बहिन सु. श्री निर्मला सुराणा की भागवती दीक्षा आचार्य प्रवर के पवित्र सान्निध्य में नागौर में दिनांक ७ अप्रैल को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

११) श्री महावीरप्रसादजी जैन (बैंक मेनेजर), बजरिया, (सवाईमाधोपुर)
जवाहर नगर कॉलोनी स्थित निवास पर दिनाँक ६-४-८४ को २४ घण्टे का शान्ति जाप सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

११) मेसर्स तेजराज पारसमल एण्ड कम्पनी, बाग बहार (म. प्र.)
सौ. कां. सरला सुपुत्री श्री पारसमलजी बोकन्दिया का शुभ विवाह श्री इन्दरचन्दजी नाहटा सुपुत्र श्री नेमीचन्दजी नाहटा, रायपुर निवासी के साथ दिनांक ५-३-८४ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

साहित्य प्रकाशन-आजीवन सदस्यता ५०१) रु०

सदस्य संख्या

१४७ श्री किशोरीमलजी चंचलमल जी सुराणा, बीकानेर

१४८ श्री सिद्धार्थकुमारजी बाफना, गोटन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल भेंट एवं सहायता

५०१) श्री नेमीचन्दजी राजेन्द्रकुमारजी महावीरचन्दजी बाफना, गोटन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचनामृत :

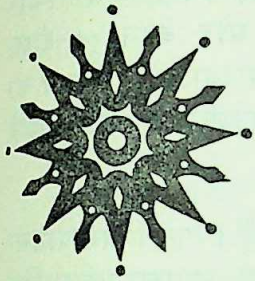

जैन दीक्षा
स्वरूप, महत्त्व एवं साधना*

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

विश्वानन्दकरि भवाम्बुधितरी, सर्वाऽऽपदां कर्त्तरी,
मोक्षाध्वैक विलङ्घनाय विमला, विद्या परा खेचरी।
दृष्टया भावित कल्मषाप नयने, बद्धा प्रतिज्ञा दृढ़ा,
रम्यार्हच्चरितम् तनोतु भविनां, दीक्षा मनोवांछितम्।

जैन दीक्षा—विश्व में आनन्द का संचार करने वाली, घोर संसार-सागर से पार पहुँचाने वाली, सम्पूर्ण आपदाओं को काटने वाली, मोक्ष मार्ग को पार करने के लिए एकमात्र निर्दोष आकाशगामिनी उत्कृष्ट विद्या है। दृष्टिमात्र से सम्बन्धित पाप मल को हटाने में जो दृढ़ प्रतिज्ञा वाली है, ऐसी सुरम्य अर्हत् दीक्षा अर्थात् भागवती प्रव्रज्या भव्यजनों को मनोवांछित फल प्रदान करे।

मुमुक्ष बन्धु और भगिनिओ !

आप जिस जैन दीक्षा के मंगल प्रसंग पर उपस्थित हुए हैं, वह देखने, सुनने से ज्यादा सीखने की है। मैं जैन दीक्षा की जानकारी के लिए दो शब्द कहूँगा, फिर दीक्षार्थी भाई-बहिन अपने विरक्त नाम को क्रियात्मक रूप देने से माया के बन्धन को काटकर निर्दोष जीवन जीने की प्रतिज्ञा करेंगे।

'जिन' का अनुयायी जैन :

जैन दीक्षा में दो शब्द हैं—१. जैन और २. दीक्षा। 'जिन' का अनुयायी जैन कहा गया है। 'जिन' उसे कहा गया है जिसने राग-द्वेषादि आन्तरिक विकारों पर विजय प्राप्त कर अपनी आत्मिक समस्त शक्तियों/योग्यताओं का पूर्ण विकास कर अर्हत् पद प्राप्त कर लिया है। जो साधक 'जिन' बनने की दिशा में सांसारिक माया-मोह और पापकारी प्रवृत्तियों से अलग हटकर, उत्कट

*श्री जिनेश्वर जैन 'शीतल' द्वारा संकलित-सम्पादित प्रवचन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैराग्य भावना से गुरु चरणों में समर्पित भाव से आजीवन समताभाव में रमण को प्रतिज्ञाबद्ध होता है। उस धार्मिक प्रक्रिया का नाम 'दीक्षा' है।

दीक्षा शब्द 'दीक्ष्' धातु से बना है—जिसका अर्थ है–किसी धर्म-संस्कार के लिए अपने आपको तैयार करना, आत्म-संयम की ओर बढ़ना। दीक्षा आन्तरिक चेतना के रूपान्तरण का नाम है। यह आध्यात्मिक जीवन का प्रवेश द्वार है। वृत्तियों के पवित्रीकरण और संस्कारशीलता का नाम है दीक्षा।

मनुष्य अनन्त शक्तियों और पुरुषार्थ का धनी है। पर विषय-वासना और कषायादि विकृतियों के कारण उसकी आत्म शक्तियाँ आवृत्त, आच्छादित व सुषुप्त बनी हुई हैं। जिस प्रकार अण्डे के आवरण को तोड़कर पक्षी नया जीवन धारण करता है उसी प्रकार आत्म शक्ति को ढकने वाले मोह, माया के आवरण को नष्ट कर शुद्ध स्वरूप को प्राप्त करने की साधना का नाम ही दीक्षा है।

श्रमण दीक्षा में साधक आजीवन हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह आदि का तीन करण तीन योग से अर्थात् मन, वचन, काया से त्याग करता है एवं स्वयं न करना, दूसरों से न करवाना और इन्हें करते हुए का अनुमोदन न करने की प्रतिज्ञा धारण करता है। इस प्रतिज्ञा द्वारा वह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है। स्वयं पर, स्वयं का नियंत्रण स्थापित करता है। अपने 'स्व' का विस्तार कर वह प्राणिमात्र के साथ मैत्री भाव का सम्बन्ध जोड़ता है। सभी जीवों को अपने ही समान समझने लगता है। उनकी समानता व स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वह अपने को आत्मानुशासित कर स्व-स्वरूप की प्राप्ति के लिए सदा जागरूक रहता है।

शिक्षा और दीक्षा :

प्रायः देखा जा रहा है कि शिक्षा के बाद दीक्षा विश्वविद्यालयों में भी दी जाती है। जीवन में सत्यं-शिवं-सुन्दरं की प्राप्ति के लिए बिना दीक्षा के शिक्षा पर्याप्त नहीं हो पाती। शिक्षा बोलचाल और रहन-सहन में मानव को सुन्दर बना सकती है, शिक्षा ऊँचे-ऊँचे चिकित्सक, वकील, अभियन्ता, अंकेक्षक आदि का निर्माण कर सकती है किन्तु सत्य और शिव की उपलब्धि नहीं करा सकती। क्योंकि शिक्षा से प्राप्त सस्कार दीक्षा से ही हृदयंगम कराये जाते हैं। श्रुति और स्मृति का ज्ञाता ब्राह्मण पुत्र भी उपनयन संस्कार की दीक्षा से ही संस्कारित किया जाता है। आज की आधुनिक शिक्षा में आध्यात्मिक संस्कार-दान की बात नहीं की जाती, फलस्वरूप आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कार-शून्य शिक्षा व्यक्ति और राष्ट्र का कल्याण नहीं कर पाती, शांति प्रदान नहीं करती। शिक्षा के साथ संस्कार की दीक्षा चाहिये। ज्ञान के साथ क्रिया चाहिए। इनके बिना आज की शिक्षा की ये डिग्रियां आत्म-कल्याण नहीं कर सकतीं। शिक्षा भूषण रूप तब ही होती है जबकि उसके साथ दीक्षा हो।

जैन दीक्षा का वैशिष्ट्य :

पर जैन दीक्षा इन सबसे अपनी अलग विशेषता रखती है। जैन दीक्षा में आचार धर्म की शिक्षा के अनन्तर दीक्षा दी जाती है। मुमुक्षु भाई-बहिन को पहले आहार-विहार-आचार की शिक्षा देकर जब यह देख लिया जाता है कि विरक्त भाई-बहिन अपनी भावना में दृढ़ और संयम जीवन को साध चुका है तब ही उसकी भावना को मूर्त्त रूप देने की दीक्षा दी जाती है। जैन दीक्षा मानव जीवन को दोष मुक्त, संयत और स्वस्थ बनाने का काम करती है। जैसे—पानी से मिट्टी को अलग करना, फिटकरी या निर्मली का काम है, दूध से पानी अलग करना, हंस की चोंच का काम है, खदान से निकले रत्नों पर कचरे को दूर करना तेजाब या खुरशान का काम है, तो सहस्र रश्मि को घनघोर घटाओं से अलग करना दक्षिणी पवन का काम है, कपड़े को मैल से अलग करना, साबुन आदि खार का काम है, ठीक इसी प्रकार जीव को माया से, आत्मा को अज्ञान से और मानव को मोह से अलग करना दीक्षा का काम है।

द्रव्य दीक्षा/भाव दीक्षा :

सामान्य रूप से दीक्षा के दो भेद हैं—एक द्रव्य दीक्षा, दूसरी भाव दीक्षा। वस्त्र बदलकर, मस्तक मुँडा लेना और गुरुदेव के पास दीक्षा की शपथ ग्रहण कर अर्थात् त्याग का मंत्र सुनकर मंडली में बैठ जाना तो द्रव्य दीक्षा है। पर जैन दीक्षा इतने में संतोषानुभव नहीं करती। उसका संकल्प है—जीवन को सर्वथा पाप-पंक से मुक्त करना और विषय-कषाय की ज्वाला को शांत करना। कषाय के कषैलेपन को समाप्त करने की साधना करना यही भाव दीक्षा है। शास्त्र कहता है कि—मात्र सिर मुँडा कर कोई श्रमण नहीं होता 'नवि मुंडिएण समणो।' केश मुण्डन तो भेड़ जैसा पशु भी वर्ष में दो बार करा लेता है, इससे सिर का भार मात्र हल्का हो सकता है लेकिन बिना विषय-कषाय को जीते कल्याण नहीं होता। कहा भी है—

मस्तक मुँडाये तीन गुण, मिटे माथा की खाज।
खाने को लड्डू मिले, लोग कहे महाराज॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः मात्र वेष-परिवर्तन के साथ पाँच इन्द्रियों के विषय और चार कषाय का मुण्डन करना आवश्यक होता है। जैन दीक्षा में ५ इन्द्रिय और ४ कषाय इन ९ को मूँडने की प्रधानता है। फिर दसवां मुण्डन शिरोमुण्डन होता है।

जैन दीक्षार्थी जीवन में लगने वाले सम्पूर्ण पापों को ऐसे ही उखाड़ फेंकता है, जैसे—सिर के बाल उखाड़े जाते हैं। वह सिर मुण्डन के साथ सम्पूर्ण पापों का भी परित्याग करता है तथा भ० महावीर के इस वाक्य को सार्थक करता है कि—"णाणस्स फलं विरइ।" अर्थात् ज्ञान का फल विरति, पापों से उपरति करना यही दीक्षा है।

भव-अटवी में भटकते पथिक को दीक्षा विश्राम वृक्ष है तो यम-नियम की आधारशिला है। इन्द्रियों के घोड़े को वश में करने को संयम का चाबुक आवश्यक होता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

सिद्ध, अरिहंत में मन रमाते चलो, तन के रथ को सुपथ पर बढ़ाते चलो।
देखना इन्द्रियों के न घोड़े अड़ें, अड़ें तो संयम के कोड़े पड़ें
मन के रथ को सुपथ पर.....॥

जैन दीक्षा की साधना :

जैन दीक्षा में स्वरूप साधना का संकल्प होता है, फिर साधना की जाती है। साधना मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। संसार में विभिन्न प्रकार के प्राणी जीवन यापन करते हैं, पर साधना शून्य होने के कारण उनके जीवन का कोई महत्त्व नहीं आंका जाता। मानव साधनाशील होने से ही सब में विशिष्ट माना जाता है। कठिन से कठिन दिखने वाले कार्य और भयंकर स्वभाव के प्राणी भी साधना से सिद्ध कर लिये जाते हैं। कोई भी कार्य ऐसा नहीं जो साधना से सिद्ध न हो। साधना के बल से मानव प्रकृति को भी अनुकूल बनाकर अपने स्वाधीन कर लेता है और दुर्दान्त देव-दानव को भी त्याग, तप एवं प्रेम के दृढ़ साधन से मनोनुकूल बना पाता है। वन में निर्भय गर्जन करने वाला केशरीसिंह सर्कस में मास्टर के संकेत पर क्यों खेलता है? मानव की यह कौनसी शक्ति है, जिसमें सिंह, सर्प जैसे भयावने प्राणी भी उससे डरते हैं। यह साधना का ही बल है। संक्षेप में साधना को दो भागों में बाँट सकते हैं—लोक साधना और लोकोत्तर साधना। देश साधना, मंत्र साधना, तन्त्र साधना, विद्या साधना आदि भौतिक कामनाओं के लिए की जाने वाली सभी साधनायें लौकिक और धर्म तथा मोक्ष के लिये की जाने वाली साधना लोकोत्तर या आध्यात्मिक कही जाती हैं। हमें दीक्षा के प्रसंग में अध्यात्म साधना पर ही विचार करना है। क्योंकि जैन दीक्षा अध्यात्म साधना का ही प्रमुख अंग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म साधना और धर्म :

आस्तिक दर्शनों ने दृश्यमान तन-धन आदि जड़ जगत से चेतन सम्पन्न आत्मा को भिन्न और स्वतन्त्र माना है। अनन्तान्त शक्ति सम्पन्न होकर भी आत्मा कर्म संयोग से, स्वरूप से च्युत हो चुका है। उसकी अनन्त शक्ति पराधीन हो चली है। वह अपने मूलधर्म को भूलकर दुःखी, विकल और चिन्तामग्न दृष्टिगोचर होता है। जैन दर्शन की मान्यता है कि कर्म का आवरण दूर हो जाय तो जीव और शिव में, आत्मा एवं परमात्मा में कोई भेद नहीं रहता। जैसा कि कहा है :—

सिद्धा जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय।
कर्म मैल का अंतरा, बूझे बिरला कोय॥

कर्म के पाश में बंधे हुए आत्मा को मुक्त करना प्रायः सभी आस्तिक दर्शनों का लक्ष्य है, साध्य है। उसका साधन धर्म ही हो सकता है।

धर्म का सही साध्य सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होना है जो जैन दीक्षा से ही प्राप्त होना संभव है। जैन दीक्षा ज्ञान क्रिया की संयुक्त साधना से सिद्धि मानती है। जैनाचार्यों ने स्पष्ट कहा है कि— एकान्त ज्ञान या एकान्त क्रिया से सिद्धि नहीं होती; पूर्ण सिद्धि के लिए ज्ञान, श्रद्धा और चरण-क्रिया का संयुक्त आराधन अत्यावश्यक है। बिना क्रिया का अकेला ज्ञान गतिहीन है तो अकेली क्रिया अन्धी है, अतः कार्यसाधक नहीं हो सकते। जैसा कि पूर्वाचार्यों ने कहा है :— 'हयं नाणं क्रिया हीणं, हया अन्नाणओ क्रिया।' वास्तव में क्रियाहीन ज्ञान और ज्ञानशून्य क्रिया दोनों सिद्धि में असमर्थ होने से व्यर्थ हैं। ज्ञान से चक्षु की तरह मार्ग-कुमार्ग का बोध होता है, गति नहीं मिलती और बिना गति के, आँखों से रास्ता देख लेने भर से इष्ट स्थान की प्राप्ति नहीं होती। मोदक का थाल आँखों के सामने है फिर भी बिना खाये भूख नहीं मिटती। वैसे ही ज्ञान से तत्वातत्व और मार्ग-कुमार्ग का बोध हो सकता है किन्तु तदनुकूल आचरण नहीं किया तो सिद्धि नहीं मिलेगी। ऐसे ही क्रिया है, कोई दौड़ता है पर मार्ग का ज्ञान नहीं हो तो वह भी भटक जायगा। ज्ञानशून्य क्रिया घाणी के बैल की तरह भव-चक्र से मुक्त नहीं कर पाती। अतः शास्त्रकारों ने कहा है 'ज्ञानं क्रियाभ्यां मोक्षः'। ज्ञान और क्रिया के संयुक्त साधन से ही सिद्धि हो सकती है। जैनागमों में कहा है—

नाणेण जाणइ भावं, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तसेणं परिसुज्झइ॥

अर्थात्—ज्ञान के द्वारा जीवाजीवादि भावों को जानना, हेय और उपादेय को पहचानना, दर्शन से तत्वातत्व पर यथार्थ श्रद्धान करना तथा चारित्र से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने वाले रागादि विकार और तज्जन्य कर्म दलिकों को रोकना एवं तपस्या से पूर्व संचित कर्म का क्षय करना यही संक्षेप में मुक्ति मार्ग या आत्मशुद्धि की साधना है। जैन दीक्षा ज्ञान और क्रिया दोनों का समान आदर से आराधना सिखाती है। उसकी दृष्टि में दोनों में से किसी एक का भी तिरस्कार इष्ट नहीं। हमारी दीक्षा का साध्य उसके ज्ञान, श्रद्धा और आनन्द गुण को प्रकट करना है। अज्ञान एवं मोह के आवरण को दूर कर आत्मा के पूर्ण ज्ञान तथा वीतराग भाव को प्रकट करना है। अन्धकार मिटाने के लिये प्रकाश की तरह अज्ञान को ज्ञान से नष्ट करना होगा और बाह्य-आभ्यान्तर चारित्र भाव से मोह को निर्मूल करना होगा। पूर्णदृष्टा सन्तों ने कहा—साधक ! अज्ञान और राग-द्वेषादि विकार आत्मा में सहज नहीं है। यह कर्म-संयोग से उत्पन्न पानी में मल और दाहकता की तरह विकार है। मिट्टी का संयोग छूटते ही जैसे—पानी अपने शुद्ध रूप में आ जाता है वैसे ही कर्म संयोग के छूटने पर अज्ञान एवं राग द्वेषादि विकार भी आत्मा से छूट जाते हैं, आत्मा अपने शुद्ध रूप में आ जाता है। इसका सीधा, सरल और अनुभूत मार्ग यह है कि पहले नवीन कर्म मल को रोका जाय, फिर संचित कर्म मल को क्षीण करने का साधन करें। क्योंकि जब तक नये दोष होते रहेंगे—तब तक कर्म मल बढ़ता रहेगा। अतः आने वाले कर्म-मल को रोकने के लिए प्रथम हिंसा, असत्य, चौर्य, कुशील और परिग्रह आदि पाप वृत्तियों से तन-मन और वाणी का संवरण रूप संयम का आराधन करना और फिर अनशन, स्वाध्याय, ध्यान आदि बाह्य और अन्तरंग तप किये जाय तो संचित कर्मों का क्षय सफलता से हो सकेगा।

साधना की प्रथम भूमिका :

सत्याऽसत्य, धर्माधर्म और हेय-उपादेय का सम्यक् परिज्ञान कर दृढ़ विश्वास करना साधना की प्रथम भूमिका है। साधक चाहे गृहस्थ हो या त्यागी, विश्वास की दृढ़ भूमिका दोनों में आवश्यक है। चलचित्त और अस्थिर मन वाला साधक सिद्धि नहीं मिला सकता। साधना के लिये पुस्तकीय ज्ञान उतना आवश्यक नहीं जितना क्रियाशील होना है। आचार्य वृद्धवादी ने, पास के साधुओं के यह कहने पर कि "अब क्या मूसल चलाओगे जो इतना जोर-जोर से रटते हो।" २१ दिन तक आयम्बिलपूर्वक सरस्वती की साधना कर सिद्धि मिलाई यह दृढ़ आत्मविश्वास का ही फल है। उन्होंने प्रतिकूल स्थिति में भी शंका नहीं की। मन में विचलित हो जाते तो कुछ नहीं होता।

साधक के सामने वृद्धवादियों के तर्क की बड़ी से बड़ी आँधियाँ और देव-मानव कृत विविध उपसर्ग तथा कष्ट और परिषह आ सकते हैं, यदि श्रद्धा की नींव कमजोर रही तो वह अबद्ध मूल वृक्ष की तरह जरा से झोंके में गिर पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धा के मूल पर ही चारित्र का महल खड़ा रह सकता है। श्रद्धा के सद्भाव में कदाचित परिस्थितिवश कोई यथावत् क्रिया का साधन नहीं भी कर सका, तो क्रिया को अच्छी मानेगा–दूसरे को प्रेरित करेगा और अपनी कमजोरी दूर करने को प्रयत्नशील रहेगा। संभव है वह फिर आद्रकुमार और नन्दीषेण की तरह सम्पूर्ण संयम का पालन कर सिद्धि मिलाले, परन्तु श्रद्धा भ्रष्ट को तो कोई जगह ही नहीं है। इसलिये सम्यक् दर्शन को साधना की प्रथम भूमिका माना गया है। सम्यक् दर्शन से साधक बाह्य शत्रुओं को जीतने के बदले आन्तरिक दोष विजय को ही सही मार्ग मानने लगता है। उसकी सम्यग् दृष्टि, सम्यग् आचरण की सर्जक होती है। उसके लिये 'जैसी दृष्टि–वैसी सृष्टि' वाली कहावत सार्थक होती है।

ज्ञान के साथ क्रिया की आवश्यकता :

बहुत से विचारक यह सोचते हैं कि ज्ञान ही साधना का मुख्य अंग है। तत्वातत्व का पूर्ण बोध हो गया और आत्मा को सही रूप में जान लिया तो फिर क्रिया की आवश्यकता ही क्या है? ज्ञानी घर में रहे या साधु वेश में, उसके लिए कोई अन्तर नहीं। भरत ज्ञान बल से राज्य पद पर रहकर भी कर्म निर्जरा करते रहे तो हम क्यों नहीं कर सकते? धर्म आत्मा के भीतर की वस्तु है। वह तो भीतर से ही आना चाहिए, किसी के उपदेश या व्रत-नियम के द्वारा धर्म को जागृत करना यह बाह्योपचार है—इसे धर्म कैसे कह सकते हैं? ऐसे विचार वाले लोगों को समझना चाहिये कि बाह्य और अन्तर का निमित्त और नैमित्तिक सम्बन्ध है। अन्तर से बाहर को और बाहर से अन्तर को प्रेरणा मिलती है। दोनों का अन्योन्य सम्बन्ध है। आप जानते हैं कि हर्ष, उल्लास और शान्ति भीतर की वस्तु है फिर भी कोई हर्ष का वातावरण सम्मुख आता है तो भीतर की उदासी बदलकर आँखों में हँसी नाचने लगती है। इसी प्रकार भीतर में संतप्त मन रहा तो बाहर के रमणीय भोग भी नीरस प्रतीत होते हैं। यहाँ भीतर का प्रभाव बाहर के पदार्थ पर है। महामुनि बाहुबली समवसरण में जाने का विचार कर, ध्यान में खड़े थे। भाइयों को नमन करने का सहज भाव नहीं था, पर ज्योंही ब्राह्मी के उद्बोधक शब्द सुने, उनका अन्तर जागृत हो गया, अन्तर की ज्योति जग गई, केवलज्ञान का चिरअभिलाषित आलोक प्राप्त हुआ। ब्राह्मी के निमित्त से उनका मार्दव भाव प्रकट हुआ। यह बाह्य से अन्तर के प्रभावित होने का उदाहरण है। ज्ञानवान् साधक के लिए भी आवश्यक है कि ज्ञान के साथ क्रिया का साधन करें। निश्चय के पीछे व्यवहार को नहीं भूलें।

आचार साधना :

शास्त्र में चारित्र-साधना के अधिकारी भेद से साधना के दो प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत किए गए हैं—१. देश विरति साधना और २. सर्व विरति साधना। प्रथम प्रकार की साधना आरम्भ-परिग्रह वाले गृहस्थ की होती है। सम्पूर्ण हिंसादि पापों के त्याग की असमर्थ दशा में गृहस्थ हिंसा आदि पापों का आंशिक त्याग करता है। मर्यादाशील जीवन की साधना करते हुए भी पूर्ण हिंसा आदि पापों का त्याग करना वह इष्ट मानता है, पर सांसारिक विक्षेप के कारण वैसा कर नहीं पाता। इसे वह अपनी कमजोरी मानता है। अर्थ व काम का सेवन करते हुये भी वह जीवन में धर्म को प्रमुख समझकर चलता है। जहाँ भी अर्थ और काम से धर्म को ठेस पहुँचती हो वहाँ वह इच्छा का संवरण कर लेता है। मासिक छः दिन पौषध और प्रतिदिन सामायिक की साधना से गृहस्थ भी अपना आत्म-बल बढ़ाने का प्रयत्न करे और प्रतिक्रमण द्वारा प्रातः सायं अपनी दिनचर्या का सूक्ष्म रूप से अवलोकन कर अहिंसा आदि व्रतों में लगे हुए दोषों की शुद्धि करता हुआ आगे बढ़ने की कोशिश करे, यह गृहस्थ जीवन की साधना है।

गृहस्थ संसार के आरम्भ-परिग्रह में दर्शक की तरह रहता है, भोक्ता के रूप में नहीं। जैसा कि कहा है—

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ।
बाजार से गुजरता हूँ, खरीददार नहीं हूँ॥
जो सम दृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तरगत न्यारो रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाल॥

"असंतुष्टा द्विजानष्टाः, सन्तुष्टाश्च मही भुजः", की उक्ति से अन्यत्र राजा का सन्तुष्ट रहना दूषण बतलाया गया है, वहाँ जैन दर्शन ने राजा को भी अपने राज्य में सन्तुष्ट रहना कहा है। चेटक महाराज और उदायन जैसे राजाओं ने भी इच्छा परिमाण कर संसार में शान्ति कायम रखने की स्थिति में अनुकरणीय चरण बढ़ाये थे। देश संयम द्वारा जीवन-सुधार करते हुए मरण-सुधार द्वारा आत्म-शक्ति प्राप्त करना गृहस्थ का भी चरम एवं परम लक्ष्य होता है।

सर्व विरति साधना :

सम्पूर्ण आरम्भ कनकादि परिग्रह के त्यागी मुनि की साधना पूर्ण साधना है। जैन मुनि एवं आर्या को मन, वाणी एवं काय से सम्पूर्ण हिंसा, असत्य, अदत्त ग्रहण, कुशील और परिग्रह आदि पापों का त्याग होता है। स्वयं किसी प्रकार के पाप का सेवन करना नहीं, अन्य से करवाना नहीं और हिंसादि पाप करने वाले का अनुमोदन भी करना नहीं, यह मुनि जीवन की पूर्ण साधना है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति जैसे सूक्ष्म जीवों की भी जिसमें हिंसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, वैसे कार्य वह त्रिकरण त्रियोग से नहीं करता। गृहस्थ अपने लिए आग जलाकर तप रहे हैं। यह कहकर वह कड़ी सर्दी में भी वहाँ तपने को नहीं बैठता। गृहस्थ के लिए सहज चलने वाली गाड़ी एवं वाहन का भी वह उपयोग नहीं करता, और जहाँ रात भर दीपक या अग्नि जलती हो वहाँ नहीं ठहरता। नदी, तालाब या नल का कच्चा पानी नहीं लेता। उसकी अहिंसा पूर्ण कोटि की साधना है। वह सर्वथा पाप कर्म का त्यागी होता है।

फिर भी जब तक राग दशा है, साधना की ज्योति टिमटिमाते दीपक की तरह अस्थिर होती है। जरा से झोंके में उसके गुल होने का खतरा है। हवादार मैदान के दीपक की तरह उसे विषय-कषाय एवं प्रमाद के तेज झटके का भय रहता है। एतदर्थ सुरक्षा हेतु आहार-विहार-संसर्ग और संयम पूर्ण दिनचर्या की कांच भित्ति में साधना के दीपक को मर्यादित रखा जाता है।

साधक को अपनी मर्यादा में सतत जागरूक तथा आत्म निरीक्षक होकर चलने की आवश्यकता है। वह परिमित एवं निर्दोष आहार ग्रहण करे, अपने से हीन गुणी की संगति नहीं करे। साध्वी का पुरुष मण्डल से और साधु का स्त्रीजनों से एकान्त तथा अमर्यादित संग न हो क्योंकि अति परिचय साधना में विक्षेप का कारण होता है। सर्व विरति साधकों के लिए शास्त्र में कहा है— "गिहि संथवं न कुन्जा, कुज्जा साहुहि संथव।" साधनाशील पुरुष संसारीजनों का अधिक संग-परिचय न करे। वह साधकजनों का ही संग करें। इससे साधक की साधना में बल मिलेगा और संसार के काम, क्रोध, मोह के वातावरण से वह बचा रह सकेगा। साधना में आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि साधक महिमा, पूजा और अहंकार से दूर रहे। जैसे कि प्रभु ने कहा है—

अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा।
इड्ढी सक्कार सम्माणं, मणसावि न पत्थए॥

साधक को अर्चा, महिमा, पूजा और वस्त्र, पात्र शिष्यादि की ऋद्धि एवं राजकीय सत्कार सम्मान की मन से भी इच्छा नहीं करनी चाहिये। सिद्धसेन जैसे विद्वान् आचार्य भी राजसम्मान में अपनी साधना भूल बैठे। उग्र विहार छोड़ बैठे। फिर साधारण की क्या बात? महिमा, पूजा, साधना में विष है। सर्व विरति साधक अधिक जन सम्पर्क को भी साधना में विघ्न और ध्यान का विक्षेप मानता है और तो और वह उपदेश एवं धर्म प्रचार के हेतु भी गृहस्थ के घर में बैठकर उपदेश नहीं करता। "गिहंतर निशिज्जाय।" इस पद से शास्त्रकार ने गृहस्थ के यहाँ बैठना साधक के लिए अनाचीर्ण कहा है। हमारी ध्यान-साधना बलवती क्यों नहीं बनती, इसके विभिन्न कारणों में आज का बढ़ता हुआ जन सम्पर्क भी एक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सही है कि ज्ञानवान विशिष्ट पुरुष के लिए घरवास भी बनवास के समान है, पर यह भी इतना ही सही है कि सरागी जीव का मन सदा सर्वदा एक रूप नहीं रहता। मन स्वयं पौद्गली होने से बाहरी वातावरणों से प्रभावित होता रहता है। बाहरी दृश्यों का प्रभाव इन्द्रियों द्वारा मस्तक पर, मस्तक का मन पर और मन के शुभाशुभ परिणामों का असर आत्मा पर सतत पड़ता रहता है। इसलिए साधना में बाह्य साधनों की ओर भी दृष्टि रखी गई है। साधक खान-पान आदि से शरीर की रक्षा करता है, पर वह एक गाड़ीवान की तरह शरीर को मार्ग का वाहन समझकर साधन रूप से ही उसका ध्यान रखता है। जब वाहन साधन रूप में काम देना बन्द कर दे या अपनी यात्रा पूर्ण हो जाय तो उसी समय उसे छोड़कर अलग हो जाता है। साधक का भी तन, धन और परिवार आदि से इसी प्रकार का सम्बन्ध रहना चाहिये।

साधना के सहायक :

जैनाचार्यों ने साधना के दो कारण माने हैं। अन्तरंग और बहिरंग। देव, गुरु, सत्संग, शास्त्र और स्वरूप शरीर एवं शान्त, एकान्त स्थान आदि को बहिरंग साधन माना है। जिसको निमित्त कहते हैं। बहिरंग साधन बदलते रहते हैं। प्रशान्त मन और ज्ञानावरण का क्षयोपशम अन्तर साधन है। इसे अनिवार्य माना गया है। शुभ वातावरण में आन्तरिक साधन अनायास जागृत होता और क्रियाशील रहता है। पर बिना मन की अनुकूलता के वे कार्यकारी नहीं होते। भगवान् महावीर का उपदेश पाकर कूणिक अपनी बढ़ती हुई लालसा को शांत नहीं कर सका, कारण अन्तर साधना-प्रशान्त मन नहीं था। सामान्य रूप से साधना की प्रगति के लिए स्वस्थ-समर्थ-तन, शान्त एकान्त स्थान, विघ्न रहित अनुकूल समय, सबल और निर्मल मन तथा शिथिल मन को प्रेरित करने वाले गुणाधिक योग्य साथी की नितान्त आवश्यकता रहती है। जैसा कि कहा है—

तस्सेस मग्गो गुरुविद्ध सेवा, विवज्जणा बाल जणस्स दूरा।
सज्झाय एगंत निसेवणाय, सुत्तत्थ संचितणया धिईय॥

इसमें गुरु और वृद्ध पुरुषों की सेवा तथा एकान्त सेवन को बाह्य साधन और स्वाध्याय, सूत्रार्थ चिन्तन एवं धर्म को अन्तर साधन कहा है। अधीर मन वाला साधक सिद्धि नहीं मिला सकता। जैन साधना के साधक को सच्चे सैनिक की तरह विजय-साधना में शंका, कांक्षा रहित, धीर-वीर, जीवन-मरण में निस्पृह और दृढ़ संकल्पशील होना चाहिए। जैसे—वीर सैनिक, प्रिय पुत्र, कलत्र का स्नेह भूलकर जीवन निरपेक्ष समर भूमि में कूद पड़ता है, पीछे क्या होगा, इसकी उसे चिन्ता नहीं होती, वह आगे कूच का ही ध्यान रखता है। वह दृढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्य और अचल मन से यह सोचकर बढ़ता है कि जितो वा लप्य से राज्यं, मृतः स्वर्ग स्वप्स्यसे। उसकी एक ही धुन होती है—

सूरा चढ़ संग्राम में, फिर पाछो मत जोय।
उतर जा चौगान में, कर्त्ता करे सो होय॥

वैसे साधना का सेनानी साधक भी परिषह और उपसर्ग का भय किये बिना निराकुल भाव से वीर गजसुकुमाल की तरह भय और लालच को छोड़ एक भाव से जूझ पड़ता है। जो शंकालु होता है वह सिद्धि नहीं मिलाता। विघ्नों की परवाह किये बिना "कार्य व साधवेयं देहं वापात येयम्" के अटल विश्वास से साहसपूर्वक आगे बढ़ते जाना ही जैन साधक का व्रत है। वह "कंखे गुणे जाव सरीर भेओ" वचन के अनुसार आजीवन गुणों का संग्रह एवं आराधन करते जाता है।

साधना में बाधक :

साधन की तरक कुछ साधक के बाधक विघ्न या शत्रु भी होते हैं जो साधक के आन्तरिक-बल को क्षीण कर उसे मेरु के शिखर से नीचे गिरा देते हैं। वे शत्रु कोई देव, दानव नहीं पर भीतर के मानसिक विकार हैं। विश्वामित्र को इन्द्र की देवी शक्ति ने नहीं गिराया, गिराया उसके भीतर के राग ने। संभूति मुनि ने तपस्या से लब्धि प्राप्त करली, उनका तप बड़ा कठोर था। नमुचि मन्त्री निर्वासित करना चाहता पर नहीं कर सका। सम्राट सनतकुमार का अन्तःपुर सहित आकर इसके लिए क्षमायाचना करनी पड़ी, परन्तु रानी के कोमल स्पर्श और चक्रवर्ती के ऐश्वर्य में जब राग किया तब वे भी पराजित हो गये। अतः साधक को काम, क्रोध, लोभ, भय और अहंकार से सतत जागरूक रहना चाहिए। ये हमारे भयंकर शत्रु हैं। भक्तों का सम्मान और अभिवादन रमणीय-हितकर भी हलाहल विष का काम करेगा। शेर की गुफा पर चार माह रहने वाले मुनि कोशा वैश्या के राग में हार गये। इसीलिये कहा है—

एक कनक अरु कामनी, जग में दो तलवार।
उठे थे हरि भजन को, बीच लिया है मार॥

साधक को विषय का चिन्तन भी नहीं करना चाहिये, कारण विषय का चिंतन करने से मन में राग होगा, राग से काम उत्पन्न होगा, काम से क्रोध, क्रोध से सम्मोह, सम्मोह से स्मृति-भ्रंश, स्मृति-भ्रंश से बुद्धि-नाश और बुद्धि-नाश से सब नाश होता है।

आत्मा से आत्मदेव की साधना :

जैन साधना में किसी जाति, कुल या अवस्था विशेष की अपेक्षा नहीं है। जो भी निष्कपट मन से पापों का परित्याग कर वीतराग भाव की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रसर हैं, वही इसका अधिकारी है। राजा से लेकर रंक और उच्च कुलीन ब्राह्मण से लेकर हरिजन तक कोई भी आबाल वृद्ध हृदय शुद्धि के साथ इसमें प्रविष्ट हो सकता है। जैन साधना में छोटे दूषण को भी अपेक्षा योग्य नहीं माना। उसका सिद्धान्त है कि दोष छोटा भी अग्निकरण की तरह विनाशक होता है। जैन साधना किसी अन्य देवी-देव की साधना नहीं, पर वह आत्मा से आत्म-देव की ही साधना है। उसका स्पष्ट निर्देश है कि दुर्दान्त आत्मा का दमन करो। वश में किया हुआ आत्मा इस लोक और परलोक में सुखी होता है। जैसा कि कहा है—

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्धमो ।
अप्पा दंतो सुही होई, अस्ति लोए परत्थयं ।।

गीता में श्रीकृष्ण ने भी इस भाव को कहा है—

"उद्धरेदात्मनात्मानं, नात्मान मवसादयेत"

इसलिये कहा है—'पुरिसा तुव मेव तुअं मित्ता, किं बाहियामित्त मिच्छसि'।

अय पुरुष ! तू ही मेरा मित्र है, बाहर में मित्र कहाँ ढूँढ़ रहा है। निःसन्देह जैन साधना की यह क्षमता है कि वह आज के संतप्त विश्व को शांति से मिलकर जीवनयापन करना सिखाये और विभिन्न दृष्टि के लोगों को सापेक्षवाद के सिद्धान्त से एक मंच पर बिठाये। संसार के विज्ञ इसके सही मर्म को समझ और सत्यानुरागी बनकर इसे अपने जीवन में उतारें तो विश्व-शान्ति दूर नहीं।

दीक्षा का अर्थ

□ श्री राजकुमार जैन 'राजन'

मेघकुमार सम्राट श्रेणिक का पुत्र था। वह भगवान महावीर के पास दीक्षित हुआ। दीक्षा के बाद उसने पूछा—"भंते ! अब मैं क्या करूँ ?"

भगवान् ने कहा—"जो आवश्यक हो, वह सब कुछ करो। चलो, बैठो, सोओ, खड़े रहो, खाओ, बोलो।"

मेघकुमार ने फिर पूछा—"भंते ! दीक्षित होने से पूर्व मैं यह सब कुछ करता था और अब प्रव्रजित होने के बाद भी वैसा ही करूँ, तो फिर क्या अन्तर होगा, दीक्षा की चर्या में ?"

भगवान् ने कहा—"अन्तर इतना ही होगा कि अब चलना हो तो जागरुकता के साथ चलो, खाना है तो जागरुकता के साथ खाओ, बोलना है तो जागरुकता के साथ बोलो। हर प्रवृत्ति के प्रति जागरुक रहो। दीक्षा का अर्थ है—जागरुकता।"

—आकोला-३१२ २०५ (चित्तौड़गढ़) राज०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो किस्तों में समाप्त लेख : : स्वाध्यायियों के लिए विशेष

सम्यग्ज्ञान (१)

☐ श्री जशकरण डागा

समग्र लोकालोक प्रकाशक, अज्ञान व मोह अंधकार का विनाशक और अनादि से भव समुद्र में गोता लगा रहे जीव का परम फलदायक तथा संसार में सर्वोत्तम अद्वितीय तत्त्व कोई है तो वह है 'ज्ञान'। शास्त्र में कहा है—

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स ए संखएणं, एगंत सोक्खं समुवेइ मोक्खं ।।[1]

अर्थात् ज्ञान के समग्र प्रकाश, अज्ञान और मोह के त्याग से तथा राग द्वेष के क्षय से एकान्त सुख रूप मोक्ष की उपलब्धि होती है। ज्ञान के समान कोई प्रकाशवान नहीं है। कहा है—'नास्ति ज्ञान समो दीपः सर्वान्धकार नाशने।' ज्ञान परमोत्तम होने से 'गीता' में भी कहा है—'नाहिज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते।'

संसार में सभी जीव सुख चाहते हैं, दुःख कोई नहीं। दुःख दूर कर सुख-प्राप्ति के लिए ज्ञान से बढ़कर कोई साधन नहीं है। सुख का मूल ज्ञान है, कहा भी है—

"ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारण।
यह परमामृत जन्म जरा मृत रोग निवारण।'[2]

नीति में भी कहा है—नास्ति ज्ञानात् परम सुखम्।[3]

अर्थात् ज्ञान के सदृश अन्य कोई सुख नहीं है। ज्ञान के द्वारा जीव नर से नारायण हो जाता है। यह जीव की परम शक्ति है। जिसे विकसित कर आत्मा परमात्मा हो जाता है। इसीलिए कहा गया है—'नाणं नरस्स सारो।'[4]

---

१. उत्तरा ३२/२ २. छह ढाला ३. चाणक्य नीति
४. आचार्य कुन्दकुन्द कृत दर्शन पाहुड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ एवं व्याख्या :

ज्ञान 'ज्ञ' धातु से बना है जिसका सामान्य अर्थ है जानना। ज्ञान के साथ 'सम्यग्' शब्द का अर्थ है सत्य, सही या भलीभांति। जैसे भास्करभानु द्रव्य अन्धकार को दूर करता है, वैसे ही ज्ञान आत्मा में रहे भाव अन्धकार को दूर करता है। इसीलिए ज्ञान को दीपक, चन्द्र, सूर्य व नेत्रों के प्रकाश से भी उत्तम कहा गया है। सम्यग्ज्ञान की व्याख्या शास्त्र में इस प्रकार की गई है—'जीव आदि पदार्थों में जो प्रमाणों, नयों व निक्षेपों द्वारा यथार्थ रूप से जो निश्चय करावे उसे सम्यग्ज्ञान कहते हैं।[1] इसके विपरीत जो वस्तु तत्त्व का बोध विपरीत करावे या अन्यथा करावे, वह मिथ्याज्ञान या कुज्ञान (अज्ञान) है।

ज्ञान के भेद :

ज्ञान के मुख्यत: दो भेद हैं यथा—

(१) **लौकिक**—संसार सम्बन्धी ज्ञान। यह दो प्रकार का है—

(अ) **जगत मूलक**– भूगोल, खगोल, इतिहास, ज्योतिष, मशीनरी ७२ कलाएं आदि सम्बन्धी, जिसका आत्म विकास से कोई प्रयोजन नहीं और जिसका मूल उद्देश्य अर्थ और काम की सिद्धि मात्र होता है।

(ब) **आत्म मूलक**—संसार क्या है ? इसमें रहे जीव–अजीव क्या हैं ? स्वर्ग-नरक, विभिन्न जीव योनियों का स्वरूप कैसा व क्यों है ? इत्यादि का ज्ञान जो आत्म-विकास में सहायक होता है।

वैसे, लौकिक ज्ञान का भी अपना महत्त्व है। लौकिक ज्ञान से युक्त व्यक्ति विद्वान् हो सर्वत्र पुजाता है। उसका समय मूर्खों की अपेक्षा बड़ा अच्छा व्यतीत होता है और वह सुख से जीवन व्यतीत करता है। कहा है—

"काव्यशास्त्र विनोदेन, कालोगच्छतिधिमताम्।
व्यसनेन च मूर्खायां, निद्रा द्रया कलेहनवा॥

अर्थात् विद्वानों का समय, काव्य शास्त्रों के विनोद में निकलता है, तो मूर्खों का समय दुर्व्यसनों के सेवन में, निद्रा में या कलह में पूरा होता है। सम-दृष्टि जीव लौकिक ज्ञान का भी सदुपयोग कर, स्व पर का हित उससे साध लेता है। लौकिक ज्ञान से विद्वान् तो बना जा सकता है, पर पंडित नहीं। पंडित होने हेतु, लोकोत्तर ज्ञान की जानकारी एवं तदनुकूल साधना व आचरण आवश्यक होते हैं।

(२) **लोकोत्तर**—आत्मा सम्बन्धी ज्ञान। यह आत्मकल्याण हेतु अति आवश्यक है। कहा है—

---

१. तत्त्वानुशासन ३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आत्म ज्ञान के बिना विश्व का अन्य ज्ञान सब है बेकार ।
आत्म ज्योति को बिना जगाए, कौन हो सका भव से पार ।।'[1]

वस्तुतः आत्मार्थी के लिए आत्म ज्ञान के बिना पूर्वों का ज्ञान सीख लेना भी कोई महत्त्व नहीं रखता । इस विषय में नाविक और प्रोफेसर का कथानक बड़ा रोचक है ।

एक बार एक प्रोफेसर साहब को मार्ग में नदी आ जाने से नाव में बैठना पड़ा । उन्होंने समय गुजारने हेतु, अपनी विद्वता का प्रदर्शन करने हेतु नाविक से पूछा—'क्या तुझे अंग्रेजी आती है ?' उसने कहा–'श्रीमान् मैं तो बे पढ़ा लिखा हूँ ।' उन्होंने यह कहते हुए कि तेरी चौथाई जिन्दगी यों ही गई, फिर पूछा क्या तुझे ज्योतिष ज्ञान आता है ?' उसने फिर कहा—'नहीं श्रीमान् !' प्रोफेसर ने पुनः नया प्रश्न किया—'क्या तुझे खगोल-आकाश के ग्रहों की विद्या आती है ?' उसने पुनः उत्तर दिया—'नहीं श्रीमान् !' इस पर प्रोफेसर साहब हँस कर बोलने लगे 'तब तेरी बारह आने जिंदगी वैसे ही गई ।' इतने में ही नदी में तेजी से पानी के बढ़ते वेग को देख नाविक ने प्रोफेसर साहब से पूछा—'श्रीमान, आपको तैरना भी आता होगा ।' प्रोफेसर बोले—'नहीं भाई ! तैरना तो नहीं सीखा ।' तब नाविक बोला–'श्रीमान् मेरी तो बारह आने जिन्दगी गई पर अब तो आपकी पूरी जिन्दगी ही खतरे में है, कारण नदी में भयंकर बाढ़ आ गई है, नाव तो अब डूबने वाली है । 'थोड़े ही समय में, नाव डूब गई, और प्रोफेसर साहब की जिंदगी भी समाप्त हो गई । संसार समुद्र में भी जिन्हें उससे तिरने रूप आत्म ज्ञान की कला नहीं आई, वे सभी प्राणी मानव भव-रूपी नौका प्राप्त करके भी डूब जाते हैं । इसीलिए कहा है—

"कला बहत्तर पुरुष की ज्या में दो सरदार ।
एक जीव की जीविका, एक आत्म उद्धार ।।"

अतएव सभी आत्मार्थियों के लिए आत्म ज्ञान की लोकोत्तर विद्या को अवश्य जानना और उससे आत्म कल्याण करने की विधि को भलीभाँति हृदयंगम करना चाहिए । लोकोत्तर ज्ञान भी दो प्रकार का है—

(अ) मिथ्या लोकोत्तर—जो लोकोत्तर मोक्ष मार्ग को विपरीत एवं अन्यथा रूप में बताता हो । इसके भी दो भेद हैं—

(i) मूलतः सर्वथा मिथ्या—जिसमें प्ररूपणा, स्पर्शना सभी मिथ्या हो जैसे—चार्वाक मत, जिसमें कहा है—

---

१. उपाध्याय कवि अमरचन्दजी म. सा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यावत् जीवेत सुख जीवेत, ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत् ।
भस्मी भतस्य देहस्य, पुनर्जन्मः कुतः ।।

अर्थात् जब तक जीओ सुख से जीओ, उधार करके भी घृत पीओ। कारण पुनर्जन्म या स्वर्ग-नरक कुछ नहीं है, यह शरीर भस्म होकर सब नष्ट हो जाता है।

(ii) देशतः आंशिक मिथ्या—जहाँ प्ररूपणा सम्यग् पर स्पर्शना मिथ्या हो। अथवा जहां दोनों ही कुछ सम्यग् और कुछ मिथ्या हो—मिश्रित हो। जैसे हिंसा में पाप मानना पर धर्म के या ईश्वर के नाम बलि आदि होने वाली हिंसा में धर्म मानना। जीव, अजीव आदि तत्त्वों को मानना पर उन्हें यथा स्वरूप न मानकर विपरीत या कम अधिक मानना। अथवा स्वार्थवश सद् असद् प्ररूपणा करना। जैसे श्री देवचंद्रजी म. सा. ने कहा है—

"अवगुण ढाकन काज, करूँ जिन मत क्रिया।
दृष्टि राग वो पोस, तेह समकितगिणु।
स्याद्वाद की रीति, न जाणुं निज पणुं।
बिहरमान भगवान्, सुनो मुझ विनती ।।"

लोकोत्तर मिथ्या ज्ञानी भी तीन प्रकार के होते हैं यथा—'तिविहा मूढ़ा पणत्ता, तंजहा—णाण मूढ़ा, दंसण मूढ़ा, चरित्त मूढ़ा।[1] अर्थात् तीन प्रकार के मूढ़ कहे हैं—१. ज्ञान मूढ़ (आत्म ज्ञान रहित), २. दर्शन मूढ़ (सम्यग् दर्शन रहित), ३. चारित्र मूढ़ (सम्यग् चारित्र रहित)। जो इन तीनों से रहित हैं उनका ज्ञान मूलतः सर्वथा मिथ्या है और जो इनमें एक या दो से रहित हैं, उनका ज्ञान देशतः आंशिक मिथ्या है। समदृष्टि भी यदि चारित्र पालना में छल करता है, तो उसका भी ज्ञान अपेक्षा से आंशिक मिथ्या है।

(ब) सम्यग् लोकोत्तर—यह वस्तु तत्त्व को नय निक्षेपों एवं प्रमाणों से यथा तथ्य स्पष्ट करता है। इसके भी दो मूल भेद हैं यथा—

(i) परोक्ष ज्ञान—जो मोक्ष मार्ग में सहायक तत्त्वों की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करे। इसके भी दो भेद हैं—मति ज्ञान और श्रुति ज्ञान। इन्द्रियों और मन की सहायता से रूपी अरूपी पदार्थों का जो आंशिक किन्तु सम्यग्ज्ञान होता है वह मतिज्ञान है। इसके दो भेद हैं—श्रुत निश्रित (शास्त्र व उसके अर्थ में होने वाला) तथा अश्रुत निश्रित (बिना शास्त्र के संस्पर्श से मात्र क्षयोपशम से होने वाला)। अश्रुत निश्रित के चार भेद हैं—(१) औत्पत्ति की

१. ठाणांग सूत्र ३/४/२०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हाजिरी जवाबी), (२) वैनयिकी (गुरु आदि की सेवा से हो), (३) कर्मजा (कार्य करने से बुद्धि उत्पन्न हो), (४) पारिणामिकी (सुदीर्घकाय के अनुभव से हो)। वैसे मतिज्ञान के चार भेद हैं यथा—अवग्रह, ईहा, अवाय व धारणा। मतिज्ञान के अवान्तर भेद अर्थावग्रह के २८८ व व्यंजनावग्रह के ४८ यों कुल ३३६ होते हैं।

शास्त्रादि श्रवण करने से जो ज्ञान होता है उसे श्रुत ज्ञान कहते हैं। श्रुतज्ञान सदा मतिपूर्वक होता है। अन्य ज्ञान तो सभी वस्तु स्वरूप को जानते हैं किन्तु कथन की शक्ति मात्र श्रुतज्ञान में है। श्रुतज्ञान के मुख्यत: दो भेद हैं—अंग प्रविष्ठ व अंग वाह्य।

(ii) प्रत्यक्ष ज्ञान—इसके मुख्यत: दो भेद हैं—

(१) **विकल प्रत्यक्ष**—अवधि और मन:पर्यय। ये दोनों विकल प्रत्यक्ष हैं। अवधि ज्ञान के द्वारा सभी रूपी पदार्थों को देखा जाता है। अवधि ज्ञान के दो भेद—भव प्रत्यय (मनुष्यतिर्यंच अपेक्षा) व गुण प्रत्यय (देवनरक अपेक्षा) है। व इसके ६ भेद भी हैं–अनुगामी, अननुगामी, वर्धमान, हीयमान, अवस्थित और अनवस्थित। मन: पर्यय ज्ञान के द्वारा सभी संज्ञी (मन वाले) प्राणियों की मनोवर्गणा को जानता देखता है। यह भी दो प्रकार का है—ऋजुमति व विपुल मति।

(२) **सकल प्रत्यक्ष**—इसमें केवल ज्ञान आता है जिसका कोई भेद नहीं है। जो ज्ञान त्रिकाल के सभी द्रव्यों और सभी पर्यायों को हस्तमलकवत् (हाथ में रखे आंवले की तरह) एक साथ सम्पूर्ण रूप से जानता देखता है उसे केवल ज्ञान कहते हैं। यह सभी ज्ञानों से उत्तम व निर्मलतम ज्ञान है। 'केवल' के अर्थ है—(१) शुद्ध, (२) सम्पूर्ण, (३) असाधारण, (४) अनंत और (५) असहाय (मन इन्द्रिय की अपेक्षा रहित)।

निश्चयिक लोकोत्तर ज्ञान—व्यावहारिक लोकोत्तर मतिश्रुति ज्ञान के माध्यम से सम्यग् श्रद्धा युक्त चिंतन मनन कर, सारभूत आत्मज्ञान को आत्मसात कर लेना, निश्चयिक लोकोत्तर ज्ञान है। इसकी उपलब्धि पर जीव, निश्चय से सम्यग्ज्ञानी, सम्यग् दृष्टि हो जाता है। इसी कारण इसका बड़ा महत्त्व है। कहा है—'विज्जानिच्छयसारा'।[1] अर्थात् ज्ञान का सार निश्चय की उपलब्धि है। अभव्य जीव व्यावहारिक ज्ञान तो खूब (नव पूर्व तक का) पढ़ लेता है। किन्तु निश्चय ज्ञान की उपलब्धि अनंतानुबंधी की ग्रंथि भेद व दर्शन मोहनीय के

१. स्थानांग सूत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर न कर सकने के कारण, नहीं कर पाता है। अतः उसका समग्र ज्ञान व पुरुषार्थ संसार भ्रमण का हेतु होता है। वह मोक्ष मार्ग में बढ़ने हेतु पहिली सीढ़ी (प्रथम गुण स्थान) से आगे ही नहीं बढ़ पाता। इस निश्चयिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु निर्मल क्षमोपशम आवश्यक है। इस हेतु कम से कम अनंतानुबंधी कषाय चतुष्क (क्रोध, मान, माया, लोभ) व दर्शनादिक (मिथ्यात्व, मोहनीय, मिश्र मोहनीय व समकित मोहनीय) का त्याग आवश्यक है। इस क्षयोपशम अपेक्षा से, अल्प ज्ञानी भी इसे प्राप्त कर सकता है तो दूसरी तरफ श्रुत के महाज्ञानी विद्वान् भी इससे वंचित रह सकते हैं। इस ज्ञान को उपलब्ध होने वाला जीव, निश्चय से भेदज्ञानी, सम्यग्ज्ञानी व आत्मज्ञानी होता है। उसका स्वयं का चिंतन मनन बड़ा निर्मल, निष्पक्ष और सत्य पर आधारित होता है। उसकी मान्यता, 'मेरा सो सत्य नहीं, वरन् सत्य सो मेरा है' : ऐसी हो जाती है। वह सत्यान्वेषी होता है। कदाग्रह व मिथ्याग्रह रहित होता है। जब भी उसे अपनी कोई भूल ध्यान में आती है तो वह उसके लिए क्षमायाचना कर उसे ठीक करने को तत्पर रहता है। प्रत्येक आत्मार्थी को ऐसी प्रवृत्ति बनानी चाहिए। कहा भी है—

"मनन करे चिंतन करे, मनुज उसी का नाम।
आँख मूंद पीछे जगे, यह पशुओं का काम ।।"

निश्चय आत्म ज्ञानी आत्मा से, आत्मा का, आत्मा के लिए गूढ़ चिंतन मनन करता है। जैसे श्रीमद् राजचन्द्र ने चिंतन करते हुए लिखा है—

"हूं कौन हूँ, क्या थी थयो, क्या छै स्वरूप म्हारो खरो ?
कौन संके बलगया छै, राखणा के परि हरूं ?
एत्रो विचार विवेक पूर्वक, शान्त भावे जे करे।
ते सर्व आत्म ज्ञान ना, सिद्धान्त तत्त्व अनुभवे ।।"[1]

सच्चे आत्म ज्ञान को उपलब्ध प्राणी पर में रही कर्त्तृत्व बुद्धि को भी छोड़ देता है। उसकी ऐसी अटूट मान्यता व धारणा हो जाती है—

"कर्म करे सो ही करतारा, जो जाने सो जानन हारा।
जो कर्त्ता जाने नहीं सोही, जाने सो कर्त्ता नहीं होई ।।"[2]

इस प्रकार के चिंतन एवं धारणा से, उसकी पर में आसक्ति भी कम होती जाती है, और 'ज्ञाता दृष्टा' की अनुभूति उसमें आत्मा से होने लगती है। किन्तु इस भूमिका की उपलब्धि, अति कठिन है। कथन जितना सरल है, कथन की जीवन में उपलब्धि उतनी ही कठिन है।

---

१. आत्म सिद्धि २. समय सार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रसंग में एक रोचक दृष्टान्त यहाँ प्रस्तुत है। एक बार एक संत के लिए कुछ व्यक्ति आये और कहने लगे—परमात्मा नहीं है, और धर्म धोखा-धड़ी है। संत उनकी बात सुन हँसने लगे तो उन्होंने पूछा—'आप हँसते क्यों हैं ? समाधान देवें। संत बोले—क्या आप स्वयं को जानते हैं ? तब वे सभी एक दूसरे का मुंह देखने लगे। संत ने कहा—जब आप स्वयं को ही नहीं जानते तो परमात्मा होने न होने का निर्णय आप कैसे दे सकते हैं ? इस पर उनमें से एक व्यक्ति ने संत को निरुत्तर करने हेतु उत्सुकतापूर्वक पूछा—आप भी बतावें कि दुनिया में सबसे बड़ी वस्तु क्या है ? संत ने सहज भाव से उत्तर दिया—'आकाश। क्योंकि जो भी है सब आकाश में है, और आकाश किसी में नहीं।' संत को निरुत्तर करने हेतु दूसरे व्यक्ति ने पूछा—दुनिया में श्रेष्ठतम वस्तु क्या है ? संत ने उसी क्षण चिंतन कर उत्तर दिया 'शील' है। कारण शील पर सब कुछ न्यौछावर किया जा सकता है, किन्तु शील को किसी के लिए भी खोया नहीं जा सकता।' इस पर तीसरे व्यक्ति ने संत से पूछ लिया—'महात्मन् सब से गति शील क्या ?' संत ने तत्क्षण कहा—'विचार'। तब चौथे व्यक्ति ने पूछा—'सबसे कठिन क्या ? महात्मा ने उत्तर दिया—'आत्म ज्ञान'। कारण स्वयं को जानना सर्वाधिक कठिन है।' सभी व्यक्ति महात्मा के गहन ज्ञान से प्रभावित हो उनके आगे नत मस्तक हो गये।

इस प्रकार सुस्पष्ट है कि निश्चय में आत्म ज्ञान की उपलब्धि बड़ी कठिन है जो विशिष्ट पुण्यशाली हलकर्मी प्राणी को ही विशिष्ट क्षयोपशम पर किसी ज्ञानी महापुरुष की महती कृपा से अनुपम सत्संग से ही हो पाती है। (क्रमशः)

—डागा सदन, संघपुरा, टौंक (राज.)

□ • □

मूल	अनुवाद
जेण तच्चं विबुज्झेज्ज,	वही ज्ञान है जिन शासन में,
जेण चित्तं णिरुज्झदि।	जिससे होए तत्त्व-विबोधी
जेण अत्ता विसुज्झेज्ज,	जिससे आत्मा का विशोध हो,
तं णाणं जिणसासो ॥	जिससे होता चित्त-निरोध ॥
—मूलाचार २६७	—डॉ. हरिराम आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

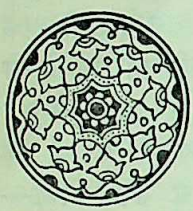

सादा जीवन, उच्च विचार

☐ श्री गौतमचन्द ओस्तवाल

"सादा जीवन उच्च विचार" की उक्ति सोलह आने सत्य है। उच्च विचारों को जीवन-क्रम में स्थान मिल सके, इसके लिए सादगी की नीति अपनाया जाना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि यही आत्मा का सही पथ है।

अमीरी का ठाठ-बाट भरा जीवन जीने और भविष्य में सम्पदा, विलासिता एवं अहंता के लम्बे चौड़े सपने पूरे करने में संलग्न व्यक्ति अध्यात्म का आदर्शवादी चिन्तन एवं परामर्श परायण जीवन-क्रम अपना नहीं सकते। दोनों में सन्तुलन करना हो तो इतना ही बन सकता है कि आवश्यक निर्वाह प्राप्त करने की भौतिक आवश्यकता सीमित की जाय। कम समय, कम श्रम, और कम पैसों में सन्तोष पूर्वक गुजारा किया जाय और इसके बाद जो कुछ बचता है उसे आदर्शवादी रीति-नीति अपनाने में प्रयोग किया जाय, बस यही जीवन जीने का सच्चा रहस्य है। इसे अपनाने वालों को मितव्ययी, स्वल्प सन्तोषी एवं ऐषणा रहित बनना पड़ता है। वह कम खर्चे में गुजारा चलाता है। निर्वाह की अनिवार्य आवश्यकताओं तक सीमित रहता है। श्रमपूर्वक ईमानदारी के साथ जितना कमाया जा सकता है उसी परिधि में अपना बजट बनाता है। भविष्य के लिए आदर्शवादी सत्कर्म करने की इतनी अधिक योजनाएँ मस्तिष्क में भरी रहती हैं कि वित्तेषणा, पुत्रेषणा, लोकेषणा जैसी तुच्छ बाल क्रीड़ाएँ अपनाने में अपनी भावना घटती दिखाई पड़ती है।

यह सोचना व्यर्थ है कि मितव्ययी, सादा जीवन अपनाने वाला दरिद्र लगेगा और असम्मान का भाजन बनेगा। होता यह है कि अध्यात्म दृष्टिकोण के कारण सादगी अपनाने वाला व्यक्ति उस परिस्थिति में भी स्वच्छता और व्यवस्था के दो सद्गुण अपने छोटे-बड़े सभी कार्यों में पूरी तरह समाविष्ट किये रहता है। कपड़े सस्ते और कम होते हुए भी बहुत ही अच्छे तरीके के सिले और ठीक ढंग से पहने हुए होते हैं। स्वच्छता और सतर्कता का समन्वय एक अनोखा सौन्दर्य उत्पन्न करता है। यह वेश एवं परिधानों के साथ जुड़ कर अपना विशिष्ट आकर्षण उत्पन्न करता है। गांधीजी मोटे और थोड़े कपड़े पहनते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उनकी स्वच्छता और पहनने में बरती गई सतर्कता देखते ही बनती थी। आवश्यक नहीं कि बहुमूल्य वस्त्रालंकारों से ही किसी का बड़प्पन प्रकट होता हो।

मध्यकाल की वह मान्यता जिसके अनुसार राजा, रईस बहुमूल्य वस्त्राभूषण पहन कर अपने बड़प्पन की घोषणा करते थे, अब समय के साथ बदल गयी है। फिर भी यदि कोई व्यक्ति अपने शरीर से अपना रक्त निकाल कर स्वयं ही बहा रहा हो, अपनी कमाई के नोट इकट्ठे करके स्वयं ही जला रहा हो तो उसे अविवेकी ही कहना होगा।

लेकिन बात पैसे तक सीमित नहीं है और न खर्चीले ठाठ-बाट तक सीमित है। समय, श्रम एवं चिन्तन भी सम्पत्ति हैं। वस्तुतः असली सम्पत्ति तो यही तीन हैं। इनका अपव्यय जहाँ हो रहा होगा, वहाँ भी लांछन ही लगेंगे। उच्च विचार मात्र कल्पना लोक में विचरण करके समाप्त नहीं हो जाते हैं बल्कि क्रिया रूप बनकर जगत् कल्याण का माहौल बनाते हैं।

स्पष्ट है कि यह सब उसी के लिए संभव होगा जो क्षमताओं को अपव्यय से बचा कर सुरक्षित रख सकेगा। बचत का ही दूसरा नाम सादगी है। जैसे मछली के सामर्थ्य का मूल्यांकन इसी आधार पर होता है कि वह पानी की प्रवाहधारा चीरकर उल्टी दिशा में भी बह सकती है। इसलिए सादगी का व्रत धारण करना इस बात का प्रमाण है कि लोक-प्रवाह से असहमति प्रकट करते हुए स्वतंत्र रीति-नीति अपनाने का साहस उत्पन्न हो गया है और यह परिवर्तन उसी प्रकार का है जैसा रेल्वे जंक्शन पर रेल की पटरियों के कैंची कटने का छोटा-सा प्रयोग जो गाड़ियों के दौड़ने की दिशा ही बदल देता है। सादा जीवन, उच्च विचारों को स्वतः ही प्रकट करता है। वास्तव में सही आत्म पथ यही है।

—भोपालगढ़ (राज०)

हीरे-मोती

☐ कल्पना आंचलिया

स्वीडन की राजकुमारी यूजीन ने अपने हीरे-मोती के आभूषण बेचकर एक धर्मार्थ औषधालय खुलवाया था। प्रतिदिन रोगियों की सेवा-शुश्रूषा करने वह स्वयं भी वहां जाया करती थीं। उसकी दयालुता पर मुग्ध होकर एक दिन एक रोगी की आंखों से आंसू टपकने लगे। राजकुमारी बोलीं—"अपने हीरे-मोती मुझे आज वापस मिल गये।"

११६, देवाली, उदयपुर-३१३ ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमर्श :

आन्तरिक प्रदूषण पर ध्यान दिया जाय

☐ स्वामी ओउम्प्रेमी चतुर्थाश्रयी

बहुत शोर है इन दिनों प्रदूषण की चर्चा का। इसी दशक में यह चर्चा चली है, बढ़ी है। भारत में तो नक्काल वृत्ति है ही, सो जब विदेशों में यह चर्चा शुरू हुई तो यहाँ भी नकल होने लगी परन्तु उस प्रदूषण की तरफ कोई ध्यान किसी भी स्तर पर नहीं दिया जा रहा जो (भारतीय विशेषतया, विश्वजनीन सामान्यतया) मानव मात्र की समस्या है।

वस्तुतः हमारे **मनोमस्तिष्क** दूषित हो गये हैं और उसका एकमात्र कारण यह है कि हमने **आत्म-निरीक्षण** सर्वथा छोड़ दिया है। सच तो यह है कि **हमें अपने आपका परिचय ही नहीं है, फिर निरीक्षण-परीक्षण की बात ही कैसे उठे ?**

इसलिये **'आत्मानं विद्धि'** वाले उपनिषद्-वचन को महत्त्व देना होगा और शीघ्रातिशीघ्र इस दिशा में **वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों स्तरों** पर कर्मशील बनना होगा, अन्योन्य के लिये प्रेरणादायक भी रहना पड़ेगा। जब **आन्तरिक प्रदूषण मिटेगा तभी बाह्य प्रदूषण को दूर करने की कोई सार्थकता है,** वर्ना यह तो ऐसा ही है जैसे पागलपन के दौरे वाले नारी-नरों को एक जगह इकट्ठा कर दिया जाय और उस भवन को बाहर से खूब सजाया जाय, उसके आसपास बगीचा लगवाया जाय तथा अन्यान्य प्रकारों से उस भवन के पर्यावरण को प्रदूषित होने से पूर्णतः बचाया जाय परन्तु उन **पागल महिला पुरुषों की तरफ कोई ध्यान न दिया जाय,** केवल रोटी कपड़ा उन्हें दे दिया जाय और उनके पागलपन को हटाने मिटाने का तनिक भी यत्न न किया जाय !!!

गोस्वामी तुलसीदासजी ने सही लिखा है कि **'सब भूषण भूषित नर नारी। वसन हीन नहिं सोह सुरारी ।।' आत्मबोध वास्तव में वह वसन (वस्त्र) है,** जिसके बिना, मानव सर्वथा नंगा है, भले ही बाह्योपकरण (मकान, रोटी एवं अन्य सुख साधन प्रभृति) रूपी भूषणों से जन-जीवन को खूब सजाया-सँवारा जाय।

क्या इस दिशा में कोई विचार उभरेगा इस अभागे देश में या यूँ ही बाहरी प्रदूषण मिटाने की चर्चा का शोर होता रहेगा ?

—गुरुकुल, होशंगाबाद (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

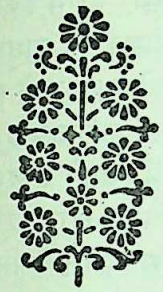

चतुर्थ प्रवास

ज्वलनाचार्य और क्षमा विजय [१०]

☐ अनुवादक : श्री लालचन्द्र जैन

[गतांक से आगे]

थोड़ी देर बाद आचार्य की आज्ञा से एक गृहस्थ ने खड़े होकर कहा, "उचितचन्द्र किसका नाम है ? यदि वह उपस्थित हो तो आचार्य के पास आवे।" यह सुनकर उचितचन्द्र खड़ा होकर आचार्य के पास आया और वन्दना कर खड़ा हो गया। तभी स्वतंत्र विजय नामक मुनि आचार्य के पास आये और बोले, "आचार्यजी ! मैं आपका गुरु भाई हूँ। बहुत वर्षों से इस शहर में मेरे चातुर्मास हो रहे हैं। मेरे साथ सात, आठ साधु नियमित रहते हैं। हमारा निवास-स्थान उपाश्रय यहाँ से थोड़ी दूर है। वह उपाश्रय मेरे उपदेश से बनवाया गया है। मेरी इच्छानुसार उस उपाश्रय की रचना कराई गई है। उसमें साधुओं के अनुकूल व्यवस्था की गई है। उसके भवन की कारीगरी बहुत ही उच्च कोटि की कराई गई है। उसकी आकृति देव विमान के समान सुन्दर है। उसमें विविध प्रकार के रंगों मे उच्च कोटि की चित्रकारी कराई गई है। मैंने स्वयं अपने परिश्रम से श्रावकों को दबाकर उसमें मोटी रकम खर्च करवाई है। वहाँ साधुओं के सोने बैठने के लिये मजबूत और कोमल तख्ते, पुस्तकें और अन्य उपकरण रखने के लिये बारीक खुदाई वाली अल्मारियें और कपड़े धोने के लिये ताँबे की बड़ी-बड़ी परातें तथा उच्च कोटि के साबुन रखने के पात्र आदि की व्यवस्था करवाई है। इस उपाश्रय के सुख के कारण ही मैं इस शहर में ही रहता हूँ तथा अपने अधिकांश चातुर्मास यहीं करता हूँ। वह उपाश्रय ऐसी सुन्दर बस्ती में बसा हुआ है कि उसके आसपास धनवान् श्रावकों की काफी बस्ती है और वहाँ रहने वाले मुनियों को विविध प्रकार के आहार पानी का अच्छा संयोग मिल जाता है तथा साधुओं की सेवा भक्ति के लिये अनेक श्रावक-श्राविकाएँ वहाँ आसानी से आ सकती हैं। इससे साधुओं की इच्छा पूर्ण होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है। वहाँ रहने वाले गृहस्थ श्रावकों के बच्चे-बच्चियों को धार्मिक शिक्षण देने के लिये एक पाठशाला भी मैंने वहाँ खोल रखी है। इसके अतिरिक्त दोपहर में कितनी ही सधवा और विधवा श्राविकाओं को पढ़ाने के लिये भी मैं इकट्ठी करता हूँ। मेरे उपदेश से बनवाये गये इस उपाश्रय में अपने संघाड़े के साधुओं को ही रहना चाहिये, अन्य किसी भी संघाड़े के साधुओं को वहाँ रहने का अधिकार नहीं है। फिर भी इस वर्ष के चातुर्मास के लिये श्रावक उचितचन्द्र ने अन्य संघाड़े के साधुओं को निमंत्रण दे दिया था। इस वर्ष मैं अपने साधुओं के साथ सिद्धगिरि पर चातुर्मास करने गया था। तब वह उपाश्रय खाली होने से, उसका लाभ उठाने के लिये, मेरे उस नये उपाश्रय में चातुर्मास करने के लिये उचितचन्द्र ने अन्य संघाड़े के साधुओं को निमंत्रण दे दिया। उसका यह कार्य अनुचित है। यद्यपि हमारे भय से वे साधु यहाँ चातुर्मास करने नहीं आये, यह अच्छा हुआ, परन्तु उचितचन्द्र ने अनुचित काम किया है, अतः सभा को इसे अपराधी मानकर दंड देना चाहिये। मुझे आशा है कि परम पूज्य आचार्य महाराज, वृद्ध पन्यासजी और संघ के कार्यकर्ता इस विषय पर अवश्य योग्य विचार करेंगे।"

मुनि स्वतंत्र विजय का आरोप सुनकर धर्म के प्रति निष्ठा वाले मुनि और श्रावक तो विचार में पड़ गये तथा आश्चर्य चकित हो गये, परन्तु धर्म और आचार को नहीं जानने वाले साधु और गृहस्थ आरोपी के पक्ष में हो गये।

थोड़ी देर तक कोई मुनि या गृहस्थ नहीं बोला, तब गर्वालंकृत और ममत्व विभूषित आचार्य अपने स्वरूप को भूलकर बोल पड़े, "श्रावक उचितचन्द्र ! तुमने बड़ा अपराध किया है। हमारे साधुओं के उपदेश से निर्मित उपाश्रय में अन्य संघाड़े के मुनियों को चातुर्मास करने के लिये क्यों आमंत्रित किया ? क्या तूँ नहीं जानता कि हमारा संघाड़ा कितना शक्तिशाली है ? सारे भारत में मायागणि विजय का संघाड़ा बड़ा माना जाता है। गणि मायाविजय हमारे दादा गुरु हैं। उनके संघाड़े में ८८ साधु हैं, जिनमें कई पन्यास, प्रवर्तक, गणि आदि पदवियों को धारण करने वाले और विद्वान् हैं, उनका आचार्य मैं हूँ। अन्य संघाड़े में भी पदवीधारी मुनि हो सकते हैं, पर वे हमारे पदवीधारी मुनियों जैसे प्रतिष्ठित नहीं हैं। हमारे साधु गुजरात, कच्छ, काठियावाड़ और मध्य भारत तक पहुँचे हुए हैं। जहाँ हमारा एक छोटा साधु भी होगा, वहाँ अन्य संघाड़े के पदवीधारी साधु भी नहीं टिक सकेंगे। हमारे साधुओं का गौरव इतना अधिक है कि बड़े-बड़े नगरों के धनवान् श्रावक हमारे लिये लाखों रुपये खर्च कर देते हैं। हमारे साधुओं का एक बड़ा फंड है, जिसमें से मोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रकम प्रतिवर्ष खर्च होती है। सौ-सौ रुपये मासिक वाले विद्वान् ब्राह्मण शास्त्री हमारे साधुओं के अभ्यास के लिये नियुक्त हैं। हमारी पुस्तकें लिखने के लिये अधिक वेतन वाले मारवाड़ी लेखक नियुक्त हैं जो हजारों रुपये लेते हैं। हमारे विहार के समय सैंकड़ों गृहस्थ श्रावक संघ लेकर हमारे साथ चलते हैं। हमारा बोझ उठाने के लिये ग्रामानुग्राम मजदूर नियुक्त किये जाते हैं। उचितचन्द्र! तूँ अभी हमारे संघाड़े का प्रभाव नहीं जानता। अधिक क्या बताऊँ, हमारे संघाड़े का मासिक डाक खर्च ही इतना अधिक है कि दूसरे संघाड़ों के सारे साधुओं के वार्षिक खर्च की तुलना में भी वह अधिक है। जिस नगर में हमारा चातुर्मास होता है उस नगर के पोस्ट ऑफिस में इतना अधिक काम बढ़ जाता है कि वहाँ के ऑफिसर को दो-चार अधिक कर्मचारी नियुक्त करने पड़ते हैं।"

इसी समय आचार्य के बगल में बैठे हुए शंखविजय ने खड़े होकर कहा, "सूरिजी! एक बात तो आपने बताई ही नहीं। एक बार हम काठियावाड़ के किसी नगर में दो माह तक रहे थे, तब लोग कहा करते थे कि गणिमाया विजय के संघाड़े के साधु जिस गाँव में रहते हैं वहाँ दूध, दही, घी, शक्कर आदि वस्तुएँ महँगी हो जाती हैं क्योंकि भक्त श्रावक हमें ये पौष्टिक पदार्थ आवश्यकता से अधिक देते हैं। आचार्यजी! यह तो खास बात है, इसे तो आपने बताया ही नहीं।"

आचार्य—"मूर्ख! यह बात सत्य है तो भी इस सभा में ऐसी बात नहीं कही जाती।"

यह सुनकर स्वधर्म निष्ठ मुनि और श्रावक तो चिंतित हुए, पर अल्प बुद्धि मुनि और गृहस्थ प्रसन्न होने लगे।

आचार्य ने अपनी बात आगे बढ़ाई, "श्रावक उचितचन्द्र! हमारे संघाड़े के प्रभाव को सुनकर तुमने जान लिया कि अन्य संघाड़े के साधुओं को आमंत्रित कर तुमने बड़ी भारी भूल की है। अतः सिद्ध होता है कि तुम अपराधी हो। सभा को विचार कर तुम्हें इस अपराध का उचित दंड देना चाहिये।"

आचार्य का निर्णय सुनकर धर्माचरण को सत्य रूप से धारण करने वाले पन्यासजी एवं अन्य प्रामाणिक गृहस्थों के हृदय चिंतातुर हो गये। थोड़ी देर तक कोई कुछ भी नहीं बोला, तब पवित्र हृदय वाले उचितचन्द्र ने विनय से कहा, "महाराज! आप आचार्य होकर ऐसी अधर्म की बात करते हैं, मुझे बहुत अफसोस है। आप जैसे पदवीधारी और विद्वान् मुनि के समक्ष शास्त्रों का उद्धरण देना यद्यपि मुझे अच्छा नहीं लगता, तथापि मुझ पर लगाया गया झूठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोप भी मेरे से सहन नहीं होता, अतः मुझे कहने को मजबूर होना पड़ रहा है। फिर भी यदि मुझसे कोई अविनय हो जाय तो मैं पहले से ही क्षमा माँग लेता हूँ। सूरिजी ! उपाश्रय किसी भी साधु की सत्ता-भूति नहीं हो सकती, यह तो जैन धर्म की सार्वजनिक सम्पत्ति है। किसी भी गच्छ के साधु वहाँ ठहर सकते हैं, फिर संघाड़े की तो बात ही क्या ? यदि उसमें किसी गच्छ के साधु पहले से ही रहते हों और दूसरों के रहने योग्य स्थान ही न हो तो बात दूसरी है, पर यदि उपाश्रय खाली हो तो उसमें किसी भी विद्वान् मुनि को चातुर्मास का निमंत्रण देने में क्या बाधा है ? जब मुनि भी उपाश्रय जैसे धार्मिक और सार्वजनिक स्थान पर अपना आधिपत्य थोपें तब उनमें और गृहस्थों में फर्क ही क्या रह गया है ? फिर तो आपको परिग्रह और ममत्व का कलंक लगेगा ही और गृहवास के मुख्य दोष भी लगेंगे। फिर आप अनगार (गृह विहीन) कहाँ रहे ? मुनि स्वतंत्र विजय ने उपाश्रय को निर्मित कराने का जो वर्णन किया है, उससे तो कितने ही आरम्भ-दोष उन्हें लग चुके हैं। निष्परिग्रही और अनारंभी जैन मुनि जब अपने रहने के लिये आरम्भ के काम करवावें तो फिर उनमें साधुत्व ही कैसे रहेगा ? महाराज ! इस विषय में आपके दिल में अधिक कड़वाहट पैदा करना नहीं चाहता, तथापि विश्व में विमलता से विराजित वीर शासन की निंदा न हो अतः मुझे स्पष्ट कहना पड़ता है कि मुनि स्वतंत्र विजय का व्यवहार वीर शासन के लिये शोभनीय नहीं है और ऐसा गलत व्यवहार करने वाले मुनि को आप जैसे विद्वान् आचार्य उत्तेजित करें यह आपके योग्य नहीं है। तीर्थ रूपी संघ की सभा के मध्य मुनि की निंदा करना मुझे अच्छा नहीं लगता, तथापि सामान्य तौर पर हमारे धर्म की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाने वाले कुछ साधुओं के व्यवहार के सम्बन्ध में कहना मेरा कर्तव्य हो जाता है। कंचन कामिनी के त्यागी और परिग्रह के एक अंश से भी दूर रहने वाले आर्हत मुनि जब परिग्रह का ममत्व रखें, गच्छ के पक्षपात से ईर्ष्या धारण करें और गृहस्थों के विशेष संसर्ग में आवें, यह वीर शासन के प्रभाव को खंडित करने वाला है। क्षण-क्षण में अपने आत्म स्वरूप का विचार करने वाले, स्त्री की प्रतिमा वाले स्थान से भी दूर रहने वाले, विगय रहित लूखे और नीरस आहार के लेने वाले जैन मुनि यदि इससे उल्टा व्यवहार करें, तो कैसे चुप-चाप देखा जा सकता है ? नूतन रंगों से सुशोभित उपाश्रय पर ममत्व रखकर उसमें सर्वदा निवास करने वाले, आस-पास रहने वाले गृहस्थों से विशेष परिचय रखने वाले, जवान विधवा श्राविकाओं को पढ़ाने के बहाने से इकट्ठी कर रखने वाले जैन साधुओं के व्यवहार की उपेक्षा, धर्मनिष्ठ और वीरशासन के प्रति लगन रखने वाले गृहस्थ कैसे सहन कर सकते हैं ? आचार्यजी ! न तो मैं आपको आज्ञा ही दे सकता हूँ, न आग्रह ही कर सकता हूँ, पर हमारे प्रतिष्ठित वीर-शासन की निंदा न हो इसलिये विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि आपको आचार्य,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संघ के नायक और अनुशासक होकर मुनियों के ऐसे व्यवहार की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। यदि आपके जैसे समर्थ पुरुष भी इसकी उपेक्षा करेंगे तो आर्हत धर्म और उसके चारित्र पक्ष का नाश हो जायगा।

"सूरिराज ! यदि आप मेरी विनती को ध्यान में रखकर और संघाड़ा या गच्छ के पक्षपात से दूर रहकर विचार करेंगे, तो आपको विश्वास हो जायगा कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है। इसके बाद तो आपको जैसा उचित लगे वैसा करने का अधिकार है।"

उचितचन्द्र के उपरोक्त कथन से धार्मिक और प्रामाणिक श्रोताओं को प्रसन्नता हुई, पर आग्रही आचार्य का हृदय थोड़ा भी द्रवित नहीं हुआ, वे उच्च स्वर से बोले, "अरे उचितचन्द्र ! तुमने विनय का त्याग कर मेरे साथ व्यवहार किया है और हमारे संघाड़े के एक प्रतिष्ठित मुनि की निंदा की है, अतः तूँ विशेष दंड-पात्र हो गया है। फिर भी मेरे दयालु हृदय में तेरे प्रति दया उत्पन्न हो रही है, अतः तुझे हमेशा के लिये संघ से बहिष्कृत न कर पाँच वर्ष के लिये संघ से बहिष्कृत करने का दंड देने की मेरी इच्छा है, तथापि इस सभा में उपस्थित मुनियों और गृहस्थों की राय जानने के बाद तेरा दंड घोषित करूँगा।"

इतना कहकर आचार्य वृद्ध पन्यासजी के सामने देखने लगे, फिर अपनी प्रचंड दृष्टि संघ के कुछ प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं की तरफ घुमाई। थोड़ी देर तक जब किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया तब पन्यासजी को उद्देश्य कर कहा, "इस अपराधी उचितचन्द्र को दंड देने में आपकी क्या राय है ?"

न्यायवृत्ति-विलासी और समदृष्टि-अलंकृत पन्यासजी ने मधुर एवं सत्य-पूर्ण निर्मल वाणी से कहा, "आचार्यजी ! यदि आपको मेरी बात पर श्रद्धा हो और आपके हृदय में न्याय का पक्ष लेने की इच्छा हो, तो मैं मेरी राय प्रकट करूँ। यदि आपकी श्रद्धा और इच्छा न हो तो मेरा राय प्रकट करना व्यर्थ है। तथापि एक निरपराधी को अपराधी बनाया जाय, यह अनुचित होगा, इसीलिये मैं अपनी राय प्रकट करता हूँ। उचितचन्द्र श्रावक के बाह्य और अंतरंग स्वरूप को मैं भली प्रकार जानता हूँ। कुछ प्रसंगों में यह गृहस्थ अपने शुद्ध व्यवहार के लिये पहले भी विजयी हो चुका है, यह मेरा यथार्थ अनुभव है। इस सभा के समक्ष भी उसने जो धर्म के स्वरूप और सत्यांश को प्रकाशित किया है, उस पर से मुझे विश्वास है कि वह सर्वथा निरपराधी और निर्दोष है। मुनि स्वतंत्र विजय के व्यवहार की टीका करना मुझे अच्छा नहीं लगता, पर मुनि धर्म के लिये और उसकी आत्मा के हित के लिये मुझे कुछ शब्द कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेंगे। यद्यपि इन थोड़े शब्दों से भी मुझे कर्मबन्ध का भय तो है ही, पर लाभ-हानि का विचार कर मेरी यह कहने की हिम्मत हुई हैं। मुनि स्वतंत्र विजय उपाश्रय के लिये इतना ममत्व क्यों रखते हैं ? उस ममत्व के कारण ही वे अन्य दोषों के भागी भी बन रहे हैं। इस प्रसंग पर मुझे आचारांग सूत्र के कुछ महा-वाक्य याद आ रहे हैं, जिसे कहने की मुझे अनिच्छापूर्वक भी प्रेरणा हो रही है। आचार्यजी ! आपने तो आचारांग सूत्र पूरा पढ़ा है अतः आपको विशेष आश्चर्य नहीं होना चाहिये, तब भी उस सूत्र के महावाक्य इतने मनोहर और बोधक हैं कि उन्हें बार-बार पढ़ने या सुनने से नया-नया असर होता है।"

इसके पश्चात् पन्यासजी ने स्वतंत्र विजय मुनि की ओर अपनी दृष्टि घुमाते हुए कहा, "मुनि ! आचारांग सूत्र के पाँचवें लोकसार अध्ययन में जो महावाक्य लिखे हुए हैं, उसका हम मुनियों को बार-बार मनन करना चाहिये। "जो इस संसार में प्रयोजन या निष्प्रयोजन आरम्भ के कार्यकर जीव हिंसा करते हैं, वे भविष्य में उन्हीं जीवों की गतियों में जन्म लेते हैं। ऐसे अतत्त्वदर्शी लोग विषय-सुखों को नहीं छोड़ सकते, जिससे वे जन्म-मरण की परम्परा से मुक्त नहीं हो सकते, अतः वे सदा मोक्ष मार्ग से या सुख से दूर रहते हैं। वे न तो विषय सुख में ही रह पाते हैं और न उसका त्याग ही कर पाते हैं।"

"तत्त्वदर्शी लोग जानते हैं कि ऐसे अज्ञानियों का आयुष्य दूर्वा की अणि पर स्थित जल-कण के समान अस्थिर है जो जरा से हवा के झोंके से समाप्त हो जाता है। फिर भी मूर्ख लोग क्रूर पाप करते हैं, फिर जब उस पाप का फल उदय में आता है तब पागल बनकर विपरीत मार्ग को ग्रहण करते हैं, अतः मोह स्वरूप गर्भ और मरण आदि दुःखों में रहते हुए बार-बार दुःख भोगते रहते हैं। जो संशय को जानते हैं, वे संसार को भी जानते हैं, जो संशय को नहीं जानते वे संसार को भी नहीं जानते।"

"कुछ लोग विषयों में आसक्त रहकर नरक आदि गतियों में भटकते हैं। जो इस संसार में आरम्भ से जीवित रहते हैं, वे बारंबार मोहजाल में फँसते रहते हैं।"

"मुनि स्वतंत्र विजय ! इस सूत्र के महावाक्यों पर चिंतन कर उसी के अनुसार हम मुनियों को प्रवृत्ति करनी चाहिये। हमने गृहस्थाश्रम का त्याग कर संयम को ग्रहण किया और अब यदि हम फिर से गृहस्थों जैसा व्यवहार करें तो हमारी बहुत ही अधम दशा होगी। आपने पासस्थ आदि के नाम तो सुने ही होंगे, उनकी कैसी दुर्दशा हुई यह तो आप जानते ही होंगे। जो लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयम लेकर भी विषयों में आसक्त होते हैं, वे मूर्ख कहलाते हैं। इस विषय में आचारांग सूत्र का निम्न कथन सर्वदा अपने हृदय में स्थापित करें :—

'कुछ पार्श्वस्थ आदि भी गृहस्थों के साथ व्यवहार करते हुए सावद्य प्रवृत्ति में संलग्न हो दुःखी होते हैं। संयम लेकर भी वे अज्ञानी जीव विषय तृष्णा में आसक्त होकर अशरण को ही शरण मानते हुए पाप पंक में डूबे रहते हैं।'

"प्रत्येक मुनि को उपरोक्त वाक्यों पर चिंतन करना चाहिये। वर्तमान काल के प्रभाव से मुनि यह बात भूल गये हैं। कुछ मुनि विद्वान् होते हुए भी कषायों के वशीभूत होकर चारित्र पालन में छल-कपट करते हैं और मुनिधर्म के आडम्बर से बेचारे गरीब जीवों को ठगते हैं, पर वे नहीं जानते कि इस आडम्बर से वे अपनी आत्मा को ही ठग रहे हैं। चाहे वे भारी विद्वान् हों, पर उनकी प्रवृत्ति तो साफ बताती है कि वे धर्म को नहीं जानते। इस विषय में सूत्रकार लिखते हैं कि :—

'इस मनुष्य लोक में कुछ मुनि एकल विहारी होकर विचरण करते हैं। वे बहुत क्रोधी, मानी, मायावी, लोभी, पापी, ढोंगी, धूर्त, दुष्ट-अध्यवसायी, हिंसक और कुकर्मी होते हैं, फिर भी यह बकवास करते हैं कि 'मैंने धर्म के लिये अपने आपको समर्पित कर दिया है।' 'मुझे कोई पहचान न ले इस डर से वे अकेले घूमते हुए अज्ञान और प्रमाद से मूर्ख बनकर धर्म को कुछ भी नहीं समझते।'

"मुनि स्वतंत्र विजय ! इस सूत्र के वाक्य हमें कैसी उत्तम शिक्षा देते हैं ? फिर भी हम अपने कर्तव्य को नहीं समझते। उपाश्रय के आरम्भ के कारण आप क्यों बनते हैं ? आसपास रहने वाले गृहस्थों की सेवा भक्ति की प्रशंसा आप क्यों करते हैं ? मुनियों को न तो आहार आदि की प्रशंसा करनी चाहिये और न उसमें गृद्ध ही होना चाहिये। इस विषय में सूत्रकार क्या लिखते हैं, जरा विचार करें :—

'इस संसार में जो कोई भी निरारंभी रहना चाहते हैं, वे गृहस्थों से निर्दोष आहार आदि लेकर अनारंभी होकर रहते हैं। अतः हे मुनि ! तुम्हें सावद्य प्रवृत्ति से दूर रहकर कर्मों का क्षय करना चाहिये। यह अवसर बड़ी मुश्किल से मिला है, ऐसा समझ कर पवित्र संयम का पालन करना चाहिये। जिसे शरीर के पालन का अवसर समझ रखा है, उसे संयम पालन का अवसर समझना चाहिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तीर्थंकरों ने यह मार्ग बताया है। यह भी बताया है कि सभी जीवों को सुख दुःख अलग-अलग होता है, यह जानकर दीक्षा लेकर प्रमाद नहीं करना चाहिये। जैसे मनुष्यों के अभिप्राय भिन्न-भिन्न होते हैं, वैसे ही उनके सुख दुःख भी भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः मुनियों को किसी प्रकार की हिंसा नहीं करनी चाहिये, किसी प्रकार का झूठ नहीं बोलना चाहिये और सभी परिषहों को सहन करना चाहिये। ऐसी प्रवृत्ति करने वाले मुनि को ही शुद्ध चारित्रवान् कहा जाता है। जो मुनि पाप में प्रवृत्ति नहीं करते, उनके लिये तीर्थंकरों ने कहा है कि कभी वे किसी रोग से ग्रस्त हो जायँ तो उसे सहन करें क्योंकि यह शरीर तो देर अबेर से नष्ट होने वाला ही है। यह तो अनित्य, अशाश्वत, बढ़ने घटने वाला और नाशवान् है ही। हे मुनियो! इस शरीर के स्वरूप को समझ कर अवसर का विचार करें। जो पुरुष शरीर के स्वरूप को समझ कर अवसर का विचार कर सरस ज्ञान आदि में रमण करते हुए इस शरीर में आसक्त नहीं होता, ऐसा त्यागी पुरुष कभी अपने मार्ग से नहीं भटकता।' फिर परिग्रह के विषय में सूत्रकार लिखता है कि 'इस संसार में जिसके पास थोड़ा या अधिक, छोटा या बड़ा, सचित्त या अचित्त परिग्रह हो, उसे व्रती होने पर भी गृहस्थ के समान परिग्रही समझना चाहिये। परिग्रह ही नरक आदि महा भयानक फल देने वाला है, अतः परिग्रही लोगों का आचार भी ऐसा ही भयानक होता है, यह समझ कर परिग्रह से दूर रहना चाहिये।'

"उसी प्रसंग पर सूत्रकार पुनः लिखते हैं कि 'परिग्रह के संग का त्याग करने वाला मुनि ही भली-भाँति प्रतिबोधित होता है और उसी को भली प्रकार से ज्ञान आदि गुणों की प्राप्ति होती है, यह जानकर हे पुरुष! तुम उत्तम दृष्टि से प्रवृत्ति करो, क्योंकि निष्परिग्रही और उत्तम-दृष्टि वाले पुरुष में ही ब्रह्मचर्य रहता है।'

"मुनि स्वतंत्र विजय! इस पर से हम मुनियों को समझना चाहिये कि परिग्रह ही हमारे व्रतों को भंग कराने वाला है। ममत्व रूपी विषम विष के व्याप्त होते ही मुनि के चारित्र रूपी प्राण का नाश हो जाता है। जब कोई गृहस्थ चारित्र ग्रहण करने को तत्पर होता है, तब उसके हृदय में जो परिणाम होते हैं, उनको ममत्व रखने पर टिकाना मुश्किल हो जाता है। इस विषय में श्री वीर प्रभु द्वारा आचारांग सूत्र में निम्न बात कही गई है :—

'कुछ लोग पहले तो बड़े उत्साह से दीक्षा लेते हैं और बाद में पतित हो जाते हैं। कुछ लोग न पहले अधिक उत्साहित होते हैं न बाद में पतित होते हैं। वे न उत्थित ही हैं न पतित ही। श्री वीरप्रभु ने भली प्रकार जानकर ही इस बात को कहा है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुनि स्वतंत्र विजय ! इस वीरवाणी में जो कुछ शिक्षा दी गई है, वह समझने योग्य है। जो पहले उत्साहित होकर दीक्षा लेते हैं और बाद में पतित भी नहीं होते, उन्हें गणधर आदि उत्तम साधु समझना चाहिये। जो पहले उत्साहित होकर दीक्षा लेते हैं, किंतु बाद में पतित हो जाते हैं, उन्हें नन्दीषेण आदि समझना चाहिये। जो व्रत लेने में उत्साहित भी नहीं होते और पतित भी नहीं होते, उन्हें गृहस्थ श्रावक समझना चाहिये। आजकल कुछ पुरुष मुनियों के उपदेश और आग्रह से दीक्षा लेते हैं, किंतु उनमें से अधिकांश बाद में व्रत खंडित करने वाले निकलते हैं, इसका कारण यह है कि मुनि जो उपदेश देते हैं वह मनुष्यों का इस संसार से उद्धार करने की इच्छा से नहीं देते, पर अपने शिष्य परिवार को बढ़ाने की इच्छा से देते हैं। कुछ मुनि तो अधिकाधिक लोगों को दीक्षा देने में अपनी बड़ी प्रतिष्ठा समझते हैं, और उसी में अपना गौरव मानते हैं, परन्तु वस्तुतः यह मुनिधर्म की हीनता को प्रकट करने वाला है, क्योंकि ऐसी इच्छा से दीक्षा देने में पात्र-अपात्र का विचार नहीं किया जाता। इससे बाद में ऐसे साधु निकलते हैं, जो गुरु की और शासन की निंदा करवाते हैं। मुनि स्वतंत्रविजय ! इस विषय पर इस सभा के मध्य मुझे अधिक कहने में लज्जा महसूस होती है, तथापि हम साधुओं की जानकारी के लिये एक वास्तविक घटना को प्रकट करता हूँ। गत वर्ष मैं सिद्धगिरी की यात्रा पर गया था, वहाँ एक साधु मुझे वन्दना करने आया। वह पर्याय से छोटा था, अतः वन्दना कर मेरे सम्मुख बैठ गया। उस समय मेरे निकट कुछ साधु और गृहस्थ बैठे थे। थोड़ी देर बाद उस साधु ने मुझसे विनय पूर्वक कहा, "पन्यासजी ! इन साधुओं और गृहस्थों के जाने के बाद मुझे आपसे एक रहस्य की बात करनी है।" उसकी बात सुनकर गृहस्थ और साधु मेरे निकट से उठकर चले गये। जब वह अकेला रह गया, तब मैंने उससे पूछा, "कहिये आपको क्या बात कहनी है ?" वह थोड़ी देर कुछ नहीं बोला, उसके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी और वह गद्गद् हो गया। उसकी यह दशा देखकर मुझे दया आ गई, मेरे मन में आया कि यह अकेला साधु किसी दुःख से दुःखित होगा, अतः हो सके जितनी, उसकी सहायता करनी चाहिये। मैंने कोमलता से पूछा, "मुनि ! क्यों रोते हो ? आपका दुःख क्या है ? मुझे बताइये, मुझसे संभव होगा तो मैं आपका दुःख दूर करूँगा, साधु को साधु की यथाशक्ति सहायता करनी चाहिये।" (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

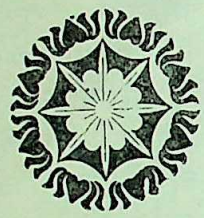

जब चील ने गगन में तिरंगा लहराया

□ श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन

महाश्रमण महावीर के अनन्य उपासक, शीर्षक में आबद्ध घटना के नायक श्री लालचंदजी चोरड़िया एडवोकेट भानपुरा (म. प्र.) के जीवन में सदैव विविधताएं अनायास ही जुड़ती रही हैं—

भारतीय-स्वतन्त्रता-संग्राम के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित उनके जीवन की यह घटना, उस बीते अतीत की एक अविस्मरणीय कहानी है जब कि आजादी के परवाने सिर पर कफन बाँधे, विदेशी हुकूमत को मुल्क वदर करने को गली-सड़कों और चौराहों पर उतर आये थे।

घटना सन् १९४२ के आस-पास की है जबकि देश का हर गली, कोना "अंग्रेजो भारत छोड़ो!" के नारों से गुंजित था। भानपुरा (म० प्र०) प्रजामंडल दफ्तर होलकर शाही के लिए, सिर दर्द बना हुआ था। महाविद्यालय से नाते रिश्ते तोड़, स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़ने वाले कर्मठ कांग्रेसी और वर्तमान में स्वतन्त्रता सैनानी श्री लालचंदजी, साम्राज्यशाही सत्ता की आँख की किर-किरी बने हुये थे—उनके प्रति सत्ता के तेवर इतने बदले हुए थे कि उनके पिता श्री मन्नालालजी चोरड़िया को मजबूरन उनसे साँसारिक नाते-रिश्ते तोड़, अपनी विरासत से पृथक् करते, राजकीय गजट मध्य भारत में, विज्ञप्ति शाया करानी पड़ी थी कि उनका पुत्र से कोई सम्बन्ध नहीं, उन्हें चल-अचल सम्पत्ति के अधिकार से वंचित करके परिवार से पृथक् कर दिया है।

स्वतन्त्रता-सत्य एवं अहिंसा को समर्पित, सीमित आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के धनी, महाश्रमण के अपरिग्रह सिद्धान्त में अटूट आस्था रखने वाले श्री चौरड़ियाजी के लिए, भौतिकता में आबद्ध यह विज्ञप्ति उन्हें अपने कर्तव्य-पथ से नहीं डिगा सकी। उल्टे उनकी राजनैतिक गतिविधियाँ उग्र से उस समय उग्रतम हो गईं जबकि उन्होंने आशियाने की बुर्ज पर तिरंगा फहरा दिया। तब उन्हें क्या पता था कि अपरोक्ष रूप से, प्रकृति उनके देश-प्रेम, आस्था और निष्ठा की अग्नि परीक्षा ले रही है और इसी परीक्षा के साये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति उनकी उग्रतम भावना को, उनके उस प्रिय तिरंगे, इतिहास की उच्चतम भौगोलिक ऊँचाई पर पहुँचाते हुए, उस साम्राज्यशाही विदेशी सत्ता की नौकरशाही के कदमों के नीचे की भूमि खिसका देगी । ज्योंही आशियाने पर तिरंगा फहराने की खबर डी. आई. जी. गरोठ को मिली, उन्होंने बुर्ज पर लहराते उस तिरंगे को अपने हृदय पर एक नासूर तसव्वुर किया । बस फिर क्या था, जीप पर यूनियन जेक फहराते हुए, मय अपने खाकी वर्दीधारी लवाजमे के साथ जीप से भानपुरा आ धमके और चोरड़ियाजी के आशियाने की नाकाबंदी कर तलाशी ली—प्रजामंडल—साहित्य जब्त कर पंचनामा बनाकर गवाही गवाहान कराकर जनाब डी. आई. जी. ने सत्ता के स्वर में कड़कते हुए चोरड़ियाजी को छत पर लहराते हुए तिरंगे को उतारने का हुक्म सादिर किया तो चोरड़ियाजी ने यह कहते हुए कि—

"एक गैर मजाज हुकूमत के इस गैर कानूनी हुक्म की तामील करने में मैं खुद को मजबूर पाता हूँ ।"

उन्होंने तामील हुक्म से इन्कार कर दिया । बस फिर क्या था ? गम और गुस्से में चोरड़ियाजी को लाल-पीली आँखें बताते, अपने बिरतानियाईकट बूंटों की नालों को जोर-जोर से बजाते वे मय अपने लवाजमे के छत पर पहुँचने को जीने पर चढ़े और जब छत पर पहुँचने को मुश्किल से २-३ सीढ़ीयें बाकी थी कि तभी आसमान को चीरती एक चील तिरंगे की तरफ झपटी और तिरंगे को अपने पंजे में दबाती दूर आकाश में उड़ गई । मारे शर्म के पसीना-पसीना हुए डी. आई. जी. स्थिर मुद्रा में, व हालत अटेन्शन, आसमान में लहराते उस तिरंगे को, बिना पलक झपकाये ऐसे देखते रहे मानो वे तिरंगे को मौन–सलामी पेश कर रहे हों और जब चील और तिरंगा आंखों से ओझल हो गये तो अपना गुस्सा अपने ही लवाजमे के उन बेगुनाह मातहत सिपाहियों पर उतारते उन्होंने कड़क कर कहा—"कमबख्तो ! देखते क्या हो, उतारो इस बांस को और ज़ब्त करो वजह सबूत में ।"

तामील हुक्म में हड़बड़ाते सिपाहियों ने बांस उतारा, उसका पंचनामा बनाया और गवाही गवाहान कराये । डी. आई. जी. ने बांस के साथ ही बस्ता कागजात प्रजामंडल जीप में रखाये । दोनों पंचनामों को बतौर अहम दस्तावेज संभाल कर अपने मनीबेग में रक्खे और अपमान का घूंट पीते हुए मारे शर्म के नीची नजरें किये, जिधर से आये थे तेजी से उधर ही चल दिये ।

तिरंगा जब्त न हो पाने से डी. आई. जी. को जहां अपनी मुहीम में भारी पराजय का सामना करना पड़ा वहीं उस सशक्त सत्ता की कि जिसके साम्राज्य में तब, जब कि कभी सूर्य अस्त न होता था, उस सत्ता की नौकरशाही की यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शदीद शिकिस्त चोरड़ीयाजी के जीवन के लिए एक वरदान बन गई। जन-जन ने अपना सारा प्यार उन पर समर्पित कर दिया। फलस्वरूप असीम जन-स्नेह ने उनके जीवन को एक नया मोड़ दिया। देश स्वतंत्र हुआ तो भारत की स्वतन्त्र-सार्वभौम सत्ता ने उनका स्वतन्त्रता सैनानी के नाते सम्मान किया। जन-जन के असीम प्यार और सत्ता के सत्कार ने उन्हें जन-सेवक बना दिया। सदैव से गांधीवादी विचारक श्री चोरड़ियाजी कथनी में ही नहीं आचरण में भी अपरिग्रही हैं। उनकी अपनी आवश्यकताएं नगण्य हैं—परिवार स्वयं में हर दृष्टि से आत्म-निर्भर है। बस वे अपना अधिकांश समय जन-सेवी कार्यों में लगाते हैं। कहां कौन भूखा है–कौन प्यासा है–किसके पास लाज ढाकने को वस्त्र नहीं हैं–कौनसा मासूम मुन्ना अर्थाभाव से पढ़ नहीं पा रहा है—कौन सशक्त किसी अक्षम व्यक्ति का शोषण तो नहीं कर रहा है? ये हैं कुछ बिन्दु जिनके इर्द-गिर्द उनका मानस घूमता रहता है। कुछ खुद ने दिया–कुछ किसी से दिलाया–और कुछ के लिए शासन को लिख दिया। इस तरह टुकड़े-टुकड़े वे सबके अभावों को सींते रहते हैं और इसी जीवन-पद्धति में जीवन जीते, जन-जन में जितनी खुशी संभव हो, वे बिना भेदभाव बांटते सही अर्थों में असीम आत्मिक आनन्द की अनुभूति कर रहे हैं।

कामना है, भावना है, वे दीर्घायु बनें और उनके जीवन के साये सदैव से पीड़ित, प्रताड़ित एवं उपेक्षित मानवता को सदैव संबल मिलता रहे।

—एडवोकेट, भवानीमंडी (राज.)

जर्मन बोधकथा :

भाई-बहन का मिलन

☐ **कल्पना आंचलिया**

परमात्मा ने एक दिन गोठ का आयोजन किया और उसमें समस्त गुणों को निमन्त्रित किया। खूब खाना-पीना, आमोद-प्रमोद हुआ। सब गुण बड़े प्रेम से आपस में मिले और घुल-घुलकर बातें करते रहे। लेकिन परमात्मा ने देखा कि दो गुणों ने न आपस में अभिवादन-प्रत्याभिवादन किया, और न उनमें किसी प्रकार को बात-चीत हुई। परमात्मा ने उन दोनों को अपने पास बुला भेजा और उनका परस्पर परिचय कराया—"बेटी कृतज्ञता! इससे मिलो, यह तुम्हारा सगा भाई परोपकार है, और परोपकार! यह है तुम्हारी सगी बहन कृतज्ञता!" भाई-बहन विस्मय और हर्ष से एक-दूसरे को देखते रह गए, फिर गले मिले। सृष्टि की रचना के बाद यह उनकी पहली मुलाकात थी।

—११६, देवाली, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Place of Ahimsa in Religions of the World and its Relationship with Vegetarianism*

☐ **Satish Kumar Jain**
Secretary General
Ahimsa International

The concept of Ahimsa is not new. Even in Upanishads, Bhagwat Puran and holy scriptures of other religions its importance has been acknowledged. In Pranagnihotri Upanishad, Smriti (memory) Daya (compassion), Shanti (peace) and Ahimsa (non-violence) have been mentioned as supplement in absence of the wife of the person who holds the Pranagnihotri Yajna. In Bhagwat Purana, Ahimsa has been counted one among the 18 measures which help in attaining salvation. Even in some other Puranas Ahimsa has been narrated as a great virtue of man. According to Maharishi Vyas, author of Puranas, Ahimsa stands on a higher footing even as compared to Dharma and Artha as it accommodates all religions in it. Ahimsa is one among the great virtues viz. truth, charity and self-restraint. Among the six schools of philosophical thought, which developed in the post Upanishad period the three viz. Sankhya, Yoga and Mimamsa do not approve of killing or making sacrifices of living beings in Yajnas.

Even though Mahatma Buddha approved of accepting non-vegetarian food from householders, if not deliberately cooked for the Bhikshus (monks) but he greatly condemned injury of any kind to the living beings.

---

*Paper read by him at the International Jain Conference held at London on 1st and 2nd October, 1983.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The propounder of Parsi religion, Saint Zerthustra, who is believed to have been born during 10th century and 6th century B.C., has strongly stressed in the holy scripture 'Zend Avesta' that to make enemy as friend is one among the three prime duties of man. It is obviously based on the concept of Ahimsa. The 6th commandment among the Ten Commandments propounded by Prophet Mozes, the propounder of Jew religion, says 'Do not kill any one'. Christ, who gave new dimensions to the contemporary religions and started the Christian religion, very much condemned the doctrine of 'doing same for the same'. He preached 'love thy neighbour' and 'Love and Service of all living beings.'

Islam has also condemned violence or injury. In Guru Grantha Sahib as well violence has not been liked.

Ahimsa has been preached by our 24th Tirthankara Bhagwan Mahavir as a great religion 'Ahimsa Parmo Dharma', as it causes protection to all living beings. Ahimsa is a complete religion in itself. Ahimsa contains in it the virtues like forgiveness, tolerance and feeling of equality, etc. Generally it is one of those great ethical virtues which cause happiness in life and guide the persons to follow right path.

In its wider concept Ahimsa means non-injury. We discard not only physical violence of any kind but also injury of any kind to the living beings.

Violence or injury occurs in two ways i.e. by thought or determination (Bhava Himsa) and occurrence of Himsa—Dravya Himsa. In Jainism Himsa of both types has been condemned.

Non-violence or Non-injury (Ahimsa) actually means no living being should be got killed, killed, captured or mentally hurted.

There are two aspects of Ahimsa—Negative and Positive. Negative aspect means not to allow or commit violence in any form, and to prevent committance of violence. The negative aspect is

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

generally more known to the people. Its positive aspect includes compassion, to help, charity etc.

Violence occurs because of four mental vices viz. anger, pride, illusion and greed. It is, therefore, essential to control these mental vices in order that violence may not be committed.

Food and Ahimsa have close relationship. Ahimsa is necessarily requires taking of vegetarian food. The term vegetarian is derived from the Latin root "Vegetare" and was spoken for the first time in 1842 A.D. This means "one who abstains from the use as food of flesh, fish and fowl, with or without the addition of eggs and dairy produce. A vegetarian is a firm believer in abstinence from meat, fish, eggs etc. and lives wholly on vegetarian food.

The advocates of non-vegetarian food consider it nutritive because of high content of proteins. It is falsely believed that animal proteins alone supply all protein required for good health. Fruits, milk and its products, butter, dry fruits, vegetables and pulses contain enough protein and nutritive elements which help in the growth of good health. Vegetable proteins are higher in biological values than animal proteins.

Nature has divided the entire animal kingdom including human beings generally into three categories, Carnivora, Herbivora and Frugivora. The Carnivoras sustain themselves on flesh food. The elephant, bison, camel, horse, buffalow, cow, etc. are herbivora animals which live upon grass or herbivorus vegetation, leaves of trees etc. The strength and power of some of the above animals is no less superior than the carnivora animals like lions, tigers and panthers. Frugivorus animals are those which sustain themselves on fruits or seeds.

By the very process of evolution man was not equipped physically to be carnivora being. The jaw construction of man is much different than that of the carnivora animals. By physical attributes man must be and is a vegetarian both for health and

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

longivity. Vegetarianism is better for man. Many nutritive elements required by the human body are available more easily and in a more assimilable form in vegetarian food than can be had from non-vegetarian food. There is no dearth of scientific and authoritative literature on the subject which substantiates and confirms this fact.

No person likes to eat the flesh of a dead animal. For non-vegetarian food killing of animals, therefore, becomes essential. Eating of flesh, fish or eggs involves violence and is, therefore, forbidden and condemned by believers of non-violence.

For temporary pleasures of palate and company the non-vegetarian food is generally taken. But what right do we have to kill the animals and fish for non-vegetarian food and disturb the universal balance by upsetting the harmony of life ? Can we have the right to destroy that which we cannot restore ?

Besides, the ecological and ethical reasons, the non-vegetarian food is also not much suited to the health in the long run. Non-vegetarian food causes more firmentation in the abdomen. It causes indulgence in liquors etc. Many of the present abdominal, cardiac and mental diseases are due to taking of non-vegetarian food and liquors and the immoral habits generated out of that. Non-vegetarian food tends to lead the man away from humanness. Gradually the finer sensibilities are vitiated and are imperceptibily but surely replaced by cruelty, brutality, inhumanity and ruthelessness which Ahimsa never permits to occur. Vegetarian food is therefore, in complete conformity with the ideals of non-violence.

Diet is a powerful factor in moulding temper and thinking. A well selected balanced vegetarian diet is in harmony with the laws of nature and in the words of Nathaniel Altman, helps to assure a healthy, vital and strong body which serves as the temple for our thoughts, feelings and spiritual essence.

—688, Baba Kharak Singh Marg, New Delhi-110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल कथामृत (२६)

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

फिर काहे को लूटमार करते हो ?

☐ कल्पना आंचलिया

धन की इच्छा के लिए पागल होकर कारूं ने लूट-पाट शुरू कर दी। उसके सैनिक छोटे-बड़े अमीर-गरीब, बच्चे-बूढ़े किसी को भी नहीं छोड़ते थे। जो सामने पड़ता उसी को लूट लेते। इस प्रकार कारूं ने लूटमार करके बहुत सा धन जमा कर लिया। हीरे-जवाहरात की उसकी भूख अभी मिटी नहीं थी। उसने छोटे-मोटे जमींदारों को भी लूटना शुरू कर दिया। सभी लोग उसके और उसके सैनिकों के अत्याचारों से दुःखी हो गये।

एक बार उसके जुल्मों से दुःखी होकर लोग गुरु नानक के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थना की—"नानकजी, हम लुट गये, बरबाद हो गये। कारूं ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। छोटी से छोटी चीज हाँसिल करने के लिए वह किसी की भी जान ले लेता है। पेड़ों पर उल्टा लटका देता है। नंगे बदन पर कोड़े लगवाता है और नंगा खड़ा करके ऊपर से घोड़े दौड़ा देता है।"

नानकदेव ने लोगों की बातें सुनीं और दुःख से कहा—"यह तो कारूं बहुत ही बुरा कर रहा है ?"

एक वृद्ध ने कहा—"नानकदेवजी, आप तो संत हैं। वह आपका आदर भी करता है। यदि आप उससे यह सब नहीं करने के लिए समझायेंगे, तो वह आपकी बात मान जायेगा। हम पर दया कीजिये और जाकर उसे समझाइये।"

लोगों का दुःख देखकर नानकदेव कारूं के पास पहुँचे। कारूं ने नानक देव का आदर सम्मान किया और पूछा—"महात्मा, मेरे लिए क्या हुक्म है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नानकदेव ने उसे एक सूई देते हुए कहा—"यह सूई लो और अपने पास रख लो। अगले जन्म में मैं आकर तुमसे वापस ले लूंगा।"

कारूं ने समझा कि नानकदेव उससे विनोद कर रहे हैं। उसने सूई लेली। नानकदेव ने फिर कहा—"खोना मत, मैं अगले जन्म में वापस लेने आऊंगा।"

नानकदेव की बात को गम्भीर समझकर कारूं घबराकर बोला—"यह आप कैसी बातें कर रहे हैं। अगले जन्म का क्या भरोसा और किसने देखा है अगला जन्म ?"

नानकदेव ने कहा—"तुमने जरूर ही देखा होगा अगला जन्म।"

कारूं बोला—"नहीं, मैंने नहीं देखा और न ही जाना कि अगला जन्म कब, कहाँ होता है।"

नानकदेव ने पूछा—"तो फिर इतनी लूटमार और धन क्या केवल इसी जन्म के लिए जमा कर रहे हो ? इस जन्म के लिए खाने-पीने लायक धन तो तुम्हारे पास है। लोग तो यही समझते हैं और मैं भी यही समझता हूं कि तुम अपने चार-छः जन्म के लिए लूटमार करके यह सब जमा करा रहे हो।"

कारूं लज्जित हुआ और सभी का धन लौटा दिया।

—116, देवाली, उदयपुर-313001 (राज.)

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'जिनवाणी' कार्यालय को लिखकर भेजिये—

१. लूटमार के पीछे कारूं का क्या उद्देश्य था ?
२. कारूं लोगों पर किस प्रकार के अत्याचार करता था ?
३. अत्याचारों से बचने के लिए लोगों ने क्या उपाय सोचा ?
४. नानक ने सूई देते हुए कारूं से क्या कहा ?
५. नानक की किस बात से प्रभावित होकर कारूं ने लूटमार बन्द करदी ?
६. धन संग्रह के बारे में गृहस्थों को भगवान् महावीर का क्या उपदेश था ?
७. वह क्या चीज है जो इस जन्म के बाद भी लोगों के साथ जाती है ?

उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के अप्रैल, १९८४ के अंक में प्रकाशित श्री कमल सौगानी की **'पुण्य का एक अंश'** कहानी के उत्तर हमें निम्न बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सबको धन्यवाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोधपुर से मनोज भण्डारी, **भवानीमण्डी** से रघुनन्दन शर्मा, दिलीपकुमार बंसल, मुकेश चतुर्वेदी, **पाली** से हितेन्द्र कांकरिया, **नदबई** से सुरेशचन्द, **बर** (पाली) से हंसराज जैन, **भनोखर** से कु. सरोज जैन, **डूँगला** से हरिश्चन्द्र दक, **जावला** (नागौर) से पूनमचन्द कोठारी, **जयपुर** से संगीता लोढ़ा, सुदर्शन कर्णावट, संदीप लोढ़ा, **दुर्ग** से निरूपमा कटारिया, **लीडी** (अजमेर) से ज्ञानचन्द जैन, **गोटन** (नागौर) से सुरेशचन्द ओस्तवाल, **मन्दसौर** से अनिलकुमार तालेरा, **हरसाना** से मदनलाल जैन, सुनीता जैन, **दमोह** से कमलकुमार जैन, **मैसूर** से महावीर प्रसाद, **उज्जैन** से विनोदकुमार बोरदिया, **हुबली** से कमलकुमार ।

पुरस्कृत उत्तरदाता

प्रथम : कविता सखलेचा, द्वारा मदनलाल सखलेचा, 9/81, मोती कटरा, गुजिया गली, आगरा ।

द्वितीय : विजयकुमार बम्ब, 4367, नथमलजी का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर-302 003 ।

तृतीय : पिंकी कर्णावट, द्वारा अजीतराज कर्णावट, 448, रोड, IC सरदारपुरा, जोधपुर-342 003 ।

बच्चों को कहानी पढ़कर उत्तर भेजने की विशेष प्रेरणा मिले इस भावना से प्रथम तीन श्रेष्ठ उत्तरदाताओं के बाद आगे के तीन श्रेष्ठ निम्न उत्तरदाताओं को ५-५ रुपये का पुरस्कार जल सेवा दल रेल्वे प्लेटफार्म भवानी मंडी के संस्थापक श्री साधूरामजी सिंधी की ओर से प्रदान किया जा रहा है—

चतुर्थ : वीना जैन, द्वारा सौभाग्यमल जैन, मकान नं. २६६, नयापुरा, पुराने पावर हाउस के पास, खाई पाड़ा, **कोटा** (राज.) ।

पंचम : मनोजकुमार कोठारी, द्वारा रूपचन्द शान्तिलाल कोठारी, महावीर चौक, **रायचूर** (कर्नाटक) ।

षष्ठ : कमलकुमार कोठारी, द्वारा शा. केवलचन्द्र मोहनलाल, न्यू जबली बाजार, **हुबली** (धारवाड़) कर्नाटक ।

नोट—विभिन्न जैन विद्यालयों के अध्यापकों एवं जैन छात्रावासों के गृहपतियों से निवेदन है कि वे **'बाल कथामृत'** स्तम्भ में प्रकाशित कहानी के प्रश्नों के उत्तर अपने छात्रों से अधिकाधिक संख्या में भिजवायें । हिन्दी कक्षा में तथा सामायिक में सामूहिक रूप से कहानी के उत्तर लिखने की प्रेरणा दी जा सकती है ।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समीक्षा

☐ डॉ० नरेन्द्र भानावत

१. जैन धर्म का मौलिक इतिहास, तृतीय भाग—मार्गदर्शक आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०, लेखक एवं मुख्य सम्पादक श्री गजसिंह राठौड़, सहयोगी श्री प्रेमराज जैन, प्र० जैन इतिहास समिति, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर–३०२ ००३, पृ० ५०+८७८, मू० ५०.०० ।

जैन धर्म के इतिहास लेखन के स्फुट कई प्रयत्न हुए हैं पर प्रामाणिक, तुलनात्मक, अन्वेषण परक इतिहास लेखन की कमी बराबर महसूस की जाती रही थी । आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के मार्गदर्शन में लिखित जैनधर्म के मौलिक इतिहास लेखन की योजना से यह कमी काफी सीमा तक पूरी हुई है । इस योजना के अन्तर्गत पूर्व में प्रकाशित दो भागों में क्रमशः २४ तीर्थंकर एवं वीर निर्वाण सं० १ से लेकर १००० तक के काल का इतिहास समाविष्ट हुआ है । प्रस्तुत ग्रंथ में वीर निर्वाण सं० १००१ से लेकर १४७५ तक अर्थात् देवर्द्धि क्षमा श्रमण के स्वर्गस्थ होने से लेकर भगवान् महावीर के ४७वें पट्टधर आचार्य कलशप्रभ तक का इतिहास वर्णित है । यह कोरा धार्मिक इतिहास नहीं है । समसामयिक राजनैतिक एवं सामाजिक घटनाचक्रों व आन्दोलनों का इसमें यथा प्रसंग विवरण दिया गया है । वीर निर्वाण सं० १००१ से १४७५ तक का काल इतिहासकारों के सामने अंधकार-काल रहा है । पर दक्षिण भारत में बिखरी पड़ी महत्त्वपूर्ण सामग्री का उपयोग कर इस काल की कई गुत्थियों को सुलझाने का विशेष प्रयास इस ग्रंथ में हुआ है । भ० महावीर की विशुद्ध मूल आध्यात्मिक श्रमण परम्परा काल-प्रवाह के साथ आडम्बरपूर्ण भौतिक आराधना का रूप लेती हुई किस प्रकार द्रव्य-परम्परा में बदलती गई, इसका प्रमाण पुरस्सर लेखन इस ग्रंथ की एक प्रमुख विशेषता है । यापनीय एवं भट्टारक परम्परा पर कई दृष्टियों से नवीन तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं । प्रमुख शिक्षाविद् एवं वैज्ञानिक डॉ० डी० एस० कोठारी ने 'दो शब्द' लिखकर इस ग्रंथ की उपादेयता प्रकट की है । धार्मिक एवं सामाजिक ज्ञान के अध्येताओं एवं शोधार्थियों के लिए यह ग्रंथ बड़ा उपयोगी और संग्रहणीय है । इतिहास के तिमिराच्छन्न काल खण्ड को उजागर करने वाले इस आलोकदीप्त ग्रंथ रत्न का शतशः अभिनन्दन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. महावीर : परिचय और वाणी—आचार्य रजनीश, सं० स्वामी आनंद वीतराग, प्र० मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–११० ००७, पृ० ३३०, मू० २०.०० ।

आचार्य रजनीश मौलिक चिन्तन, प्रबुद्ध विचारक और प्रभावी व्याख्याता के रूप में सुप्रसिद्ध हैं। उन्होंने विश्व के प्रायः सभी धर्मों एवं धर्मनायकों की जीवन-घटनाओं एवं सिद्धान्तों पर अपने ढंग का, पारम्परिक मान्यताओं से हटकर, नया चिन्तन प्रस्तुत किया है जो सोचने को झकझोरता है। ऊपरी सतह पर कई जगह विरोधाभास सा लगता है पर गहरे उतरने पर अर्थों की परत-दर-परत स्पष्ट होती जाती है। महावीर के जीवन एवं सिद्धान्त पर प्रस्तुत किया गया उनका यह चिन्तन भी उसी शृंखला की कड़ी रूप में है। उन्होंने स्वयं कई जगह कहा है कि यह चिन्तन पारम्परिक शास्त्रों पर आधारित नहीं है। यह उनकी साधना एवं चिन्तना की मौलिकता का परिणाम है। जो पाठक इसमें शास्त्र ढूंढ़ेंगे, उन्हें निराश होना पड़ेगा। पुस्तक के तीन खण्डों में महावीर की जीवनधारा, प्रमुख घटनाचक्रों तथा अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, अकाम, प्रमाद, नमोकार मंत्र, संयम, तप जैसे सिद्धान्तों पर सर्वथा मौलिक ढंग से विचार किया गया है जो बुद्धि को तराशता है। पुस्तक को अन्त तक पढ़ते रहने का आकर्षण बना रहता है।

३. गजेन्द्र सूक्ति-सुधा—सं० संजीव भानावत, प्र० सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर–३०२ ००३, पृ० १६+१५८, मू० ३.०० ।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० जो 'गजेन्द्र मुनि' नाम से भी जाने जाते हैं, आगमिक व्याख्याता होने के साथ-साथ गहरे चिन्तक और ध्यानयोगी साधक हैं। उनके प्रवचनों में जीवन का यथार्थ सत्य आत्मानुभव में तपकर–पककर व्यंजित होता है सूक्तियों के रूप में। श्री संजीव भानावत ने आचार्यश्री के विशाल प्रवचन-साहित्य का दोहन कर १५१ विषयों पर १०६० सूक्तियाँ का संकलन इस पॉकेट बुक में किया है। सूक्तियाँ बड़ी मार्मिक, अनुभूतिपूर्ण एवं जीवन-पथ में मार्गदर्शक हैं। प्रत्येक पाठक के लिए पुस्तक मननीय एवं संग्रहणीय है।

४. पंडज्जी—सुरेश 'सरल', प्र० हीरा भैया प्रकाशन, इन्दौर, पृ० ६४, मू० ४.०० ।

श्री सुरेश 'सरल' की इस कृति में १३ ललित व्यंग्य लेख संगृहीत हैं। इनकी विषय वस्तु चिर परिचित और पारम्परिक सी लगती है यथा—सांथिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिर, आरती, शास्त्र, किताबें, पंडज्जी, स्वाध्याय, यात्राएँ, सभा-संस्था, जुलूस, सम्प्रदाय आदि पर इनका प्रस्तुतिकरण इस ढंग से किया गया है कि इनके गलत स्वरूप और पक्ष का पर्दाफाश होता चलता है और इनकी सही अर्थवत्ता और उपयोगिता सशक्त रूप में प्रकट होती जाती है। वर्गीकरण, विश्लेषण और सुझाव–संवेदन में मौलिकता और रचनात्मक दृष्टि का प्रकाश है। मिथ्या प्रदर्शन पर चोट और सम्यक्दर्शन का आग्रह इन निबन्धों का हार्द है।

५. क्षणिकाएँ—श्री भंवरलाल नाहटा, प्र० नाहटा ग्रुप ऑफ ट्रेडर्स लि०, ४, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता–७, पृ० १७०।

श्री नाहटाजी मूलतः प्राचीन भाषा और साहित्य के गवेषक विद्वान् हैं पर इस कृति की १५० क्षणिकाओं में उनका कवि और चिन्तक रूप उभर कर सामने आया है। जैन दर्शन के धरातल पर निर्मित ये क्षणिकाएँ विचार प्रधान गद्य-मुक्तक हैं।

६. सप्त व्यसन—विद्यानन्द मुनि, प्र० श्री वीर निर्वाण ग्रंथ प्रकाशन समिति, ४८, सीतलामाता बाजार, इन्दौर–२, पृ० २८, मू० १.००।

बढ़ती हुई भौतिकता के साथ आज जीवन-व्यवहार सप्त व्यसनों से ग्रस्त होता जा रहा है। मुनिश्री की भूमिका के साथ आचार्य वसुनंदि कृत श्रावकाचार पर आधारित सप्त व्यसनों का मूल पाठ सरल हिन्दी अनुवाद के साथ देकर इस लघु कृति को लोकोपयोगी बनाया गया है। प्रत्येक युवक को इसे पढ़ना चाहिए। •

☐ अहिंसा धर्म का पालन करने वाला हर मनुष्य अपने दैनिक क्रिया-कलापों को सही ढंग से पूर्ण कर चित्त-शान्ति प्राप्त करता है।

☐ अहिंसा-मार्ग मानव जाति को क्रुद्ध सर्पों से भरे कुए से निकाल स्वर्ग में ले जाने वाला है, परन्तु हिंसा-मार्ग जबरदस्ती सिर के बल नरक कुण्ड में पटकता है।

☐ एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट उपाधि प्राप्त प्रमादी एवं हिंसावृत्ति-मनुष्य से एक गंवार अहिंसा-पालनकर्ता लाख गुना अच्छा है।

☐ मनुष्य और पशु के बीच अन्तर को अहिंसा रूपी मानदण्ड से स्पष्ट किया जा सकता है।

☐ हिंसक प्रवृत्ति वाला मनुष्य जंगली पशु से कहीं अधिक खुंखार है, क्योंकि समाज में रहकर जंगली हिंसक पशु से किसी हद तक अपने आपको बचाया जा सकता है परन्तु उस सामाजिक हिंसक से तो स्वामी 'महावीर' ही शायद बचा पायें।

☐ मांसाहारी मनुष्य से उतनी सावधानी ज़रूर रखनी चाहिए जितनी कि किसी छेड़े गए क्रुद्ध सर्प से रखी जाती है।

—**डॉ० बहादुरसिंह,** हिन्दी विभाग, राज० वि० वि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिवेदन

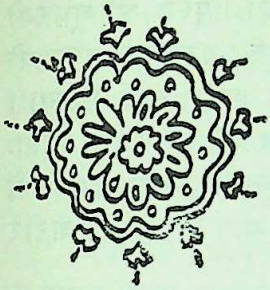

पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म. सा. पुण्य तिथि द्विशताब्दी साधना समारोह

☐ श्री ज्ञानेन्द्र बाफना
मंत्री, अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

विश्ववंद्य श्रमण भगवान् महावीर के धर्म शासन को, धर्मप्राण लोंकाशाह द्वारा धर्म क्रान्ति किये जाने के पश्चात् जिन महापुरुषों ने अपने तपस्तेज व आत्म-साधना से समय-समय पर विशेष बल प्रदान किया है, उनमें शासन हित हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले पूज्य आचार्य श्री धर्मदासजी म. सा. का नाम सदैव अविस्मरणीय रहेगा। पूज्य आचार्यश्री धर्मदासजी म. सा. के ९९ शिष्यों में से तपोमूर्ति पूज्य श्री धन्नाजी म. सा. द्वारा मरुधर क्षेत्र में किया गया धर्म-प्रचार, आज भी अपनी गौरव गाथा इनके मुनि मण्डल के रूप में सजीव किये हुए हैं। तपोमूर्ति पूज्य श्री धन्नाजी म. सा. के उपदेश से जो महापुरुष संसार-मार्ग को छोड़कर त्यागमार्ग की ओर प्रवृत्त हुए, उनमें क्षमामूर्ति पूज्य श्री भूधरजी म. सा. का नाम विशेष उल्लेखनीय है। पूज्य श्री भूधरजी म. सा. के चार शिष्य हुए। पूज्य श्री रघुनाथदासजी म. सा., पूज्य श्री जयमल्लजी म. सा., पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म. सा. एवं पूज्य श्री जैतसी म. सा.। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

भूधर के सिख दीपतां, चारों चतुर्वेद।
धन रघुपत, धन जेतसी, जयमल ने कुशलेश।

पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म. सा. का जन्म संवत् १७६७ में मारवाड़ के धनाढ्य ग्राम सेठों की रियां में सुश्रावक श्री लादूरामजी चंगेरिया की धर्मशीला धर्मपत्नी कानुदेवी की कुक्षि से हुआ। आपकी अल्पायु में ही पिताश्री के निधन से आपका मन-मानस संसार की असारता की ओर उन्मुख हुआ। आपके विवाह के पश्चात् आपके एक पुत्र हुआ जो अभी सत्रह माह का ही था कि आपकी धर्मशीला धर्मपत्नी का असामयिक निधन हो जाने से आपका सरल हृदय संसार से सर्वथा विमुख हो गया व आपने अपनी भावना अपने पूज्य मातुश्री के सम्मुख रक्खी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दृढ़ संकल्प से वे आज्ञा प्राप्त करने में सफल हुए व उन्होंने संवत् १७९४ में फाल्गुण शुक्ला पंचमी को पूज्य श्री भूधरजी म. सा. से भागवती श्रमण दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा अंगीकार कर ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना और पूज्य गुरुदेव की सेवा में आपने अपने आप को समर्पित कर दिया। पूज्य श्री भूधरजी म. सा. के सं. १८०४ में देहावसान के वक्त आप अपने पूज्य गुरुभ्राता पूज्य श्री जयमलजी म. सा. के साथ नियम कर लिया कि मैं आड़ा आसन नहीं सोऊंगा। आपका अलग से शिष्य परिवार होने पर भी आपका पूज्य श्री जयमलजी म.सा. के साथ सदैव भ्रातृत्व बना रहा और उन्हीं की सेवा में नागौर में सं. १८४० में ज्येष्ठ कृष्णा छठ के दिन, तीन दिन के संथारे के साथ आप इस नश्वर शरीर को छोड़ अमरलोक प्रयाण कर गये।

पूज्यश्री कुशलचन्द्र जी म. सा. के परम शिष्य थे पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्दजी म. सा., पूज्य श्री दुर्गादासजी म. सा. आदि। पूज्यश्री की पाट परम्परा इस प्रकार है—(१) पू० श्री गुमानचन्द्रजी म. सा., (२) पू० श्री दुर्गादासजी म. सा., (३) पू० आचार्यश्री रतनचन्द्रजी म. सा., (४) पू० आचार्य श्री हमीरमलजी म. सा., (५) पू० आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म. सा., (६) पू० आचार्य श्री विनयचन्दजी म. सा., (७) पू० आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म. सा., (८) वर्तमान आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.।

आचार्यदेव पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा. की प्रेरणा सदैव समाज सुधार व व्यक्तिगत जीवन सुधार की रही है। पूज्य गुरुदेव ने सदैव भक्त समुदाय को सामायिक, स्वाध्याय व ब्रह्मचर्य के नियम पालन और कुरीतियों के उन्मूलन की प्रेरणा दी। पूज्य गुरुदेव ने स्वाध्याय का जो शंखनाद आज से वर्षों पूर्व किया, उसका भव्य परिणाम आज समाज के सामने है। आज विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रतिवर्ष सैकड़ों क्षेत्रों को पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बन्धुओं का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

आज से लगभग १३ वर्ष पूर्व जब मेड़ता सिटी में पूज्य आचार्य गुरुदेव के समक्ष भक्तगणों ने पू० गुरुदेव की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती मनाने का विचार प्रस्तुत किया तो पूज्य गुरुदेव का यही फरमाना था कि बाहरी प्रदर्शन व आडम्बर से तो समाज को कोई लाभ नहीं है। पर पू० गुरुदेव श्री शोभाचन्द्रजी म. सा. की दीक्षा शताब्दी का पावन प्रसंग आ रहा है। यदि भक्तगण वस्तुतः महापुरुषों के पावन प्रसंगों के निमित्त सच्चे रूप में मनाना चाहें तो इस प्रसंग को साधना समारोह व सामूहिक व्रत ग्रहण के रूप में आयोजित कर सकता है। तदनुरूप पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म. सा. दीक्षा शताब्दी साधना समारोह की रूपरेखा समाज के समक्ष प्रस्तुत की गई व परमपूज्य गुरुदेव की असीम कृपा व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनिमण्डल, महासतिमण्डल की प्रेरणा से तथा कार्यकर्ताओं के सहयोग से यह समारोह आशातीत सफलता के साथ अजमेर में मनाया गया। मुझे भी एक नवीन कार्यकर्ता के रूप में इस समारोह के साथ संबद्ध रहने का अवसर प्राप्त हुआ। यह पूज्य गुरुदेव की कृपा प्रसाद व समाज के अग्रगण्य सुश्रावकों के सहज स्नेह का फल रहा। इसी कड़ी में भगवान् महावीर के २५ सौ वें निर्वाण महोत्सव को भी समाज के कार्यकर्ताओं ने पू० गुरुदेव के कृपा-प्रसाद से व्यसन निवारण व समाज सुधार की विविध प्रवृत्तियों के साथ मनाया।

एक वर्ष पूर्व पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म. सा. की पुण्य तिथि की द्विशताब्दी का पावन प्रसंग उपस्थित होने पर चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान) में कार्यकर्ताओं ने इस समारोह को भी तप, त्याग व व्रत ग्रहण के साथ मनाने का निश्चय किया व मद्य-मांस तथा धूम्रपान त्याग, सामायिक, स्वाध्याय, श्रावक व्रत ग्रहण, आजीवन ब्रह्मचर्य, आंशिक ब्रह्मचर्य, रात्रि भोजन त्याग आदि कुरीतियों के उन्मूलन व स्वधर्मी वात्सल्य की विविध प्रवृत्तियों के साथ मनाने का एक कार्यक्रम समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

पूज्य गुरुदेव के कृपा प्रसाद, पूज्य मुनि मण्डल व पू० महासतिमण्डल द्वारा ग्राम व नगरों में विचरण के समय भक्तगणों को की गई प्रेरणा व कार्यकर्ताओं के सहयोग से यद्यपि इस कार्यक्रम में काफी सफलता मिली है व कई क्षेत्रों में लक्ष्य से अधिक नियम ग्रहण हुए हैं फिर भी जितना चाहिये था उतना समय नहीं दिया जा सका। और मैं भी सहयोगियों के आशा व विश्वास के अनुरूप गतिशील नहीं हो सका। अतः मैं पूज्य आचार्य गुरुदेव व समाज के सहयोगियों से क्षमायाचना करता हूँ। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक अब तक जो लक्ष्य प्राप्त किये गये हैं, उनकी सूची इस प्रकार है—

१. मांस-मछली व अण्डे का त्याग	९०	११. जीवन पर्यन्त रात्रि भोजन त्याग	११८
२. मद्य पान त्याग	९३	१२. जीवन पर्यन्त चौविहार	३७
३. धूम्रपान त्याग	२२६	१३. एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन	१३०
४. १५ मिनट प्रतिदिन स्वाध्याय	३६५	१४. आजीवन ब्रह्मचर्य पालन	३२५
५. साप्ताहिक सामायिक व्रती	२४५	१५. बारह व्रत धारण	३४
६. दैनिक सामायिक व्रती	२५०	१६. खोटे माप तोल का त्याग	२२६
७. सक्रिय स्वाध्यायी	५१	१७. रिश्वत लेने का त्याग	२१९
८. श्राविका संघ सदस्याएँ	६६	१८. दहेज के ठहराव व प्रदर्शन का त्याग	२८७
९. घर-घर प्रार्थना	१५१		
१०. एक वर्ष तक रात्रि भोजन त्याग	[illegible]		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यक्तियों ने अनेकानेक नियम अंगीकार किये ।

समापन समारोह के आयोजन का लाभ पूज्य आचार्यश्री रतनचन्द्रजी म. सा. की क्रियोद्धार भूमि भोपालगढ़ को मिला है। भोपालगढ़ के कार्यकर्ताओं ने घर-घर सम्पर्क कर अपने सभी सदस्यों को व्रत ग्रहण की प्रेरणा दी व अभूतपूर्व आशा व उत्साह के साथ अपना सक्रिय सहयोग देकर समूचा प्रबन्ध कर इस आयोजन को सफल बनाया, इस हेतु मैं अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से भोपालगढ़ संघ के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई व धन्यवाद प्रस्तुत करता हूँ। इस समूचे आयोजन व व्रत प्रेरणा में जिन-जिन कार्यकर्ताओं का व समाज के अग्रगण्य श्रावकों का सहयोग मिला है मैं संघ की ओर से उन सभी का आभार ज्ञापित करता हूँ। हम यह आशा करते हैं कि कार्यकर्ताओं के सहयोग व पूज्याचार्य देव व चतुर्विध संघ के कृपा-प्रसाद से हम पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म. सा. की पुण्य तिथि पर जो यत्किंचित नवीन रूप में तप, त्याग व व्रत ग्रहण के साथ इस समारोह को मना सके हैं, समाज के अन्य व्यक्ति भी इसी रूप में व्रत ग्रहण की प्रेरणा के साथ महापुरुषों की जयन्तियां व कल्याणक महोत्सव मनाने का लक्ष्य रखेंगे तो यह समाजहित संवर्द्धन का निमित तथा संघ, समाज व कार्यकर्ताओं के संतोष का कारण बन सकेगा ।

शिक्षाप्रद मूर्तियां

□ राज सौगानी

एक कुशल मूर्तिकार सोने की चार मूर्तियाँ बनाकर राजा को बेचने के लिए गया। वे चारों ही आकार, प्रकार और सुन्दरता में एक सी थीं, किन्तु मूल्य सब का अलग-अलग था। राजा ने उनकी विशेषता खोजने के लिए एक अनुभवी को बुलाया।

अनुभवी ने बताया—

"महाराज! एक मूर्ति के कान में छिद्र नहीं, दूसरी मूर्ति के कान का छिद्र दूसरे कान से निकला है, तीसरे के कान-छिद्र मुख तक हैं, और चौथी मूर्ति का छिद्र कान से लेकर पेट तक है।"

परीक्षक ने आगे बताया—"चौथी मूर्ति इसलिए कीमती है कि इसमें सुनकर धारण करने की क्षमता है। ये सभी मूर्तियां शिक्षा दे रही हैं कि कुछ लोग अच्छी बात को सुनते ही नहीं, कोई सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं, कुछ सुनकर मुँह से निकाल देते हैं, पर श्रेष्ठ वही हैं जो सुनकर धारण भी करते हैं, अतः चौथी मूर्ति कीमती है।

—स्टेशन रोड, भवानीमन्डी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुधरा में धर्म-प्रभावना

प्रस्तोता—**श्री ब्रजमोहन जैन**

प्रातः स्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी, महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा. आदि ठाणा ९ क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में एक अहोरात्रि विराज कर दिनांक २२ अप्रैल को सात मील के विहारोपरान्त कूड़ी पधारे जहां चौधरी बन्धुओं का विशाल समूह भक्ति रस से भरे हुए दिलों के साथ आपके दर्शनों को उत्कण्ठ हृदय से स्थानक में उपस्थित हुआ। यथा शक्ति त्याग प्रत्याख्यान किये। यहां के स्वधर्मी बन्धुओं ने सामायिक, स्वाध्याय स्थानक आकर करने के नियम लिये।

दिनांक २३ अप्रैल को ७ मील का विहार कर आचार्य श्री **रतकूड़िया** पधारे जहां स्थानकवासी जैन के दो घर हैं तथा चौधरी बन्धुओं की धर्म श्रवण में अच्छी रुचि देखने को मिली। दिनांक २४ अप्रैल को ५ मील का विहार कर **खाँगटा** पधारे और २५ अप्रैल को आचार्य श्री बद १० की मौन साधना में विराजे। यहां स्थानकवासी जैन बन्धुओं के लगभग ११ घर हैं। दिनांक २६ अप्रैल को ७ मील का विहार कर आचार्य श्री **कोसाणा** पधारे। भव्य स्वागत के साथ ग्राम में प्रवेश हुआ। कोसाणा के धर्म पिपासु जैन एवं विश्नोई आदि जैनेतर जन मानस में हर्ष की लहर दौड़ गई। धर्म श्रवण को सैंकड़ों की संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित हुए। चार दिनों के प्रवास में चातुर्मास जैसा ठाठ लग गया। श्री अखेराजजी बाघमार ने सजोड़े आजीवन शील का खंद उठाया। श्री सत्यनारायणजी महाराज की धर्मपत्नी ने तेले की तपस्या की, इसके अतिरिक्त और भी त्याग-प्रत्याख्यान व तपस्यायें काफी हुई।

दिनांक २९ अप्रैल को श्रद्धेय आचार्य श्री का विहार जन्मभूमि **पीपाड़ शहर** को हुआ। पीपाड़ नगर के आबाल वृद्ध जैन जैनेतर जन मानस ने पुलकित हृदय से अपने आराध्य आचार्य श्री का वर्षों बाद पीपाड़ शहर में शुभागमन पर हर्षातिरेक प्रकट करते हुए भव्य जुलूस के साथ नगर प्रवेश करवाया। नगर में नूतन धर्म जागृति का संचार हुआ। सामायिक स्वाध्याय की दुन्दुभि बज उठी। धर्म श्रवण को नित्य प्रति सैंकड़ों की संख्या में श्रोतागण उपस्थित हो धर्माराधना का लाभ लेते रहे।

वर्षी तप के पारणे (अक्षय तृतीया)

४ मई को आचार्य श्री के दर्शनार्थ अनेक संघों का आगमन हुआ क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दिन वर्षी तप के पारणों का आयोजन था। नगर के मध्य सिविल कोर्ट के प्रांगण में सर्व प्रथम पं० रत्न श्री मान मुनिजी म० सा०, प० र० श्री हीरा मुनि जी म० सा० के संक्षिप्त प्रवचनोपरान्त श्री गौतम मुनिजी महाराज एवं श्री धन्ना मुनिजी म० सा० ने सुमधुर शैली में उपस्थित परिषदा के सामने मन को झंकृत करने वाले भजन प्रस्तुत किये। तदनन्तर कतिपय वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य श्री ने तप की महत्ता प्रतिपादित करते हुए वर्षी तप पर विवेचनात्मक व सारगर्भित प्रवचन प्रदान किया।

दोपहर ठीक १२.३० पर पधारे हुए पारणार्थी भाई-बहिनों के अभिनन्दन के पश्चात् सामूहिक पारणों का आयोजन किया गया। सभी २१ पारणार्थियों को पीपाड़ संघ की ओर से ४ खण्ड का एक-एक टिफन, श्री पारसमलजी सुराणा नागौर निवासी की ओर से 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' भाग ३ व सामायिक के उपकरण तथा श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ मद्रास की ओर से सामायिक के उपकरणों का सेट, श्री सन्तोषजी सुराणा नागौर की ओर से स्टील की थालियाँ आदि प्रभावना स्वरूप वितरित की गईं। और भी कतिपय धर्म प्रेमियों ने स्टील की कटोरियां आदि की प्रभावना वितरण कीं। धर्मध्यान का अच्छा ठाठ रहा। निम्न भाई-बहिनों ने पारणा का लाभ लिया :—

(१) श्री सूरजमलजी मेहर श्योपुर कलां (मध्य प्रदेश), (२) श्रीमती घेवरबाई धर्मपत्नी श्री सूरजमलजी मेहर (३) श्रीमती केशरबाई धर्मपत्नी श्री भँवरलालजी कांकरिया, भोपालगढ़ (४) श्रीमती गुटियाबाई धर्मपत्नी श्री मुकन चन्दजी कांकरिया, भोपालगढ़ (५) श्रीमती उछबकँवर बाई (धर्मपत्नी श्री सुग्रीवचन्द्रजी भण्डारी, जोधपुर (६) श्रीमती उगमकँवर बाई मातुश्री श्री जगदीश राजजी सिंघवी, जोधपुर (७) श्रीमती भँवरी बाई धर्मपत्नी श्री दिनेशकुमारजी लोढ़ा, जोधपुर (८) श्रीमती दाखीबाई धर्मपत्नी श्री भँवरलालजी गुँदेचा, जोधपुर (९) श्रीमती कल्याण कँवर बाई धर्मपत्नी श्री मनोहरमलजी गांग, जोधपुर (१०) श्रीमती प्रभुलालजी नन्दावत, जोधपुर (११) श्रीमती कंचन बाई धर्मपत्नी श्री कन्हैयालालजी कानूगो, जोधपुर (१२) श्रीमती माणक कँवर बाई धर्मपत्नी श्री हिम्मतसिंहजी गलुंडिया, जयपुर (१३) श्रीमती सरदार बाई धर्मपत्नी श्री उत्तमचन्दजी मुणोत, अजमेर (१४) श्रीमती उमरावकँवर बाई धर्मपत्नी श्री घीसुलालजी सुराणा, नागौर (१५) श्रीमती इन्द्रकँवर धर्मपत्नी श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, नागौर (१६) श्रीमती पुष्पाबाई धर्मपत्नी श्री कजोड़ीमलजी पोरवाल, आलनपुर (१७) श्रीमती गुलाबबाई धर्मपत्नी श्री भँवरलालजी पोरवाल, आलनपुर (१८) श्रीमती कमला सुपुत्री श्री कजोड़ीमलजी पोरवाल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलनपुर (१९) श्रीमती पतासी देवी धर्मपत्नी श्री अमोलकचन्द्रजी नाहर, वारनी (२०) श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी श्री मुकनराजजी धारीवाल, मेड़ता सिटी व (२१) श्रीमती चम्पा देवी धर्मपत्नी श्री नथमलजी, सोजत रोड।

पीपाड़ नगर में आचार्य श्री के पदार्पण से इस प्रचण्ड गर्मी के मौसम में भी यहां भक्त हृदया माता व बहनों ने तपस्या की झड़ी लगा दी। अठाइयाँ ५, तेले बेले एवं उपवास आदि भारी संख्या में हुए। आगन्तुक स्वधर्मी बन्धुओं का पीपाड़ संघ ने दिल खोलकर स्वागत किया एवं समुचित सार सम्भाल के साथ स्वधर्मी वात्सल्य का लाभ लिया।

दिनांक १४ मई को मरुधरा के दैदीप्यमान नक्षत्र स्व. आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का १८८ वां परिनिर्वाण दिवस सामूहिक दया के साथ मनाया गया जिसमें लगभग २५० की तादाद में दयाव्रत हुए। दोपहर को प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मफतलालजी मुनोत, बम्बई, व श्री चम्पालालजी खेमचन्दजी कोठारी ने परम श्रद्धेय आचार्य श्री से प्रेरणा लेकर पीपाड़ नगर में एक धार्मिक शिक्षण शिविर संचालन समिति का गठन किया। इस ५ सदस्यी समिति में श्री पूनम चन्दजी गाँधी संयोजक मनोनीत किये गये। उक्त समिति धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु शिक्षण शिविर का आयोजन किया करेगी।

पीपाड़ प्रवास के दौरान श्री ज्ञानचन्दजी मूथा, श्री भँवरलालजी बोहरा, श्री बुधमलजी भण्डारी, श्री धनराजजी मूथा, श्री मांगीलालजी प्रजापत ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत के खंद उठाकर अपने आराध्य आचार्य श्री को त्याग की भेंट प्रदान की। पीपाड़ नगर में धर्मोद्योत की लहर परिव्याप्त कर सायंकाल विहार कर आचार्य श्री कटारियाजी की पोल पधारे एवं अनेक भव्यों को प्रतिबोध देते हुए १५ को **साधीन**, १६ को **रतकड़िया** फरसते हुए १७ मई को सायंकाल पुनः **भोपालगढ़** में भव्य स्वागत के साथ पदार्पण हुआ।

नागौर से पीपाड़ प्रवास में श्री पारसमलजी सुराणा एवं श्री सुरेन्द्रजी भण्डारी ने पाद विहार कर सेवा का लाभ लिया।

पूज्य श्री कुशलचन्दजी म० सा० पुण्यतिथि द्विशताब्दी साधना-समारोह सम्पन्न

भोपालगढ़—में दि० २० मई रविवार को पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. पुण्यतिथि द्विशताब्दी साधना समारोह का समापन समारोह आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. एवं मुनि मण्डल के सान्निध्य में अत्यन्त उमंग, उत्साह एवं तप-त्याग तथा व्रत ग्रहण पूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता उदारमना सरल हृदय परम गुरुभक्त दानवीर सुश्रावक श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ ने की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य अतिथि थे राजस्थान उच्च न्यालालय के निवृत्त मुख्य न्यायाधिपति धर्म-प्रेमी सुश्रावक श्री चांदमलजी लोढ़ा। इस अवसर पर जोधपुर, पीपाड़, गोटन, हिरादेसर, कूडी, कुचेरा, मेड़ता व अन्य स्थानों से पधारे हुए सैंकड़ों गुरुभक्तों के अतिरिक्त स्थानीय जैनेतर समाज ने भी भाग लिया। स्थानीय जैन समाज ने इस दिन बाजार बन्द रखा।

इस समारोह को सफल बनाने के लिए कार्यकर्त्ताओं ने घर-घर जाकर हर सदस्य को पूज्य गुरुदेव के पदार्पण की खुशी में इस समारोह के अवसर पर यथाशक्ति नियम ग्रहण करने की प्रेरणा की। इस हेतु स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री सोहनलालजी हुण्डीवाल, श्री किस्तूरचन्दजी बाफना और श्री सुगनचन्दजी कांकरिया के उल्लेखनीय प्रयास रहे।

दि. २० मई को आयोजित इस समारोह का संचालन किया अ. भा. श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने। इस अवसर पर पण्डित रत्न श्री हीरा मुनिजी म. सा. ज्ञानरसिक श्री ज्ञान मुनिजी म. सा. व ज्ञानपिपासु श्री गौतम मुनिजी म. सा. ने श्रद्धेय पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके गुणों की चर्चा की व उन्हें जीवन में उतारने पर बल दिया।

मुनि मण्डल के प्रवचन के पश्चात् स्वागताध्यक्ष श्री भँवरलालजी बाफना ने परम पूज्य आचार्य देव और मुनि मण्डल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आगन्तुक बन्धुओं का स्वागत किया। तदनन्तर स्थानीय संघ की ओर से समारोह के अध्यक्ष श्री पृथ्वीराजजी कवाड़, मुख्य अतिथि भूतपूर्व न्यायाधिपति श्री चाँदमलजी लोढ़ा, अ. भा. श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत, उपाध्यक्ष श्री हुक्मीचन्दजी जैन एडवोकेट का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। इसके अनन्तर सुश्री डॉ. सुषमा गांग प्रवक्ता जोधपुर विश्वविद्यालय, प्रसिद्ध भजनीक सुश्रावक श्री दौलत रूपचन्दजी भण्डारी, श्रीमती सुशीला बोहरा, प्रवक्ता महेश शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज जोधपुर, स्वाध्यायी सुश्रावक श्री रतनलालजी वेद, कुचेरा एवं श्री जैनरत्न विद्यालय के स्नातक श्री छोटूरामजी प्रजापत, प्रवक्ता गवर्नमेंट कॉलेज गुड़गाँव, (हरियाणा) ने पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. की गुणगाथा प्रस्तुत करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये। इसके अनन्तर अ. भा. श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. द्विशताब्दी साधना समारोह की रूपरेखा, लक्ष्य व इसकी पूर्ति को प्रस्तुत करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किये (मंत्री का प्रतिवेदन इसी अंक में पृ. ४५-४८ पर प्रकाशित है) मंत्री के प्रतिवेदन के पश्चात् सामूहिक व्रत ग्रहण का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस अवसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर १२ दम्पतियों ने आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर महापुरुषों की जयन्ति को तपत्याग पूर्वक मनाने का प्रशंसनीय आदर्श प्रस्तुत किया। ये शीलव्रत धारी निम्न महानुभाव हैं :—

(१) श्री किशनललालजी ओस्तवाल (२) श्री सुगनचन्दजी ओस्तवाल (३) श्री सुगनचन्दजी कांकरिया, (४) श्री दलीचन्दजी कांकरिया, (५) श्री सायरचन्दजी खींवसरा, (६) श्री चम्पालालजी हुंडीवाल, (७) श्री शिंभूलालजी चौरड़िया, (८) श्री मांगीलालजी छीपा, (९) श्री रामसुखजी पुठिया, (१०) श्री लालजी सरगटा, (११) श्री सांवलरामजी सुथार एवं (१२) श्री गंगारामजी गहलोत।

इसके अतिरिक्त अन्य भाई-बहनों ने भी सामायिक-स्वाध्याय, चौविहार, जमीकंद त्याग आदि विविध नियम ग्रहण किये।

व्रत ग्रहण के पश्चात् पूज्य आचार्य देव ने अपने आशीर्वचन में महापुरुषों की जयन्तियाँ मैले के रूप में न मनाकर तप-त्यागपूर्वक मनाने पर बल दिया। पूज्य आचार्य देव ने फरमाया कि पेड़ की शोभा का मूल उसकी जड़ है। जैसा बीज होगा वैसा ही वृक्ष होगा। इस रत्नवंश के आचार्यों से आप परिचित हैं। पर उनके मूल पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. की गुण गरिमा से आप में से अधिकांश अभी तक अपरिचित हैं। उन महापुरुष ने शिष्य परिवार होते हुये भी संघ एक्य की भावना व गुरु भ्राता पूज्य श्री जयमलजी म. के प्रति अपने अटूट प्रेम के कारण सदैव उनके साथ विचरण किया।

वे ३७ वर्ष लगभग आडे आसन नहीं सोये। उनकी साधना, उनकी सेवा भावना, उनकी अप्रमत्तता व उनका निश्छल समर्पण भाव हम सब के लिये अनुकरणीय है।

इस अवसर पर सोने में सोहागे के रूप में भोपालगढ़ समाज के उदारमना सुश्रावक सर्व श्री सायरचन्दजी कांकरिया, श्री जालमचन्दजी, रिखबराजजी बाफणा, श्री रतनलालजी बाफणा, श्री भँवरलालजी बाफणा, (जे. जे. परिवार) व श्री मूलचन्दजी, प्रसन्नचन्दजी बाफणा द्वारा पूज्य श्री कुशलचन्दजी म. सा. की स्मृति में **श्री कुशल जैन छात्रावास** के नाम से जोधपुर में उच्च शिक्षण के अभ्यासार्थी जैन छात्रों के लिए एक छात्रावास संचालित करने की घोषणा की गई। इस छात्रावास में छात्रों के लिए नित्यप्रति सामायिक करना एवं रात्रि भोजन त्याग जैसे नियमों के साथ नियमित धार्मिक अध्ययन पर विशेष बल दिये जाने की योजना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य श्री के भोपालगढ़ प्रवास में अखण्ड शान्ति जाप बड़े उमंग से प्रारम्भ किया तथा त्याग-प्रत्याख्यान का ठाठ रहा।

संत-विहार सूचना

- मधुर व्याख्यानी प. र. श्री मान मुनिजी म. सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म. सा., तपस्वी श्री प्रकाश मुनिजी म. सा., भजनरसिक श्री धन्नामुनिजी म. सा. ठाणा ४ पीपाड़ सिटी से ५ मई को सायं विहार कर पालासणी, पाली, साण्डेराव में धर्मोद्योत की लहर फैलाते हुए सिरोही-आबू रोड मार्ग से अहमदाबाद चातुर्मासार्थ आगे बढ़ रहे हैं।

- पं. र. श्री हीरा मुनिजी म. ठाणा ३ कडलू से १३ अप्रैल को विहार कर भोपालगढ़ फरसते हुए जोधपुर में धर्मोद्योत की पावन गंगा बहाकर २ मई को पीपाड़ सिटी पधार गये थे।

- मधुर व्याख्यानी प. र. श्री शुभेन्द्र मुनिजी म. सा. तपस्वी श्री बसन्त मुनि जी म. सा. तत्त्व जिज्ञासु श्री चम्पक मुनिजी म. सा. ठाणा ३ पल्ली क्षेत्र में धर्मोद्योत की दुन्दुभि बजाते हुए दि. २४ मई को खेडलीगंज पधार गये हैं जहाँ आपके सान्निध्य में दि. २६ मई से ३ जून तक स्वाध्यायी शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ है। आपका विहार यहाँ से भरतपुर होने की सम्भावना है।

- **जोधपुर**—साध्वी प्रमुखा प्रवर्तनी श्री सुन्दरकँवरजी म. सा. उपप्रवर्तनी श्री बदनकँवरजी म. सा. ठाणा १८ सुख साता पूर्वक विराजमान हैं।

- **मद्रास**—विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरीजी म. सा. महासती श्री रतन कँवरजी म. सा. ठाणा ६ साहूकार पेठ में धर्मोद्योत कर ओल्डपुनमली पधारे हैं। वहां सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं।

- **खेड़लीगंज**—महासती श्री शान्तिकँवरजी म. सा. महासती श्री सुशीलाजी म. सा. ठाणा ४ पल्लीवाल क्षेत्र के अनेक ग्रामों में विचरण कर यहां पधारी हैं और सुख-शान्तिपूर्वक विराज रही हैं।

□□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज–दर्शन

पर्युषण पर्व में स्वाध्यायियों को बुलाइये

जोधपुर : स्वाध्याय संघ, जोधपुर सन्त एवं महासतियां जी के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में शास्त्र वाचन, चौपाई, प्रतिक्रमण आदि विभिन्न प्रवृत्तियाँ करवाने हेतु विगत ४० वर्षों से योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायी बंधुओं को भेजकर शासन एवं समाज सेवा के कार्य में रत है।

इस वर्ष भी जिन-जिन क्षेत्रों में सन्त मुनिराजों के चातुर्मास न हो सके हैं, वे निम्न जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र निम्न पते पर शीघ्र भेजें :—

१. शहर अथवा गांव का नाम, जिला, प्रान्त सहित

२. समस्त जैन घरों की संख्या

३. स्थानकवासी जैन घरों की संख्या

४. संघ के अध्यक्ष एवं मंत्री का नाम व डाक पता

५. संबंधित जगह पर पहुँचने का रेल अथवा बसमोटर मार्ग।

शीघ्रता से आने वाले आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जावेगी। आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि १-८-८४ रखी गई है।

सम्पतराज डोसी
संयोजक
स्वाध्यायी संघ, घोड़ों का चौक,
जोधपुर–३४२ ००१

गुलाबपुरा : श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा स्वाध्यायी श्रावकों को पर्युषण पर्व में शास्त्रवाचन, तत्वचर्या आदि के लिए भेजकर वि० सं० १९९४ से ही समाज की निरन्तर सेवा कर रहा है। जो संघ स्वाध्यायी सदस्यों को आमंत्रित करना चाहें, वे अपना प्रार्थनापत्र शीघ्र ही दिनांक ५ अगस्त, १९८४ से पूर्व, मंत्री श्री स्वाध्यायी संघ. गुलाबपुरा (राज०) पिन ३११ ०२१ के पते पर भिजवा दें। वहाँ पहुँचने के मार्ग का व जैन परिवारों की कुल संख्या का उल्लेख अवश्य करें। श्री स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वार्षिक उत्सव भी दिनांक ५ अगस्त, १९८४ को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में होगा। इस अवसर पर दिनांक २ से ४ अगस्त, १९८४ को त्रि-दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित होगा, कृपया अवश्य पधारें। इस अवसर पर पधारने से तत्रविराजित परमश्रद्धेय, आशुकवि, मधुर व्याख्यानी श्री सोहनलालजी म० सा०, ओजस्वी वक्ता श्री वल्लभ मुनि जी म० सा० आदि ठाणा ४ के दर्शन करने व प्रवचन सुनने का भी लाभ प्राप्त होगा।

—मंत्री, श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्यायी संघ,
गुलाबपुरा

छात्रों के लिये स्वर्ण अवसर

जलगाँव : सन् १९२५ में उद्घाटित श्री कानजी शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग हाउस, जलगाँव में प्रवेश पाने के इच्छुक छात्रों के आवेदन-पत्र ग्रहण करने की अंतिम तिथि २५ जून, ८४ है। बोर्डिंग में महाविद्यालयों में पढ़ने वाले जैन छात्रों के सात्विक भोजन, दूध, धार्मिक अध्ययन, आवास की आधुनिकतम सुविधाओं सहित सुन्दर व्यवस्था है। शैक्षणिक वातावरण के कारण एक छात्र ने लॉ कॉलेज के प्रथम वर्ष में तृतीय एवं एक छात्र ने पोलीटेकनीक के चतुर्थ सेमेस्टर में प्रथम स्थान प्राप्त कर, बोर्डिंग के नाम को रोशन किया है। आर्थिक अवस्थानुसार संस्था में चार श्रेणियां क्रमानुसार १५००/– रु०, १२००/– रु०, ७००/– रु०, २५०/– रु० वार्षिक में ७५ छात्रों के आवास की सुविधा उपलब्ध है। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश में प्राथमिकता दी जायेगी।

सम्पर्क सूत्र :—**दलीचन्द चोरड़िया,** जनरल सेक्रेटरी, श्री का० शि० ओ० जैन बोर्डिंग, जलगाँव (महाराष्ट्र) पिन ४२५ ००१।

राणावास : श्री वर्द्धमान स्था० जैन० छात्रावास तथा श्री शांतिनाथ जन सेवा छात्रावास में प्रवेश के लिए इच्छुक छात्र तीन रुपये, मंत्री श्री वर्धमान स्था० जैन शिक्षण संघ, राणावास (पाली) राज० को भेजकर नियमावली आदि मँगवालें। यहाँ श्री मरुधर केसरी उ० मा० विद्यालय में कक्षा ११ तक के अध्ययन की व्यवस्था है।

ऋण छात्रवृत्तियाँ

इस वर्ष १९८४–८५ के लिए श्वेताम्बर जैन छात्र-छात्राओं के उच्च शिक्षा (मुख्यतः मेडिकल, इंजीनियरिंग, सी० ए० व टेकनिकल एज्यूकेशन) हेतु छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जायेंगी। वे छात्र-छात्राएँ जिन्हें पूर्व में इस संस्था से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋण छात्रवृत्तियाँ मिल रही हैं उन्हें भी नवीनीकरण हेतु पुनः आवेदन करना होगा। पाँच रु० धनादेश (मनीआर्डर) से भेजकर आवेदन पत्र मँगवा सकते हैं। आवेदन पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि १५-८-८४ है। इसके बाद प्राप्त आवेदन पत्र तथा अपूर्ण आवेदन पत्रों को निरस्त कर दिया जावेगा।

सम्पर्क सूत्र :—**महेन्द्रकुमार पारख**, मानद मंत्री, श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादाबाड़ी, अजमेर।

स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची, १९८४

आपको यह भलीभाँति ज्ञात ही है कि अखिल भारतवर्ष स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची प्रकाशन परिषद्, बम्बई की ओर से "स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची" का प्रकाशन विगत पाँच वर्षों से किया जाता रहा है जिसमें स्थानकवासी जैन सम्प्रदायों के सभी संत-सतियों का सही निर्देशन किया है। भारत में समस्त स्थानकवासी जैन संत-सतियों की पूर्ण व प्रामाणिक सही जानकारियाँ देने वाली यह एक संस्था है जिसमें बिना साम्प्रदायिकता से कार्य किया जाता है।

आपको सूचित करते हुए परम हर्ष हो रहा है कि परिषद् ने इस वर्ष १९८४ के चातुर्मासों की "चातुर्मास सूची" को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है और यह कार्य अभी से आरंभ भी किया जा चुका है। अतः आपसे सविनय नम्र निवेदन है कि आपके यहाँ जिन-जिन पूज्य संत-सतियों के इस वर्ष १९८४ के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं। उनकी निम्नलिखित जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करें ताकि हम यह चातुर्मास सूची समय पर प्रकाशित कर सकें।

(१) सभी संत-सतियों के सम्प्रदाय सहित पूरे नाम।

(२) चातुर्मास स्थल व पत्र व्यवहार का पूरा पता।

(३) यातायात के साधन (समीपवर्ती शहरों की दूरी सहित)।

(४) नवदीक्षितों के नाम, दीक्षा स्थल व तारीख।

(५) संघपति-मंत्री का परिचय व पता।

(६) अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ।

नोट :—चातुर्मास सूचियों की जानकारियाँ भेजने वालों को चातुर्मास सूची १९८४ निःशुल्क भेजने का प्रबंध किया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र व्यवहार का पता :

बाबूलाल जैन, संयोजक,
अ० भा० स्था० जैन चातुर्मास सूची प्रकाशन परिषद्,
१०५, तिरुपति अपार्टमेण्ट्स,
आकुर्ली क्रॉस रोड नं० १,
कांदिवली पूर्व,
बम्बई–४०० १०१.

विनीत :
सुखलाल कोठारी, बम्बई—अध्यक्ष
मुन्नालाल लोढ़ा, पाली—महामंत्री
बाबूलाल जैन, बम्बई—संयोजक

स्व० श्री बालचन्द बैद प्रतिमा अनावरण समारोह

जयपुर : श्री एस० एस० जैन सुबोध शिक्षा समिति के तत्त्वावधान में ६ मई, १९८४ को सुबोध महाविद्यालय प्रांगण, रामबाग सर्किल में, कॉलेज के भूतपूर्व प्राचार्य स्व० श्री बालचन्द जी बैद की सेवाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर व अध्यक्ष थे उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री बुलाकीदास कल्ला। स्व० श्री बालचन्दजी बैद ने साधारण शिक्षक के रूप में सुबोध शिक्षा समिति को अपनी सेवाएँ देना प्रारंभ किया। बाद में वे विद्यालय के प्रधानाध्यापक बने। उनके सतत प्रयत्नों से यह विद्यालय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में डिग्री कॉलेज तक विकसित हुआ और वे वर्षों तक उसके प्राचार्य रहे। उनका जीवन समर्पित अध्यापक, निष्ठावान कार्यकर्ता व सेवाभावी राजनीतिज्ञ का जीवन था। सुबोध शिक्षा समिति के पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने नींव का पत्थर बनने वाले एक साधारण शिक्षक की समर्पित जीवन साधना व मनोयोगपूर्वक की गई सेवा भावना को सत्ता व सम्पत्ति से अधिक महत्त्व देकर प्रेरणा के प्रतीक रूप में स्व० श्री बालचन्दजी बैद की प्रतिमा कॉलेज के प्रांगण में प्रतिष्ठित की। आशा की जानी चाहिए कि इससे समाज-सेवा के क्षेत्र में सक्रिय योग देने वाले कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलेगी। समारोह में श्री दौलतमलजी भंडारी, श्री देवीशंकरजी तिवाड़ी, श्री कर्पूरचन्दजी कुलिश, श्री नथमलजी गोलेछा, श्री श्रीराम गोटेवाला आदि ने बालचन्दजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। प्रारम्भ में समिति के मंत्री श्री उमरावमलजी चोरड़िया ने समिति की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समिति के अध्यक्ष श्री उमरावमलजी ढड्ढा ने धन्यवाद दिया। समारोह का संचालन हिन्दी प्राध्यापक श्री हजारीलाल शर्मा ने किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री माथुर सा० ने बारह गणगौर के रास्ते का नाम **बालचन्द बैद मार्ग** रखने की घोषणा की। इसी मार्ग पर स्थित मकान में बालचन्दजी रहते थे।

—डॉ० भानावत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु चिकित्सालय में वार्ड का उद्घाटन

जयपुर : पशु क्रूरता निवारण समिति, जयपुर द्वारा न्यू कॉलोनी स्थित पशु चिकित्सालय में रुग्ण, अपाहिज, असहाय एवं लावारिस पशुओं की देखभाल एवं चिकित्सा के लिए एक वार्ड का निर्माण किया गया है। इसका उद्घाटन १२ मई को पशुपालन राज्य मंत्री श्री श्रीराम गोटेवाला ने किया। समारोह की अध्यक्षता न्यायाधिपति श्री गुमानमल लोढ़ा ने की। समिति के मंत्री डॉ० गोकुलसिंह महनोत ने समिति द्वारा पशु क्रूरता निवारण की दिशा में किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। डॉ० भानावत ने सभ्यता के विकास में मानव और पशु के सहचारित्व की चर्चा करते हुए इन मूक प्राणियों के प्रति समाज के दायित्व पर प्रकाश डाला। समिति के प्रेरणा स्रोत श्री डी० आर० मेहता ने इस दिशा में किये जाने वाले कार्यों की भूमिका प्रस्तुत की। श्री चुन्नीलाल लालवाणी ने रुग्ण पशुओं के लिए घास की व्यवस्था अपनी ओर से करने की घोषणा करते हुए ५० रु० मासिक के सदस्य बनने की अपील की। समिति के अध्यक्ष श्री गुमानमल चोरड़िया ने धन्यवाद दिया। समारोह का संयोजन संयुक्त मंत्री श्री प्रकाशचंद्र मेहता ने किया।

संक्षिप्त समाचार

उदयपुर : राजपुरा दरीबा माइन्स में स्थानीय जैन संघ की ओर से १९ अप्रेल को 'महावीर और आधुनिक संदर्भ' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ० प्रेमसुमन जैन व डॉ० महेन्द्र भानावत ने अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षता दरीबा खान के महाप्रबंधक श्री एन० सी० जैन ने की। मंत्री श्री सुभाषचन्द्र जैन ने संघ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

उमरी : यहाँ वाणीभूषण श्री रतन मुनिजी के सान्निध्य में स्व० आचार्य श्री जयमलजी म० सा० का स्मृति दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री पूर्णचन्द्र दरड़ा ने किया।

कुण्डेरा : यहाँ आचार्य श्री नानेश के शिष्य श्री महेन्द्र मुनि एवं वयोवृद्ध श्री गोविन्द मुनि के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पर वर्षीतप करने वाली २७ बहिनों का सम्मान किया गया।

जोधपुर : स्व० मरुधर केसरीजी की भावना के अनुरूप मरुधर केसरी गुरु सेवा समिति एवं सोजत स्था० जैन संघ की ओर से जैन कांफ्रेंस की राजस्थान शाखा के अध्यक्ष श्री रिखबराजजी कर्णावट को 'समाज प्रेम पद्माकर' की उपाधि से विभूषित किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकोला : राकेट प्रकाशन की ओर से 'दहेज से समाज पतन : कारण और समाधान' विषय पर हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई है। १०००, ७५०, ५०० रु० के क्रमशः तीन पुरस्कार। २०० रु० के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। अन्तिम तिथि २८-७-८४। निबन्ध के साथ अपना छायाचित्र व प्रवेश शुल्क ५.०० रु. पोस्टल आर्डर से भेजें—राकेट प्रकाशन, **आकोला**-३१२ २०५ (चित्तौड़गढ़) राज०।

भवानीमंडी : निकटवर्ती गाँव पचपहाड़ में जन्मे श्री प्रवीण लोढ़ा (सुपुत्र थी रूपचन्द लोढ़ा) ने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित विद्यालय स्तर की निबन्ध प्रतियोगिता में इन्दौर के शासकीय उ० मा० विद्यालय के छात्र के रूप में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

कानोड़ : यहाँ स्थानीय जवाहर विद्यापीठ की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इसमें वर्तमान संचालक श्री नाथूलाल जारोली की सेवानिवृत्ति पर श्री सोहनलाल धींग को संचालक एवं व्यवस्था सचिव के पद पर सर्वानुमति से निर्वाचित किया गया। श्री धींग संस्था के पुराने कार्यकर्त्ता हैं और विगत २२ वर्षों से आंग्ल भाषा के व्याख्याता पद पर कार्य कर रहे हैं। श्री जारोली को मंत्री पद दिया गया है। जवाहर विद्यापीठ राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी आदिवासी पिछड़े अंचल की एक मात्र निजी क्षेत्र की शिक्षण संस्था है, जिसका विगत ४५ वर्षों का शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का अपना महत्त्वपूर्ण रेकार्ड है।

—विपिन जारोली

नेपाल : नेपाल जैन परिषद् द्वारा भगवान महावीर जयंती का भव्यतम कार्यक्रम, गोलछा ज्ञान मंदिर, काठमांडू में अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। इस पावन अवसर पर नेपाल जैन परिषद् द्वारा प्रमुख वक्ता के रूप में, भारत से डॉ० शोभनाथ पाठक को आमंत्रित किया गया। समारोह की अध्यक्षता नेपाल जैन परिषद् के अध्यक्ष श्री खेमचंद चोरड़िया ने की तथा कार्यक्रम का संचालन श्री हुलासचंद गोलछा ने किया।

इन्दौर : श्री गुजराती स्थानकवासी जैन मण्डल, इन्दौर के कार्यकारिणी के चुनाव संवत २०४०-४१ से २०४१-४२ तक के लिए हुए। जिसमें अध्यक्ष श्री भाईलाल भाई तुरखिया, उपाध्यक्ष श्री बाबूभाई तुरखिया, सचिव श्री चिमनलाल गाँधी व कोषाध्यक्ष श्री रमेशभाई राणपुरिया चुने गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० जैन क्रांति परिषद् की स्थापना

जयपुर : जैन धर्म की रक्षा व जैन समाज की एकता व विकास की दृष्टि से यहाँ अ० भा० जैन क्रांति परिषद् की स्थापना की गई है। दैनिक 'जैन समाज' के प्रधान सम्पादक श्री जिनेन्द्रकुमार परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष मनोनीत किये गये हैं। परिषद् के मुख्यालय का पता है—श्री जिनेन्द्रकुमार, अध्यक्ष—अ० भा० जैन क्रांति परिषद, दैनिक जैन समाज, जयपुर—३०२ ००३।

शोक-श्रद्धांजलि

प्रमुख कवि एवं विचारक डांगीजी का निधन

बड़ी सादड़ी : वयोवृद्ध साहित्यकार और प्रसिद्ध कवि श्री सूरजचन्दजी सत्यप्रेमी डांगीजी का २७ मई, १९८४ को असामयिक निधन हो गया। आप जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी के स्नातक थे। जैन संत-सतियों के अध्यापन में आपने अपने जीवन का अधिकांश समय बिताया। आप पाथर्डी, शोलापुर, वर्धा, बम्बई आदि स्थानों पर वर्षों रहे। आप प्रत्युत्पन्न मति आशुकवि, सरस वक्ता और मौलिक विचारक थे। आपकी प्रतिभा बहुमुखी थी। आगम, काव्य, साहित्य, ज्योतिष, रामायण, महाभारत आदि का आपका गहरा अध्ययन था। गत वर्ष राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा कानोड़ में आयोजित एक विशेष समारोह में साहित्यिक सेवाओं के लिए आपको सम्मानित किया गया था। इसी ७ फरवरी को अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् की ओर से आपके निवास स्थान पर जाकर आपको सम्मान राशि के प्रतीक रूप में ५०० रु० का ड्राफ्ट परिषद् के महामन्त्री ने भेंट किया था। बातचीत के दौरान आपने बताया कि उन्होंने जैन तत्त्वों को सरल सरस हिन्दी-राजस्थानी भाषा में पद्यबद्ध किया है। 'जिनवाणी' के आप प्रारंभिक लेखकों व कवियों में थे। आपकी सैंकड़ों कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। आपके निधन से समाज का एक गंभीर तत्त्व चिन्तक और प्रबुद्ध विचारक उठ गया है। आपके अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित कर समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—डॉ० नरेन्द्र भानावत

मालेगाँव : समाज के प्रतिष्ठित श्रावक, धार्मिक शिक्षा प्रेमी, विशिष्ट दानी, सरल स्वभावी खीचन निवासी श्री किशनलालजी मालू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संथारापूर्वक ६-५-८४ को असामयिक निधन हो गया। आपके विविध प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान को धार्मिक एवं नैतिक संस्कार जागृत करने की दृष्टि से आप धार्मिक शिक्षण शिविर लगाने में तन, मन, धन से पूरा सहयोग करते थे। जरूरतमन्द भाइयों की आर्थिक मदद करने में भी आप सदैव तत्पर रहते थे। आपने मालू चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की थी। आपका जीवन सरल, सादा व सात्विक था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। श्री साधुमार्गी जैन ज्ञान श्रावक संघ, जोधपुर, मालेगाँव, पाली, मद्रास आदि जैन संघों ने आपके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है।

मन्दसौर : यहाँ के प्रतिष्ठित वयोवृद्ध श्रावक श्री रतनलालजी डांगी का ९२ वर्ष की आयु में २-५-८४ को निधन हो गया। आप जीवन्तता व कर्मठता की प्रतिमूर्ति थे। 'सादा जीवन-उच्च विचार' के धनी थे। गरीब व असहाय के प्रति सदैव संवेदनशील रहे। आप अपने जीवन में सामाजिक रूढ़ियों यथा मृत्युभोज, जूठन छोड़ना आदि के लिये संघर्षशील रहे। आपकी भावना के अनुरूप ही आपके परिवार ने मृत्युभोज न करके १६ मई को कुष्ठ रोगियों के भोजन का तथा 'आज के संदर्भ में मृत्युभोज' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया।

जयपुर : यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक एवं रत्न व्यवसायी श्री सरदार-मलजी नवलखा का ६५ वर्ष की आयु में २६-४-८४ को निधन हो गया। आप आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के अनन्य भक्त थे। आप भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

अजमेर : धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती तेजकँवर कोठारी धर्मपत्नी श्री रूपराजजी कोठारी का ५८ वर्ष की आयु में ८-५-८४ को असामयिक निधन हो गया। आपका जीवन सरल, सादा एवं तप त्यागपूर्ण था।

जोधपुर : श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नी श्री फतेहमलजी चौरड़िया का १०-५-८४ को असामयिक निधन हो गया। आप सेवाभावी धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। आपने अपने दोनों नेत्र दान कर दिये थे जिसका मरणोपरान्त सफल प्रत्यारोपण हुआ और दो व्यक्तियों को ज्योति प्राप्त हुई।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकविह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

'जिनवाणी' आजीवन सदस्यता २०१) रु० प्रत्येक

सदस्यता संख्या :

२०६५ श्री पारसमलजी गोठी, मद्रास

२०६६ श्री सुरेशचन्दजी सूरजमलजी बोरदिया, अहमदाबाद

२०६७ मेसर्स कान्तीलाल एण्ड कम्पनी, अहमदाबाद

२०६८ श्री परशुरामप्पाजी सोमपुर, गजेन्द्रगढ़

२०६९ श्री भंवरलालजी सुराणा, जोधपुर

२०७० मेसर्स घेवरचन्द अशोककुमार, अहमदाबाद

२०७१ श्री पोपटलालजी नवलखा, पूना

२०७२ श्री हनुमान प्रसादजी जैन, बजरिया (सवाईमाधोपुर)

'जिनवाणी' को भेंट एवं सहायता

१०१) मेसर्स चम्पालाल शान्तीलाल दफ्तरी, रायचूर
श्री चम्पालालजी दफ्तरी के सुपुत्र चि० प्रकाश का शुभ विवाह हैदराबाद निवासी स्व० श्री मिश्रीलालजी कटारिया की सुपुत्री सौ० कां० सन्तोष के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१) मेसर्स मालू ब्रादर्स, मालेगाँव
हमारे पूज्य श्री किशनलालजी मालू का संथारा सहित समाधिमरण हुआ, उनकी पुण्य स्मृति में समस्त मालू परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

१०१) श्रीमान् के० सायरमलजी सा० चोरडिया, मद्रास
अपने सुपौत्र (सुपुत्र श्री राजेन्द्रकुमारजी सा० चोरडिया) होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५१) मेसर्स जेवन्तराज मिश्रीमल कटारिया, हैदराबाद
स्व० श्री मिश्रीमलजी कटारिया की सुपुत्री सौ० कां० सन्तोष का शुभ विवाह चि० प्रकाशचन्दजी (सुपुत्र श्री चम्पालालजी दफ्तरी) रायचूर निवासी के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न होने के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५१) श्री हेमकुमारजी संचेती, ग्वालियर
सुपुत्री सौ० कां० हेमानी के शुभ विवाह के उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

५१) श्री रूपराजजी सा० कोठारी, अजमेर
धर्मपत्नी श्रीमती तेजकंवर कोठारी का स्वर्गवास दि० ८-५-८४ को सायंकाल हो गया था जिनकी पुण्य स्मृति में सादर भेंट ।

५१) श्री सम्पतराजजी शान्तिलालजी जैन, बैंगलोर
श्री पारसमलजी खींवसरा की सुपौत्री (सुपुत्री श्री सम्पतराजजी खींवसरा) राजकुमारी का शुभ विवाह चि० शान्तिलालजी सा० (सुपुत्र श्री पन्नालालजी बोहरा, चन्नपटन्ना) के साथ दि० ९-५-८४ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

५१) मेसर्स कुसुमकुमार सेठिया एण्ड सन्स
श्री माणकचन्दजी सेठिया बीकानेर निवासी के सुपौत्र महेन्द्र कुमार (सुपुत्र श्री कुसुमकुमार सेठिया) का शुभ विवाह सौ० कां० उषारानी (सुपुत्री श्री बी० एफ० देवराजजी लूंकड़) के साथ दि० ४-५-८४ को सुबह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

११) संयोजक, श्रीमान् बाबूलालजी जैन, बम्बई
अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची प्रकाशन परिषद्, बम्बई की ओर से सप्रेम भेंट ।

११) श्री ज्ञानचन्दजी कांकरिया, जोधपुर
पूज्य पिताजी श्री विजयराजजी सा० कांकरिया की चिरस्मृति में सप्रेम भेंट ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

साहित्य प्रकाशन-आजीवन सदस्यता ५०१) रु०

सदस्य संख्या

१४९ श्री प्रकाशचन्दजी मेहता सी. ए., जयपुर
१५० श्री बन्शीलालजी सा. बोथरा, जलगांव
१५१ श्री सागरमलजी सा. भण्डारी, जयपुर
१५२ श्री तेजराजजी सा. भण्डारी, जयपुर
१५३ श्री बजरंगलालजी जैन, सवाईमाधोपुर
१५४ श्री मणिकुमारजी बोथरा, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल भेंट एवं सहायता

१०१) श्री कपूरचन्दजी पारसमलजी जैन, भोपालगढ़
सौ० कां० सरोज का शुभ विवाह चि० लालचन्दजी (सुपुत्र श्री मुन्नालालजी, आगोलाई) के साथ ४ मार्च ८४ को एवं चि० महावीर का शुभ विवाह सौ० कां० प्रीति (सुपुत्री श्री रमेशकुमारजी लूंकड, जलगांव) के साथ १३ अप्रेल, ८४ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१) श्री परशुरामप्पाजी सोमपुर, गजेन्द्रगढ़
अपने पुत्र श्री हरीदासजी यलप्पा एवं सु० श्री निर्मलाजी सुराणा, जोधपुर की दि० ७-४-८४ को भागवती दीक्षा होने के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ को भेंट एवं सहायता

१०१) श्री परशुरामप्पाजी सोमपुर, गजेन्द्रगढ़
अपने पुत्र श्री हरीदासजी अलप्पा एवं सुश्री निर्मलाजी सुराणा, जोधपुर की दि० ७-४-८४ को भागवती दीक्षा होने के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

५१) श्री लाभचन्दजी पुत्र श्री मूलचन्दजी बैद, वरदा स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

प्रवेशार्थियों के लिये स्वर्णिम अवसर

भोपालगढ़—शिक्षा जगत् में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने वाली एक मात्र संस्था श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय एवं छात्रालय ग्रामीण आंचल में अवस्थित है। यहाँ वाणिज्य और विज्ञान (गणित) विषयों में छात्रों के लिये कक्षा दशम तक के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ के परीक्षा परिणाम सदैव शत प्रतिशत के लगभग रहते हैं। व्यावहारिक शिक्षण के साथ नैतिक एवं धार्मिक (पाथर्डी बोर्ड–अहमदनगर द्वारा संचालित पाठ्यक्रम परीक्षा) शिक्षण का सुन्दर समन्वय है। कम से कम शुल्क में भोजन, आवास, निवास, पानी, प्रकाश आदि की सुविधा छात्रालय में उपलब्ध हैं।

नूतन वर्ष 2 जुलाई से नई आशाओं के साथ प्रारम्भ हो रहा है। ससुज्ज्वल भविष्य के लिये आकांक्षी होनहार जैन छात्र, छात्रालय व विद्यालय में प्रवेश के लिये 30 जून तक आवेदन कर सकते हैं। सामायिक उपकरण व दैनिक आवश्यकता वाला सामान साथ लायें।

कस्तूर चन्द्र बाफना
मंत्री, श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, (जोधपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुण्य तिथि (ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी) पर श्रद्धांजलि

पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० सा०

क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म० सा० का जन्म वैशाख शुक्ला पंचमी सं० १८३४ में कूड़ गाँव (राजस्थान) में माता हीरांदे की रत्नकुक्षि से हुआ था। बड़जात्या श्री लालचंद जी सरावगी आपके पूज्य पिताश्री थे। आपके तीन अन्य भाई थे। नागौर के बड़जात्या श्री गंगारामजी के पुत्र नहीं होने के कारण आप उनके दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किये गये।

पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म० सा० के संसर्ग में आने से आपने चौदह वर्ष की अल्पायु में सं० १८४८ वैशाख शुक्ला पंचमी को मण्डौर (जोधपुर) की नागादड़ी स्थान में दीक्षा अंगीकार की। तीन वर्ष के अल्पकाल में उत्कृष्ट चारित्र पर्याय का पालन करते हुए विनयपूर्वक ज्ञान सम्पादन कर वक्तृत्व एवं सुमधुर काव्य कला से जन-मन को आकर्षित करने लगे। फलस्वरूप आपके वैराग्य में विरोध उत्पन्न करने वाली माताजी भी भक्तानुरागिनी बनकर आपके नागौर पधारने की पुनः पुनः प्रार्थना करने लगी। सं० १८५४ में छः वर्ष के दीक्षा काल में आप गुरुदेव के विचार-विमर्श में सहायक बनकर क्रियोद्धार जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य में सहयोगी बने। आषाढ़ कृष्णा द्वितीया को बड़लू (भोपालगढ़) के बाग में चौदह मुनि रत्नों के साथ स्व-पर कल्याण के लिये क्रिया कर उद्धार किया। सं० १८५८ में पूज्य गुरुदेव श्री गुमानचन्द्रजी म० सा० का मेड़ता में स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् आप चाचागुरु पूज्य श्री दुर्गादासजी म० सा० के साथ गण-संचालन का कार्य करते रहे। पूज्य श्री दुर्गादासजी म० सा० की गंभीर वत्सलता और आपके सहयोग से चतुर्विध संघ का कार्य व्यवस्थित चलता रहा।

सं० १८८२ में जोधपुर में मृगसर शुक्ला त्रयोदशी को चतुर्विध संघ ने आपको आचार्य पद प्रदान किया। ज्ञान क्रिया युक्त साधक जीवन का ही यह प्रभाव है कि सं० १८८२ से १९०२ तक के शासनकाल में १२ भव्य आत्माओं को चारित्र धर्म की दीक्षा प्रदान की। आपने अपने शासनकाल में किसी गण-गच्छ के निन्दा-खण्डन किये बिना ही कुशलवंश की लोकप्रियता को पूर्व से पश्चिम तक फैलाने में सफलता प्राप्त की। जोधपुर के राजदीवान मूथा लक्ष्मीचन्दजी जैसे भक्तों को जैन धर्म के अनुयायी ही नहीं अपितु व्रतसम्पन्न दृढ़ श्रद्धालु श्रावक बनाने में भी आपने सफलता प्राप्त की। जोधपुर में सं० १९०२ में ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी को संथारे के साथ आपने देहोत्सर्ग किया।

- आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रवचन से श्री ब्रजमोहन जैन द्वारा संकलित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचनामृत :

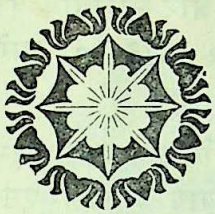

स्वाध्याय से लाभ

☐ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

स्वाध्याय से ज्ञानावरण कर्म का क्षय होता है। वाचना से ज्ञानावरण आदि कर्म की निर्जरा होती है और सूत्र की वाचना से आशातना टलती है। विधिपूर्वक शास्त्र की वाचना देने से श्रुतज्ञान रूप तीर्थ धर्म का अवलम्बन करने से महती कर्म निर्जरा और महान् संसार का अन्त होता है। वाचना करने वाले को पृच्छना करनी पड़ती है। पृच्छना करने से सूत्र, अर्थ और तदुभय त्रुटियां दूर होती और सूत्रादि की शुद्धि होती है तथा अध्ययन विषय की विविध-आकांक्षाएँ जो मन को अस्थिर करती हैं, कांक्षा मोहनीय के नाश से नष्ट हो जाती हैं। स्थिरीकरण के लिये पठित विषय का परावर्तन किया जाता है। परावर्तन से भूले हुए अक्षर याद होते और विशेष प्रकार के क्षयोपशम से पदानुसारी आदि व्यंजनलब्धि प्राप्त होती है।

चिंतनरूप अनुप्रेक्षा भी स्वाध्याय है। चिन्तन आयुकर्म को छोड़, सात कर्म प्रकृतियों को दृढ़ बन्धन से शिथिल बन्धन वाली करता है, दीर्घकाल की स्थिति को छोटी करता है और तीव्र रस को घटाकर मन्द रस करता है। बहु-प्रदेशी प्रकृतियों को अल्प प्रदेश वाली कर देता एवं आयुकर्म कभी बांधता, कभी नहीं भी बांधता है। असाता और कर्कश वेदनीय कर्म का उपचय नहीं करता। चिन्तन करने वाला अनादि-अनन्त, दीर्घमार्ग वाले चतुर्गतिक संसार कान्तार को अल्प समय में ही पार कर लेता है।

धर्म कथा से कर्मों की निर्जरा होती और प्रभावशाली कथा से शासन की प्रभावना होती है। शासन की प्रभावना करने वाला भविष्य के लिये निरन्तर भद्ररूप शुभानुबन्धी कर्म का संचय करता है।

श्रमण–चर्या में स्वाध्याय :

जिस प्रकार प्रतिलेखन, प्रमार्जन, प्रतिक्रमण, वैयावृत्यकरण और ध्यान नियत कर्म हैं, ऐसे स्वाध्याय भी श्रमण वर्ग का नियत कर्म है। सदाचारी अध्याय में कहा गया है कि प्रातःकाल प्रतिलेखन करके साधु गुरु से विनयपूर्वक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पृच्छा करे—'भगवन् मुझे अब क्या करना चाहिये, वैयावच्च या स्वाध्याय जो करना हो, उसके लिये आज्ञा चाहता हूँ ? (२६/९)

गुरु सेवा में नियुक्त करें तो बिना ग्लानि के सेवा करे और स्वाध्याय की अनुमति प्रदान करें तो सर्व दुःखमोचक स्वाध्याय करें (उ० ३६/९-१०) आगे कहते हैं—"पढ़मं पोरिसि सज्जायं, बीयंझाणं झियायइ ।"

प्रथम प्रहर में स्वाध्याय करना और दूसरे में ध्यान-अर्थात् अर्थ का चिन्तन करना, तीसरे प्रहर भिक्षा और चौथे प्रहर में फिर स्वाध्याय करना । ऐसा रात्रि के प्रथम, द्वितीय एवं चतुर्थ प्रहर के लिये समझना । केवल नियत कर्म बता के ही नहीं छोड़ा, किन्तु स्वाध्याय के समय स्वाध्याय नहीं करने के लिये प्रतिक्रमण में आलोचन भी किया गया है । जैसे—'पडिक्कमाणि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए ।" (आव०) चारों काल स्वाध्याय नहीं किया हो, उसका प्रतिक्रमण करता हूँ ।

स्वाध्याय की विधि :

साधु लोग अपना निराबाध स्वाध्याय होता रहे, इसके लिये स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय भूमि की गवेषणा करते और वहां विधिपूर्वक स्वाध्याय किया करते थे । शास्त्र पाठ मंगल और देवाधिष्ठित माना गया है । इसके लिये उसका अध्ययन करने के पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि आसपास कहीं अस्थि या कलेवर आदि तो नहीं है । यदि अस्वाध्याय की कोई वस्तु हो तो उसे मर्यादित भूमि से बाहर डालकर गुरु को निवेदन कर देना चाहिये और फिर गुरुजी की आज्ञा पाकर उपयोगपूर्वक अध्ययन करना—यह सामान्य विधि है ।

प्राचीन समय में प्रथम प्रहर में सूत्र का स्वाध्याय और द्वितीय प्रहर में अर्थ का चिंतन किया जाता था, इसलिये प्रथम सूत्र पौरुषी और दूसरी अर्थ पौरुषी कही जाती थी । जैसा कि कहा है—"उस्सग्गेणं पढ़मा, इघाड़िया सुत्त पोरिसी भणिआ । विइआण अत्थ बिसबा, निद्दिट्ठा दिट्ठसमएहिं" विधिपूर्वक श्रुत का आराधन करने के लिये आठ आचार बताये गये हैं—(१) जिस शास्त्र का जो काल हो उसको उसी समय पढ़ना कालाचार है । (२) विनय पूर्वक गुरु को वन्दन कर पढ़ना विनयाचार है । (३) शास्त्र एवं ज्ञानदाता के प्रति बहुमान होना बहुमान आचार है । (४) तप-आयंबिल या नीबी करके पढ़ना उपधान आचार है । (५) शब्दों में ह्रस्व-दीर्घादि का शुद्ध आचरण करना व्यंजनाचार है । (६) सम्यक् अर्थ की विचारणा अर्थाचार है । (७) मूल एवं अर्थ दोनों का सम्यक् उच्चारण और प्ररूपण करना तदुभयाचार है । (८) कल्याणार्थियों को अकाल और अस्वाध्याय को बचाकर विधिपूर्वक स्वाध्याय करना चाहिये । यह उभय लोक में मंगलकारी है ।□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधना और समाज-सेवा

□ आयोजक **श्री चाँदमल कर्णावट**

साधना और समाज-सेवा दो विरोधी सम्प्रत्यय माने जाते हैं। यह सामान्य धारणा बन गई है कि साधक आत्म कल्याण का पथिक होने से समाज-सेवा के कार्य कैसे हाथ में ले सकता है। जैन धर्म को निवृत्ति प्रधान धर्म मानकर इसमें तो उक्त धारणा अधिक बद्धमूल बन गई है परन्तु यह एक विचारणीय विषय है। स्वयं तीर्थंकर भगवान लोककल्याण के लिए अपने अर्जित ज्ञान और आनन्द का वितरण करते हैं। शान्ति का राजमार्ग प्रशस्त करते हुए वे जनमानस को सम्यग् दिशाबोध कराते हैं। शास्त्र का कथन के 'सव्व जगजीव रक्खण दयट्ठयाए भगवया पावयाणं सुकहियम्' अर्थात् स्वयं तीर्थंकर प्रभु अपना सम्यग् प्रवचन संसार के समस्त जीवों के कल्याण के लिए फरमाते हैं।

ठाणांग सूत्र में दस प्रकार की सेवा का विधान है जिसमें संघ सेवा को भी महत्त्व दिया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के उनतीसवें अध्याय में साधर्मी ग्लानि, रोगी, आदि की सेवा का उल्लेख मिलता है। इस सेवा का फल बताते हुए तीर्थंकर गोत्र उपार्जन का श्रेष्ठ फल प्राप्त करना बतलाया है।

साधना विभाग के साधकों की इस विषय पर बहुत जिज्ञासा रही और मेरी अपनी भी। परन्तु ऐसा प्रसंग नहीं बन सका कि समाज के योग्य साधक और प्रबुद्ध चिन्तक एक स्थान पर मिलकर विचार-विमर्श कर सकें। यही कारण बना इस परिचर्चा के प्रकाशन का। इस परिचर्चा में पाँच विद्वानों ने अपनी विचारधारा प्रस्तुत की है जो आगमानुकूल होने के साथ चिन्तनपूर्ण एवं बहुमूल्य है। आशा है साधक एवं अन्य सभी समाजसेवी इससे यथेष्ट लाभ उठायेंगे। परिचर्चा के लिए निम्नांकित चार प्रश्न इन विचारकों के पास भेजे गए थे :—

प्रश्न १. साधना की आपकी क्या अवधारणा है ?

प्रश्न २. सेवा का साधना में क्या और कैसा स्थान है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न ३. एक स्वस्थ एवं चरित्रनिष्ठ समाज के निर्माण में साधकों की क्या भूमिका होनी चाहिए ?

प्रश्न ४. साधकों के योग्य समाजसेवा के कौन-कौन से क्षेत्र हो सकते हैं ?

इन प्रश्नों के उत्तरों को नीचे प्रकाशित किया जा रहा है।

१. श्री भँवरलाल कोठारी, बीकानेर

श्री कोठारी एक साधनाशील व्यक्ति होने के साथ प्रबुद्ध चिन्तक भी हैं। सम्प्रति श्री अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष हैं।

१. साधना की अवधारणा :

मैं साधना को व्यावहारिक जीवन का एक जरूरी और जुड़ा हुआ अंग मानता हूँ। साधना को जीवन से जुदा नहीं किया जा सकता। साधनाहीन जीवन कुण्ठाग्रस्त, क्लेशयुक्त और टूटा हुआ जीवन है। वह दुःख, कष्ट व रोग का घर है। साधना का संपुट लगते ही जीवन खिल उठता है। विषय-विकारों का जंजाल टूटने लगता है और जीवन सुखी, सहज व स्वस्थ बन जाता है।

साधना से मेरा तात्पर्य है—समभाव और द्रष्टाभाव की साधना। यही सामायिक और प्रतिक्रमण की साधना है। साधना बाहर से भीतर की तरफ लौटना है। विभावों से स्वभाव में स्थित होना है। विषय-विकार-विषमता जनित तनावों व दबावों के असंतुलन से संतुलन में आना है। दोष दृष्टि मिटाकर गुणदृष्टि जगाना है। गुण समर्पित होना है। अपनी अन्तर शुद्धि व अन्तर शोधन कर निष्कलुष, निर्मल, निर्वैर बनना है। प्राणीमात्र के साथ तादात्म्य स्थापित कर, मैत्री भाव को प्रस्फुटित करना है। दीन, दुःखी व पीड़ितों के प्रति करुणा व संवेदनशीलता का निर्झर बहाना है।

२. सेवा का साधना में स्थान :

सेवा साधना की फलश्रुति है। साधना एकांगी नहीं होती। वह व्यक्तित्व को पूर्णता व समग्रता प्रदान करती है। साधक केवल अपने तक ही सीमित नहीं रहता। सर्व व्यापक बनता है। मैत्री, करुणा, अनुकंपा आदि भावों से वह चराचर जगत के साथ जुड़ता है। दूसरे की पीड़ा, वेदना उसकी अपनी पीड़ा-वेदना बन जाती है। उसकी संवेदना जागती है। उसके अन्तर से पीड़ित जनों के प्रति मंगल भावों का प्रवाह उमड़ पड़ता है। वह चाहे धन और तन के बाह्य साधनों से उनकी सुश्रूषा नहीं कर सके पर मन के अन्तरस्रोत से उनकी पीड़ाओं का क्षण-क्षण प्रक्षालन करता है। इसीलिये जैन साधना विधि में तप के बारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेदों में सेवा अथवा वैय्यावृत्य को नवाँ स्थान दिया गया है। इसे श्रेष्ठ आभ्यंतर तप माना गया है।

मुक्तता के आरोहण क्रम में साधना के साथ सेवा का विशिष्ट स्थान है। सेवा वस्तुतः साधना का विस्तार है। तीर्थंकर साधना की चरम स्थिति तक पहुँचकर लोक मंगल हेतु निस्पृह होकर प्राप्त प्रसाद का सर्वत्र वितरण करते हैं।

सेवा साधक का परमार्थ की ओर प्रयाण है। समाज के ऋण से उसकी उऋणता है। पूर्ण उऋण होकर ही सच्चे अर्थों में पूर्ण मुक्त हुआ जा सकता है।

३. स्वस्थ व चरित्रनिष्ठ समाज के निर्माण में साधक की भूमिका :

स्वस्थ व चरित्रवान व्यक्ति ही स्वस्थ व चरित्रनिष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं। साधक के लिए स्वस्थ व सच्चरित्र होना आवश्यक है। स्वस्थ होकर ही मुक्त हुआ जा सकता है। इसलिए तप अथवा निर्जरा के छह बाह्य भेदों में प्रथम चार मूलतः स्वस्थता के ही नियम हैं।

इसके अतिरिक्त स्व में स्थित रहना ही स्वस्थ रहना है। विषयकषायों में लिप्तता अस्वास्थ्यकर है। रोगजनक है, हिंसा, द्वेष, कामवासना आदि विभावों से शरीर में विकृतियाँ पनपती हैं। कषायों की जितनी तीव्रता होती है रोगाणुओं की देह में उतनी ही व्यापकता हो जाती है। शरीर रोग का घर बन जाता है।

जब विषयी, विकारी, रोगी व विग्रही व्यक्ति समाज पर छा जाते हैं तो समाज के जीवन में भी हिंसा, द्वेष, छल, कपट, अनाचार, व्यभिचार का वर्चस्व बन जाता है। इसलिए स्वस्थ व सम्यक् समाज रचना हेतु यह आवश्यक है कि सम्यक् जीवन वाले अन्तरमुखी साधक समाजोन्मुखी बनें। अपने स्वभाव और संतुलन से अहम्-मम और राग-द्वेष जनित विषमता व असंतुलन के प्रलयंकारी प्रवाह को रोकें। सेवा प्रकल्पों के माध्यम से समाज में सहकार व सदाचार का वायुमंडल सृजित करें। तभी स्वस्थ व चरित्रनिष्ठ समाज का निर्माण संभव है।

४. साधकों के लिए समाज सेवा के प्रकल्प :

सेवा के प्रकल्प असंख्य और अनगिनत हैं। उसका क्षेत्र आकाश की तरह व्यापक और असीम है। करुणा, अनुकंपा, मैत्री व मंगलभाव से किया गया प्रत्येक कार्य सेवा कार्य ही है। वहाँ स्व—पर का भेद ही नहीं है। वह अपने में सबको और सबमें अपने को प्रतिबिम्बित देखता है। कबीर के शब्दों में—'साधक का घूमना-फिरना भी भगवत् परिक्रमा है, सोना दंडवत है, प्रत्येक कर्म सेवा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा साधक का सहज स्वभाव है, इसलिए साधक के सारे कर्म सेवा प्रकल्प बन जाते हैं।

२. श्री उमरावमल ढड्ढा, अजमेर

सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के अध्यक्ष श्री ढड्ढा एक साधनाशील और गहन विचारक हैं। एक वयोवृद्ध साधक और चिन्तक के विचार प्रस्तुत परिचर्चा में भले ही संक्षिप्त दिये गये हैं तथापि बहुत सारगर्भित और चिन्तनीय हैं।

१. साधना की अवधारणा :

मैं तो केवल इतना मात्र जानता हूँ कि मनुष्य जो चाहता है वह उसे मिलता है। संसार की साधना करेगा उसे संसार मिलेगा जिसमें सुख-दुःख दोनों मिलेंगे। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सुख आएगा तो दुःख भी आएगा। अगर व्यक्ति दुःख नहीं चाहता है तो उसे सुख को भी छोड़ना पड़ेगा, और यहीं से आरम्भ होगी साधना जो वैयक्तिक होगी।

२–४. सेवा का साधना में स्थान एवं चरित्रनिष्ठ समाज-निर्माण में साधकों की भूमिका :

सुख-दुःख की अनुभूति से ज्योंही वह (साधक) हटने लगेगा तो जीवन में सरसता के लिये और कोई विकल्प ही नहीं रहेगा। इस मनःस्थिति में ही वह समाज-सेवा में सफल हो सकेगा।

३. श्री श्रीचन्द गोलेछा, जयपुर

श्री गोलेछा एक बहुअध्ययनशील स्वाध्यायी एवं अनुभवशील विद्वान हैं। उन्होंने अपना गम्भीर चिन्तन संक्षिप्त एवं सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया है।

१. साधना की अवधारणा :

इच्छित वस्तु की प्राप्ति में प्रयत्न करना और बाधाओं का निराकरण करना साधना है। इच्छाएँ कई प्रकार की होती हैं :—भौतिक ज्ञान प्राप्त करने की, भौतिक भोगों की, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की तथा आध्यात्मिक सुख प्राप्त करने की। यहाँ हमारा अभिप्राय आध्यात्मिक साधना से है। साधना की मेरी अवधारणा संकल्प-विकल्प रहित जीवन तथा दुःख से परे का ऐसा जीवन जीने की है जिसका फल आगे किसी प्रकार का दुःख न हो अर्थात् जिससे निर्बाध सुख मिले। निर्बाध सुख में बाधक हैं हमारी योगोन्मुख इन्द्रियाँ, मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और देह। अतः इन पर नियन्त्रण करना अर्थात् भोगोन्मुखता से इनको विमुख करना यह साधना का ध्येय है।

२–३ साधना में समाज-सेवा का स्थान एवं समाज-निर्माण में भूमिका :

साधना पात्र के अनुसार ध्येय को ध्यान में रखते हुए भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होगी। साधारण गृहस्थ, क्योंकि परिवार में रहता है, वह अपनी शक्ति के अनुसार अपनी इन्द्रियों का नियंत्रण करते हुए परिवार व जिनके बीच में वह रहता है अपना जीवन इस तरह व्यतीत करेगा कि उन लोगों को किसी प्रकार का मानसिक व शारीरिक क्लेश न हो। पारिवारिक लोग हमसे दुःख-सुख में सहायक होने की आशा रखते हैं अतः हमारा भी कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उनके साथ सहानुभूति और सेवा का भाव रखें ताकि उन्हें क्लेश और क्षुब्धता न हो और हमारी स्वार्थपरता भी कम होगी।

४. साधकों के योग्य सेवा क्षेत्र :

अविवेकपूर्वक की गयी कोई भी क्रिया साधना में बाधक है। पारिवारिक सुख-दुःख देखकर आर्त्त होना या आनन्दित होना मोह अर्थात् आसक्ति उत्पन्न करता है। विवेकपूर्वक सेवा एवं सहानुभूति ही हमारे और उन लोगों के लिये उपयोगी है। यहाँ विवेक का अर्थ है संसार का स्वरूप समझकर अर्थात् जीवन में सुख-दुःख आते ही रहते हैं, इस समझ के साथ हम क्षुब्ध या हर्षित न हों।

४. श्री सम्पतराज डोसी

स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ (जोधपुर) के संयोजक श्री डोसी समाज के जाने माने एक अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायी हैं। उनका जीवन साधना से ओतप्रोत है। साधनामय जीवन की एक अच्छी मिसाल हैं श्री डोसी। नीचे उनके 'साधना और समाज-सेवा' सम्बन्धी विचार दिये जा रहे हैं :

१. साधना की अवधारणा :

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसके प्रत्येक कार्य में उसके व्यक्तिगत हिताहित के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक हिताहित भी निहित हैं। व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में अपेक्षा से समता एवं विषमता दोनों विद्यमान रहती हैं परन्तु साधना की आवश्यकता एवं उपयोगिता दोनों ही प्रकार के जीवन में ग्राह्य है। विषय-कषायों से सम्पूर्ण रूप से मुक्ति पा लेने के प्रयास का नाम ही साधना है। साधना के ध्यान, चिन्तन, मनन, सेवा एवं परोपकार आदि अनेक तरीके हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. साधना में समाज सेवा का स्थान :

अपने विचार एवं कार्यों से साधक स्वयं की साधना के साथ-साथ समाज की भी सेवा कर सकता है। समाज के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान में तथा कुरीतियों आदि के उन्मूलन में अपना सहयोग कर सकता है। हाँ, समाज सेवा में उसे इतना जरूर ध्यान रखने की आवश्यकता है कि समाज सेवा के किसी भी कार्य को करते हुए उस निमित्त से वह स्वयं विषय-कषाय की प्रवृत्ति से बचता रहे। इस हद तक की समाज सेवा को ही साधनामय जीवन में स्थान दिया जाना चाहिये। समाज सेवा के ऐसे कार्य जिनमें साधक स्वयं राग-द्वेष, वैर-विरोध आदि में उलझ जाय, समाज सेवा के नाम पर करने से न तो व्यक्ति स्वयं ही साधना कर सकेगा, न ही इससे समाज का कोई भी हित होगा। कहा भी है :—

काज करत पर घरन के, अपना काज बिगाड़ ।
सीत निवारे जगत की, अपनी झुंपड़ी बाल ।।

३. चारित्रनिष्ठ समाज निर्माण में साधकों की भूमिका :

साधक का साधनामय आदर्श जीवन ही समाज का सही मार्गदर्शन कर सकता है। आज के इस बुद्धिवादी युग में कथनी की बजाय करनी का ही वास्तविक प्रभाव पड़ सकता है। जब साधक पूर्णरूपेण निःस्वार्थ भाव से और विवेक दृष्टि से जो भी सेवा कार्य करेगा, तभी एक आदर्श समाज का निर्माण हो सकेगा।

४. साधकों के योग्य समाज सेवा के क्षेत्र :

साधक सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार, सत्साहित्य के लेखन एवं प्रकाशन, संगोष्ठियों के आयोजन के कार्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे स्वधर्मी वात्सल्य के अनेक प्रकार के कार्य अभावग्रस्त लोगों को आर्थिक सहयोग दिलवाना, विधवाओं, रोगियों आदि की शारीरिक सेवा सुश्रूषा जैसे अनेक कार्य भी साधकों के करने योग्य हो सकते हैं।

५. श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, जयपुर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान (जयपुर) के अधिष्ठाता श्री लोढ़ा जैन तत्त्वज्ञान एवं दर्शन के एक जाने माने विद्वान हैं। वे एक उच्च स्वाध्यायी भी हैं। इस परिचर्चा के संभागी के रूप में उन्होंने 'साधना एवं समाज सेवा' से सम्बद्ध बहुमूल्य विचार दिये हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. साधना की अवधारणा :

जिससे साध्य की उपलब्धि हो अर्थात् सिद्धि प्राप्त हो वह साधना है। ऐसी साधना साहित्य, विज्ञान, कला, व्यवसाय, शिक्षण आदि हर क्षेत्र में हो सकती है। परन्तु सच्ची व समीचीन साधना वह है जिससे ऐसी सिद्धि मिले कि फिर अन्य कुछ भी सिद्धि प्राप्त करना शेष न रहे, अर्थात् साधक कृतकृत्य हो जाय। ऐसी सिद्धि तभी संभव है जब साधक, साधना, साध्य ये तीनों पराश्रित व परावलंबी न हों। यहाँ 'पर' से अभिप्राय है जो सदा साथ न दे, सर्वत्र साथ न रहे, जिसका वियोग हो जाय और जो नष्ट हो जाय। इस दृष्टि से संसार की समस्त वस्तुएँ व शरीर भी 'पर' ही है। पर से संबंध विच्छेद होते ही पराधीनता मिट जाती है, और स्वाधीनता की प्राप्ति होती है। स्वाधीनता की प्राप्ति ही मुक्ति है। अतः संसार (लोक) और शरीर (देह) से असंग हो, संबंध-विच्छेद कर सदा के लिए लोकातीत, देहातीत हो जाने का पुरुषार्थ ही सच्ची साधना है। इस साधना से साधक, साधना व साध्य रूप त्रिपुटी मिटकर सिद्धि या सिद्धावस्था की उपलब्धि हो जाती है। इसे धार्मिक जन्म में मोक्ष (मुक्ति) कहते हैं। इस प्रकार मोक्ष (मुक्ति) प्राप्ति की साधना ही सम्यक् साधना है, सच्ची साधना है।

२. समाज-सेवा का साधना में स्थान व महत्त्व :

साधना का मुख्य लक्ष्य है मुक्ति। मुक्ति की प्राप्ति होती है पर के राग के त्याग से। राग की दो दशाएँ हैं :—(१) नवीन राग (बध्यमान राग) और (२) विद्यमान राग (सत्ता में स्थित व उदयमान राग)। इनमें से नवीन राग उत्पन्न न होने देने का उपाय हैं संयम या संवर अर्थात् वर्तमान स्थिति में समभाव से रहें, नयी चाह-कामना न करें, विषय सुख का भोग न करें, इन्द्रिय, तन, मन, वचन का संवरण करें। विद्यमान राग मिटाने का उपाय है उदीरणा में उदय को प्राप्त हुए राग का निरीक्षण व विश्लेषण कर उसकी सघनता का विघटन करें, उसे धुन-धुनकर सत्त्वहीन कर दें, निर्जीव कर दें। आगम की भाषा में इस धुनने की प्रक्रिया को तप या निर्जरा कहा है। अतः साधना में संवर और निर्जरा इन दोनों का ही मुख्य स्थान है, ये दोनों साधना के मौलिक अंग हैं।

साधना-क्षेत्र में समाज सेवा का स्थान राग निवारण के लिए है। इसमें सेवक और सेव्य दोनों का हित निहित है। जिस सेवा से राग-द्वेष आदि दोष घटते नहीं प्रत्युत बढ़ते हैं उस सेवा का साधना जगत में कोई स्थान नहीं है, वस्तुतः वह सेवा, सेवा नहीं है भोग है। ऐसी सेवा से बचने में ही हित है। सेवा तो भोग जो विकार या रोग रूप हैं उनसे मुक्ति दिलाने, अमरत्व, निजानंद या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षय सुख की प्राप्ति में खाद का काम करती है । इससे भोग-वासना, अविनाशी-परमात्मत्व की साधना में रूपान्तरित हो जाती है ।

यह प्राकृतिक विधान है कि जो साधक विद्यमान (उदय प्राप्त) राग को विवेक से नष्ट नहीं करताय । सेवा से नहीं गालता है वह विषय भोग में अवश्य प्रवृत्त होता है जो महा अनर्थकारी है, साधक के जीवन में जिसका कोई स्थान ही नहीं है । आशय यह है कि सेवा राग को गलाने का काम करती है । इस प्रकार वीतरागता की प्राप्ति में सेवा सहायक है, बाधक नहीं ।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । अतः मनुष्य का जीवन समाज के सहयोग के बिना एवं संसार की वस्तुओं के बिना नहीं चलता । दूसरे शब्दों में कहें तो मनुष्य किसी न किसी रूप में समाज व संसार का ऋणी है । उस ऋण से मुक्ति वह अपने को प्राप्त वस्तु, योग्यता, बल, सामर्थ्य को संसार व समाज की सेवा में लगाकर ही पा सकता है । सेवा किसी पर अहसान नहीं प्रत्युत ऋण मुक्ति का उपाय है । जिसके पास अपने नाम की कोई वस्तु नहीं है अर्थात् जो ममता रहित हो गया है उससे कोई ऋण चुकाने की आशा नहीं करता । परन्तु जब तक कुछ भी अपना है तब तक उस अपनी वस्तु को सेवा में समर्पण कर ऋण चुकाना आवश्यक है । इस दृष्टि से सेवा मानव मात्र का कर्त्तव्य है ।

३. स्वस्थ एवं चारित्रनिष्ठ समाज के निर्माण में साधकों की भूमिका :

एक स्वस्थ व चारित्रनिष्ठ समाज वह है जिसमें सबके अधिकार सुरक्षित रहें हो । यह तभी संभव है जब सब कर्त्तव्यनिष्ठ हों । कर्त्तव्यनिष्ठ वही होता है जिसमें सद्भाव हो, स्वार्थ भाव न हो, उदार हो । अतः जिस समाज में कर्त्तव्य-निष्ठता हो, सद्भावना हो, उदारता हो वही स्वस्थ, चारित्रनिष्ठ एवं सुन्दर समाज है । जिस व्यक्ति में सद्भाव है वह सुन्दर व्यक्ति है । जिस समाज में सद्भाव है, धर्म है वह ही स्वस्थ व सुन्दर समाज है । सद्भाव का भावनात्मक रूप सर्व हितकारी या सर्वात्मभाव भावना है । सद्भाव का क्रियात्मक रूप सद्व्यवहार या सेवा है ।

सुन्दर व्यक्ति से सुन्दर समाज का निर्माण होता है । कारण कि सद्भावना वाला व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले समाज के व्यक्तियों के साथ सद्भावमय व्यवहार करता है । उसके सद्व्यवहार से उन व्यक्तियों के हृदय में उसके प्रति सद्भाव स्वतः प्रकट होता है । फिर यह सद्भाव का बीज पनपता है, पल्लवित होता है जिसके पुण्य के पावन पुष्प व प्रेम के मधुर फल लगते हैं । इस प्रकार सुन्दर व्यक्ति से सुन्दर, स्वस्थ समाज का निर्माण होता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि अपनी प्राप्त वस्तु योग्यता, सामर्थ्य का कर्त्तव्यनिष्ठा, उदारता, प्रियतापूर्वक सेवा प्रवृत्ति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदुपयोग करना ही साधक के लिए स्वस्थ व चारित्रनिष्ठ समाज के निर्माण की भूमिका है, आधार है। कारण कि व्यक्ति और समाज के बीच वही संबंध है जो माली और वाटिका के बीच में है। व्यक्ति माली है और समाज वाटिका है। यदि माली वाटिका की सेवा नहीं करता है तो प्रकारान्तर से अपनी ही हानि करता है। इस प्रकार व्यक्ति संसार से प्राप्त सामग्री से समाज की सेवा नहीं करता है तो वह साधक नही है, भोगी है, परिग्रही है और स्वयं अपनी ही हानि करता है।

सेवा सिक्के के समान हैं। जिसके दो पहलू हैं—(१) सर्वहितकारी प्रवृत्ति से सुन्दर समाज का निर्माण करना और (२) प्राप्त वस्तु आदि की ममता व भोग भावना का त्याग कर अपना कल्याण करना। कारण कि सर्व हितकारी प्रवृत्ति का अंत सहज निवृत्ति में होता है। सहज निवृत्ति से अपना कल्याण होता है। यही नहीं, सहज निवृत्ति से सर्व हितकारी प्रवृत्ति रूप सेवा की सामर्थ्य आती है। इस प्रकार सेवा से सुन्दर व्यक्तित्व और सुन्दर समाज दोनों का निर्माण होता है। सेवा के ये दोनों ही पहलू महत्त्वपूर्ण हैं।

४. साधकों के योग्य समाज सेवा के क्षेत्र :

जो प्रवृत्ति अपने सामर्थ्य से बाहर न हो, विवेक विरोधी न हो और जिससे किसी का अहित न हो, मन, वचन, तन की ऐसी सर्वहितकारी प्रवृत्तियाँ सेवा के रूप में की जा सकती हैं। साधक को सेवा करते समय सदैव सावधान रहना चाहिये कि वह उस सेवारूप प्रवृत्ति से यश, कीर्त्ति, सम्मान, सत्ता, शक्ति, संपत्ति, सुविधा रूप किसी भी प्रकार के सुख का भोग न करे, न चाहे। कारण कि प्रतिफल के लिए की गई सेवा सौदा है, सेवा नहीं।

भावनात्मक सेवा असीम होती है। उसे कोई भी साधक कभी भी कर सकता है परन्तु क्रियात्मक सेवा, सेवा की परिस्थिति एवं सेव्य की स्थिति पर निर्भर करती है। जो सेवक स्वयं जिस भूमिका पर है उसी के अनुरूप वह सेवा कर सकता है और वह ही उसका कर्त्तव्य भी है। सेवक की भूमिका को देश, काल, योग्यता, बल, सामर्थ्य प्रभावित करते हैं। अतः प्रत्येक सेवक के लिए प्रति समय सेवा की प्रवृत्ति बदलती रहती है अतः उसके लिए कोई बनाबनाया ढाँचा या साँचा उपयुक्त नहीं होता है। यथा गृहस्थ, साधक, बालक, वृद्ध, रोगी, योगी (साधक) आदि को उनके लिए आवश्यक भोजन, वस्त्र, पात्र, भवन, दवा आदि देकर अपने सामर्थ्य के अनुसार उनकी सेवा कर उनके शारीरिक कष्टों का निवारण कर सकते हैं। संयमी साधु की भूमिका गृहस्थ से ऊँची होती है। वे क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, तनाव, कुंठाएँ आदि मानसिक दोषों व दुःखों से छुटकारा पाने का मार्ग बताकर सेवा करते हैं। वीतराग पुरुष की भूमिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोच्च है। उनमें धनी-निर्धन, विद्वान्-अनपढ़, सबल-निर्बल, आदि संसार के समस्त प्राणियों को राग की आग में जलते देख, परिग्रह की पराधीनता में जकड़े देख अनंत करुणा उमड़ती है। वे वीतराग, स्वाधीन, मुक्त, अमरत्व, अक्षय सुख प्राप्ति का मार्गदर्शन कराते हैं। उनकी वाणी वीतरागता से ओत-प्रोत होती है। मानव उनके एक वचन का आराधन करे तब भी संसार के सब बंधनों व दुःखों से मुक्ति पा सकता है। उनके लिए यही दान या सेवा है। अभिप्राय यह है कि सेवा को किसी सीमा या क्षेत्र में नहीं बाँधा जा सकता। कारण कि जो सेवा परिधि में बँध जाती है वह सीमित, संकीर्ण व दूषित हो जाती है। सर्व हितकारी से की गई प्रवृत्ति ही सम्यक् सेवा है।

परिचर्चा के प्रमुख निष्कर्ष

१. साधना की अवधारणा :

विद्वान् संभागियों ने मूल्यवान विचार अभिव्यक्त किये हैं। उनके विचारानुसार साधना जीवन का एक आवश्यक अंग है। इसके अभाव में जीवन कुण्ठाग्रस्त एवं टूटा हुआ रहता है। संभागी वर्ग इस पर एकमत है कि साधना विभाव से स्वभाव एवं बाहर से भीतर की तरफ लौटना, अन्तर्शोधन, समभाव एवं द्रष्टाभाव का एवं तनावों तथा विषय-विकारों से मुक्त होकर सन्तुलित जीवन जीने का प्रमाण है, निर्बाध सुख की प्राप्ति है, जिसकी सिद्धि एक अशेष उपलब्धि है। सभी संभागियों का मत है कि विषय विकारों से सम्पूर्णतः मुक्त होने का प्रयास ही साधना है। दुःख नहीं चाहने वाले व्यक्ति को सुख भी छोड़ना पड़ेगा। यहीं से शुरू होगी साधना, जो वैयक्तिक है और जिसका सामाजिक स्वरूप भी है।

२. सेवा का साधना में स्थान :

(i) सेवा साधना की फलश्रुति और उसका विस्तार है। तीर्थङ्कर प्रभु भी निस्पृह भाव से लोकमङ्गल हेतु ज्ञान का वितरण करते हैं। तप के बारह भेदों में सेवा (वैयावृत्य) को श्रेष्ठ आभ्यन्तर-तप माना गया है।

(ii) सेवा समाज के ऋण से उऋण होना है और व्यक्ति पूर्णतः उऋण होकर ही पूर्ण मुक्त हो सकता है। जिससे राग-द्वेष की वृद्धि हो, ऐसी सेवा का साधना में कोई स्थान नहीं हो सकता। परिवार और समाज की अपेक्षाओं की पूर्ति भी हमारा कर्त्तव्य है। इससे साधक को चित्त की शान्ति प्राप्त होगी और उसकी स्वार्थपरता घटेगी। सुख-दुःख की अनुभूति से हटने पर जीवन में सरसता की सेवा के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(iii) सेवा आत्मानंद एवं अक्षय सुख देकर राग को गला देती है। इस प्रकार सेवा वीतरागता की प्राप्ति में साधक है, बाधक नहीं।

३. स्वस्थ एवं चरित्रनिष्ठ समाज निर्माण में साधकों की भूमिका :

(i) विचारकों ने एक मत से व्यक्त किया है कि स्वस्थ एवं चरित्रनिष्ठ समाज निर्माण में साधकों की प्रभावकारी भूमिका है। सद्भावना का क्रियात्मक रूप सद्व्यवहार या सेवा है। ऐसे सद्भावनाशील निःस्वार्थ एवं उदार व्यक्तियों से स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। साधकों के इन गुणों से समाज में भी इन्हीं गुणों का विकास सम्भव होता है।

(ii) संसार में प्राप्त सामग्री से मानव-सेवा नहीं करने वाला व्यक्ति भोगी है, परिग्रही और प्रकारान्तर से अपनी ही हानि करता है। साधक की सर्वहितकारी प्रवृत्ति अन्ततः सहज निवृत्ति में परिणित होकर समाज कल्याण का साधन बनती है।

(iii) साधक स्वस्थ रहकर ही मुक्त बन सकता है इसीलिये तप के छः बाह्य भेदों में प्रथम चार मूलतः स्वस्थता के नियम हैं। स्व में स्थित रहना ही स्वस्थ रहना है। कषायों की तीव्रता शरीर में रोगाणुओं की वृद्धि करती है। स्वस्थ समाज रचना हेतु अन्तर्मुखी साधक समाजोन्मुखी बनें।

(iv) वर्तमान कथनी प्रधान युग में करणी या चरित्र ही वास्तविक प्रभावी है। अतः निःस्वार्थ एवं विवेकपूर्ण वृत्ति एवं व्यवहार से समाज निर्माण सम्भव है।

४. साधकों के योग्य समाज-सेवा के क्षेत्र :

(i) विवेकपूर्वक सामर्थ्यानुकूल मन, वचन, काय से की जाने वाली स्वतन्त्रता की सर्वहितकारी प्रवृत्तियाँ सेवा का ही रूप है। यश, कीर्ति, सत्ता आदि के प्रतिफल के लिये की गई सेवा सौदा है, सेवा नहीं। गृहस्थ साधक तन, मन, धन से अभावग्रस्त लोगों की सेवा कर सकता है तथा संयमी साधु मानसिक एवं आध्यात्मिक दोषों एवं दुःखों से छुटकारे का मार्ग बताकर सेवा करता है।

(ii) देश, काल, योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार ही सेवा की जा सकती है। अतः उसे किसी सीमा में बाँधना उचित नहीं।

(iii) विवेकपूर्वक अनासक्त भाव से किये गये सेवा कार्य साधक और समाज के लिये उपयोगी हैं और यही सम्यक् सेवा है।

संयोजकीय टिप्पणी :

(i) परिचर्चा के विद्वान संभागियों ने प्रायः आध्यात्मिक साधना पर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल दिया है और हमारा इष्ट भी यही है। तथापि सामान्यतः शारीरिक स्वस्थता पर भी यथोचित बल देना भी आवश्यक लगता है। जिसमें योग साधना, आसन आदि का स्थान होना चाहिये। अन्ततः हमारा प्रमुख लक्ष्य तो सदैव आध्यात्मिक विकास होना चाहिये।

(ii) साधक स्वकल्याण के साथ पर कल्याण का भी भागीदार होता है। साधक स्व में केन्द्रित रहते हुए भी अनासक्त एवं निस्वार्थ भाव से लोक कल्याण से जुड़े हुए हैं। ऐसा न होने पर साधक की यह विरक्ति स्वार्थ केन्द्रित पलायन वृत्ति ही मानी जा सकती है जो वांछनीय नहीं।

(iii) साधना विभाग के उद्देश्यों में सेवा का समावेश इसी दृष्टि से किया गया है कि साधक आत्मोत्थान के साथ समाजोत्थान में भी सहयोगी बने और समाज में वांछित नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की एक ज्योति जगा सके। साधनामय जीवन से सम्पृक्त साधक की सेवाएँ अन्य समाजसेवियों से बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगी।

(iv) वर्तमान परिवर्तित अति भौतिक वातावरण में साधकों की यह समाजसेवा केवल समाज सेवा ही न रहकर सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के परिवर्तन का एक सशक्त अभियान बन सकती है।

—संचालक, साधना विभाग,
३५, अहिंसापुरी, फतेहपुरा, उदयपुर (राज०)

सेवा

- ज्ञान की साधना और स्वाध्याय के द्वारा की जाने वाली भाव-सेवा बहुत बड़ी सेवा है।
- सेवा करने वाला व्रत करने वाले के मन को बढ़ा देता है, उसे उत्साहित कर देता है और उसकी तपस्या में सहायक बनता है।
- जो स्वार्थ छोड़कर सेवा में लगेगा, वही जिन शासन की सच्ची सेवा कर सकेगा। ऐसे अलख जगाने वाले मिलेंगे, तभी समाज आगे बढ़ेगा।
- वीतराग के चरणों की सेवा तलवार की धार पर चलने से भी अधिक कठिन है।

—आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावस–प्रवास हेतु मंगल प्रवेश

☐ प्रस्तोता—**श्री ब्रजमोहन जैन**

इस युग के यशस्वी मनस्वी तपस्वी, प्रातःस्मरणीय अखंड बाल ब्रह्मचारी, विद्वद्रत्न, चारित्र चूड़ामणि, आचार्य प्रवर, पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० एवं मुनि मंडल के भोपालगढ़ से विहार होते ही जोधपुर के सभी भक्तगणों की उत्कंठा अपने परमाराध्य गुरुदेव के शीघ्र पदार्पण, उनके मंगल दर्शन व वाणी-श्रवण की ओर लगी हुई थी।

परम पूज्य आचार्य देव भोपालगढ़ से विहार कर रातकुडिया, पीपाड़, रीया, पालासनी, वीसलपुर, बनाड़ आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए, १ जुलाई, १९८४ को **जोधपुर** पधारे।

पालासनी से ही भक्तगण परम पूज्य आचार्य देव एवं मुनि मण्डल की सेवा का सतत लाभ लेने हेतु उपस्थित हो रहे थे। १ जुलाई को अगवानी हेतु भक्तगण सैकड़ों की संख्या में बनाड़ पहुँच गये थे। बनाड़ से पावटा पधारते-पधारते जनमेदिनी उमड़ पड़ी। १४ कि० मी० के समूचे विहार में भक्त समुदाय विशेषतः बहिनों व युवकों का उत्साह देखते ही बनता था। हजारों की संख्या में भक्तगण जैन धर्म की जय, शासनपति श्रमण भगवान् महावीर की जय, निर्ग्रन्थ मुनि मण्डल की जय, गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक स्वाध्याय महान् के जयनिनाद से देव, गुरु, धर्म का गुण गान करते हुए अपने परमाराध्य गुरुदेव व मुनि मण्डल का स्वागत कर रहे थे। जुलूस की व्यवस्था व विहार में भक्तों का अनुशासन सराहनीय था। अधिकांश भक्तगण नंगे पांव संवर-साधना में साथ चल रहे थे।

पूज्य आचार्य देव के पावटा पधारते ही कर्मठ कार्यकर्ता सुश्रावक श्री भंवरलालजी बागमार ने एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य का नियम अंगीकार कर पूज्य गुरुदेव की सच्ची भक्तिपूर्वक अगवानी की। स्वाति के प्यासे चातक की भाँति वाट जो रही अत्रस्थ वयोवृद्धा स्थविरा महासती म० अपने श्रद्धा केन्द्र आचार्य भगवन के सात वर्षों बाद पुनः दर्शन कर हर्ष विभोर हो उठीं।

परम पूज्य गुरुदेव भक्तों के विशाल समूह के साथ जैसे ही गिड़िया-भवन पधारे, आसपास का समूचा क्षेत्र उपरोक्त जयनारों से गूंज उठा। श्री महावीर जैन कन्या पाठशाला की बालिकाओं, वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक व प्रसिद्ध भजनीक श्री दौलत रूपचन्दजी भंडारी, अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ० सम्पतसिंहजी भाण्डावत एवं चातुर्मास समिति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोजक श्री गणपतराजजी अब्वाणी ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए पूज्य गुरुदेव व मुनि मंडल का स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री ने फरमाया कि स्वागत का अर्थ है सु-आगत, अर्थात् आपका आना शुभ हो। आप सभी के हृदय में भक्ति भावना है। आपने वाणी से भी भक्ति व्यक्त की यह मानसिक, वाचिक व कायिक स्वागत तो आपने किया पर इसके आगे की भक्ति है—मुनि मंडल के पदार्पण व विराजने से आप अपने जीवन को ऊँचा उठायें, अपने आपको व्रत ग्रहण में, त्याग-प्रत्याख्यान में व सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार में आगे बढ़ायें। तभी यह मुनि मंडल का सच्चा स्वागत होगा। परम पूज्य गुरुदेव के आह्वान के उत्तर में तत्काल गिड़िया बंधु श्री पुखराजजी ने एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य का संकल्प ग्रहण कर आचार्य श्री का आदेश सहज शिरोधार्य कर, सच्ची भक्ति भावना प्रदर्शित की।

दूसरे दिन पूज्य आचार्य श्री मुनि मंडल के साथ विहार कर सरदारपुरा पधारे व श्री दौलतराजजी छोटमलजी पारख (अगरचंद फतेचंद) के बंगले (पारख भवन) में विराजे। श्री छोटमलजी पारख ने एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य ग्रहण कर पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा भक्ति प्रदर्शित की। व्याख्यान का आयोजन ओसवाल छात्रावास में हुआ जहाँ श्री मूलचंदजी प्रसन्नचंदजी बाफना एवं श्री बस्तीमलजी चौरड़िया एवं श्री पूरणराजजी अब्वाणी की धर्म रुचि व उत्साह सराहनीय था।

दो दिन तक सरदारपुरा विराजने के पश्चात् आचार्यश्री मुनि मंडल के साथ विहार कर दि० ४ जुलाई को घोड़ों के चौक पधारे व दि० ५ जुलाई तक विराजे।

श्रद्धेय आचार्यश्री सायं रायपुर हवेली में विराजमान ज्ञानगच्छीय वृद्ध सन्त श्री सौभागमलजी म० आदि मुनि मंडल को दर्शन देने पधारे तथा दि० ५ को पं० र० श्री घेवरचंदजी म० आदि मुनि मंडल घोड़ों के चौक में आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे। घोड़ों के चौक में चतुर्विध संघ ने आपके सान्निध्य में धर्माराधना का हजारों की जनमेदिनी के साथ लाभ लिया। तपत्याग भी काफी हुआ।

दि० ६ जुलाई को प्रातः आचार्यश्री घोड़ों के चौक से विहार कर सुनारों का वास, मोती चौक, त्रिपोलिया बाजार, हाथीराम का ओड़ा, मेड़तीगेट. स्टेडियम, पब्लिक पार्क पधार रहे थे कि मार्ग में मरुधर रत्न श्री रूपचंदजी म० एवं पं० र० श्री सुकन मुनिजी म० का मिलन हुआ। स्वल्प समय के मधुर मिलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पश्चात् जुलूस पावटा क्षेत्र की ओर आगे बढ़ा। जयघोष के नारों से गगन को गुंजाता हुआ जुलूस रेनबो हाउस व्याख्यान स्थल पर पहुँचा। यहाँ पावटा समाज के अग्रगण्य सुश्रावक श्री लक्ष्मीचंदजी सुराणा, श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक संघ के मन्त्री श्री सुमेरमलजी मेड़तिया, अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ० सम्पतसिंहजी भाण्डावत, न्यायाधिपति श्री कृष्णमलजी लोढ़ा अध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर, गीता प्रचार मण्डल के मंत्री श्री शुभराजजी लोढ़ा, विदुषी बहिन डॉ० सुषमा गांग, अ० भा० महावीर जैन श्राविका संघ की संरक्षिका श्रीमती सुशीला बोहरा एवं अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना आदि ने पूज्य गुरुदेव व मुनि मंडल का अभिनंदन करते हुए पावस प्रवास हेतु पूज्य गुरुदेव के पदार्पण पर प्रसन्नता व्यक्त की व मुनि मंडल का स्वागत किया।

व्याख्यान प्रिय श्री ज्ञान मुनिजी म० द्वारा सुमधुर शैली में हुये प्रवचन के पश्चात् विद्यानुरागी श्री गौतम मुनिजी म० ने एक गीतिका 'जागो जोधाणा वासी, गुरु हस्ती जगाने आये हैं।' प्रस्तुत कर भक्तों को आत्म जागृति की प्रेरणा दी। तदनंतर पण्डित रत्न श्री हीरा मुनिजी म० ने आगन्तुक भक्तजनों को चातुर्मास काल में त्याग, प्रत्याख्यान एवं व्रत नियम की प्रेरणा दी। परम-पूज्य आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में फरमाया कि आपको एक नहीं अपितु पाँच-पाँच चातुर्मास का सुयोग प्राप्त हुआ है। सामायिक व स्वाध्याय द्वारा इसे सफल बनाना है। मैं आपको जगाने नहीं अपितु चलाने आया हूँ। आप सभी जागे हुये हैं, ऐसा मैं मानता हूँ पर आपको चलना है तभी मंजिल प्राप्त कर सकोगे।

संगठन व अनुशासन का महत्त्व बताते हुए आचार्यश्री ने कमल व पांचों अंगुलियों की उपयोगिता व परस्पर सहयोग का रूपक प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जिस प्रकार प्रत्येक अंगुली का कार्य अलग-अलग है, कोई भी अंगुली किसी दूसरी अंगुली के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करती, फिर भी सभी अंगुलियों का परस्पर सहयोग, समन्वय, अनुकरणीय है। ठीक इसी प्रकार समाज के सभी छोटे-बड़े सदस्य परस्पर सहयोग कर कार्य करें, इसी में संघ, समाज व कार्य की शोभा है।

मंगल प्रवेश से यहाँ रेनबो हाउस में निरन्तर प्रातः ८-३० से १०-०० बजे तक मुनि मंडल द्वारा मंगल प्रवचन फरमाये जा रहे हैं। भक्तगण, प्रातः प्रार्थना, प्रवचन एवं मध्याह्न दर्शन हेतु पूर्ण उत्साह व उमंग से उपस्थित हो धर्माराधन का लाभ लें। जोधपुर संघ के सभी कार्यकर्ता चातुर्मास की सफलता व आगन्तुक दर्शनार्थी बंधुओं के आवास-भोजन व स्वागत की समुचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्था हेतु पूर्ण उत्साह से लगे हुए हैं । सभी बंधुओं का उत्साह व भक्ति प्रशंसनीय है ।

दि० १२ जुलाई को चातुर्मासी चतुर्दशी के दिन हजारों भक्तजनों ने मंगल दर्शन व प्रवचन सुधा का लाभ लिया । स्वाध्यायी संघ के उत्साही संयोजक श्री सम्पतराजजी डोशी ने दया, स्वाध्याय व पर्युषण सेवा हेतु स्वाध्यायी बनने के लिए आह्वान किया व श्री चंचलमलजी चौरड़िया ने भक्ति गीत प्रस्तुत किया ।

परम पूज्य आचार्यश्री ने अपने मंगलमय आशीर्वचन में फरमाया कि अब बोलने का, कहने का समय नहीं हैं । श्रवण, ग्रहण, धारण व आचरण की महत्ता प्रतिपादित करते हुए उन्होंने फरमाया कि सर्वाधिक महत्त्व आचरण का है । श्रवण, ग्रहण व धारण आपने कई बार किया होगा पर अब आपको आचरण करना है । तभी संत्सग व चातुर्मास की सच्ची सार्थकता है । बिना हिम्मत प्रगति मार्ग में कदम नहीं बढ़ते । धार्मिक क्षेत्र में भी ढिलाई छोड़ आपको हिम्मत व प्रबल उत्साह से दृढ़ता से आगे बढ़ना होगा तभी सामायिक-स्वाध्याय की गतिविधियाँ आगे बढ़ेंगी ।

दया, पौषध एवं सामायिक साधना में संलग्न भक्तगणों से रेनबो हाउस भरा रहा । चातुर्मास का प्रारंभ अखण्ड शांति जाप के साथ हुआ ।

इस अवधि में आचार्यश्री के उपदेश व मंगलमय दर्शन से प्रभावित हो भावुक भक्तगणों ने अनेक व्रत ग्रहण किये जिनमें अ० भा० श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री माणकमलजी भंडारी, श्री दौलतचंदजी सिंघवी, श्री रिखबचन्दजी भंडारी, श्री सुकनमलजी भंडारी, श्री लादूरामजी डोशी, श्री उगमचन्दजी सिंघवी, श्री धनराजजी कोचर द्वारा सजोड़े आजीवन शीलव्रत ग्रहण एवं श्री चंदनमलजी मेहता, श्री जेठमलजी छाजेड़ आदि ने एक-एक वर्ष के सजोड़े शीलव्रत ग्रहण कर त्याग की भेंट प्रदान की जो उल्लेखनीय है ।

रावटी आश्रम के संचालक त्यागी सुश्रावक श्री जौहरीमलजी पारख ने आचार्यश्री से आगम विषयक वार्ता कर समाधान से सन्तोष व्यक्त किया ।

विशेष सूचना

परम श्रद्धेय आचार्यश्री के हर माह की बदी दसमी, बदी व सुदी तैरस व प्रत्येक गुरुवार को मौन रहती है । प्रतिदिन १२ से २ बजे तक ध्यान-मौन व स्वाध्याय के साथ मौन रहती है अतः दर्शनार्थी बन्धु ध्यान रखें । □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो किस्तों में समाप्य लेख : स्वाध्यायियों के लिए विशेष

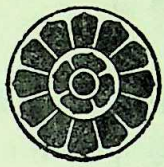

सम्यग् ज्ञान (२)

□ श्री जशकरण डागा

(जून अंक से आगे)

सम्यग्ज्ञान के लक्षण :

इसके पाँच लक्षण हैं—

(१) **शम**—कषायों में मंदता होना ।

(२) **संवेग**—मोक्ष मार्ग में रुचि बढ़ना ।

(३) **निर्वेद**—संसार से आसक्ति कम होना ।

(४) **आस्था**—देव, गुरु, धर्म तत्त्व में अटूट आस्था होना ।

(५) **अनुकम्पा**—प्राणीमात्र पर दया भाव होना ।

यद्यपि उक्त लक्षण सम्यग्दर्शन से मूलतः संबंधित हैं फिर भी ज्ञान एवं दर्शन युगपद सहभावी होने से ये ही लक्षण सम्यग्ज्ञान पर भी घटित होते हैं। तत्त्ववेत्ता पं० बनारसीदासजी ने भेद विज्ञान के लक्षण बड़े रोचक ढंग से पद्य में इस प्रकार कहे हैं—

"भेद विज्ञान जग्यो जिनके घट, चित्त भयो जिम, शीतल चंदन ।
केलिकरे शिव मार्ग में जग मांहि जिनेश्वर के, लघु नंदन ।।
सत्य स्वभाव सदा जिनका, प्रगट्यो अवधात मिथ्यात्व निकंदन ।
शान्त दशा जिनकी पहिचान, करे कर जोरि, बनारसी वंदन ।।"

सम्यग्ज्ञान प्राणी को पर मुखी से स्वमुखी बना देता है, जिससे वह सभी परिस्थितियों में, सहज सुख की अनुभूति करता है, विषमता में भी समता और आधिव्याधि में भी, समाधि भाव रखता है। इस बारे में कविवर सुन्दरदासजी ने, बड़ा ही हृदय प्रभावी पद कहा है—

"जाहि को विवेक भयो, वाहि को कुशल भयो ।
जाहि ओर जावे वाको, वाहि ओर सुख है ।।
भले कोऊ निंदा करे, भले कौ प्रशंसा करे ।
वो तो देखे आरसी में, अपनो ही मुख है ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे कोई पाँव में, पेजार चढ़ा लेह ।
वाको तो नहीं, काँटा कोकरा को दुःख है ।।
देह को सम्बन्ध सब, मिथ्यावत जानकर ।
'सुन्दर' कहे एक आत्मा ही सुख है ।।"

सम्यग्ज्ञानी पुरुष का कथन, श्रवण व समझ निराली होती है । कहा है—

"श्रवण, नयन और नासिका, सबहि के एक ठौर ।
कहबो, सुणबो, समझबो, ज्ञानी को कुछ और ।।"

ज्ञानी, श्रवण का मनन और वाचन का पाचन कर, सारभूत वस्तु को प्राप्त कर लेते हैं, जब कि अज्ञानी का श्रवण और वाचन, मात्र चित्तरंजन व समय गुजारने हेतु होता है । तत्त्व का मात्र श्रवण या वाचन पानी है, उस पर चिंतन से वह दूध हो जाता है और उसे हृदयंगम कर आत्मसात कर लेने से वह मक्खन बन जाता है । तत्त्व रूप कोरे पानी को दूध और मक्खन बना उपयोग करने की कला सम्यग्ज्ञानी में ही होती है ।

सम्यग्ज्ञान वृद्धि के हेतु :

(१) **स्वाध्याय**—पराध्याय को तज निज (आत्मा) का चिंतन, पठन सम्यग्ज्ञान वृद्धि का मुख्य हेतु है । कारण स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म क्षय होते हैं (सज्झाएणं नाणावरणिज्ज कम्मं खवइ)[1] स्वाध्याय का महत्त्व इस दृष्टान्त से सुस्पष्ट होता है । एक पिता ने अपने पुत्र को पराध्याय से हटाकर स्वाध्याय में जोड़ने हेतु, एक कागज पर जिस पर एक तरफ संसार का चित्र था, तो दूसरी तरफ मनुष्य का, उसके टुकड़े-टुकड़े करके पुत्र को सही जोड़ने को कहा । जब तक वह संसार के चित्र की तरफ से जोड़ने का प्रयास करता रहा, उसे न जोड़ सका किन्तु जैसे ही उसने मनुष्य के चित्र की तरफ से जोड़ना शुरू किया, वह तत्क्षण जुड़ गया । पिता ने पुत्र को समझाया, बस सफलता की यही कुञ्जी है । संसार 'पर' है । उसका जीवन भर अध्ययन करते रहोगे तो भी अपूर्ण रहोगे, अतः 'पर' से हटकर 'स्व' का अध्ययन करो । 'स्व' का अध्ययन भी विवेकपूर्वक हो । कारण जगत् में अनेक धर्म हैं, उनके शास्त्र भी अनेक हैं, किन्तु जो हमारे लिए सारभूत और परम हितकारी हैं, उसी का स्वाध्याय उचित है । जैसे माल खरीदते परीक्षा कर श्रेष्ठ माल लिया जाता है । गुड़-गोबर को समान नहीं माना जाता, या नमक-मिश्री व गाय दूध, आक दूध में समान नजर आते हुए भी समान नहीं होते, वैसे ही वीतराग श्रुत और अन्य श्रुत में, अन्तर समझ 'वीतराग श्रुत' का ही स्वाध्याय उत्तम है । इस विषय में कवि का यह कथन मननीय है—

१—उत्तरा, २९/१८ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे करी केतकी, कणेर एक कह्यो जाय ।
आक दूध गाय दूध, अन्तर घणेरो है ।।
पक्ष छोड़ पारखी, निहार नेक निश्चय करि ।
जैन कैन और बैन अन्तर घणेरो है ।।"

इसी पर एक दृष्टान्त है । चार श्रेष्ठी पुत्र धन कमाने हेतु विदेश जाते हैं । मार्ग में लोहे की खान मिलती है । चारों ने अपनी-अपनी शक्ति अनुसार लोहा ले लिया । कुछ आगे जाने पर चांदी की खान मिली तो एक को छोड़ तीन ने लोहा छोड़, चांदी लेली । कुछ आगे जाने पर सोने की खान मिली, तो उस एक को छोड़ तीनों ने, चांदी छोड़ सोने को ले लिया । इसके बाद हीरों की खान मिली । तो पूर्ववत् तीनों ने सोना छोड़ हीरे ले लिए, पर चौथे ने लोह को ही पकड़े रखा । चारों नगर में लौटे तो तीनों तो हीरों के कारण बड़े समृद्ध और सुखी हो गए, पर चौथा व्यक्ति जो मात्र लोहा ही भरकर लौटा था, दुःखी हो गया । इसी प्रकार जिनवाणी–वीतराग श्रुत–हीरे के समान है और अन्य मिथ्या श्रुत कंकड़ पत्थर या लोहवत हैं । आत्मार्थियों को विवेक पूर्वक सम्यग् श्रुत-असम्यग् श्रुत का भेद समझ परम हितैषी सम्यग् श्रुत का स्वाध्याय करना चाहिए । कहा भी है 'जयणा धम्मस्स जयणी' (अर्थात् विवेक धर्म की जननी है ।) सम्यग् श्रुत का ज्ञानाभ्यास कैसे करें ? इस हेतु भी ज्ञानियों ने एक सरल फार्मूला बताया है । वह इस प्रकार है—**'घो चि पू लि'** अर्थात् घो=घोकना, चि=चितारना, पू=पूछना व लि=लिखना । इन चारों प्रक्रियाओं को अपनाने से शीघ्र ज्ञानाभ्यास में सफलता मिलती है ।

(२) **सत्संग**—सद्ज्ञान बढ़ाने का दूसरा मुख्य व उत्तम साधन सत्संग है । निरंतर या पुनः-पुनः सद्गुणियों के संग से आत्मा में रही अनंत ज्ञान की ज्योति प्रगट हो जाती है । म० कबीर, सूरदास आदि बे पढ़े लिखे होकर भी इसी माध्यम से ज्ञान की दिव्य ज्योति को उपलब्ध हुए थे । एक कवि ने कहा है—

"ज्ञान बढ़े गुणवान की संगत, ध्यान बढ़े तपस्वी संग कीने ।
मोह बढ़े परिवार की संगत, लोभ बढ़े धन में चित्त दीने ।।
क्रोध बढ़े नर मूढ़ की संगत, काम बढ़े त्रिया चित्त दीने ।
बुद्धि विवेक विचार बढ़े, कवि दीन सुसज्जन संगत कीने ।।"

(३) **विषय कषाय व प्रमाद को दूर करें**—शास्त्र में कहा है—

"पंचेहि ठाणाहि सिक्खा न लब्भई ।
थंभा कोहा पमाएण, रोगेण आलस्सेणवा ।।"[1]

१—उत्तरा० अ० ११ गा० ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् पांच कारणों से ज्ञान प्राप्त नहीं होता जो इस प्रकार हैं—

[१] **थंभा** (अभिमान)—इससे विधिवत् ज्ञान आराधन व उसका पाचन नहीं होता। कहा है—अधजल गगरी छलकत जाय। इस पर गणित के महान् विशेषज्ञ श्री धराचार्य का पौराणिक कथानक अवलोकनीय है। उन्हें अभिमान हो गया था कि पूरे भारत में उनके समान गणितज्ञ नहीं है। यह बात उन्होंने अपनी प्रशस्ति में लिखी। इस पर देवी सरस्वती ने वृद्धा का रूप बना, उनके पास आकर पूछा—बेटा, एक और दो कितने होते हैं? श्री धराचार्य ने इसके उत्तर क्रमशः तीन, दो, बारह आदि बताए पर वृद्धा ने सभी उत्तर गलत बताए। तब झुंझला कर वृद्धा से पूछने पर वृद्धा ने कहा- एक और दो 'इकवीस' (२१) होते हैं कारण 'अंकानां वामतोगति।' श्रीधराचार्य का गर्व गलित हो गया। सरस्वती देवी ने उसे समझाया, आगे कभी ज्ञान का गर्व मत करना।

[२] **क्रोध**—शास्त्र में कहा है—'कोहं असच्चं कुविज्जा' अर्थात् क्रोध को असत्य (त्याग) करो। क्रोध की भयंकरता के लिए कवि ने कहा है—

"गुस्से से तन निर्बल होता, लोही विषमय हो जाता है।
तेज चला जाता आंखों का, ज्ञान रहित मन बन जाता है॥
अकल न जाने कहाँ जाती है, ज्ञानी और गंवार की।
सुनलो बंधु कान लगाकर, वाणी तारण हार की॥"

[३] **प्रमाद**—धर्म में अरुचि रखना, शक्ति होते हुए भी उसका उपयोग धर्म में न करना प्रमाद है। इसके पांच भे हैं—मद्य, विषय, कषाय, निद्रा और विकथा। ये सभी ज्ञान में बाधक हैं।

[४] **रोग**—'धर्म, अर्थ, काम मोत्ताणां आरोग्य मूल कारणं।' इसके अनुसार सभी क्षेत्रों में सफलता हेतु, आरोग्यता होना आवश्यक है। रोग के कारण चाहते हुए भी ज्ञानाराधना नहीं हो सकती।

[५] **आलस्य**—'आलस्यादि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः' अर्थात् आलस्य शरीर में रहा महा शत्रु है। ज्ञानार्जन हेतु इसका त्याग भी अति आवश्यक है।

(४) **ज्ञान और ज्ञानी की विराधना न करें**—ज्ञान और ज्ञानी की विराधना से ज्ञानावरणीय कर्म बंधते हैं, अतः निम्न प्रकार उनकी विराधना न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(i) ज्ञान और ज्ञानी के प्रति द्वेष करने से।
(ii) ज्ञान और ज्ञानी की निंदा करने से।
(iii) ज्ञान और ज्ञानी का अवर्णवाद करने से।
(iv) ज्ञान और ज्ञानी की आशातना करने से।
(v) ज्ञान और ज्ञानी से विषमवाद करने से।
(vi) ज्ञान और ज्ञानी के अभ्यास में अंतराय डालने से।

ज्ञान वृद्धि के बोल—(१) कम खाना, (२) कम बोलना, (३) कम नींद लेना, (४) कपट रहित तप करना, (५) ज्ञानियों की संगत करना, (६) विनय करना, (७) उद्यम करना, (८) ज्ञानी से ज्ञान चर्चा करना, (९) ज्ञानी के पास पढ़ना, (१०) संसार की वस्तुओं को असार समझ सार वस्तु ज्ञान को ही समझना व (११) पांचों इन्द्रियों को वश में करना।

ज्ञान का फल—ज्ञान का मूल फल विरति है। कहा है—'ज्ञानस्य फलं विरति।' ज्ञान की उपलब्धि से जीव संसार रूप अटवी में नहीं भटकता है। शास्त्र में कहा है—

"जहा सुइ समुत्ता पडिया वि ण विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे वि ण विणस्सइ।।"

अर्थात् जिस प्रकार धागे में पिरोई सूई गिरने पर भी गुम नहीं होती वैसे ही श्रुत ज्ञान से युक्त ज्ञानी जीव संसार में भटकता नहीं है।[1]

ज्ञान आत्मा के अनंत गुणों का प्राथमिक और मुख्य गुण है। इसकी उपलब्धि पर अन्य सभी गुण यहाँ तक कि मोक्ष की उपलब्धि भी हो जाती है। शास्त्र में कहा है—

"सवणे णाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हये तवे चेव बोदाणे, अकिरिया सिद्धि।।"[2]

अर्थात् ज्ञान का फल विज्ञान, विज्ञान का प्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान का संयम, संयम का अनाश्रव, अनाश्रव का तप, तप से पूर्व कर्मों का नाश, कर्म नाश से क्रिया का अभाव और क्रिया अभाव से अंत में सिद्धि की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार ज्ञान का फल महान् है और ज्ञान ही मोक्ष रूपी मंजिल में प्रवेश कराने का मुख्य हेतु है।

१—उत्तरा० २९/५९। २—भगवती सूत्र २/५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान का महत्त्व :

(१) **मुक्ति का मूल**—शास्त्र में कहा है—'पढ़मं नाणं तओ दया'[1] अर्थात् सभी क्रियाओं में प्रथम स्थान ज्ञान का है। बिना ज्ञान की सारी क्रिया अंधी है। कारण 'नाणेण जाणइ भावे।'[2] अर्थात् ज्ञान से ही पदार्थों के स्वरूप को जाना जाता है। ज्ञान के माहात्म्य को बताते हुए कवि कहता है—

"न ज्ञान तुल्यः किल कल्पवृक्षो, न ज्ञान तुल्यः किल कामधेनुः।
न ज्ञान तुल्यः किल कामकुंभ, ज्ञानेन, चिंतामणिरप्य तुल्यः।।"

अर्थात् कल्प वृक्ष, कामधेनु, कुंभ कलश (रस कुंभिका) और चिंतामणि रत्न भी ज्ञान की तुलना में नगण्य हैं। उक्त वस्तुओं से सांसारिक लाभ तो मिलता है, किन्तु मुक्ति रूपी लाभ तो ज्ञान से ही मिलता है। मोक्ष प्राप्ति के चार कारण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप में ज्ञान प्रथम और प्रमुख कारण है। जिनेन्द्र देव ने शील और श्रुत की तुलना में श्रुत को अधिक महत्त्व दिया है कारण श्रुत रहित शील पालक को आंशिक आराधक और शील रहित श्रुत ज्ञान को आंशिक विराधक बताया गया है।[3]

(२) **ज्ञान सुख की खान है**—कहा है—

"ज्ञान सुखों की खान है, दुःख खान अज्ञान।
तन रोगों की खान है, धन भोगों की खान।।"

ज्ञानी सुख-दुःख को कर्मों का खेल मानकर आसक्त नहीं होते जिससे वे दुःख में दुःखी और सुख में गर्वित न हो, समभाव में रहते हैं। कहा है—

"सुख दुःख दोनों वस्तु है, ज्ञानी के घट मांहि।
गिरि, सर दीसे मुकुर में, भार भींजता नांहि।।"

जैसे दर्पण में पर्वत व तालाब दोनों झलकते हैं, फिर भी वह न तो भार का अनुभव करता है और न तनिक मात्र भी भींगता है। ऐसे ही ज्ञानी सुख-दुःख में रहकर भी उससे अपने को भिन्न रखते हैं। मरणान्तिक कष्टों में भी वे दुःखी नहीं होते। कारण आसक्ति न होने से वे मरने से पूर्व ही त्याग भाव से समाधि को प्राप्त कर लेते हैं। यह ज्ञानी की विशेषता है। कहा है—

"ज्ञानी देकर के मरता है, अज्ञानी मर कर देता है।
जरा फरक से मरते हैं, ज्ञानी और अज्ञानी।।"

आत्म ज्ञान के अभाव में जीव देव गति में इन्द्र भी बना पर फिर भी दुःखी रहा। कहा है—

१—दशवैकालिक ४/१०। २—उत्तरा० २८/२५।
३—भगवती सूत्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुनिव्रत धार अनंत कार ग्रीवयक उपजायो ।
पै निज आतम ज्ञान बिना सुख लेश न पायो ।।"

(३) **उत्कृष्ट भौतिक व आत्मिक सुख का प्रदाता**—ज्ञान के माध्यम से जीव के विशिष्ट पुण्य का (पुण्यानुबंधी पुण्य का) बंध होता है जो सुखे-सुखे मोक्ष तक की मंजिल पार कराने में परम्परा से हेतु होता है । नए-नए ज्ञान का अभ्यास करने से तीर्थंकर गोत्र का बंधन होता है ।[1] जो पुण्य अज्ञानी जीवन भर गौतम स्वामी जैसी दुष्कर क्रिया करके नहीं संचित कर सकते, वो ज्ञानी सहज ही कुछ समय की साधना से संचित कर लेते हैं । इसी तरह जितना पाप अज्ञानी अनंत भवों में क्षय नहीं कर सकता, ज्ञानी एक ही भव में क्षय कर देता है । श्री प्रसन्नचन्द्र राजर्षि ध्यान में सातवीं नरक के दलिक एकत्रित कर लेते हैं, पर ज्योंहि ज्ञान में चिंतन करते हैं, सब कर्म दलिक क्षयकर उसी समय मोक्ष चले जाते हैं । दूसरी ओर तंदुल मत्स्य भी किसी को मारता नहीं, ध्यान में ही सातवीं नरक के दलिक इकट्ठे कर ज्ञानाभाव में मरकर सातवीं नरक में चला जाता है । यह है ज्ञान की बड़ी विशेषता । पाप के क्षय और पुण्य के संचय से ज्ञानी भौतिक और आत्मिक दोनों सम्पदाओं को प्राप्त कर उत्कृष्ट सुख को उपलब्ध होता है ।

(४) **सर्वत्र पूजनीय बनाता है**—ज्ञानी जहाँ भी चला जावे वहाँ पूजा व सत्कार प्राप्त करता है । कहा है—'स्वदेशो पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते ।' ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति कहीं भी चला जावे, सर्वत्र उसका आदर व यशोगान होता है ।

(५) **ज्ञान-धन कभी नष्ट नहीं होता**—ज्ञान को न चोर चुरा सकते हैं न कोई लूट सकता है । वरन् यह खर्च करने से बढ़ता है । कहा है—

"सरस्वती के भण्डार में बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खर्चे त्यों-त्यों बढ़े, बिन खर्चे घटी जात ।।"

(६) **मन नियंत्रित करने का सर्वोत्तम साधन**—चंचल मन, जिसे वश में करना अति कठिन है, ज्ञान के स्वाध्याय से सहज वश में हो जाता है । जो मन एक मिनिट भी स्थिर नहीं रहता, ज्ञान के माध्यम में घंटों उसे स्वाध्याय में स्थिर रखा जा सकता है । अनुत्तरवासी देव जिनकी आयुष्य सागरों की होती है और जहाँ पर मन को लगाने हेतु विषय भोगों के कोई साधन नहीं होते, वे सारी आयु धर्म ध्यान में—शुभ में सम्यग्ज्ञान के माध्यम से लीन रहते हैं ।

उपसंहार :

जैन धर्म विवेक प्रधान है । बिना विवेक क्रिया अंधी और बिना क्रिया ज्ञान भी लंगड़ा है । ज्ञान के बिना चरित्र नहीं होता । कहा है—'नाणेण बिना

१—ज्ञाता सूत्र अ० ८ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हुंति चरण गुणा ।'[1] ज्ञान से ही क्रिया शोभित होती है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री जयशंकरप्रसाद ने इस विषय में बड़ा सुन्दर लिखा है—

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सकें, यह बिडम्बना है जीवन की ।।"

जैसे रोगी को स्वस्थ होने हेतु रोग व दवा की जानकारी तथा दवा का सेवन आवश्यक है वैसे ही विषय, कषाय मिथ्यात्वादि से ग्रसित संसारी जीव को उससे मुक्त होने हेतु भेदज्ञान और क्रिया रूपी दवा का सेवन दोनों परमावश्यक है।

'दशवैकालिक सूत्र' में कहा है—'अण्णाणी किं काही, किंवा णाही सेय पावगं।' अर्थात् अज्ञानी धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप हिताहित आदि को नहीं समझ सकता। अतः सम्यग्ज्ञान को उपलब्ध होने हेतु सर्वप्रथम सद्प्रयास होना चाहिए और इस हेतु अपने अज्ञान का ज्ञान करना, उसकी अनुभूति करना अपेक्षित है। क्योंकि आत्मा सम्बन्धी सही ज्ञान के अभाव में अनेक भ्रान्तियाँ बनी रहती हैं जिसके कारण जीव सही दिशा में प्रगति नहीं कर पाता। सम्यग्ज्ञान की उपलब्धि हेतु मानवीय गुणों को विकसित करना दूसरा मुख्य उपाय है।

आत्मा अनादि काल से सम्यग्ज्ञान के अभाव में अनंत-अनंत दुःखों का वेदन करती रही है। शास्त्रकार कहते हैं—

"अण्णाणं परमं दुक्खं अण्णाणं जायते भयं।
अण्णाणं मूलो संसारे, विविहो सव्व देहियं ।।"

अर्थात् अज्ञान सबसे बड़ा दुःख है, अज्ञान से भय उत्पन्न होता है, अज्ञान सब प्राणियों के संसार भ्रमण का मूल है।

इससे भिन्न 'ज्ञान' सर्वोत्तम आत्मिक गुण है। इसके समक्ष संसार में कुछ नहीं। कहा है—

"अन्नं दानं परं दान, विद्या दानं मतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिर, यावज्जीवन च विद्यया ।।"

अर्थात् अन्न दान जो परम दान है, उससे भी ज्ञान श्रेष्ठ है कारण अन्न से क्षणिक तृप्ति होती है पर ज्ञान से यावज्जीवन की होती है।

अतः 'सम्यग्ज्ञान' को सम्यग् प्रकार जानकर उसकी सम्यग् उपलब्धि व सेवना करना ही श्रेयस्कर एवं कल्याणकारी है। [समाप्त]

—डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राज०)

१—उत्तरा० २८/३०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

बूंद बन गई जीवन-दीप !

☐ श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन

शहनाइयों की स्वर-लहरी के साथ नव-वधू ने गृह प्रवेश किया। मांगलिक दीपक में घी डालते समय, घी की एक बूंद, धरा पर जा गिरी। ससुरजी ने उस बूंद को अंगुली से पोंछ अपनी जूती पर मलली। ससुरजी की इस कृपणता को बहूरानी ने घूंघट की ओट से देखा तो उसका माथा ठनका। पूजा-प्रार्थना से उसका ध्यान हट गया और चिन्ता में डूबी वह सोचने लगी—"पीहर में मैं सम्पन्नता में पली और यहाँ इतनी विपन्नता, इतनी कृपणता ? हे भगवन् ! यहाँ मैं कैसे सारा जीवन जी पाऊँगी ?"

अनमने मन से उसने अनुष्ठान पूरा किया। रह-रह कर घी की बूंद जूती पर मसल लेने की घटना उसे पीड़ित कर रही थी—कृपणता और अभाव के चित्र उसकी आँखों के सामने तैर रहे थे। तभी उसने श्वसुरजी को कहलाया कि उसको तेज सिर दर्द है, माथा भन्ना रहा है। उसे पीहर भिजवा दिया जावे।

श्वसुरजी ने नौकर को डाक्टर को बुला लाने को कहा, तभी बहूरानी बोली—"पिताजी ! डाक्टरी उपचार मुझे अनुकूल नहीं पड़ता। पीहर में जब सिरदर्द होता था तो असली मोतियों को गुलाब जल में खरल कर बनाये गये लेप से ही सिरदर्द मिटता था।"

श्वसुरजी ने तभी एक थाल में असली मोती, गुलाब जल की शीशी और खरल बहू रानी के पास भेजते हुए कहलाया कि वह मनवांछित लेप तैयार कर, उसका उपयोग करले।

संस्कारों में पली बहूरानी ने मात्र सिरदर्द मिटाने को हजारों रुपयों की सामग्री थाल में रक्खी अपने सामने देखी तो उसका भ्रम टूटा। धारणा बदली तो चिन्तन ने भी दिशा बदली—ओह ! श्वसुरजी तो निहायत नेक, दरियादिल इंसान हैं। मात्र सिर दर्द मिटाने को हजारों रुपयों की सामग्री भेज दी। यदि अनावश्यक, अवांछित लेप तैयार करने में इन मोतियों को खरल कर लूं तो यह इस फरिश्ते के साथ ज्यादती होगी, अन्याय होगा।....नहीं....नहीं....मैं ऐसा हरगिज नहीं करूँगी....और....और....अपनी निर्मूल धारणा के प्रति पश्चा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताप में डूबी बहूरानी ने वह थाल श्वसुरजी के पास वापिस भिजवाते हुए कहला दिया कि सिरदर्द मिट चुका है। अब इस सामग्री के लेप की आवश्यकता नहीं रही।

जीवन के बेशुमार उतार-चढ़ाव से गुजरने वाले, मानव-जीवन के पारखी श्वसुरजी को यह समझते तनिक सी देरी नहीं लगी कि बहूरानी के शब्दों में कोई गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। वे बहूरानी के पास आये और पितृ-तुल्य स्नेह और आत्मीयता में बहूरानी को सरोबार करते हुए बोले—

"बेटी ! बड़ी आड़ी-टेड़ी होती है जीवन की राहें—समय का प्रवाह ही मानव को जीवन-पाठ पढ़ाता है बेटी ! पल में दर्द, पल में आराम, तुम्हारी यह गूढ़ बात मैं समझ नहीं पाया। अब तुम्हीं इस घर की लक्ष्मी हो, स्वामिनी हो। हम तो पके पान ठहरे। आज हैं तो कल नहीं। अब इस घर, इस परिवार का उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर ही है। सच-सच बताओ बेटी, बात क्या है ?"

पितृ-तुल्य स्नेह और अनुकूल अवसर पा बहूरानी ने घी की बूंद धरा पर गिरने से लगाकर उपचार-सामग्री का थाल वापिस पहुँचाने तक की सारी घटना और अपना चिन्तन खुले हृदय से श्वसुरजी के सम्मुख रख दिया। तो हर्षित मन, पुलकित तन श्वसुरजी ने कहा—"बात यह नहीं जैसी तुमने समझी बेटी ! घी की बूंद पोंछ कर जूती पर मल लेने के पीछे मेरे चिन्तन में कृपणता के भाव कतई नहीं थे बेटी ! उसके पीछे मेरा चिन्तन केवल यह था कि पूजा समाप्त होते ही इस बूंद के इर्दगिर्द कई कीड़े-मकोड़े जमा हो जावेंगे और विवाह की इस भीड़ में उधर से आते-जाते किसी व्यक्ति का अनजाने ही वहाँ पैर पड़ गया तो उन निर्दोष जीवों की सामूहिक हत्या हो जायेगी। थोड़ी सी अदूरदर्शिता ही उन जीवों का प्राण ले लेगी, इसीलिये मैंने वह बूंद पोंछ कर जूती पर मलली थी और कोई बात नहीं थी बेटी।'

श्वसुरजी की दूरदर्शिता और विवेक ने बहूरानी की आँखें खोलदीं। उसे अपने कुचिन्तन पर रह-रह कर पीड़ा और ग्लानि हो रही थी। पश्चात्ताप का सम्बल थामे वह उठी और श्वसुरजी के चरण-स्पर्श करते जब उसने अपनी मिथ्या धारणा के प्रति क्षमा मांगी तभी उसकी आँखों से ढुलके दो अश्रु-कण श्वसुरजी के चरणों में जा गिरे।

बूंद मोती बन गई थी।
दीपक जल रहा था।
बूंद बन गई थी जीवन-दीप।

—एडवोकेट, भवानी मंडी (राज०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यास के लिए प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'जिनवाणी' कार्यालय को लिखकर भेजिये—

१. गिरी हुई घी की बूंद को अंगुली से पोंछकर अपनी जूती पर मलने के पीछे ससुरजी की क्या भावना थी ?
२. बहूरानी ने ससुरजी को पहले कंजूस और बाद में फरिश्ता क्यों कहा ?
३. 'हम तो पके पान ठहरे।' ससुरजी के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिये।
४. बहूरानी ने उपचार-सामग्री का थाल वापिस क्यों लौटा दिया ?
५. यदि ससुरजी बहूरानी के कहे अनुसार उपचार-सामग्री नहीं भिजवाते तो घटना क्या मोड़ लेती ?
६. बूंद मोती कैसे बन गई ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये।
७. इस कहानी को पढ़ने से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?
८. दूसरे प्राणियों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिये ?
९. अपने दैनिक जीवन में हर प्रकार के साधारण कार्य करते हुए हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये ?

उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के जून, १९८४ के अंक में प्रकाशित कल्पना आंचलिया की **'फिर काहे को लूटमार करते हो'** कहानी के उत्तर हमें निम्न बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सबको धन्यवाद !

गोटन (नागौर) से सुरेशचन्द ओस्तवाल, **भवानी मंडी** से विजयकुमार गुप्ता, इन्द्रमल नाहर, हेमलता जैन, **देई** से रवीन्द्रकुमार जैन, **सपोटरा** (सवाई माधोपुर) से पीयूषकुमार, **अडयार** (मद्रास) से एस० राजेश रुणवाल, राजकुमारी सुराणा, **रायचूर** से प्रकाशचन्द मेहता, अशोककुमार झारझाड़, **पाली** से कुसुमलता सुराणा, **रायपुर** से नरेशकुमार जैन, **भोपालगढ़** से जम्बूकुमार, अजीतराज ओस्तवाल, **अलीगढ़** (टोंक) से कु० उषा जैन, घेवरचन्द जैन, रवीन्द्र कुमार जैन, विनोद कुमार जैन, **जयपुर** से राजेश लूणावत, विजयकुमार बम्ब, सीता पौद्दार, **सिरोही** से संजयकुमार जैन, **भीलवाड़ा** से भंवरलाल डांगी, **विल्लुपुरम्** (तामिलनाडु) से एस० सुशीला बम्ब, **सिवाना** (बाड़मेर) से अमृत लाल कानूनगो, **लीड़ी** (अजमेर) से ज्ञानचन्द जैन, **कोसाना** से अशोक जैन, **अमलनेर** से ज्योति चौरड़िया, अनिला लखमशी गाला, सुनीता पारख, सोना गांधी, लक्ष्मीनारायण, कु. अप्पा नगीनदास गोसलिया, राजश्री जैन, विनोदकुमार जैन, **बेल्लारी** (कर्नाटक) से दिलीपकुमार जैन, **झालावाड़** से पवनकुमार जैन, **मद्रास** से पी० कमल चौरड़िया, जितेन्द्रकुमार बोथरा, **नागपुर** से अंजू जैन, **ब्यावर** से नवरत्न बाला जैन, **मैसूर** से सुनीता गुलेछा, **शाहपुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(भीलवाड़ा) से कमलकुमार लोढ़ा, **हरसाना** (अलवर) से धर्मचन्द जैन, **रंगला** से विनय कांकरिया, **कानोड़** से महावीर कुमार भाणावत, **हीरापुर** से सरलादेवी छाजेड़। **बजरिया** (सवाई माधोपुर) से अनिलकुमार जैन, मुकेशकुमार जैन, सुनीलकुलार जैन।

पुरस्कृत उत्तरदाताओं के नाम

प्रथम—वीना जैन पुत्र श्री सौभाग्यमल जैन, मकान नं. ५३९, वार्ड नं. ११, खाई रोड, नयापुरा, **कोटा**।

द्वितीय—मधुबाला नाहर, गर्ल्स स्कूल के पास, **भवानीमंडी**, (राजस्थान)

तृतीय—राजकुमार पोखरना पुत्र सौभाग्यमल पोखरना, मु० पो० **पनवाड़** (जिला टोंक) वाया देवली (राजस्थान)

बच्चों को कहानी पढ़कर उत्तर भेजने की विशेष प्रेरणा मिले इस भावना से प्रथम तीन श्रेष्ठ उत्तरदाताओं के बाद आगे के ६ श्रेष्ठ निम्न उत्तरदाताओं को ५–५ रुपये के प्रोत्साहन पुरस्कार भवानीमंडी के एडवोकेट श्री राजेन्द्रप्रसाद जी जैन की सद्प्रेरणा से श्री माणकचन्दजी बोहरा, अध्यक्ष स्थानकवासी जैन संघ पचपहाड़ (झालावाड़) एवं श्री मोतीलालजी ऊंकारलालजी कुंडल बोहरा आवर वाले, भवानी मंडी की ओर से प्रदान किये जा रहे हैं। हम पुरस्कार-प्रदाताओं के प्रति आभारी हैं कि उन्होंने बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

चतुर्थ—सुदीप जैन १७०/१८४, साहूनगर, **सवाई माधोपुर** (राज०)

पंचम—मदनलाल जैन पुत्र श्री मुन्शीलाल जैन ग्राम व पो. **हरसाना** तह. लक्ष्मणगढ़, जिला अलवर (राज०)

षष्ठ—सीमा श्रीश्रीमाल पुत्री श्री प्रेमचन्दजी जैन डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज, **उदयपुर** (राज०)

सप्तम—कु० पूर्णिमा डागा C/o शान्तिलालजी डागा, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, **जयपुर**–३०२ ००३

अष्टम—अलका भण्डारी सुपुत्री श्री सरदारचन्दजी भंडारी, त्रिपोलिया बाजार, **जोधपुर**-३४२ ००१

नवम—रघुनन्दन शर्मा C/o सीताराम शर्मा, गौतम निवास, **भवानी मंडी** (राजस्थान)।

नोट—विभिन्न जैन विद्यालयों के अध्यापकों एवं जैन छात्रावास के गृह-पतियों से निवेदन है कि वे **'बालकथामृत'** स्तम्भ में प्रकाशित कहानी के प्रश्नों के उत्तर अपने छात्रों से अधिकाधिक संख्या में भिजवायें। हिन्दी कक्षा में तथा सामायिक में सामूहिक रूप से कहानी के उत्तर लिखने की प्रेरणा देवें।

—**सम्पादक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज-दर्शन

पर्युषण पर्व में स्वाध्यायियों को आमन्त्रित कीजिये

जोधपुर—स्वाध्याय संघ जोधपुर, सन्त एवं सतियाँ जी के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में शास्त्र वाचन, चौपाई, प्रतिक्रमण आदि विभिन्न प्रवृत्तियाँ कराने हेतु विगत ४० वर्षों से योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायी बंधुओं को भेज कर जिन शासन एवं समाज सेवा के कार्य में रत है।

इस वर्ष भी जिन-जिन क्षेत्रों में सन्त-मुनिराजों के चातुर्मास स्वीकृत न हो सके हैं, वे निम्न जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र निम्न पते पर शीघ्र भेजें—

१. शहर अथवा गांव का नाम, जिला, प्रान्त सहित
२. समस्त जैन घरों की संख्या
३. स्थानकवासी जैन घरों की संख्या
४. संघ के अध्यक्ष एवं मंत्री का नाम व डाक पता
५. संबन्धित जगह पर पहुँचने के रेल अथवा बस मार्ग की जानकारी।
शीघ्रता से आने वाले आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जावेगी।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर के जिन स्वाध्यायी बंधुओं ने आगामी पर्युषण पर्वाराधन हेतु बाहर क्षेत्रों में सेवाएँ देने की अपनी स्वीकृति अभी तक नहीं भेजी है, वे कृपया अपनी स्वीकृति शीघ्र भिजवावें।

सम्पतराज डोसी
संयोजक
स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर

बैंगलोर—पूज्य संत-सतियों के वर्षावास से वंचित ग्राम व नगर के श्री संघों से निवेदन है कि पर्युषण पर्व में धर्माराधना हेतु विद्वान् स्वाध्यायी बन्धुओं को बुलाकर धर्मप्रभावना का लाभ लेवें। इच्छुक श्री संघ निम्न पते पर यथा शीघ्र पत्र-व्यवहार करावें—

मंत्री
कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ,
24/25, M, P. Lane, चिकपेट क्रास,
बैंगलोर—५६००५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमदाबाद एवं बम्बई में डॉ० भानावत के व्याख्यान

'जिनवाणी' के सम्पादक डॉ० नरेन्द्र भानावत के गुजरात युवक केन्द्र अहमदाबाद द्वारा अपने स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर पर्युषण व्याख्यानमाला के अन्तर्गत २५ अगस्त को टाउन हॉल अहमदाबाद में 'आत्म-शुद्धि और तप' पर, जैन सोशियल ग्रुप अंधेरी, बम्बई द्वारा २८ अगस्त को 'अपरिग्रह : सिद्धान्त और व्यवहार' पर तथा बम्बई जैन युवक संघ द्वारा २९ अगस्त को बिड़ला क्रीड़ा केन्द्र चौपाटी, बम्बई में 'तप रे मधुर-मधुर मन' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किये गये हैं।

आवश्यकता

मद्रास—जैन धर्म पढ़ाने में अभिरुचि रखने वाले, हिन्दी भाषा-भाषी योग्य, अनुभवी ऐसे शिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता है जो स्थानकवासी समाज के स्वाध्यायी बन्धुओं एवं बालक-बालिकाओं को धार्मिक प्रशिक्षण दे सके। इच्छुक व्यक्ति अपने अनुभव, धार्मिक एवं व्यावहारिक योग्यता के उल्लेख सहित शीघ्र आवेदन करें। अपेक्षित वेतन भी लिखें। सम्पर्क सूत्र—मंत्री—श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ, ३४८, मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास-६०००७९।

बंगलौर—धार्मिक पाठशाला में अध्ययन कराने एवं कार्यालय की देख-भाल करने हेतु योग्य अध्यापक बन्धुओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक वेतन एवं उत्तम सुविधायें। साक्षात्कार के लिए बुलाने पर यातायात व्यय संस्था द्वारा वहन किया जायेगा। इच्छुक उम्मीदवार योग्यता, अनुभव व पूर्ण विवरण सहित स्वहस्त लिखित आवेदन पत्र भेजें—

मंत्री, कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, २४/२५, एम. पी. लेन,
चिकपेट क्रास, बैंगलोर–५६००५३

धार्मिक शिक्षण शिविरों के विविध आयोजन

मद्रास—यहाँ दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ के अन्तर्गत परम विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरी जी के सान्निध्य में १२ जुलाई से १४ जुलाई तक जैन भवन, में एक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ९५ भाई-बहिनों ने भाग लिया। पं० देवीलालजी बम्ब ने बड़ी कुशलता से शिविर का संचालन किया। अध्यापन-कार्य में पं. माधवलालजी मुरड़िया, माधवलालजी सेठिया, सागरमलजी पींचा, दिलीपकुमारजी वया एवं प्रकाशचंद जी जैन ने सहयोग दिया। श्री खींवराजजी चौरड़िया ने शिविर का उद्घाटन किया। श्री भंवरलालजी गोठी, भूमरमलजी सिंघवी, केवलचन्दजी बरमेचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि ने अपने विचार प्रकट किये । श्री पुखराजजी बाफना, हरखचन्दजी ओस्तवाल एवं रिखबचन्द जी लोढ़ा का विशेष सहयोग रहा ।

मेड़ता सिटी—श्री वर्धमान जैन ज्ञानपीठ की ओर से ग्रीष्मावकाश में मेड़ता सिटी, भैरूंदा, पीह, गोविन्दगढ़ और लाम्बा में स्थानीय सप्त दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किये गये। श्री लालचन्दजी पीपाड़ा, श्री मन्सालालजी, श्री रतनलालजी सेठ एवं श्रीमती मैनादेवी का अध्यापन कार्य में विशेष सहयोग रहा । शिविर का संयोजन श्री जतनराजजी मेहता ने किया ।

सिवाना—यहाँ १५ मई से २५ जून तक स्थानीय धार्मिक शिविर लगाया गया । जिसमें २४ विद्यार्थियों ने भाग लिया । शिविर काल में ९१३२ सामायिक, २६१ दया, १११ संवर और २२६ पौरसी हुईं । श्री लक्ष्मीचन्दजी कानूगो की अध्यक्षता में पारितोषिक वितरित किए गए ।

रायपुर (मध्य प्रदेश)—श्री जैन युवा महिला मण्डल के तत्त्वावधान में श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ के सौजन्य से धाड़ीवाल ज्ञान भवन, सदर बाजार एवं विवेकानन्द नगर में आयोजित दोनों शिविरों में १८० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया । समापन समारोह श्रीमती उमराव बाई मूथा के मुख्य आतिथ्य एवं श्री गुमानमलजी मुकीम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । शिविर काल में श्रीमती विजयादेवी सुराणा, श्रीमती कमलादेवी चौपड़ा, श्री केवलचन्दजी बैद, श्री इन्दरचन्दजी धाड़ीवाल व श्री संजयकुमार चौपड़ा ने अपने विचार प्रकट किये ।

संक्षिप्त समाचार

कोन्डीतोप (मद्रास) : यहाँ परम विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरी जी का ५१वां जन्म दिवस उपवास. दया, एकासन आदि तपस्याओं के साथ धर्म-ध्यानपूर्वक मनाया गया । श्री देवरूपचंदजी महीपालचंदजी भंडारी की तरफ से ७०० अपंग व्यक्तियों को खाना खिलाया गया । श्री रणवीरचंदजी सुखपालचंद जी भंडारी की ओर से कई संस्थाओं को दान दिया गया ।

धूलिया : २ जुलाई को स्वामी श्री ब्रजलालजी म० सा० की प्रथम पुण्य-तिथि श्री भागचंदजी लोढ़ा की अध्यक्षता में मनाई गई । इस अवसर पर सामायिक, आयम्बिल, दया, शान्तिजाप आदि कार्यक्रम हुए । अंधशाला, अनाथ-आश्रम के बच्चों एवं कुष्ठ रोगियों को भोजन कराया गया ।

चित्तौड़गढ़ : यहाँ अहिंसानगर में ३–४ जून को वीरवाल सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें लगभग ८०० स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया । सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को श्रीमती कमला माताजी, महेश भाई भंसाली, फकीरचंदजी मेहता आदि ने सम्बोधित किया। सम्मेलन के बाद कमला माताजी एवं महेश भाई वीरवाल क्षेत्र के दौरे पर निकले।

मद्रास : भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ के चुनाव में श्री खींवराज जी चौरड़िया अध्यक्ष, सर्वश्री पुखराजजी छल्लाणी, सुरेन्द्रभाई मेहता, भँवरलाल जी गोठी और केवलचंदजी बरमेचा उपाध्यक्ष, श्री केशरीचंदजी सेठिया मंत्री और श्री दीपचंदजी बोकड़िया कोषाध्यक्ष चुने गये।

तिरपाल : श्री वर्धमान जैन ज्ञानपीठ के अन्तर्गत 'स्व० शादीलाल जैन स्कालरशिप फंड योजना' कार्यरत है। होनहार, योग्य, मेधावी, जरूरतमन्द छात्र २) रुपये का मनीआर्डर भेजकर फार्म मँगवाकर आवेदन करें। इस संस्था के संचालन के लिये योग्य, प्रामाणिक और ईमानदार व्यक्ति की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति आवेदन करें—

—मंत्री, श्री वर्धमान जैन ज्ञानपीठ, तिरपाल (जि० उदयपुर)

रसीदपुर : यहाँ श्री शुभेन्द्र मुनिजी आदि ठाणा ३ का पदार्पण होने से सामायिक, स्वाध्याय, त्याग-तप आदि विशेष रूप से हुए। श्री गुलाबचंदजी जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी ने आजीवन शीलव्रत के नियम लिये।

सिरोही : यहाँ डॉ० सोहनलाल पाटनी के निर्देशन में 'अजित प्राच्य एवं समाज विद्या संस्थान' की स्थापना की गई है। यह संस्थान इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व, समाज व्यवस्था, जन-जीवन, लोक कला आदि के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण शोध कार्य करेगा। इस संस्थान के संग्रह में लगभग २ हजार हस्त-लिखित ग्रन्थ हैं।

राजगृह : यहाँ वीरायतन में दिसम्बर, १९८४ में २५वां नेत्र ज्योति शिविर आयोजित किया जा रहा है। जिसमें १२०० रोगियों के आपरेशन की व्यवस्था है। १ जनवरी, १९८५ को २५०० रोगियों को चश्मे वितरित किये जावेंगे।

वाराणसी : श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान में ९ जुलाई को विशेष समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता कुलपति डॉ० इकबाल नारायण ने की और मुख्य अतिथि थे राजस्थान विश्वविद्यालय के भू० पू० कुलपति डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे। इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित तीन ग्रन्थों—'जैनाचार्यों का अलंकार शास्त्र को योगदान', 'जैन दर्शन में आत्म-विचार'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा 'खजुराहो के जैन मन्दिरों की मूर्तिकला' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर अतिथिगृह, महिला छात्रावास एवं आर्यिका निवास का शिलान्यास भी किया गया। संस्थान के मंत्री श्री भूपेन्द्रनाथ जैन एवं उपाध्यक्ष श्री नृपराज जैन भी इस समारोह में उपस्थित थे। संस्थान के निदेशक डॉ० सागरमल जैन ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

जयपुर : यहाँ २९ जुलाई को डॉ० शिवमुनिजी एवं महासती श्री जशकँवरजी म० सा के सान्निध्य में आचार्य श्री आनन्द ऋषीजी म० सा० का ८५वां जयन्ती समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि विधि सचिव श्री जसराजजी चौपड़ा ने संघ-सेवा की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करने हेतु प्रेरणादायी और ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये। डॉ० नरेन्द्र भानावत ने संघ को नगर, चक्र, रथ, कमल, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और पर्वत से उपमित करने के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए आज संघ की विघटित होती हुई स्थिति पर चिन्ता प्रकट की और सचेत किया कि संघ का कमल कीचड़ में न फँसा रहे, उसका रथ टूट न जाये और चन्द्र की शीतलता आचारगत शिथिलता में न बदल जाये। डॉ० भागचंद जैन, संजीव भानावत, कन्हैयालाल लोढ़ा, चुन्नीलाल ललवाणी, विमलचन्द डागा, पं० दयाशंकर त्रिपाठी आदि वक्ताओं ने आचार्य श्री के जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन श्री हीराचन्द हीरावत ने किया। श्री सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल ने जयपुर ओसवाल समाज डायरेक्टरी की प्रकाशन-योजना की जानकारी दी।

शोक–श्रद्धाँजलि

मालव केशरी श्री सौभाग्यललजी म० सा० का स्वर्गवास

रतलाम : यहाँ मालव केशरी पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म० सा० का २२ जुलाई को ८९ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप स्थानकवासी समाज के वयोवृद्ध सन्त थे और कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। आपका जन्म वि० स० १९५८ में सरवानिया (मध्यप्रदेश) मे हुआ था। आपके पिताश्री का नाम चौथमलजी कांकरिया एवं माताजी का नाम केशरबाई था। सम्वत् १९६७ में आपने मुनि श्री किशनलालजी म० सा० के पास खाचरौद में दीक्षा ग्रहण की। आप हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि भाषाओं के जानकार और प्रभावशाली व्याख्याता थे। आपको जैन ज्योतिष का भी अच्छा ज्ञान था। अपने ७५ वर्ष के साधु जीवन में आपने मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश आदि प्रदेशों में दूर-दूर तक पद-यात्रा कर हजारों लोगों को आत्मकल्याण और नैतिकता का उपदेश दिया। आप करुणा के असीम सागर, अहिंसा के निर्भय प्रचारक, अडिग कर्त्तव्यपरायण, सत्य-निष्ठ और संगठनप्रिय महान सन्त थे। आपके स्वर्गवास से स्थानकवासी समाज की ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। धर्मदास जैन मित्र मण्डल, रतलाम, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर, श्री व० स्था० जैन संघ, जयपुर, इन्दौर आदि अनेक संघों ने आपके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है।

श्री दीपचंदजी महाराज का स्वर्गवास

इन्दौर : श्रमण संघीय तपस्वी जैन मुनिश्री दीपचंदजी महाराज का १ जून को स्वर्गवास हो गया। ६३ वर्षीय मुनिश्री विगत ३ वर्षों से कैन्सरग्रस्त थे। राजस्थान के निम्बाहेड़ा नगर में जन्मे मुनिश्री ने १३ वर्ष की उम्र में प्रवर्तक श्री हीरालालजी महाराज के शिष्य रूप में जैन दीक्षा ग्रहण की थी। अपने ५० वर्ष के संयममय जीवन में आपने गुजरात, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु एवं नेपाल आदि क्षेत्रों में विहार करते हुए जन-जन के मन में जैन धर्म के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया। विगत २२ वर्षों से आप एकांतर तप कर रहे थे।

सुश्राविका मोहनीबाई का पंडित मरण

जोधपुर : सुदृढ़ सेवाभावी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलालजी गाँधी पीपाड़ निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती मोहनीबाई का २६ जुलाई, १९८४ को जोधपुर में आकस्मिक समाधि मरण हो गया। श्री गाँधीजी सपरिवार पीपाड़ से आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०, प्रवर्तनी श्री सुन्दरकँवर जी म० सा०, उप प्रवर्तनी श्री मदनकँवरजी म० सा० आदि सन्त-सतियों के दर्शनार्थ यहाँ पधारे थे। भोजनोपरान्त श्रीमती मोहनी बाई ने प्रवर्तनी श्री सुन्दरकँवरजी म० सा० के यहाँ जाकर प्रतिक्रमण एवं दो सामायिक कीं। उसके बाद वे अपने निवासस्थान सांखला भवन आ गईं। अचानक रात को ११ बजे हृदय गति रुक जाने से चौविहार प्रत्याख्यान के साथ आपका निधन हो गया। आप बहुत ही सरल प्रकृति की सेवाभावी, धर्मध्यान में लीन रहने वाली विदुषी महिला थीं। आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आपके ३ सुपुत्र—शान्तिलालजी, हीरामुनिजी और प्यारेलालजी तथा २ पुत्रियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
078759

हैं। सभी धर्मनिष्ठ हैं। आपने अपने प्रिय पुत्र श्री हीरालालजी गाँधी को आचार्य श्री के चरणों में सहर्ष समर्पित किया, जो आज हीरामुनिजी के नाम से विख्यात हैं। श्री हीरामुनिजी की दीक्षा सं० २०२०, कार्तिक सुदी ६ को पीपाड़ में हुई थी। आपके निधन से महिला समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

दुर्ग : श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ दुर्ग के मंत्री श्री पाबूदान जी कांकरिया का २८ जून की रात्रि को हृदयगति रुक जाने से दुःखद निधन हो गया। आप समाजसेवी, धर्मनिष्ठ, सुश्रावक थे। आपका जन्म राजस्थान के तींवरी गाँव में हुआ था। आप अनेक धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

नई दिल्ली : जैन समाज के प्रमुख कार्यकर्ता एवं समाजसेवी सेठ श्री मणिलालजी डोसी का १९ जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। आप कई सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

मद्रास : यहाँ के प्रतिष्ठित सेठ श्री माणकचंदजी बेताला की धर्म-पत्नी श्रीमती कुसुमबाई का ७६ वर्ष की आयु में २३-७-८४ को समाधि-पूर्वक निधन हो गया। आप तपस्वी साधिका थीं। मासखमण, वर्षीतप, उपधान तप, नवपदजी की ओली, अट्ठाइयां, बेले, तेले आदि कई प्रकार की तपस्याएँ कीं। साधु-साध्वियों की सेवा में आप सदैव आगे रहती थीं। नित्य सामायिक-प्रतिक्रमण का आपका नियम था। आप अत्यन्त धर्म-परायण एवं सरल मन थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं। आपके निधन से महिला समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

उपर्युक्त दिवङ्गत आत्माओं के प्रति हम सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक-विह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

"जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २५१) रु० प्रत्येक

सदस्यता संख्या

२०८०. श्री विजयराजजी बालाबगस जी जैन, अहमदाबाद
२०८१. श्री मदनराजजी भण्डारी, जोधपुर
२०८२. श्रीमती सुभद्रा मेहर, श्योपुरकलां

"जिनवाणी" को भेंट एवं सहायता

२५) सेठ श्री मूलचन्दजी चोरड़िया, कटंगी
प्रखरवक्ता श्री केवल मुनिजी म० सा० ठाणा-३ के कटंगी चातुर्मास होने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

२१) श्री जुगराजजी जेठमलजी भंसाली, मलकापुर
सुपुत्र चि० राजेन्द्रकुमार एवं पुष्पलता (सुपुत्री श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, अमलनेर) के विवाहोपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

११) श्री चम्पालालजी ताराचन्दजी कांकरिया, दुर्ग
स्व० पाबूदानजी कांकरिया (मंत्री, श्री वर्ध० स्था० जैन श्रावक संघ, दुर्ग) के आकस्मिक निधन होने की पुण्य स्मृति में उनके परिवार की ओर से सप्रेम भेंट ।

२१) शा० सेठ श्री रिखबचन्दजी जिनाणी, सिवाना
उपाध्याय श्री राजस्थान केसरी १००८ श्री पुष्कर मुनिजी म० सा० के शिष्य मुनि श्री नरेशकुमारजी के दीक्षा दिवस (तारीख ५-६-८२) के उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

२१) श्रीमती डॉ० विजयलक्ष्मी फोफलिया, जयपुर
"जिनवाणी-हिन्दी-मासिक" पत्रिका को सप्रेम भेंट ।

३१) श्री मनोहरमलजी प्रेमचन्दजी बोकडिया, मद्रास
हमारे पूज्य पिताजी श्री केवलचन्दजी बोकड़िया का निधन ता० ६-६-८४, शनिवार को अकस्मात हृदयगति रुकने से हो गया, आप धर्मनीय, दानवीर, सरल-हृदय थे, आपने अपनी आँखों का दान कर एक अन्धे व्यक्ति को लाभान्वित किया, उस उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवलोक

आवासीय योजना, हरिद्वार

की

पंजीकरण-पुस्तिका

पंजीकरण— दिनांक २६ अक्टूबर ८७ से

हरिद्वार विकास प्राधिकरण

हरिद्वार विकास प्राधिकरण

मायापुर, हरिद्वार

पिन-२४६४०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तिका सं० .....

मूल्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12/1/88

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri